राजस्थान में शिक्षानुसंधान

सम्प्राप्तियाँ एवं सम्भावनाएँ / 2

शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर

- 544
370.78
PAW-R

राजस्थान में शिक्षानुसंधान

सम्प्राप्तियाँ एवं सम्भावनाएँ/2

[1975-1988]

सम्पादक

ललित के. पंवार

शक्तिपूर्णा गुप्ता

NIEPA DC

D05076

शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर

नया शिक्षक अनुमुद्रण

© शिक्षा विभाग, राजस्थान,
बीकानेर
334001

◆

-544
370.78
PAW-R

प्रथम संस्करण
1989

◆

सलाहकार :

**सतीश कुमार बचलस
मुरलीमनोहर शर्मा
रामनारायण आटोलिया**

Sub. National Systems Unit,
... Educational
...hi-110016
DOC. No. D-5076
Date 15/1/90

◆

समीक्षक :

पुरुषोत्तमलाल तिवाड़ी

◆

फोटोटाइप सैटिंग :

कम्प्यूटर एण्ड प्रिन्टिंग सर्विसेज (ज.) प्रा. लि.
300, किशनपोल बाजार, जयपुर
302001

◆

मुद्रक :

जयपुर प्रिन्टर्स प्रा. लि.
एम.आई. रोड, जयपुर
302001

अनुक्रम

विहंगावलोकन	1	ललित के. पंवार शक्तिपूर्णा गुप्ता
शिक्षा दर्शन एवं समाज शास्त्र	21	शिवशंकर व्यास श्रीराम मल्होत्रा
पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकें	50	सत्यनारायण मेठी ललिता गोयल सन्त कुमार शर्मा
शिक्षण-विधि एवं शिक्षक-व्यवहार	70	सतीश कुमार बचलस रामपाल शर्मा विद्योत्तमा वर्मा
व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा एवं अधिगम	108	जमनालाल बायती ज्ञानप्रकाश गुप्ता
शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह-सम्बन्धक	164	शेरसिंह बीदावत ज्ञानप्रकाश गुप्ता हरिश्चन्द्र शर्मा
मापन एवं मूल्यांकन	198	रामनारायण आटोलिया कृष्ण मुरारी गोयल सतीश कुमार
शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन	213	दिनेश चन्द्र शर्मा मौहम्मद सलीम खां एम.के. गोयल

शैक्षिक प्रशासन एवं व्यवस्था	230	पन्नालाल वर्मा सूरजनारायण कौशिक शिवचरण मन्त्री
शैक्षिक तकनीकी	257	मुरलीमनोहर शर्मा शक्तिपूर्णा गुप्ता
तुलनात्मक शिक्षा	268	अब्दुल रज़ाक सी.पी. शर्मा अशोक कुमार मुद्गल
अनौपचारिक, प्रौढ़ एवं शारीरिक शिक्षा	294	उपेन्द्रनाथ घई शंकरलाल शर्मा

इस प्रकाशन में प्रस्तुत तथ्यों, अभिमतों, अथवा निष्कर्षों के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी लेखकों की है, विभाग इसके लिये उत्तरदायी नहीं है।

प्राक्कथन

शिक्षा के क्षेत्र में आज अनेक समस्याएँ हैं। जितना यह क्षेत्र विस्तृत है, उतनी ही विस्तृत और नानाविध इसकी समस्याएँ हैं। इन्हें हल करने की भी नाना प्रकार की विधियाँ हैं। यदि शिक्षा के क्षेत्र में केवल निश्चित विधियों का ही प्रयोग करें और परिवर्तन की बात सोचें ही नहीं, तो यह जड़ता शिक्षा के विकास में बाधक ही सिद्ध होगी तथा इससे शिक्षा का सामाजिक परिवर्तनों के साथ मेल नहीं बैठ पाएगा।

शिक्षा में सोच को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से चिन्तन तथा उनका समाधान करने का तरीका न केवल अनुसंधानकर्त्ता के लिए लाभदायी है बल्कि इस क्षेत्र में कार्य करने वाले सभी शिक्षकों एवं प्रशासकों के लिए भी लाभदायी होता है। 'शिक्षा अनुसंधान' इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

राजस्थान में "शिक्षा अनुसंधान : सम्प्राप्तियाँ एवं संभावनाएँ" पुस्तक का प्रकाशन 1976 में किया गया था, जो शिक्षा-क्षेत्र में कार्यरत अनुसंधाताओं, शिक्षक प्रशिक्षण क्षेत्र में कार्यरत प्राध्यापकों तथा प्रशासकों के लिए लाभप्रद सिद्ध हुई है। इस क्षेत्र की मांग को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक के द्वितीय भाग का प्रकाशन भी इसी आशा से किया जा रहा है कि यह एक ओर तो शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत अध्यापकों तथा शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए उपयोगी हो सकेगा और दूसरी ओर शिक्षा अनुसंधान में रुचि रखने वाले एवं कार्यरत व्यक्तियों/संस्थाओं के लिए यह प्रामाणिक संदर्भ साहित्य बन सकेगा।

शिक्षा अनुसंधान से उभरकर आए तथ्यों एवं निष्कर्षों से भावी शोध हेतु पथ-प्रशस्त होता है तथा नवीन विचारों का उदय होता है जिससे शिक्षा के स्तरोन्नयन एवं उसके प्रसार को एक नई दिशा एवं गति प्राप्त होती है। इसी दृष्टि से राजस्थान में समय-समय पर अनुभूत समस्याओं के समाधान हेतु किये गये शोध-कार्यों को अध्यापकों, प्रधानाध्यापकों तथा शिक्षक प्रशिक्षकों तक पहुँचाने के लिए वर्ष 1975 से 1988 तक विश्वविद्यालय स्तर तथा शिक्षक प्रशिक्षण स्तर पर सम्पन्न हुए अनुसंधान कार्य जो उपाधि अथवा समस्याओं के निराकरण के लिए सम्पादित किए गये, उनका लघुसार, वर्गीकृत करके इस पुस्तक में यथा-स्थान संकलित किया गया है।

उपलब्ध शोध-प्रबंधों तथा शोध-प्रतिवेदनों को 11 क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है। इनमें से 8 क्षेत्र "राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान : सम्प्राप्तियाँ एवं संभावनाएँ" (1976) से लिये गये हैं तथा 3 नवीन क्षेत्र सम्मिलित किये गये हैं। इस कार्य में सलाहकार मंडल की अनुशंसा, समीक्षा-समिति तथा कुछ लेखकों का मुख्य योगदान रहा।

लेखकों को अध्याय-रचना में पूर्ण स्वतंत्रता रही है। उपलब्ध अनुसंधानों के सार-संक्षेप, वर्गीकरण एवं प्रस्तुतीकरण में एकरूपता एवं तारतम्य लाने का पूर्ण प्रयास किया गया है, साथ ही संवीक्षा के विभिन्न दृष्टिकोणों को उभारने का भी प्रयत्न किया गया है, यथा – ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, शोध-परिणामों से परिलक्षित परिवर्तन एवं प्रवृत्ति, विभिन्न बिन्दुओं के आधार पर वर्गीकरण एवं तुलनात्मक अध्ययन, उनकी आलोचनात्मक समीक्षा, कार्य की सीमा, अछूते क्षेत्रों का वर्णन तथा भावी शोध के लिए क्षेत्र आदि। उपरोक्त बिन्दुओं को इस पुस्तक में इस प्रकार संगृहीत करने का प्रयत्न किया गया है कि इससे प्रशासक, शैक्षिक योजना-निर्माता, सलाहकार तथा अध्यापक आदि को अपने कार्यों में सहायता मिल सके तथा अनुसंधाताओं को मार्गदर्शन मिल सके।

लेखकों में सभी संस्थाओं/अभिकरणों का प्रतिनिधित्व हो सके, इस दृष्टि से शिक्षानुसंधान में रुचि रखने वाले शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राध्यापक, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर तथा "राजस्थान में शिक्षानुसंधान : सम्प्राप्तियाँ एवं संभावनाएँ" में लेखन-कार्य के अनुभवी लेखकों में से लेखक-मंडल का चयन किया गया है।

मुझे विश्वास है कि इस प्रकाशन से शोध कार्य को गति मिलेगी तथा प्रयोग एवं प्रायोजनाओं के माध्यम से शिक्षा में सुधार हेतु किये गए प्रयत्नों को सही दिशा प्राप्त होगी।

प्रबुद्ध लेखकों द्वारा बिना किसी पारिश्रमिक के जो महत्त्वपूर्ण व चुनौती भरा कार्य किया गया है उसके लिए मैं हृदय से उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

इस कृति को प्रस्तुत रूप में तैयार करने के लिए राज्य शोध एवं निरीक्षण प्रकोष्ठ, शिक्षा निदेशालय, बीकानेर ने जो भूमिका निभाई है, उसके लिए वह बधाई का पात्र है।

पुस्तक के सम्पूर्ण सम्पादन में श्री पुरुषोत्तमलाल तिवाड़ी ने जो योग दिया है उसके लिए विभाग उनका आभारी है ।

लेखकों की पूर्ण सजगता के बावजूद भी इस संवीक्षात्मक प्रस्तुति में कहीं कोई त्रुटि रह सकती है। पाठक बंधुओं से अनुरोध है कि इन त्रुटियों के बारे में विभाग को सूचित करें ताकि भविष्य के लिए उस पर विचार किया जा सके।

ललित के. पंवार

निदेशक

प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा

राजस्थान, बीकानेर

विहंगावलोकन

जिस प्रकार मानव सभ्यता के विकास की कहानी सतत प्रयत्नशील मानव के जिज्ञासु और खोजी स्वभाव की कहानी है, उसी प्रकार शिक्षा का विकास भी मानव द्वारा किये गये निरन्तर चिन्तन और शोध का फल है। यदि गुरुकुलों में वैदिक ऋचाओं के उच्चार के बीच युग पुरुष और महान् चरित्र विकसित हुए तो तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा की लहरें आलोड़ित हुईं। उस स्वर्णयुग से लेकर आधुनिक युग तक "शिक्षा" ने अनेक रूप परिवर्तन किये और भारत भूमि के चिन्तन और चेतना को जगाए रखा।

वैज्ञानिक अनुसंधान कार्य बीसवीं शती की देन है और स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत द्वारा योजनाबद्ध विकास की शैली अपनाए जाने से वह एक अनिवार्य अंग के रूप में उभर रहा है। शिक्षा को गतिशील रखने और उसे विकास की नवीनतम गतिविधियों तथा बदलते जीवन-संदर्भों से जोड़ने के लिए शैक्षिक अनुसंधान की भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। सैडलर, मुदालियर तथा कोठारी आयोग ने शिक्षा में अनुसंधान की महत्ता को उजागर किया है।

राजस्थान में शिक्षानुसंधान

शिक्षा के क्षेत्र में भी गुणात्मकता की जाँच, परख और अभिवृद्धि के लिए शिक्षानुसंधान की आवश्यकता, महत्ता तथा उपादेयता स्थापित होती जा रही है। शिक्षा के सार्वजनीकरण एवं उसे पूर्णतया जीवन से जोड़ने की मांग ने शैक्षिक जगत में अनेक नये आयाम खोल दिए हैं और वैज्ञानिक साधनों एवं शैक्षिक नवाचारों ने शिक्षा में नई हलचल पैदा कर दी है। शैक्षिक क्षेत्र में गतिशीलता और प्रगति के लिए निरन्तर चिन्तन-मनन एवं खोजबीन की महत्ता अपरिहार्य है।

शिक्षानुसंधान के विषय में अक्सर यह कहा जाता है कि इसमें उतने तर्क-सम्मत, प्रयोगसिद्ध और वैज्ञानिक परिणाम प्राप्त नहीं हो पाते जितने कि विज्ञान की अन्य शाखाओं में। यहाँ यह स्मरणीय होगा कि ऐसा आक्षेप और ऐसी आलोचना लगभग सभी सामाजिक अनुसंधानों के बारे में की जा सकती है। किन्तु जहाँ तक वैज्ञानिक शैली अपनाये जाने का प्रश्न है, शिक्षानुसंधान भी इसका अनुसरण करते हुए तथ्यों का विश्वसनीय संकलन करके विश्लेषण के आधार पर तर्कपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त करने की लीक से नहीं हटता और यही विशेषता उसकी उपादेयता का सम्बल बनती है।

शिक्षा-अनुसंधान के मुख्य रूप से दो लक्ष्य हैं। प्रथम– ज्ञान की अभिकल्पना को बढ़ाना तथा द्वितीय– अध्यापकों एवं प्रशासकों की समस्याओं को हल करना। प्रथम लक्ष्य मौलिक अनुसंधान के माध्यम से पूर्ण किया जा सकता है जिसमें साधारणतया शिक्षा अनुसंधानकर्ता उच्च-स्तरीय तकनीक एवं उपकरण का उपयोग करता है। शिक्षा-अनुसंधान अध्यापकों एवं प्रशासकों की समस्या का वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण कर तर्क-सम्मत, वैध तथा विश्वसनीय आधार प्रस्तुत करता है, जिसके माध्यम से शिक्षा में वांछित उद्देश्यों के अनुरूप गुणात्मक एवं संख्यात्मक वृद्धि की जा सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी मूल एवं प्रासंगिक (Related) अनुसंधान पर बल दिया गया है। इसमें अच्छे स्तर के अनुसंधान की अपेक्षा की गई है।

शैक्षिक प्रशासन में अनुसंधान कार्य लगभग 30 वर्षों में ही विशेष रूप से किया गया है। इन वर्षों में इसकी दो धाराएँ मुख्य रूप से देखी जा सकती हैं। प्रथम पन्द्रह वर्षों में विभिन्न स्तरों तक शैक्षिक ढाँचे, अधिकारियों तथा संस्थानों की भूमिका के इतिहास तथा तुलनात्मक विवेचन की ओर अनुसंधानकर्ताओं का अधिक ध्यान रहा। इसके विपरीत अन्तिम पन्द्रह वर्षों में जो अनुसंधान हुए उनका संबंध मुख्यतः शिक्षा में नेतृत्व तथा नेतृत्व की शिक्षा, आपसी संबंध और संगठनात्मक वातावरण से रहा हैं। विवरणात्मक विधा के स्थान पर विश्लेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक अनुसंधान पर अधिक बल दिया गया।

वर्त्तमान में भारत में लगभग सभी विश्वविद्यालयों में एम. एड. एवं पीएच. डी. स्तर पर शोध कार्य की सुविधा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त नीपा (एनआईईपीए), एन.सी.ई.आर.टी. तथा राज्यों में एस.सी.ई.आर.टी. भी शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं के समाधान हेतु अनुसंधान कार्य कर रही हैं। राजस्थान में जिला स्तर पर जिला शिक्षा अनुसंधान वाक्पीठ भी कक्षा-कक्ष, विद्यालय तथा शैक्षिक नवाचार से संबंधित अनुभूत कठिनाइयों के लिए अनुसंधान कार्य में सक्रिय

योगदान दे रही है। यह वाक्पीठ शिक्षा क्षेत्र की ज्वलंत समस्याओं के कारणों का पता लगाकर उन्हें व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करती है जिससे शैक्षिक स्तरोन्नयन और प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण के लिए कारगर कदम उठाए जा सकें।

राजस्थान में एम. एड. एवं पीएच. डी. उपाधि में क्रमशः लघु शोध-प्रबंध एवं शोध-प्रबंध प्रस्तुत किए जाते हैं। शिक्षानुसंधान में लघु शोध-प्रबंध कार्य विद्याभवन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर (1953), गांधी विद्या मंदिर बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय, सरदारशहर (1959), वनस्थली विद्यापीठ शिक्षा महाविद्यालय (1966), महेश शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जोधपुर (1970), जियालाल शिक्षा संस्थान, अजमेर (1968), राजस्थान इन्स्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज इन एज्यूकेशन, बीकानेर (1971), क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर (1972) तथा लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, डबोक (1979) में प्रारंभ हुआ तथा प्रतिवर्ष काफी संख्या में ये अनुसंधानकर्ता शोध-प्रबंध/लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत करते हैं। विभिन्न अभिकरणों द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों से अनुसंधान के कार्यों को एक नई दिशा एवं गति मिली है।

शिक्षा अनुसंधान की प्रवृत्तियाँ :

राजस्थान में एम. एड. एवं पीएच. डी. स्तर के शोध कार्यों के अतिरिक्त, अनुभूत समस्याओं का समाधान खोजने की दृष्टि से संस्था स्तर/व्यक्तिगत स्तर पर भी शोध कार्य सम्पन्न किए जाते हैं। शिक्षा विभाग, राजस्थान ने 1976 में "राजस्थान में शिक्षानुसंधान–सम्प्राप्तियाँ एवं संभावनाएँ" पुस्तक प्रकाशित की थी जिसमें 1953 से 1974 तक की अवधि में सम्पन्न हुए शिक्षानुसंधानों का विवरण प्रस्तुत किया गया था। अब इसी क्रम में इस पुस्तक में राजस्थान में वर्ष 1975 से 1988 तक विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के अधीन हुए उपलब्ध शोध-प्रबंध/लघु शोध-प्रबंधों का लघु सार क्षेत्रवार वर्गीकृत कर प्रकाशित किया गया है।

सन् 1976 में प्रकाशित हुए प्रथम संस्करण में उस अवधि के शिक्षानुसंधानों को जिन क्षेत्रों में वर्गीकृत कर प्रस्तुति हुई थी, वे क्षेत्र थे – "शिक्षा-दर्शन एवं शिक्षा समाजशास्त्र", "शिक्षाक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें", "अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया", "व्यक्तित्व, शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह-संबंध", "मापन एवं मूल्यांकन", "शैक्षिक निर्देशन", "व्यावसायिक निर्देशन", "शिक्षक प्रशिक्षण", "शिक्षा प्रशासन", "विद्यालय व्यवस्था", एवं "समाज शिक्षा"।

प्रस्तुत द्वितीय भाग में शिक्षानुसंधानों को जिन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है, वे क्षेत्र हैं– (1) शिक्षा-दर्शन एवं शिक्षा समाजशास्त्र, (2) पाठ्य चर्चा एवं पाठ्यपुस्तकें, (3) शिक्षण विधि एवं शिक्षक व्यवहार, (4) व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा एवं अधिगम, (5) शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह-संबंध, (6) मापन एवं मूल्यांकन, (7) शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन, (8) शैक्षिक प्रशासन एवं व्यवस्था, (9) शैक्षिक तकनीकी, (10) तुलनात्मक शिक्षा एवं (11) अनौपचारिक, प्रौढ़ एवं शारीरिक शिक्षा।

तालिक संख्या–1

वर्षवार विभिन्न विश्वविद्यालयों में हुए एम. एड. अनुसंधानों की संख्या

वर्ष	विश्वविद्यालयडीम्ड वि.वि.					
	राजस्थान	उदयपुर	जोधपुर	डबोक	वनस्थली	योग
1775	52	16	–	–	–	68
1976	44	10	–	–	–	54
1977	36	17	–	–	–	53
1978	49	17	–	–	–	66
1979	60	37	–	–	–	97
1980	46	24	–	–	–	70
1981	50	28	–	–	–	78
1982	61	26	–	–	–	87
1983	63	17	–	–	–	80
1984	41	26	–	–	11	78
1985	32	24	12	–	11	79
1986	46	23	15	–	12	96
1987	22	25	14	15	10	86
1988	33	27	13	20	10	103
	635	317	54	35	54	1095

उपरोक्त तालिका से मालूम होता है कि लगभग 60 प्रतिशत एम. एड. लघु शोध-प्रबन्ध राजस्थान विश्वविद्यालय में ही प्रस्तुत हुए हैं। इसका प्रमुख कारण यह रहा है कि राजस्थान से सम्बद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालयों की संख्या चार है तथा उदयपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय 1978 तक तो मात्र एक ही रहा तथा 1979 से लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, डबोक में भी स्नातकोत्तर कक्षाएँ प्रारम्भ हो गईं। आलोच्यकाल में उदयपुर विश्वविद्यालय में लगभग 29% एम. एड. लघु शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किए गए। उधर जोधपुर विश्वविद्यालय में 1970 में मात्र एक वर्ष एम. एड. पाठ्यक्रम चला। तत्पश्चात् 1985 से पुनः एम. एड. पाठ्यक्रम प्रारंभ हुआ। जोधपुर विश्वविद्यालय तथा वनस्थली डीम्ड विश्वविद्यालय दोनों में लगभग 45 प्रतिशत लघु शोध-प्रबन्ध समान रूप से प्रस्तुत हुए। 1974 तक सम्पन्न हुए एम. एड. शोध कार्यों को देखते हुए इस अवधि (1975-88) में एम. एड. अनुसन्धान कार्य में

लगभग 65 प्रतिशत वृद्धि हुई है, जो कि उल्लेखनीय है। इस महत्त्वपूर्ण वृद्धि का प्रमुख कारण वर्तमान में शिक्षकों की अनुसन्धान के प्रति विशेष रुचि का होना है।

एम. एड. स्तरीय अनुसन्धान कार्यों में विभिन्न संस्थाओं का योगदान निम्न प्रकार रहा है :

तालिका संख्या-2

क्र.सं.	शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय	संख्या	अवधि	कुल प्रतिशत
1.	विद्याभवन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर	230	1975-88	21.00%
2.	गांधी विद्यामन्दिर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय सरदारशहर (चुरू)	170	1975-88	15.60%
3.	वनस्थली विद्यापीठ शिक्षण महाविद्यालय, वनस्थली	136	1975-88	12.30%
4.	महेश शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय, जोधपुर (राज.)	54	1985-88	04.90%
5.	राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान, बीकानेर	177	1975-88	16.20%
6.	क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर	206	1975-88	18.90%
7.	लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, डबोक (उदयपुर)	122	1979-88	11.1%

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि एम. एड. अनुसन्धानों की दृष्टि से गैर सरकारी संस्थाओं का योगदान 64.9 प्रतिशत रहा है। गैर सरकारी संस्थाओं में भी विशेषतः विद्याभवन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर द्वारा 21 प्रतिशत अनुसन्धान करवाए गए। गांधी विद्या मन्दिर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सरदारशहर द्वारा 15.6 प्रतिशत तथा लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, डबोक द्वारा 11.1 प्रतिशत एम. एड. लघु शोध-प्रबन्ध लिखे गए। उक्त प्रसंग में विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि राजस्थान में वनस्थली विद्यापीठ महाविद्यालय ही एकमात्र ऐसी संस्था है जहां केवल महिलाओं के शिक्षण एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था है। इस दृष्टि से कुल अनुसंधानों में से 12.3 प्रतिशत अनुसन्धानों का इस महाविद्यालय द्वारा सम्पन्न करवाया जाना अपने आप में महत्त्व रखता है तथा गैर सरकारी संस्थाओं में यह अनुसन्धान कार्य की दृष्टि से तीसरे स्थान पर है।

तालिका संख्या-3

क्र. सं.	शिक्षा का क्षेत्र	अनुसन्धानों की संख्या	कुलप्रतिशत
1.	शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा समाजशास्त्र	125	11.4
2.	पाठ्य विधाएँ एवं पाठ्यपुस्तकें	66	6.0
3.	शिक्षण विधि एवं शिक्षक व्यवहार	195	17.7
4.	व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा एवं अधिगम	215	19.6
5.	शैक्षिक सम्प्राप्ति के सहसम्बन्धक	146	13.3
6.	मापन एवं मूल्यांकन	60	5.5
7.	शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन	47	4.3
8.	शैक्षिक प्रशासन एवं व्यवस्था	129	11.8
9.	शैक्षिक तकनीकी	32	2.9
10.	तुलनात्मक शिक्षा	68	6.4
11.	अनौपचारिक, प्रौढ़ एवं शारीरिक शिक्षा	12	1.1

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अनुसंधाताओं की सबसे अधिक रुचि "व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा एवं अधिगम" में रही हैं। वर्ष 1953 से 1974 तक की अवधि में इस क्षेत्र में मात्र 80 लघु शोध-प्रबंध लिखे गए थे। 1975 से 1988 तक की अवधि में इसकी संख्या लगभग ढाई गुना हो गई है। 'व्यक्तित्व' के 'शिक्षण अधिगम' पर पड़ने वाले प्रभावों के कारण अनुसंधाताओं की इसमें विशेष रुचि परिलक्षित हुई है। 'अभिप्रेरणा' शिक्षा में महत्त्वपूर्ण योगदान करती है अतः इसके प्रभावों को जानने के लिए 'अभिप्रेरणा' क्षेत्र में भी 25 अनुसंधान कार्य सम्पन्न किये गए। अध्ययन की दृष्टि से 'शिक्षण एवं शिक्षक व्यवहार' अध्याय द्वितीय स्थान पर रहा। यह कार्य इससे पूर्व के अनुसंधानों से लगभग चार गुना अधिक रहा। यह अनुसंधाताओं की 'शिक्षण एवं शिक्षक-व्यवहार' में विशेष रुचि का द्योतक है। 'शिक्षा-दर्शन एवं समाजशास्त्र' तथा 'शैक्षिक सम्प्राप्ति के सहसंबंध' में आलोच्य अवधि में पूर्व प्रकाशित अवधि से लगभग तीन गुना अधिक अनुसंधान कार्य हुआ है। अन्य क्षेत्रों में अनुसंधान की दर लगभग समान पाई गई।

आलोच्य अवधि में अनुसंधान के नये क्षेत्र उभर कर आए हैं। ये क्रमशः 'तुलनात्मक शिक्षा', 'शैक्षिक तकनीकी' एवं 'अनौपचारिक एवं प्रौढ़ शिक्षा' हैं। ये आयाम शिक्षा के क्षेत्र में गत दो दशकों में उभर कर आए हैं। अतः स्वाभाविक रूप से अनुसंधाताओं का इस ओर ध्यान जाना आवश्यक हो गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि राजस्थान में शिक्षानुसंधान के क्षेत्र में प्रचलित क्षेत्रों पर ही चिन्तन-मनन नहीं हुआ है बल्कि नवीन क्षेत्रों की उपादेयता और गुणावगुण को भी देखा एवं परखा गया है।

'शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन' के क्षेत्र में 1974 तक काफी संख्या में लघु शोध-प्रबंध लिखे गए लेकिन आलोच्य अवधि में इनकी संख्या में अत्यधिक गिरावट आई है। इसका प्रमुख कारण यह माना जा सकता है कि सामान्य रूप से शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन का साहित्य इतनी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है कि क्षेत्र में कार्यरत प्रशासकों, अध्यापकों को इस क्षेत्र में कोई कठिनाई अनुभव नहीं होती।

(आ) पीएच. डी. स्तरीय अनुसंधान : राजस्थान में पीएच. डी. स्तर पर 1953 से 1974 तक 22 वर्षों की अवधि में कुल 19 शिक्षानुसंधान हुए थे। किन्तु 1975 से 1988 तक 14 वर्ष की अवधि में 88 शोध अनुसंधान सम्पन्न किये गए जो करीब 4 गुना वृद्धि का द्योतक है। पीएच. डी. स्तरीय अनुसंधान की यह लोकप्रियता विशेषतः अर्थपूर्ण है। इनका वर्षवार विभाजन निम्नांकित तालिका में दिया जा रहा है :

तालिका संख्या–4

राजस्थान में पीएच. डी. अनुसंधानों का विवरण

वर्ष	राजस्थान विश्वविद्यालय	उदयपुर वि. वि.	वनस्थ. वि. वि. (डीम्ड)
1975	4	2	–
1976	4	–	–
1977	4	–	–
1978	3	3	–
1979	3	1	–
1980	3	–	–
1981	3	1	–
1982	5	1	–
1983	2	2	–
1984	11	–	–
1985	10	–	–
1986	9	–	1
1987	9	–	2

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि राजस्थान विश्वविद्यालय में सबसे अधिक शोध-प्रबंध लिखे गए हैं जबकि उदयपुर व वनस्थली में इनकी संख्या न्यून है। वनस्थली में सर्वप्रथम 1986 में शोध-प्रबंध लिखा गया। राजस्थान विश्वविद्यालय में अन्य के 13 के अनुपात में 75 शोध-प्रबंध लिखे गए जो लगभग छह गुने हैं। 1984 से 1987 की अवधि में राजस्थान विश्वविद्यालय में काफी संख्या में पीएच. डी. स्तरीय अनुसंधान कार्य किए गए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत राज्य में अनुसंधान के क्षेत्र में अधिक सुविधाएं उपलब्ध कराने की दृष्टि से राजस्थान में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बीकानेर को वर्ष 1987-88 में एवं शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, अजमेर को वर्ष 1988-89 में शिक्षा में 'उच्च अध्ययन संस्थान' के रूप में क्रमोन्नत किया गया। निश्चय ही ये 'अध्ययन संस्थान' शिक्षा में अनुसंधान के कार्य को और गति प्रदान कर सकेंगे।

पीएच. डी. शोध-प्रबंधों का क्षेत्रवार विभाजन निम्न तालिका से स्पष्ट है :

तालिका संख्या-5

शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में सम्पन्न हुए पीएच. डी. अनुसंधान

क्र. सं.	शिक्षा का क्षेत्र	अनुसंधानों की संख्या	प्रतिशत
1.	शिक्षा-दर्शन एवं शिक्षा समाजशास्त्र	14	16.1
2.	पाठ्य विधाएं एवं पाठ्यपुस्तक	3	3.5
3.	शिक्षण विधि एवं शिक्षक व्यवहार	17	19.5
4.	व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा एवं अधिगम	20	23.0
5.	शैक्षिक सम्प्राप्ति के सहसंबंधक	9	10.3
6.	मापन एवं मूल्यांकन	4	4.6
7.	शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन	–	–
8.	शैक्षिक प्रशासन एवं व्यवस्था	7	8.0
9.	शैक्षिक तकनीकी	3	3.5
10.	तुलनात्मक शिक्षा	7	6.9
11.	अनौपचारिक, प्रौढ़ एवं शारीरिक शिक्षा	4	4.6
		88	

शोध-प्रबंधों की क्षेत्रवार तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि 'व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा एवं अधिगम' तथा 'शिक्षण एवं शिक्षक व्यवहार' क्षेत्र में सबसे अधिक शोध-प्रबन्ध

लिखे गए हैं। एम. एड. स्तरीय अनुसंधान कार्यों में भी अनुसंधाताओं ने इन दोनों ही क्षेत्रों में सबसे अधिक लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत किए हैं। अतः यह माना जा सकता है कि इन दोनों क्षेत्रों में अनुसंधान की बहुत ज्यादा आवश्यकता महसूस की गई। इन दोनों क्षेत्रों के अतिरिक्त 'शिक्षा-दर्शन एवं शिक्षा समाज-शास्त्र', 'शैक्षिक सम्प्राप्ति के सहसंबंधक', 'शैक्षिक प्रशासन एवं व्यवस्था' क्षेत्र में भी अनुसंधाताओं की रुचि पाई गई। 'शैक्षिक तकनीकी', 'तुलनात्मक शिक्षा' तथा 'अनौपचारिक एवं प्रौढ़ शिक्षा' जैसे नवीन आयामों में भी अनुसंधान कार्य किए गए। यह शिक्षाविदों की नये आयामों के प्रति रुचि एवं क्रियान्विति में पाई जाने वाली कमियों का पता लगाकर, व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करने की तत्परता का द्योतक हैं।

अनुसन्धान में प्रयुक्त विधियाँ :

शोध-प्रबन्धों के अवलोकन से यह विदित होता है कि इन शोध अध्ययनों में सर्वेक्षण विधि को ही महत्त्व दिया गया है तथा पूर्व से प्रचलित उपकरणों का ही प्रयोग किया गया है, जैसे—जलोटा टेस्ट, जोशी व टण्डन की बुद्धि परीक्षाएँ, कैटल्स 14वीं, एफ. टेस्ट ऑफ अंडरस्टेंडिंग साइन्स, कार्ल मोगोसेव स्मिरनाव सेम्पल टेस्ट, मेन व्हीटनी, यू टेस्ट, एनेलिसिस ऑफ वेराइंस, टी. टेस्ट, जेड स्कॉर, जद टेस्ट आदि। फेक्टोरियल एनेलेसिस, वस्तु विश्लेषण, मल्टी वेरीयर कॉरिलेशन आदि जैसी पेचीदी विधियाँ/तकनीकें बहुत कम काम ली गई हैं। कुछ अनुसन्धाताओं ने अपने स्तर पर मापनियों को विकसित कर उनका उपयोग किया जैसे—'विद्यार्थियों के विभिन्न समूहों की भौतिक विज्ञान और संज्ञानोन्मुख शैलियों के प्रति अभिवृति' में भौतिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृति मापनी एवं भौतिक विज्ञान संज्ञानोन्मुख शैली परीक्षण उपकरण का विकास अनुसन्धाता द्वारा किया जा कर उपयोग में लाया गया। नई परीक्षण तथा मापनी आदि सामग्री की रचना पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। बुद्धि (शाब्दिक व अशाब्दिक दोनों), सृजनात्मकता, अभिरुचि, व्यक्तित्व परीक्षण की रचना एवं उसके मानकीकरण पर किसी शोधार्थी ने नया कार्य करने का प्रयास नहीं किया जबकि इसका पर्याप्त क्षेत्र था।

इसके अतिरिक्त कुछ अनुसन्धाताओं ने ऐतिहासिक पद्धति मुख्यतः पुस्तकालय सामग्री पर आधारित, प्रयोगात्मक विधि तथा वर्णनात्मक विधि का भी प्रयोग किया है, प्रयोगात्मक अध्ययन विधि मात्र अभिक्रमित अध्ययन के क्षेत्र में ही प्रयुक्त हुई है पर इनकी संख्या भी कम ही है। प्रयोगात्मक अध्ययन विधि अधिक समय लेती हैं, शोधार्थी को निरन्तर कार्य से जुड़ा रहना होता है तथा परिश्रम साध्य होने से शोधार्थी इससे बचते रहे हैं। सम्भव है इसका कारण समय-सीमा भी रहा हो।

शिक्षानुसंधान में उपलब्धियों की संवीक्षा :

शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में सम्पन्न हुए शोध कार्यों को क्षेत्रवार वर्गीकृत करने पर उसमें जो उपलब्धियाँ उभरी हैं, वे अधोलिखित हैं। इनके साथ क्षेत्र में पाई जाने वाली रिक्तियों को

शोध समस्या की समग्र स्थिति का विवेचन एवं विश्लेषण करना, शोध समस्या की समग्र स्थिति का आकलन अत्यन्त गहराई से पैनी दृष्टि, गहरी सूझ एवं वैचारिक परिपक्वता के साथ करना यद्यपि अपेक्षित है तथापि शिक्षा-दर्शन के व्यापक एवं विस्तृत क्षेत्र के चरों को नियन्त्रित करना तथा उपयुक्त सैद्धान्तिक प्रतिमानों के अभाव में वैज्ञानिक शोध कार्य सम्पन्न करना कष्ट-साध्य ही नहीं अपितु असंभव-सा प्रतीत होता है। लेकिन शिक्षा-दर्शन द्वारा दर्शाए गए शाश्वत सिद्धान्त एवं मूल्य शैक्षिक संरचना में सार्थक एवं अहम् भूमिका निभा सकते हैं।

समीक्ष्य काल (1975-88) तक राजस्थान में शिक्षा-दर्शन के क्षेत्र में पीएच. डी. स्तर पर दो शोध कार्य एवं एम. एड. स्तर पर 15 शोध कार्य ही सम्पन्न होना यह दर्शाता है कि शिक्षा-दर्शन के क्षेत्र में शोध कार्य करना श्रम-साध्य एवं कष्ट-साध्य ही नहीं अपितु यह विवेकजन्य, तर्कसंगत एवं गहरी सूझ पर अवलम्बित है। उक्त अवधि में सम्पन्न शोध कार्यों की समीक्षा करने पर ज्ञात होता है कि अनुसंधित्सुओं ने विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों के शिक्षा-दर्शन के स्वरूप को उभारने का प्रयास मात्र किया है। जबकि इस शिक्षा-दर्शन की प्रासंगिकता आज क्या हो सकती है, इस पर अद्यावधि शोध कार्य अपेक्षित है। 1964-74 की अवधि में शिक्षा-दर्शन एवं समाजशास्त्र के क्षेत्र में कुल 46 लघु शोध एम. एड. स्तर पर किए गए जबकि समीक्ष्य अवधि में (1975-88) कुल 125 लघु शोध कार्य सम्पादित किए गए जो गत दशक की तुलना में दुगुने से भी अधिक हैं। इसी प्रकार 'समाजशास्त्र' के क्षेत्र में समीक्ष्य अवधि में कुल 12 शोधकार्य पीएच. डी. स्तर पर सम्पन्न हुए। आंकड़े दर्शाते हैं कि समीक्ष्य अवधि में समाजशास्त्र के क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक शोध कार्य सम्पन्न हुए। शोध के विषय प्रमुखतः माध्यमिक/उच्च माध्यमिक स्तर तक के विद्यार्थियों को न्यादर्श मानकर किए गए। यों कतिपय शोध कार्य महाविद्यालयी स्तर पर कामकाजी महिलाओं पर भी सम्पादित हुए। समाजशास्त्र से संबंधित शोध के विभिन्न उपक्षेत्रों में प्रमुख हैं—समाज और विद्यालय, जनसंख्या अभिवृद्धि का समाज पर प्रभाव, सामाजिक-आर्थिक स्तर का सर्वेक्षण, सामाजिक समायोजन की समस्याएं, अनुसूचित जाति, जनजाति एवं आदिवासियों की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएं, छात्रों के समायोजन की समस्याएं, सामाजिक अभिवृद्धि का समाज पर प्रभाव, सामाजिक सर्वेक्षण, सामाजिक घटक तथा विद्यालय, सामाजिक संरचना में शिक्षकों, सामुदायिक संघों आदि की भूमिका आदि।

उपर्युक्त अध्ययनों की समीक्षा करने पर ज्ञात हुआ कि अधिकांश अध्ययनों में सर्वेक्षण विधि का ही उपयोग किया गया तथा विवरणात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया। इनके निष्कर्षों को उच्च सांख्यिकीय पद्धतियों से पुष्ट नहीं किया गया। इतना ही क्यों, अधिकांश अध्ययनों में शिक्षक निर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया तथा प्रश्नावली, साक्षात्कार, सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी आदि उपकरणों का प्रयोग किया गया। इस क्षेत्र के प्रत्येक अध्ययन में यदि मानकीकृत उपकरणों का उपयोग किया जाता तो निष्कर्ष संभवतः अधिक सार्थक होते। समीक्ष्य अवधि में 'शिक्षा-दर्शन एवं समाजशास्त्र' के क्षेत्र में किए गए शोध अध्ययन दर्शाते हैं कि अनुसंधानकर्ताओं का रुझान उक्त क्षेत्र में अपेक्षाकृत बढ़ा है, विशेषतः कामकाजी महिलाओं के समायोजन, अभिवृत्ति समस्याओं पर किए गए शोध अध्ययन अधिक उपादेय सिद्ध हुए हैं।

पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकें : शिक्षा-जगत् में पाठ्यचर्या के संदर्भ में सामाजिक परिस्थितियों एवं आवश्यकता के महत्त्व को विश्व भर के शिक्षाविद् स्वीकार करते हैं। इस क्षेत्र में अखिल भारतीय स्तर पर जहाँ 1974 तक 108 शोध अध्ययन प्रस्तुत हुए, वहीं राजस्थान स्तर पर 44 अनुसंधान कार्य सम्पन्न हुए। आलोच्य अवधि (1975-1988) तक के 69 अनुसंधान प्रस्तुत अध्याय में समाहित हैं। इन शोध कार्यों में 3 पीएच. डी. स्तर के एवं 66 लघु शोध-प्रबंध हैं। एक लघु-शोध 1974 का भी सम्मिलित है।

अध्याय के प्रारम्भ में पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकों के संबंध में भारत तथा राजस्थान स्तर की पूर्व शोधों की चर्चा करके अद्यावधि (1988) शोध से उनकी तुलना की गई है। 69 अनुसंधान कार्यों को पाठ्यचर्या का समग्र मूल्यांकन, भाषिक स्वरूप, सामाजिक ज्ञान, इतिहास एवं भूगोल, विज्ञान, वाणिज्य, सहशैक्षिक प्रवृत्तियां, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य, स्वास्थ्य शिक्षा, पौधशाला एवं पुस्तकालय, नवाचार, विकलांग शिक्षा एवं प्रशिक्षण के उपशीर्षकों में विभाजित कर मूल्यांकन किया गया हैं।

अनुसंधान कार्य से उभर कर आए बिन्दुओं को जहाँ उभारा गया है, वहाँ यह भी बताया है कि भारत और राजस्थान स्तर पर अद्यावधि कौन-कौन से क्षेत्र अनुसंधान की अपेक्षा रखते हैं। शोधों के शैक्षिक महत्त्व को सार रूप में रखते हुए पीएच. डी. स्तर के शोध सार भी प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रविधियों की दृष्टि से मात्र दो अनुसंधान कार्यों में प्रयोगात्मक विधि को अपनाया गया है। शेष सब में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। सर्वेक्षण विधि में प्रत्यक्षन प्रश्नावली, साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग सर्वाधिक हुआ है। सांख्यिकी विधि में प्रतिशत, मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्लोज टेस्ट एवं सहसंबंध का प्रयोग हुआ है।

प्राथमिक स्तर पर मात्र 3 प्रतिशत कार्यों का होना जहाँ इस क्षेत्र की ओर उदासीनता दिखाता है वहाँ भावी अनुसंधित्सुओं हेतु चुनौतीपूर्ण आह्वान भी है। अनौपचारिक शिक्षा का पाठ्यक्रम भी शोध की कसौटी पर कसा जाना है।

शिक्षण विधि एवं शिक्षक व्यवहार : शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक की योग्यता और क्षमताओं के साथ ही उसके द्वारा अपनाई गई शिक्षण विधियां और उसके व्यवहार अधिगम पर प्रभावी पाए जाते हैं। अतः स्वभावतः शोधार्थियों के लिए यह गहन दिलचस्पी का क्षेत्र है। इस क्षेत्र के अंतर्गत राजस्थान में विभिन्न स्तरों पर 1975 से 1988 की अवधि में 212 अध्ययन हुए, जिनमें से 17 पीएच. डी. तथा 195 एम. एड. स्तर के अध्ययन हैं।

'अध्यापक का व्यवहार' एक जटिल प्रकृति का चर है। शोधार्थियों ने इसके अन्तर्गत अध्यापक के व्यक्तित्व के समायोजन में आने वाली बाधाओं के अतिरिक्त उसकी अपनी अभिव्यक्ति की शैली, छात्र के साथ कक्षागत अंतःक्रिया, उसकी अपनी व्यक्तिगत और व्यावसायिक समस्याएं, अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित जनजाति जैसे पिछड़े वर्ग से संबंधित होना, उसकी अभिवृत्तियां आदि घटकों का अध्ययन किया है।

अधिकांश अनुसंधान अध्ययनों में सर्वेक्षण विधि ही अपनाई गई है। प्रयोगात्मक एवं ऐतिहासिक शोध विधियों को अपनाए जाने पर अधिक विश्वसनीय परिणाम प्राप्त हो सकते थे। विषय शिक्षण के क्षेत्र में निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण पर शोध कार्यों की कमी अखरती है।

फिर भी, शोधार्थियों द्वारा प्राप्त किए गए अनेक निष्कर्ष शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं। उदाहरणार्थ,

* अच्छे शिक्षण के लिए प्रयोग आधारित अध्यापन श्रेष्ठ है।
* व्याख्यान-विधि की तुलना में स्व-अधिगम विधि, खोज विधि व निर्देशित स्वाध्याय विधियाँ अधिक प्रभावी हैं।
* विद्यालयी समस्याओं के प्रति शिक्षा अधिकारियों की उपेक्षा, राजनेताओं का हस्तक्षेप, अभिभावकों की उदासीनता, अध्यापकों का परस्पर कुसमायोजन, भौतिक संसाधनों का अभाव, अयोग्य एवं कनिष्ठ की पदोन्नति, स्थानान्तरण का भय, कार्यभार की अधिकता, विद्यार्थियों के पास पठन-सामग्री का अभाव आदि परिस्थितियां शिक्षकों में कुंठा पैदा करती हैं।
* अध्यापिकाओं का मनोबल अध्यापकों की तुलना में श्रेष्ठ पाया जाता है। इसी प्रकार ग्रामीण अध्यापक-अध्यापिकाओं की तुलना में शहरी अध्यापकों-अध्यापिकाओं का मनोबल श्रेष्ठ पाया जाता है।
* एक अध्ययन के अनुसार शिक्षकों के सर्वोपरि मनोबल की स्थितियां हैं – व्यवसाय के अतिरिक्त कार्य, समस्त अवकाश सुविधा, तुरन्त स्वीकृति, पारस्परिक सहयोग, विद्यालय में पूर्ण स्वतंत्रता, अत्यधिक प्रशासनिक कार्य, समय पर वेतन, शिक्षा कार्य में पूर्ण सहयोग।
* अध्यापक के प्रशिक्षण और अभिनवन का शिक्षक की क्षमता, कक्षागत व्यवहार और नवाचार आकर्षण में सार्थक प्रभाव पड़ता है।
* कार्य की अधिकता, बेहद बढ़ता जा रहा छात्र-अध्यापक अनुपात, कम वेतन, सेवा सुरक्षा आदि अध्यापक के कुसमायोजन में प्रभावी घटक हैं।
* अनसचित जाति व जनजाति के अध्यापकों का मनोबल औसत से कम है।

* समाज अध्यापकों से अपेक्षाएँ करते हुए यथार्थ को भूल जाता है।

* समुदाय के दृष्टिकोण से शिक्षक का व्यावसायिक एवं सामाजिक स्तर उच्च है जबकि आर्थिक प्रस्थिति (परिस्थिति) स्तर तुलनात्मक रूप से भिन्न है।

उपर्युक्त निष्कर्षों जैसे अन्य निष्कर्षों से शिक्षक, शिक्षा प्रशासक व शिक्षा आयोजक (प्लानर) अपनी रीति-नीति में वांछित परिवर्तनों के लिए जागरूक हो सकते हैं।

कतिपय क्षेत्र शोधार्थियों की दृष्टि में नहीं आ पाए हैं, जैसे– शिक्षण उद्देश्यों के विभिन्न पक्षों – संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष पर अध्ययनों की आवश्यकता है। दल शिक्षण, प्रायोजना पद्धति, अन्वेषण विधि आदि पर भी शोध कार्य वांछित हैं।

व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा एवं अधिगम : बालक के विकास में उसके वंशानुगत गुण अधिक भूमिका निर्वाह करते हैं या वातावरण अधिक प्रभावी होता है, यह शिक्षा के क्षेत्र में एक सनातन बहस है और इस बहस ने शिक्षा मनोविज्ञान में जिज्ञासु शोधकर्ताओं को शोध के लिए नवीन आयाम प्रस्तुत किये हैं। शिक्षक द्वारा बालक और विद्यालय के वातावरण को प्रभावित और नियंत्रित करना अधिक संभाव्य है अतः उसे सकारात्मक अधिगम के लिए उत्तरदायी घटकों का ज्ञान होना आवश्यक है।

'व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा तथा अधिगम' को शोध के लिए केन्द्रीय विषय बना कर जो कार्य 1975 से 1988 तक हुआ है, उसमें 'व्यक्तित्व' के 167 (13) 'अभिप्रेरणा' के 25 (5) तथा 'अधिगम' के 23 (2) शोध कार्य सम्पन्न हुए हैं। (कोष्ठक में दी गई संख्या पीएच. डी. स्तर के शोध कार्यों की है)। 'व्यक्तित्व' के क्षेत्र में जो शोध कार्य हुआ है उसे 9 अनुभागों में विभाजित किया गया है यथा : सृजनशीलता, व्यक्तित्व के घटक, व्यक्तित्व के विभेदक, व्यक्तित्व निर्धारण, दुश्चिन्ता तथा आक्रामकता, प्रत्यक्षन, आत्म-सम्प्रत्यय, आवश्यकता एवं समायोजन तथा खिलाड़ियों का व्यक्तित्व। इन अनुभागों में क्रमशः 20, 53, 10, 6, 18, 2, 9, 30 तथा 9 अध्ययन हुए हैं। सामान्यतः शोध कार्यों में विविधता रही है। मुख्य भागों में तो पीएच. डी. स्तर पर भी न्यूनाधिक कार्य सम्पन्न हुआ है। कुछ अनुभाग शोधार्थियों में अति लोकप्रिय रहे हैं जबकि कुछ अनुभाग उपेक्षित भी। यह भी शोधार्थियों की वैयक्तिक भिन्नता का ही परिणाम है। पीएच. डी. स्तर के अनुसंधान कार्यों में भी संतुलन नहीं रह पाया है। तीनों भागों में क्रमशः लगभग 6.20 तथा 8.7% शोध कार्य सम्पन्न हुए हैं। 'व्यक्तित्व' तथा 'अधिगम' को एक बार संतुलित मान भी लें तो भी 'अभिप्रेरणा' के क्षेत्र में पाया गया अन्तर पर्याप्त महत्त्वपूर्ण है। इतना ही नहीं, 'व्यक्तित्व' के अनुभागों का अन्तर तो और भी विस्तृत है। जहाँ 'प्रत्यक्षन' के क्षेत्र में मात्र दो कार्य सम्पन्न हुए हैं वहीं 'व्यक्तित्व के घटकों' पर सर्वाधिक 53 कार्य हाथ में लिए गए हैं। इस प्रकार स्पष्टतः कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र के शोध कार्यों में संतुलन नहीं रहा है। 'अभिप्रेरणा' तथा 'अधिगम' के क्षेत्र में हुए शोध कार्यों को अनुभागों में नहीं बाँटा गया है।

कक्षा-कक्ष में अध्यापन अधिगम की संस्थितियों में सुधार की दृष्टि से इन शोध कार्यों का महत्त्व स्वयं स्पष्ट है। सुसमंजित बालक राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है। इस दृष्टि से शिक्षा का प्रत्येक प्रयत्न बालक के व्यक्तित्व को समाज सम्मत दिशा में विकसित करने के लिए समर्पित होना चाहिए। अब तक उपेक्षित तथा भविष्य में किए जा सकने वाले कुछ शोध कार्यों का भी संकेत किया गया हे।

शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह-संबंधक :

सजग शिक्षक विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर प्रभाव डालने वाले सह-संबंधकों को ध्यान में रखकर अपनी अध्यापन प्रक्रिया को उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए व्यवस्थित एवं नियोजित करना चाहता है। इनमें से कुछ सह-संबंधक नियंत्रित किए जा सकते हैं तथा कुछ नियंत्रण से परे होते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में शोधकर्ताओं का यह दायित्व बनता है कि वे ऐसे सभी सह-संबंधकों की प्रभावशीलता के बारे में शिक्षक को जानकारी करवाएं।

राजस्थान में 1974 तक सह-संबंधकों पर 63 शोध कार्य हुए हैं, जिनमें से 59 एम. एड. स्तर तथा 4 पीएच. डी. स्तर के हैं। इनकी जानकारी शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक "राजस्थान में शिक्षानुसंधान–1976" में दी गई हैं।

1975–1988 की अवधि में शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह-सम्बन्धकों पर 155 शोध-कार्य हुए, जिनमें से 9 पीएच. डी. स्तर के हैं। इन शोध कार्यों में बुद्धि, आत्मप्रत्यय, अभिवृत्ति, दुश्चिन्ता, शैक्षिक अभिप्रेरण, समाजमिति, सामाजिक-आर्थिक स्तर, ग्रामीण शहरी पर्यावरण, छात्र/छात्रा विद्यालयों का अन्तर, विद्यालयी संस्थितियां, अध्यापक अधिगम संस्थितियां आदि के साथ शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह-संबंधक भाव खोजे गए हैं। 1974 की तुलना में संदर्भित अवधि में किए गए शोध कार्यों का दायरा अधिक व्यापक हुआ है। शोधकर्ताओं की दृष्टि नवीन प्रभावी सहसंबंधकों पर पड़ी है। शोधकर्ताओं द्वारा निकाले गए निष्कर्षों को यदि शिक्षक प्रशिक्षक और शिक्षा प्रशासक शिक्षा के सुधार में प्रयुक्त करना चाहें तो निश्चय ही सुखद परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। शोधगत निष्कर्षों को क्रियान्वयन की कसौटी पर परखने की आवश्यकता है। 155 शोध कार्यों में से 4-5 शोध कार्यों में ही प्रयोगात्मक साक्ष्य देखने को मिला। मगर अन्य शोधकर्ताओं ने भी जो तथ्य खोजे हैं वे एक सजग शिक्षक के लिए चिन्तन की प्रेरणा प्रस्तुत करते हैं।

शैक्षिक सम्प्राप्ति में अध्ययन की स्थितियाँ व विद्यालयी वातावरण , छात्र की उपस्थिति और शिक्षक की तैयारी व निष्ठा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटक हैं। किन्तु बहुत अधिक शोधकर्ताओं की दृष्टि इस ओर नहीं गई है। अतः भविष्य में अनुसंधानकर्ताओं के लिए इस क्षेत्र को अपनी शोध पूर्ण दृष्टि से परखना उचित होगा। इसके अतिरिक्त शिक्षा विभाग को भी यह देखना होगा कि अधिकाधिक शिक्षकों से क्रियानुसंधान करवाए जाए।

मापन एवं मूल्यांकन :

मापन एवं मूल्यांकन अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया में अपनी अहम् भूमिका निभाते हैं। इस क्षेत्र में राजस्थान के अनुसंधाताओं ने अब तक कुल 64 अध्ययन किए हैं जिनमें से

कक्षा-कक्ष में अध्यापन अधिगम की संस्थितियों में सुधार की दृष्टि से इन शोध कार्यों का महत्त्व स्वयं स्पष्ट है। सुसमंजित बालक राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है। इस दृष्टि से शिक्षा का प्रत्येक प्रयत्न बालक के व्यक्तित्व को समाज सम्मत दिशा में विकसित करने के लिए समर्पित होना चाहिए। अब तक उपेक्षित तथा भविष्य में किए जा सकने वाले कुछ शोध कार्यों का भी संकेत किया गया है।

शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह-संबंधक :

सजग शिक्षक विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर प्रभाव डालने वाले सह-संबंधकों को ध्यान में रखकर अपनी अध्यापन प्रक्रिया को उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए व्यवस्थित एवं नियोजित करना चाहता है। इनमें से कुछ सह-संबंधक नियंत्रित किए जा सकते है तथा कुछ नियंत्रण से परे होते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में शोधकर्ताओं का यह दायित्व बनता है कि वे ऐसे सभी सह-संबंधकों की प्रभावशीलता के बारे में शिक्षक को जानकारी करवाएं।

राजस्थान में 1974 तक सह-संबंधकों पर 63 शोध कार्य हुए हैं, जिनमें से 59 एम. एड. स्तर तथा 4 पीएच. डी. स्तर के हैं। इनकी जानकारी शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक "राजस्थान में शिक्षानुसंधान–1976" में दी गई है।

1975–1988 की अवधि में शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह-सम्बन्धकों पर 155 शोध-कार्य हुए, जिनमें से 9 पीएच. डी. स्तर के हैं। इन शोध कार्यों में बुद्धि, आत्मप्रत्यय, अभिवृत्ति, दुश्चिन्ता, शैक्षिक अभिप्रेरण, समाजमिति, सामाजिक-आर्थिक स्तर, ग्रामीण शहरी पर्यावरण, छात्र/छात्रा विद्यालयों का अन्तर, विद्यालयी संस्थितियां, अध्यापक अधिगम संस्थितियां आदि के साथ शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह-संबंधक भाव खोजे गए हैं। 1974 की तुलना में संदर्भित अवधि में किए गए शोध कार्यों का दायरा अधिक व्यापक हुआ है। शोधकर्ताओं की दृष्टि नवीन प्रभावी सहसंबंधकों पर पड़ी है। शोधकर्ताओं द्वारा निकाले गए निष्कर्षों को यदि शिक्षक प्रशिक्षक और शिक्षा प्रशासक शिक्षा के सुधार में प्रयुक्त करना चाहें तो निश्चय ही सुखद परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। शोधगत निष्कर्षों को क्रियान्वयन की कसौटी पर परखने की आवश्यकता है। 155 शोध कार्यों में से 4-5 शोध कार्यों में ही प्रयोगात्मक साक्ष्य देखने को मिला। मगर अन्य शोधकर्ताओं ने भी जो तथ्य खोजे हैं वे एक सजग शिक्षक के लिए चिन्तन की प्रेरणा प्रस्तुत करते हैं।

शैक्षिक सम्प्राप्ति में अध्ययन की स्थितियाँ व विद्यालयी वातावरण , छात्र की उपस्थिति और शिक्षक की तैयारी व निष्ठा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटक हैं। किन्तु बहुत अधिक शोधकर्ताओं की दृष्टि इस ओर नहीं गई है। अतः भविष्य में अनुसंधानकर्ताओं के लिए इस क्षेत्र को अपनी शोध पूर्ण दृष्टि से परखना उचित होगा। इसके अतिरिक्त शिक्षा विभाग को भी यह देखना होगा कि अधिकाधिक शिक्षकों से क्रियानुसंधान करवाए जाए।

मापन एवं मूल्यांकन :

मापन एवं मूल्यांकन अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया में अपनी अहम् भूमिका निभाते हैं। इस क्षेत्र में राजस्थान के अनुसंधाताओं ने अब तक कुल 64 अध्ययन किए हैं जिनमें से

एम. एड. स्तर के 60 व पीएच. डी. स्तर के 4 हैं। इन अध्ययनों से संबंधित क्षेत्र हैं : निष्पत्ति परीक्षण, निदानात्मक परीक्षण, अभिरुचि, योग्यता, चिन्तन, बुद्धि, अभिवृत्ति, व्यक्तित्व, परीक्षा, प्रश्न-पत्र, असफलता, विद्यालय एवं विविध। विशेष बात यह है कि अनुसंधाताओं ने विभिन्न प्रकार के मापन उपकरणों का विकास करने के साथ-साथ कुछ विदेशी उपकरणों का भारतीय परिस्थितियों में अनुकूलन तथा पुनर्मानकीकरण किया है। यदि सभी निष्कर्षों को क्रियान्वयन की कसौटी पर परखा जाए तो निश्चय ही शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिल सकती है तथा वांछित दिशा में सुधार भी किए जा सकते हैं।

छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास, व्यक्तिगत समायोजन, चिन्तन, व्यक्तित्व, विद्यालय व्यवस्था, खेल आदि क्षेत्रों में शोध कार्य अपेक्षित हैं। शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन के क्षेत्र में राष्ट्रीय चिंतन धारा 'सतत व्यापक मूल्यांकन' की ओर बढ़ चुकी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में इस ओर ध्यान आकर्षित किया गया है। राजस्थान के अनुसंधाताओं को भी इस क्षेत्र में शोध कार्य करना होगा।

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन : शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन शिक्षा के क्षेत्र में एक अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण आयाम है। आज छात्रों के अलावा अध्यापकों एवं प्रशासकों को भी समुचित निर्देशन की आवश्यकता है। निर्देशन की आवश्यकता प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक महसूस की जा रही है। खेद है कि ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय पर राजस्थान में पीएच. डी. स्तर का कोई शोध कार्य नहीं है। समीक्षाधीन अवधि में एम. एड. स्तर पर भी केवल 47 शोध-पत्र प्रस्तुत किए गए तथा शोध विधि के रूप में भी प्रायः सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। महत्ता की दृष्टि से इस विषय को दो भागों में बांटा गया है : 1. शैक्षिक निर्देशन तथा 2. व्यावसायिक निर्देशन।

'शैक्षिक निर्देशन' के क्षेत्र में कुल 13 शोध कार्य हुए जिनमें शोधकर्ताओं ने निर्देशन की आवश्यकता पर ही अधिक बल दिया जबकि छात्रों की समंजन समस्याएँ, अभिरुचियां, अध्ययन-आदतें आदि क्षेत्र उपेक्षित रहे।

आलोच्य अवधि में 'व्यावसायिक निर्देशन' के क्षेत्र में कुल 34 शोध कार्य हुए। ये भी अधिकतर सर्वेक्षण विधि द्वारा ही सम्पन्न किए गए। इनमें छात्रों की व्यावसायिक रुचियों, विषय-चयन तथा व्यावसायिक अभिवृत्ति ज्ञात करने पर सर्वाधिक बल दिया गया है। परन्तु व्यावसायिक संतुष्टि एवं व्यावसायिक आकांक्षा आदि क्षेत्रों में अभी बहुत कार्य किए जाने की संभावनाएं हैं।

शैक्षिक-प्रशासन एवं व्यवस्था : शिक्षा-प्रशासन एवं व्यवस्था के क्षेत्र में राजस्थान के अनुसंधाताओं द्वारा 1975 से अब तक 136 शोध कार्य हुए हैं। इनमें से 7 पीएच. डी. स्तर के तथा 129 एम. एड. स्तर के हैं। शोध कार्यों से उभरे क्षेत्र इस प्रकार हैं : शिक्षा प्रशासन एवं विद्यालयी संगठनात्मक वातावरण, शिक्षा प्रशासन में संघों की भूमिका, शिक्षा प्रशासन एवं शक्ति का विकेन्द्रीकरण, शिक्षा प्रशासन एवं विद्यालय योजना, प्रधानाध्यापक की शिक्षा प्रशासन

में भूमिका, शैक्षिक प्रशासन एवं परिवीक्षण, शिक्षा प्रशासन की वित्तीय स्थिति तथा शिक्षा प्रशासन की विभिन्न उभरती हुई समस्याओं पर अनुसंधानकर्ताओं ने काम किया है। शिक्षा प्रशासन आज भी अपने वित्तीय संकोच के प्रभाव से ग्रस्त है तथा मानवीय पक्ष शैक्षिक प्रशासन पर अधिक बोझ बना हुआ है। हमारे शैक्षिक संस्थानों में शैक्षिक स्थिति क्यों नहीं बन पा रही है, कौन-कौन से घटक शैक्षिक उपलब्धि में रुकावट डाल रहे हैं ? ये प्रश्न अभी तक अधूरे पड़े हुए हैं।

शिक्षा-प्रशासन की प्रक्रिया में धीरे-धीरे कमजोरियाँ आ रही हैं और उसका अनुभव न्यायालयों में बढ़ते प्रकरणों से हो रहा है। शिक्षा प्रशासन में हमारा संरचनात्मक ढांचा किस मॉडल पर बनाया जाए कि ऊपर से नीचे तक के ढांचे में एक पद्धति कार्य करे तथा उत्तरदायी कार्य निष्पादन हो सके। शिक्षा प्रशासन में परिवीक्षण सैद्धान्तिक रूप से अधिक हावी हो रहा है, लेकिन व्यावहारिक रूप में परिवीक्षण का अनुगमन प्रायः नहीं होता, और यह भी एक कारण रहा है कि हमारी शैक्षिक उपलब्धि कमजोर होती जा रही है। शिक्षा प्रशासन के मुद्दे काफी बढ़ गए हैं। अब शिक्षा केवल स्कूली शिक्षा ही नहीं रही है। औपचारिक संस्थाओं के साथ-साथ अब अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा शिक्षा के कार्यक्रम जुड़ रहे हैं। इनकी भूमिका भी शिक्षा प्रशासन के सामने नई-नई चुनौतियों के रूप में आ रही है। इन क्षेत्रों में भी कार्य किया जाए तो शिक्षा प्रशासकों और प्राध्यापकों के लिए लाभप्रद होगा।

शिक्षा-प्रशासन का क्षेत्र काफी व्यापक व विस्तृत हो रहा है। प्रशासन की मान्यता अब मैनेजमेन्ट में बदलती जा रही है। शिक्षा प्रशासन में मानवीय पक्ष के कारण काफी गिरावट आई है। शिक्षा-प्रशासन में नेतृत्व-व्यवहार, सामाजिक व्यवहार व निर्णय प्रक्रिया के मापदण्डों के आधार पर कार्य करना उपयोगी रहेगा। इस संबंध में गेटजल्स एन्ड्रयू हाल्पिन के सिद्धान्तों के आधार पर भी शैक्षिक प्रशासन के मॉडल पर कार्य उचित रहेगा।

शिक्षा-प्रशासन में नई-नई समस्याएँ आ रही हैं। छात्र पलायनवादी बन रहें हैं। पढ़ने में मन नहीं लगता है। शिक्षक-छात्रों के संबंध में कटुता बढ़ रही है। इस प्रकार की कठिनाइयों को समझने व उनसे निपटने के लिए क्रियात्मक अनुसंधान अधिक उपयोगी रहेंगे। इस दिशा में किए गए शोध से जो सुझाव आएंगे, वे विद्यालयों की समस्याओं को हल करने में मदद करेंगे।

शिक्षा-प्रशासन की विशिष्ट समस्याएँ और भी बढ़ी हैं। रेगिस्तानी, पहाड़ी व पिछड़े इलाकों में अध्यापकों की समस्या है। सार्वजनीन शिक्षा की उपलब्धि अभी भी चुनौती बनी हुई है। दूर-दराज के गाँवों में शिक्षक पहुँच नहीं पाते हैं और पहुँच पाते हैं तो टिकाव नहीं रहता है। ऐसी दशा में शिक्षा-कर्मी योजना के अन्तर्गत लाए गए स्थानों का विश्लेषण कर, उसके परिणामों को लागू करने की दिशा में भी अनुसंधाता कार्य कर सकते हैं। सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में नये मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में अध्यापक-अध्यापिकाओं के दैनिक आवागमन (अप-डाउन) से विद्यालयों में किस प्रकार मूल्यों का ह्रास हो रहा है, समुदाय व अध्यापकों के बीच सम्पर्क-सूत्र में क्या स्थिति बनी है आदि ऐसे अनेक विषय-क्षेत्र हैं जो शोधकर्ताओं के निष्कर्षों की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

शिक्षा-प्रशासन का दायरा शोधकर्ताओं ने स्कूल तक ही सीमित कर रखा है, जबकि शिक्षा प्रसार के कारण स्थितियाँ काफी बदलती जा रही हैं। आज शिक्षा प्रशासन में परिवीक्षण कार्य हेतु स्टाफ बढ़ा है, लेकिन उसके साथ-साथ विद्यालयों की संख्या, छात्रों की संख्या भी अधिक बढ़ गई है। इस बढ़ते अनुपात में जिला शिक्षा अधिकारी, उप-निदेशक, संयुक्त निदेशक किस प्रकार से उत्तरदायित्व वहन कर पा रहे हैं, यह भी शोध का एक विषय है। शिक्षा प्रशासन विभिन्न आयामों में बढ़ रहा है। समुदाय शिक्षा प्रशासन से परिणामपरक उपलब्धि की आशा रखते है। शिक्षा प्रशासन इसमें खरा कैसे उतरे ? शोधकर्ता यह उत्तर भी दे सकें तो शिक्षा-प्रशासन को अपने उत्तरदायित्व का वहन करने में मदद मिल सकती है।

शैक्षिक तकनीकी : शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में एक अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण आयाम है। अधिगम को स्थायी एवं प्रभावी बनाने की दृष्टि से शैक्षिक तकनीकी विशिष्ट स्थान प्राप्त कर रही है। दूर अधिगम के क्षेत्र में तो शैक्षिक तकनीकी का सहारा लिए बिना परिणाम प्राप्त ही नहीं हो सकते। वैज्ञानिक शोधकार्यों से प्राप्त उपकरण आदि का उपयोग शिक्षण का स्तर सुधारने में भी सहायक सिद्ध होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शैक्षिक तकनीकी पर विशेष बल देते हुए कहा गया है कि शैक्षिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग उपयोगी जानकारी के लिए, अध्यापकों के प्रशिक्षण और अभिनवन के लिए, शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के लिए और कला व संस्कृति के प्रति जागरूकता और स्थायी जीवन-मूल्यों के संस्कार उत्पन्न करने के लिए किया जाएगा। शैक्षिक तकनीकी के द्वारा ऐसे कार्यक्रमों का निर्माण होगा जो प्रासंगिक हों। ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय पर राजस्थान में पी.एच. डी. स्तर पर मात्र 3 शोध कार्य ही हुए हैं। समीक्षाधीन अवधि में एम. एड. स्तर पर भी इस क्षेत्र में केवल 32 अनुसंधान हुए। शोध विधि के रूप में प्रायः प्रयोगात्मक विधि का ही उपयोग किया गया है।

प्राप्त शोध-सारों में अभिक्रमित अधिगम को एक महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावी अधिगम पद्धति माना है। निर्धारित विषय-वस्तु को याद करने के लिए प्रयोगों में इस विधि को अन्य की तुलना में श्रेष्ठ माना है। इस पद्धति पर आधारित विभिन्न विषयों, यथा—गणित, अंग्रेजी, जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान आदि की अध्ययन सामग्री तैयार की गई। भविष्य में वाणिज्य एवं कला विषय क्षेत्र में अभिक्रमित अध्ययन पर आधारित सामग्री तैयार किए जाने की बहुत ही संभावना है। तकनीकी का अध्ययन करना, अभिक्रमित अध्ययन को परम्परागत कक्षा-अध्यापन प्रणाली से श्रेष्ठ प्रमाणित करने हेतु विभिन्न आयामों के आधार पर तुलनात्मक शोध करना भी अपेक्षित है। निरक्षरता उन्मूलन के लिए शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग पर अनुसंधान की पर्याप्त संभावनाएँ हैं।

तुलनात्मक शिक्षा : "तुलनात्मक शिक्षा" जहाँ एक ओर भूतकाल के अनुभवों से लाभ उठाने हेतु प्रेरित करती है, वहीं दूसरी ओर शिक्षा का वर्तमान एवं भावी रूपरेखा निर्धारण हेतु मार्ग प्रशस्त करती है। आलोच्य अवधि 1975 से 1988 तक राजस्थान में तुलनात्मक शिक्षा अनुसंधान में कुल 75 अनुसंधान कार्य सम्पन्न हुए हैं। इनमें 7 शोध पीएच. डी. स्तरीय तथा 68 शोध एम. एड. स्तरीय हैं। वर्ष 1975 से 1988 तक अनुसंधान कार्यों में प्रतिवर्ष वृद्धि हुई

है, तथा 1981 से 1986 तक प्रतिवर्ष ह्रास हुआ है। सन् 1980 में 9 शोधकार्य सम्पन्न हुए हैं तथा 1986 में केवल एक शोध कार्य सम्पन्न हुआ, जो शोधकार्य में प्रतिवर्ष हुए ह्रास को प्रदर्शित करता है।

इन अनुसंधान कार्यों में 7 शोध कार्य विद्यालयों के संगठनात्मक पक्ष के तुलनात्मक अध्ययन संबंधी, 6 शोध कार्य विभिन्न पाठ्यक्रमों के तुलनात्मक अध्ययन संबंधी, तीन शोधकार्य भारत और विदेशी शिक्षा से संबंधित हैं। 5 शोधकार्य पाठ्य विधियों पर, 10 शोधकार्य अभिवृत्तियों के तुलनात्मक अध्ययन संबंधी हैं। भाषा अध्ययन में अहिन्दी भाषी छात्रों को हिन्दी अध्ययन में आने वाली कठिनाई का अध्ययन तथा एक अन्य शोध अंग्रेजी माध्यम व हिन्दी माध्यम के छात्रों को अंग्रेजी विषय की उपलब्ध व उसमें की जाने वाली त्रुटियों से संबंधित हैं। सांस्कृतिक मूल्यों, नैतिक मूल्यों एवं सामन्जस्य को आधार मानकर भी एक शोध किया गया है। अध्यापकों की व्यावसायिक समस्या, प्रशासनिक समस्या तथा शिक्षक व्यवहार, शिक्षक क्षमता, शिक्षक प्रशिक्षण से संबंधित समस्याएँ, शिक्षक की सृजनात्मक क्षमता तथा प्रशिक्षित अध्यापकों की समस्या जैसे बहुविध आयामी शोध इस दशक में हुए हैं। संस्थाओं के तुलनात्मक विकास से संबंधित शोध भी यहां किए गए हैं।

अधिकांश कार्यकर्ताओं ने सर्वेक्षण विधि (30 शोधों में) प्रयुक्त की है तथा शेष पाँच शोधों में ऐतिहासिक विधि, तीन में प्रायोगिक विधि, एक में अन्तःवस्तु विश्लेषण विधि तथा दो में केस स्टडी (व्यक्तित्व अध्ययन विधि) प्रयोग में ली है। पीएच. डी. स्तरीय शोध को छोड़कर शेष सभी एम. एड. स्तरीय शोधों में सांख्यिकी से बच सकने वाली विधि अपनाई हैं। जैसे– पाठ्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन, ऐतिहासिक सर्वेक्षण, केस स्टडी विधि आदि में सांख्यिकी का प्रयोग नहीं के बराबर है। अनुसंधान कार्यों में सांख्यिकी से पलायन चिन्तनीय विषय है। अधिकांश शोधार्थियों ने रेण्डम सैम्पलिंग द्वारा न्यादर्श चुना हैं। जिस शहर में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय स्थित है, उससे संबंधित जिले अथवा शहर को ही न्यादर्श माना है। साक्षात्कार प्रश्नावली को अधिकांश ने शोध उपकरण बनाया है। एम. एड. स्तरीय शोध कार्यों में उपकरणों की विविधता नगण्य है जबकि पीएच. डी. स्तरीय शोध उपकरण स्तरीय हैं। तुलनात्मक शिक्षा के क्षेत्र में सम्पन्न इन अनुसंधान कार्यों में पाठ्यक्रम, मूल्यांकन, शिक्षण विधि, अध्यापन प्रशिक्षण, मूल्यांकन एवं भावात्मक एकता आदि विषयों पर कार्य नगण्य हुआ है।

भारत में या राजस्थान में स्त्री शिक्षा, शिक्षा विभाग में पंचायत समितियों के माध्यम से प्रदत्त प्राथमिक शिक्षा का विविध पहलुओं (प्रशासन उपलब्धि, शिक्षकों की मनोवृत्ति, मानसिक संतुष्टि) पर तुलनात्मक अध्ययन क्षेत्र अछूते हैं। प्रयोगात्मक अनुसंधान तथा क्रियात्मक अनुसंधान भी नगण्य किए गए है।

अनौपचारिक शिक्षा एवं प्रौढ़ शिक्षा : अनौपचारिक शिक्षा की सुविधा से वंचित नागरिकों को साक्षर बनाने, उनमें समाज, राजनीति एवं संस्कृति के प्रति जागरूकता पैदा करने, उसकी निरन्तरता बनाए रखने की दृष्टि से अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा आदि कार्यक्रम योजनाबद्ध अभियान के रूप में संचालित हैं। पिछले कई वर्षों से राज्य सरकार व अन्य

समाज-सेवी संस्थाएँ तथा उनके माध्यम से अनेक कार्यकर्ता इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने हेतु प्रयत्नशील हैं। अतः यह आवश्यक है कि इस कार्यक्रम के विभिन्न घटकों की उपयुक्तता एवं प्रभावकारिता के सन्दर्भ में अनुसंधानकर्ता शोध-कार्यों के माध्यम से तथ्यों को प्रकाश में लाएं।

इन कार्यक्रमों के विभिन्न आयामों का मूल्यांकन करने की दृष्टि से राजस्थान में 1975-88 की अवधि में शिक्षा शोधकर्मियों ने प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में सात, अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में पाँच तथा ओपन स्कूल पर एक शोध कार्य किये। इन शोध कार्यों से यह ज्ञात हुआ कि :

* प्रौढ़ों में साक्षरता के प्रति रुचि है, परन्तु वे इसकी निरन्तरता बनाए रखने में असमर्थ हैं।
* प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों में अध्यापकों की अभिवृत्ति अनुदेशिकाओं की तुलना में अधिक सकारात्मक है।
* शहरी क्षेत्र के अध्यापकों तथा ग्रामीण क्षेत्र की अध्यापिकाओं में कार्यक्रम के प्रति रुचि तुलनात्मक दृष्टि से न्यून है।
* प्रौढ़ शिक्षण के प्रशिक्षण प्राप्त अनुदेशकगण कम शैक्षणिक योग्यता के होते हुए भी कार्य के प्रति रुचिशील हैं।
* उनकी तुलना में अधिक शैक्षणिक योग्यता के परिवीक्षकों की रुचि प्रशासनिक कार्यों में ज्यादा तथा निर्देशन कार्य तथा समस्या समाधान की दृष्टि से कम है।
* प्रशासनिक ढांचे में महिला वर्ग का प्रतिनिधित्व अनुपात में कम है।
* मानदेय की अल्पता, समय पर प्राप्त न होना, कार्यक्रम संचालकों का ग्रामवासियों से सम्पर्क का अभाव आदि इस कार्यक्रम की सफलता में बाधक तत्त्व हैं।

शिक्षानुसंधान की गतिविधियाँ :

विद्याभवन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर में एम. एड. उपाधि के प्रयोजन से सन् 1953 में पहली बार राजस्थान में शिक्षानुसंधान का प्रारंभ हुआ। राजस्थान विश्वविद्यालय में सन् 1963 में पीएच. डी. का प्रथम शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया गया। इसके बाद शोध-प्रबंधों में गति आई है। वर्ष 1953 से 1974 तक एम. एड. स्तर पर 673 लघु शोध-प्रबंध लिखे गये जबकि 1975 से 1988 की अवधि में इनकी संख्या बढ़कर 1094 हो गई। पूर्व अवधि की तुलना में आलोच्य अवधि में आशातीत वृद्धि हुई। इस दृष्टि से यदि पीएच. डी. के शोध-प्रबंधों का आकलन किया जाए तो 1953 से 1974 की अवधि में 19 शोध-प्रबंध लिखे गए एवं 1975 से 1988 की अवधि में इनकी संख्या 88 हो गई। यह निश्चित रूप से इस क्षेत्र में शिक्षाविदों की बढ़ती रुचि का द्योतक है।

राजस्थान में हुए अनुसंधान कार्यों के अवलोकन से प्रतीत होता है कि इनका मुख्य उद्देश्य ज्ञान का विकास, शैक्षिक उन्नयन एवं स्तरोन्नयन, योजनाओं की क्रियान्विति में आने वाली अनुभूत कठिनाइयों का निराकरण आदि रहा है।

एम. एड. एवं पीएच. डी. स्तर के शोध कार्य के अतिरिक्त राजस्थान में "राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर' एवं 'माध्यमिक शिक्षा बोर्ड' अनुसंधान कार्य को प्रोत्साहित करने हेतु आंशिक अनुदान देते हैं। राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान प्रतिवर्ष प्रत्येक जिले से शैक्षिक क्षेत्र में अनुभूत कठिनाइयों पर शैक्षिक प्रायोजनाएं आमंत्रित कर अपने स्तर पर चयन करके चयनित प्रायोजनाओं को अनुदान प्रदान करती है। ये प्रायोजनाएँ संबंधित व्यक्ति/संस्था द्वारा उसी वित्तीय वर्ष में सम्पन्न की जाती है। 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्' भी इस क्षेत्र में व्यक्तिगत अनुसंधानों को प्रोत्साहित करने के लिए क्षेत्र से प्रायोजनाओं को आमंत्रित कर चयनित शोध प्रायोजनाओं को पारितोषिक प्रदान करती है।

वर्तमान में 'पर्यावरण प्रदूषण' एक विशेष शैक्षिक समस्या के रूप में उभर कर सामने आया है। पर्यावरण विभाग भी पर्यावरण से संबंधित अनुसंधान कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए अनुसंधानकर्त्ताओं को उदारता से आर्थिक अनुदान दे रहा है।

शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा 'जिला अनुसंधान वाक्पीठों' को इस अवधि में काफी सुदृढ़ किया गया है। प्रतिवर्ष वाक्पीठ की तीन बैठकें लगभग सभी जिलों में आयोजित की जाती हैं। इन वाक्पीठों के माध्यम से शिक्षा में उच्च योग्यताधारी व्यक्ति अपने ज्ञान का लाभ क्षेत्र को दे सकें इस हेतु अपने क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं पर प्रायोजनाओं का चयन कर अनुसंधान कार्य सम्पादित करते हैं। कुछ वर्षों से कुछ जिलों की अनुसंधान वाक्पीठें अच्छा कार्य कर रही हैं।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड इसमें श्रेष्ठ स्तर के शोध कार्य को अपनी पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित कर उनका प्रचार-प्रसार करता हैं।

राजस्थान में वर्ष 1975 से 1988 के मध्य जो अनुसंधान कार्य हुए हैं उनका लाभ स्कूलों में कार्यरत अध्यापक, शिक्षा-प्रशिक्षक और शिक्षा प्रशासक उठा सकें तथा भावी शोध में उनकी पुनरावृत्ति न हो, इस दृष्टि से इस अवधि में सम्पन्न शोध-कार्यों को संकलित कर प्रकाशित किया जा रहा है।

समग्र रूप से शिक्षानुसंधान की स्थिति को देखने से यह स्पष्ट होता कि राजस्थान में शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत अध्यापक/प्रशासक शैक्षिक दृष्टि से सतर्क हैं एवं समस्याओं के निराकरण में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर समाधान खोजने के लिए प्रयत्नशील हैं। अनुसंधान के क्षेत्र में न केवल निरन्तरता ही बनी हुई है बल्कि अनुसंधानों की संख्या में द्रुतगति से उत्तरोत्तर वृद्धि भी हो रही है।

आशा है, अनुसंधाता भूतकाल को ध्यान में रखकर, वर्तमान को सुसम्बद्ध कर, भविष्य के महान् सवेरों की ओर ले जाने के लिए अधिक गतिशील, कल्पनाशील, सजग एवं सक्रिय होकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति की भावनाओं को पूर्ण करने के लिए अनुसंधान कार्य में अपने दायित्वों को निभाते हुए शिक्षा-जगत् को नयी दिशा एवं मार्गदर्शन प्रदान कर सकेगा।

❑ ललित के. पंवार

❑ डा. शक्तिपूर्णा गुप्ता

शिक्षा-दर्शन एवं शिक्षा समाजशास्त्र

❑ शिव शंकर व्यास
❑ श्रीराम मल्होत्रा

शिक्षा-दर्शन

शिक्षा-दर्शन का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक एवं विस्तृत है क्योंकि इसमें शिक्षा के समग्र स्वरूप का विवेचन एवं विश्लेषण सन्निहित है। एतदर्थ शिक्षा-दर्शन के अन्तर्गत किए गए प्रत्येक शैक्षिक शोध एवं अनुसंधान का क्षेत्र भी स्वतः विस्तृत एवं व्यापक होगा। शिक्षा-दर्शन का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक होने के कारण इसमें शोध समस्या की समग्र स्थिति का आकलन अत्यन्त गहराई, पैनी दृष्टि, गहरी सूझ एवं वैज्ञानिक परिपक्वता के साथ किया जाता है।

भौतिक एवं प्राकृतिक विषयों से सम्बन्धित शोध की तरह विभिन्न चरों को नियन्त्रित करना शिक्षा-दर्शन की समस्याओं में सम्भव नहीं है। शिक्षा-दर्शन से सम्बन्धित समस्याओं के लिए ऐसे सैद्धान्तिक प्रतिरूप का निर्माण करना भी सम्भव नहीं है जो सर्वत्र मान्य हो एवं सहज स्वीकार्य हो, जबकि अन्य विषयानुशासनों के लिए सैद्धान्तिक प्रतिरूप उपलब्ध हैं जिनको आधार बनाकर शोध समस्याओं पर अनुसंधान कार्य किया जा सकता है। सम्भवतः इन्हीं कारणों से प्रादेशिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा-दर्शन के क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा कम संख्या में अनुसंधान कार्य हुए हैं।

समीक्षाकाल 1975-88 में शिक्षा-दर्शन के क्षेत्र में मात्र दो कार्य पीएच.डी. स्तर पर प्रकाशित हुए हैं, जबकि शिक्षा "समाज शास्त्र" के क्षेत्र में बारह शोध कार्य पीएच.डी. स्तर के प्रकाशित हुए हैं। इस प्रकार समीक्ष्य-अवधि में पीएच.डी. स्तर के कुल चौदह कार्य किए गए हैं। राष्ट्रीय स्तर पर 1973-83 की अवधि में पीएच.डी. स्तर के कुल 46 शोध कार्य पूरे किए गए। यह संख्या विगत दशक की तुलना में अधिक है। इसी प्रकार आंकड़ों के आधार पर एम. एड. स्तर पर भी शिक्षा-दर्शन एवं समाज शास्त्र के क्षेत्र में राजस्थान में जहां मात्र 46 लघु शोध

प्रबन्ध 1964-74 तक पूरे किए गए, समीक्ष्य अवधि 1975-88 में 125 शोध कार्य पूरे हुए जिनमें समाजशास्त्र से सम्बन्धित 110 एवं शिक्षा-दर्शन से सम्बन्धित 15 शोध कार्य सम्मिलित हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि एम. एड. स्तर पर किए गए शोध कार्यों की संख्या 1964-74 की तुलना में 1975-88 में दुगुनी से भी अधिक है।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर समीक्ष्य-अवधि में राजस्थान में शिक्षा-दर्शन से सम्बन्धित निम्नलिखित दो शोध कार्य पीएच.डी. स्तर पर सम्पन्न हुए। माया भार्गव (1981) ने किशोरावस्था में बालकों का गांधी-दर्शन के प्रति अभिवृत्ति का सम्बन्ध उनकी प्रतिभा, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति के परिप्रेक्ष्य में जानने का किया है। भारतीय किशोरों का दृष्टिकोण सत्य के पक्ष में है। अधिकांश किशोरों ने प्रेम, शारीरिक श्रम, स्वास्थ्य तथा हरिजन एवं महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित किया। अहिंसा के प्रति किशोरों का दृष्टिकोण नकारात्मक पाया गया। किशोरों की प्रतिभा एवं अहिंसा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक सह-सम्बन्ध पाया गया।

मल्होत्रा (1985) ने राजस्थान के सन्दर्भ में धर्मनिरपेक्ष, सम्प्रदाय आधारित एवं विशिष्ट विचारधाराओं के आधार पर संचालित शैक्षिक संस्थाओं के दर्शन एवं उनके द्वारा अपनाई जाने वाली पद्धतियों के अध्ययन में शिक्षा पुनर्जागरण एवं सम्बद्ध विकास का अध्ययन किया। मल्होत्रा के अनुसार विभिन्न ऐतिहासिक कारणों से उपजी मुस्लिम अलगाववादी प्रवृत्तियों की प्रतिक्रिया स्वरूप 1947 में समेकित विचार आधारित प्रबन्धन प्रणाली की अग्रदूत हिन्दू-समिति की स्थापना कुरूक्षेत्र में की गई। कालान्तर में उन्हीं विचारों से प्रभावित "विद्या-भारती" और "भारतीय शिक्षण मण्डल" का राष्ट्रीय स्तर पर और "भारतीय शिक्षा समिति" का राजस्थान प्रदेश स्तर पर जन्म हुआ। इन तीनों प्रबन्धन प्रणालियों ने अपने-अपने दर्शन के अनुकूल विस्तृत तथा प्रभावी पद्धतियाँ विकसित कीं। दर्शन तथा पद्धतियों के ऐक्य के आधार पर विचार आधारित प्रबन्धन प्रणाली अन्य दोनों प्रबन्धन प्रणालियों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुई है।

एम. एड. स्तर पर शिक्षा-दर्शन के क्षेत्र में मात्र 5 लघु शोध प्रबन्ध समीक्ष्य-अवधि में लिखे गए हैं। राय (1976) ने गांधी-दर्शन के अनुसार शिक्षक एवं शिक्षण के सम्प्रत्यय का अध्ययन प्रस्तुत करके बताया है कि गांधी दर्शन सत्य, अहिंसा व प्रेम पर आधारित है। अग्निहोत्री (1978) के गांधी शिक्षा-दर्शन के आलोचनात्मक अध्ययन के अनुसार गांधी का दर्शन आदर्शवाद पर आधारित है। गुप्ता (1981) ने उदयपुर विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों के दार्शनिक विश्वासों का अध्ययन किया। उनके अनुसार प्रधानाध्यापकों का कर्म के प्रति विश्वास हैं। जोशी (1982) ने स्वामी विवेकानन्द के आदर्शवादी दर्शन के शिक्षा पर पड़े प्रभाव का अध्ययन किया। सिंह (1982) ने भारतीय शिक्षा पर गांधी-दर्शन के प्रभाव का अध्ययन किया। श्रीमाली (1984) ने गांधी और टैगोर की शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। मकवाना (1985) ने गांधी के शिक्षा-दर्शन का विवेकानन्द, मदनमोहन मालवीय, टैगोर तथा अरविंद घोष के शैक्षिक विचारों से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। बाकलीवाल (1985) ने जैन समाज में जैन धर्म के प्रति माता-पिता एवं बच्चों के विश्वासों का सह-सम्बन्ध जानने का प्रयत्न किया। मधुबाला (1985) ने आधुनिक शैक्षिक परिवेश में गीता के शैक्षिक-दर्शन की उपादेयता के अध्ययन में पाया कि गीता के

अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को उस ज्ञान से मुक्त करना है जो भेदभाव उत्पन्न करता है। सभी प्राणियों में ईश्वर की अनुभूति, सामाजिक कर्त्तव्य की अनुभूति, कार्य की महत्ता, व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अस्तित्व, प्रत्येक ज्ञान का महत्व और गुरु-शिष्य के मधुर सम्बन्ध को उजागर करना शिक्षा के मुख्य उद्देश्य हैं। शर्मा (1986) ने जॉन ड्यूई के प्रयोजनवादी शैक्षिक दर्शन पर शोध कार्य किया।

कमला शर्मा (1987) ने नई शिक्षा नीति के मानवतावादी दर्शन के प्रभाव का अध्ययन करते हुए पाया कि मानवतावादी शिक्षा का लक्ष्य भावी युवावर्ग में मेल-जोल उत्पन्न करना, सृजनात्मकता, विचार सम्प्रेषण, राजनैतिक संवेदनशीलता एवं संगठनात्मक क्षमता के गुणों का विकास करना है। इसमें पर्यावरणीय साधनों से क्रिया-प्रक्रिया द्वारा अधिगम उत्पन्न किया जाना अभीष्ट है। किंग (1982) ने वर्तमान सन्दर्भ में बाईबिल का शिक्षा में योगदान विषय पर अध्ययन करते हुए पाया कि बाईबिल छात्रों एवं अभिभावकों के लिये शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभाव डालती है। गोस्वामी (1988) ने गीता दर्शन का मूल्य मीमांसिक आधार और शिक्षा का अध्ययन करते हुए बताया कि निष्काम कर्म करना महत्वपूर्ण है तथा जाति-निर्धारण जन्म से न होकर स्वेच्छा से व्यवसाय पर आधारित है तथा शिक्षा परमात्मा की अनुभूति है। गालीवाल (1988) के अनुसार रामचरित मानस में शिक्षा के प्रकार, शिक्षा के स्तर, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण, विद्यार्थियों, शिक्षक-शिक्षार्थी सम्बन्धों, अनुशासन की धारणा तथा शिक्षा में प्रशासन आदि का विवेचन है। शिक्षा-दर्शन की गीता के शिक्षा-दर्शन से तुलना की तथा रामचरितमानस के शिक्षा-दर्शन का महत्व छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों, नीति-निर्धारकों तथा प्रशासकों की दृष्टि से बताया। मीणा (1988) ने गीता-दर्शन में जीवन एवं सन्तुलित शिक्षा का स्वरूप उजागर किया।

शिक्षा समाजशास्त्र

शिक्षा समाजशास्त्र के क्षेत्र में विवेच्य काल (1975–88) में शिक्षा-दर्शन की अपेक्षा अधिक कार्य हुआ है। राजस्थान में समाजशास्त्र के क्षेत्र में पीएच. डी. स्तर पर कुल 12 शोध कार्य सम्पन्न हुए। जबकि एम. एड. स्तर पर 110 लघु शोध प्रबन्ध लिखे गये। आंकड़ों से ज्ञात होता है कि दर्शनशास्त्र की तरह ही समाजशास्त्र के क्षेत्र में (1964–74) की तुलना में इस अवधि में अधिक शोध कार्य हुआ तथा इस दशक में समाजशास्त्र से सम्बन्धित विभिन्न उपक्षेत्रों यथा– समाज और विद्यालय, जनसंख्या अभिवृद्धि का समाज पर प्रभाव, सामाजिक आर्थिक स्तर का सर्वेक्षण, सामाजिक समायोजन की समस्याएं, अनुसूचित जाति, जनजाति व आदिवासियों की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएं, छात्रों के समायोजन की समस्याएं, सामाजिक मूल्य, सामाजिक अभिवृत्ति, समूह चिन्तन, सामूहिक समायोजन की समस्याएं, नैतिक मूल्य एवं अभिवृत्तियों का विकास, सामाजिक सर्वेक्षण, सामाजिक परिवर्तन हेतु प्रभावी घटक, समाजीकरण की समस्याएं, सामाजिक संरचना के घटक तथा विद्यालय, विद्यार्थी व समाज, सामाजिक संरचना में विद्यार्थियों, शिक्षक समुदायिक संघों आदि की भूमिका पर भी इक्के-दुक्के शोध कार्य उपलब्ध हैं। फिर भी कई आयाम अधूरे हैं तथा उन पर नगण्य कार्य हुआ है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था को समझने में अन्य विषयों की तुलना में शिक्षाचर्या के क्षेत्र में अधिक अनुसन्धान हुए हैं जो इस

तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि अनुसन्धानकर्ता शिक्षा व समाजशास्त्र के क्षेत्र में योगदान दे रहे हैं। गौड़ (1974) ने शिक्षा समाजशास्त्र में पीएच. डी. स्तर पर समीक्ष्य अवधि में माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के सामाजिक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया। रेणु चौधरी (1985) ने जनसंख्या शिक्षा के प्रति शिक्षकों तथा प्रशासकों की अभिवृति के अध्ययन में पाया कि पुरुष प्रशासक और महिला प्रशासकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अन्तर है। उन्होंने यह भी पाया कि जनसंख्या शिक्षा के महत्व को प्रशासक अच्छी तरह समझते हैं।

अग्रवाल (1975) ने माध्यमिक विद्यालयों के न्यून शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की मानसिक एवं सामाजिक निष्पत्तियों का अध्ययन करके ज्ञात किया कि सामाजिक एवं आर्थिक स्तर का न्यून या अधिक उपलब्धि के साथ सार्थक सम्बन्ध नहीं है। रवीन्द्र अग्निहोत्री (1978) ने सामाजिक स्तर के सन्दर्भ में शिशुओं के भाषा-विकास पर शोध कार्य करके स्पष्ट किया कि किस-किस वर्ग के बालक किस-किस प्रकार की भाषा और व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियां करते हैं। भटनागर (1979) ने अपने शोध कार्य के माध्यम से बालकों के मूल्यों, महत्त्वाकांक्षाओं, व्यक्तित्व घटकों को स्पष्ट किया। सत्येन्द्र बहल (1982) ने किशोरों के सामाजिक समायोजन में नैतिकता तथा निष्पत्ति के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात किया है। लेकिन शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक समायोजन में कोई स्पष्ट सम्बन्ध नहीं है। नगेन्द्र श्रीवास्तव (1983) ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति छात्रों एवं सामान्य छात्रों (कला और विज्ञान) की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला कि विज्ञान के छात्र कला के छात्रों की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रदर्शित करते हैं।

उषा पाटनी, उदयपुर (1983) ने महाविद्यालयी छात्राओं के मूल्यों एवं उनकी उपलब्धि प्रेरणा में सह-सम्बन्ध का अध्ययन करने पर पाया कि तीनों संकायों (कला, वाणिज्य और विज्ञान) में अध्ययनरत छात्राओं की मूल्य संरचना में कोई महत्त्वपूर्ण अन्तर नहीं है। सभी छात्राओं द्वारा सौन्दर्य बोधक मूल्यों के प्रति प्राथमिकता दर्शाई गई। जबकि उन्हीं छात्राओं ने नैतिक मूल्यों को अन्तिम प्राथमिकता प्रदान की। उच्च उपलब्धि प्रेरित समूह ने धन एवं भौतिक मूल्यों की शीर्ष प्राथमिकता तथा सौन्दर्य बोध के मूल्यों को उसके बाद की प्राथमिकता प्रदान की है। निम्न उपलब्धि प्रेरित समूह द्वारा सामाजिक मूल्यों के प्रति अपेक्षाकृत अधिक व्यग्रता एवं चिन्ता व्यक्त की गयी । तीनों समूहों की उपलब्धि प्रेरणा का स्तर निम्न कोटि का पाया गया।

रामेश्वरी शर्मा (1986) ने कामकाजी माताओं और गैर कामकाजी माताओं के बच्चों पर अनुसन्धान में पाया कि दोनों समूहों के बच्चों का समायोजन संवेगात्मक, सामाजिक तथा शैक्षिक तीनों क्षेत्रों में अच्छा है किन्तु कामकाजी माताओं के बच्चों का स्वत्व बोध गैर कामकाजी माताओं के बच्चों की अपेक्षा अच्छा है। दोनों समूहों के बच्चों के अधिकांश व्यक्तित्व-कारकों में सार्थक अन्तर है किन्तु इन व्यक्तित्व कारकों का गुणात्मक स्तर औसत दर्जे का था। लालन-पालन की विभिन्न विधियों के आधार पर अधिकांश कामकाजी माताओं के बच्चे गैर कामकाजी माताओं के बच्चों से आगे पाये गये। अध्ययन की आदतों, मनोवृत्तियों और परीक्षा प्राप्तांकों की दृष्टि से दोनों समूहों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

पद्मनाथ महरोत्रा (1986) ने समूह चिन्तन की प्रवृत्तियों पर अपने अनुसन्धान में पाया कि अनुभव, लैंगिक स्तर, सामाजिक वातावरण, संकाय भेद, शैक्षिक स्तर, आर्थिक स्तर, आयु तथा व्यावसायिक (शैक्षिक) योग्यता का चिन्तन प्रवृत्तियों पर प्रभाव पड़ता है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के गैर शिक्षक छात्र, शिक्षक छात्रों की अपेक्षा अपने कथनों में सुनिश्चित, स्पष्ट, मौलिक और वास्तविक थे। लिंग भेद के आधार पर पुरुष वर्ग अपने कथनों में अधिक संख्या परक है। सामाजिक वातावरण के आधार पर शहरी समूह के सदस्य अपने कथनों में एकरूप, सुनिश्चित और मौलिक थे, जबकि ग्रामीण समूह के सदस्य अपने कथनों में बहुरूप, सार्वभौमिक और सामान्य थे। संकाय के आधार पर विज्ञान संकाय के छात्र अपने कथनों में एकरूप, सुनिश्चित, संख्यापरक और मौलिक थे जबकि कला वर्ग के छात्रों के कथनों में इन गुणों का अभाव पाया गया। उच्च आय वर्ग के पालितों के कथन सुनिश्चित, गुणपरक, सम्बन्धित और मौलिक पाये गये जबकि निम्न आय वर्ग के छात्रों के कथन इनसे भिन्न प्रकृति के थे। आयु का प्रभाव आंकते हुए पाया गया कि अध्यापक समूह के सदस्यों के कथन सुनिश्चित और मौलिक थे जबकि छात्र समूह के सदस्यों के कथन सार्वभौम और सामान्य थे। व्यावसायिक योग्यताधारी व्यक्तियों के कथन सुनिश्चित और मौलिक थे जबकि अकादमिक योग्यताधारी व्यक्तियों के कथन सार्वभौम और सामान्य थे।

शिक्षा समाजशास्त्र में एम. एड. स्तर पर विभिन्न उपक्षेत्रों में प्रभावी शोध कार्य किया गया है।

अध्यापक समस्याएं

लक्ष्मीनारायण वागरानी (1975) ने प्रशिक्षित स्नातक अध्यापकों का तुलनात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि अधिकांश शहरी शिक्षक प्राथमिक कक्षाएं पढ़ाने में रुचि रखते हैं। शहरी अध्यापकों की अपेक्षा गांवों के अधिसंख्य अध्यापक स्थानान्तरण चाहते हैं। मधु तम्बर, उदयपुर (1976) ने छात्राध्यापकों की सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति के अध्ययन में पाया कि छात्राध्यापिकाओं की अपेक्षा छात्राध्यापक उच्च आयु वर्ग के हैं, अधिसंख्य विवाहित हैं और प्रशिक्षण से पूर्व अधिसंख्य किसी प्रकार का व्यावसायिक अनुभव रखते थे। धनरूप चन्द्र भण्डारी (1977) ने अध्यापकों में सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन किया और पाया कि अधिकांश अध्यापक संयुक्त परिवार व्यवस्था को श्रेष्ठ मानते हैं। पत्नी के शिक्षा व्यवसाय में होने को श्रेष्ठ मानते हैं। समाज परिवर्तन में उनका विश्वास है तथा वे नौकरी-पेशे और धार्मिक विश्वासों को संयुक्त परिवार के लिये घातक मानते हैं। महावीर मेहता (1980) ने माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं कक्षा वातावरण के साथ सह-सम्बन्ध ज्ञात कर निष्कर्ष प्रस्तुत किए कि अध्यापक की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कक्षा के वातावरण के साथ धनात्मक सह-सम्बन्ध है तथा उच्च आर्थिक स्तर वाले अध्यापकों द्वारा व्याख्यान विधि का कम प्रयोग किया जाता है।

अनुसूचित जाति, जनजाति एवं आदिवासियों का सामाजिक एवं आर्थिक स्तर

प्रभा अग्रवाल (1976) ने अपने तुलनात्मक अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि अनुसूचित जाति एवं सवर्ण जाति के छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है तथा अनुसूचित जाति की छात्राओं के सामाजिक, आर्थिक स्तर व शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक सम्बन्ध हैं। दुर्गेश माथुर (1978) ने महिलाओं की उच्च शिक्षा की समस्याओं पर शोध करते हुए पाया कि उनके लिए अंग्रेजी भाषा व कठिन पाठ्यक्रम के कारण समस्याएं हैं। उन्हें पूर्ण शुल्क-मुक्ति नहीं मिलती तथा छात्रवृत्ति भी समय पर नहीं मिलती। इसके अतिरिक्त हीनता की भावना व पारिवारिक रीति-रिवाज समस्याएं पैदा करते हैं।

जोरावर सिंह (1979) ने गैर आदिवासी व आदिवासी समुदायों की विद्यालयी अपेक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। उनके अनुसार दोनों समुदाय समान रूप से विद्यालय को नेता, संरक्षक एवं मित्र की भूमिका में देखना चाहते हैं। ऋतु आडवानी (1979) ने अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की समायोजन सम्बन्धी 6 समस्याओं का अध्ययन प्रस्तुत कर निष्कर्ष निकाला कि दोनों समूहों के छात्र विद्यालय वातावरण में सुसमायोजित हैं किन्तु ये उत्सवों आदि में कम भाग लेते हैं और कक्षा क्रियाओं में झिझक अनुभव करते हैं तथा स्वजातीय छात्र एक दूसरे की सहायता करते हैं। सरोज बंसल (1979) ने आदिवासी एवं गैर आदिवासी किशोरों के मूल्यों एवं उनके व्यक्तित्व कारकों में सह-सम्बन्ध ज्ञात किया। उनके अनुसार दोनों समूह के छात्रों के मूल्यों एवं व्यक्तित्व कारकों में भिन्नता पाई गई। मूल्यों के विकास और व्यक्तित्व कारकों के विकास में सार्थक सह-सम्बन्ध भी पाया गया। गोवर्धन दिवाकर (1979) ने शहरी एवं आदिवासी समुदायों की माध्यमिक शिक्षा से अपेक्षाओं सम्बन्धी अध्ययन से ज्ञात किया कि दोनों समुदाय चाहते थे कि माध्यमिक शिक्षा जीवन की यथार्थता, ज्ञानोपार्जन, जीविकोपार्जन, शारीरिक गठन एवं चारित्रिक विकास का सोपान बने। ओमप्रकाश जोशी (1981) ने माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति और सवर्ण जाति के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा (सिद्धि जन्य मूल्य), स्वधारणा एवं शैक्षिक निष्पत्ति के तुलनात्मक अध्ययन से जाना कि सवर्ण जाति के छात्रों के उपलब्धि प्रेरणा, स्वधारणा एवं शैक्षिक निष्पत्ति में सह-सम्बन्ध अनुसूचित जाति के छात्रों की अपेक्षा अधिक सार्थक था। जगदीश चन्द्र शर्मा (1982) ने माध्यमिक स्तर के आदिवासी एवं सवर्ण छात्र-छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्तियों पर निष्कर्ष निकाला कि दोनों प्रकार के छात्र-छात्राएं आधुनिकीकरण के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति रखते हैं। गिरीश कुमार शर्मा (1983) ने शिक्षक प्रशिक्षण. महाविद्यालयों में अनुसूचित जाति एंव जनजाति के छात्राध्यापकों की समायोजनात्मक समस्याओं का अध्ययन किया। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के अधिसंख्य छात्र शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक क्षेत्रों में कोई समस्या अनुभव नहीं करते तथा इनकी अधिकांश समस्याएं संवेगात्मक एवं आर्थिक क्षेत्र की हैं। करुणा भट्ट (1983) ने पाया कि अनुसूचित जाति, जनजाति की छात्राएं हीनभाव से ग्रसित हैं। उच्च वर्ग की छात्राओं के मुकाबले में अपनी भाषा परम्परा, आचरण व रहन-सहन को वे निम्न पाती हैं।

मंजू अग्रवाल (1985) ने अनुसूचित जाति के किशोर बालकों की रुचियों, समायोजन, बुद्धिलब्धि तथा भग्नाशाओं के प्रति प्रतिक्रियाओं का समाज चिन्तक स्थिति के सन्दर्भ में निष्कर्ष दिया कि तकनीकी क्षेत्र को छोड़कर अन्य सभी क्षेत्रों में अनुसूचित जाति के छात्रों की रुचियां अन्य छात्रों के समान हैं। सामाजिक स्वीकृति व उपेक्षा का प्रभाव रुचियों पर पड़ता है। अनुसूचित जाति के छात्रों का समायोजन अपेक्षाकृत ठीक है। अहम व सुरक्षा की भावना सामान्य वर्ग में अधिक है। अमीना बानू (1986) ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति के किशोर छात्र-छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं एवं जीवन-मूल्यों के अध्ययन में देखा कि व्यावसायिक आकांक्षाओं में सर्वाधिक महत्त्व पीएच.डी., डॉक्टर, इंजीनियर, स्वास्थ्य सेवा एवं सहकारी सेवा को दिया गया है। जैलसिंह (1986) ने अनुसूचित जाति के छात्र समूहों के चिन्तन के विभिन्न आयामों के एक अध्ययन में निष्कर्ष प्रस्तुत किए कि विभिन्न कक्षाओं के छात्रों में समस्या-समाधान की योग्यता में कोई विशेष अन्तर नहीं है। दिनेश कुमार (1986) ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर, अध्ययन आदतों एवं समायोजन स्तर के अध्ययन से पाया कि अधिकांश छात्र निम्न आर्थिक स्तर के थे। प्राप्तांकों के आधार पर उनकी अध्ययन आदतें सामान्य पाई गईं। उनका समायोजन स्तर निम्न कोटि का था। मंजू सिंह (1986) ने बी.एड. स्तर के अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों की बुद्धि एवं व्यावसायिक रुचि का इनकी शिक्षण अभिरुचि से सह-सम्बन्ध का अध्ययन किया। छात्राध्यापकों की बुद्धि, व्यावसायिक रुचि एवं शिक्षण अभिरुचि में धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया। ओमप्रकाश पुरोहित (1986) ने अपने शोध-प्रबन्ध में अनुसूचित जनजाति के छात्राध्यापकों की जीवन-शैली के समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन किया। छात्राध्यापकों की जीवन-शैली का उनके समायोजन, स्वास्थ्य और सामाजिक क्षेत्र पर प्रभाव पड़ता है।

श्रीमती प्रभा भटनागर (1986) के शोध प्रबन्ध "अनुसूचित जाति के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति" में अधिकांश ने अध्यापन व्यवसाय के पक्ष में अपना मत व्यक्त किया। अनिल कुमार जैन (1986) ने अनुसूचित जनजाति के आवासीय व अनावासीय विद्यार्थियों की जीवन शैली व शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक अध्ययन में ज्ञात किया कि आवासीय व अनावासीय छात्रों में कोई विशेष अन्तर नहीं होता। राजकुमार मोगरा (1986) के अध्ययन "आवासी जनजाति तथा सामान्य शिक्षक विद्यार्थियों के मध्य अन्तः क्रिया" के अनुसार आवासीय तथा सामान्य शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में सामाजिक सम्बन्ध नहीं बन पाए। सामान्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी अधिक प्रतिष्ठा पाते हैं।

समूह समायोजन

सरला सिंह (1975) ने कक्षा नौ की छात्राओं की सामाजिक स्वीकृति को प्रभावित करने वाले तत्व नामक अध्ययन में पाया कि वे तत्व हैं : तर्क शक्ति, शैक्षिक निष्पत्ति और व्यक्तिगत

पड़ता तथा इन किशोरों में अनुपालना एवं नेतृत्व के पारस्परिक वैयक्तिक मूल्य अधिक पाए जाते हैं। यशवन्त दशोरा (1979) ने पाया कि उच्चतम शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यालयों में मानवीय सम्बन्ध मधुर थे और निर्णय लेने में लोकतान्त्रिक विधि का प्रयोग किया जाता था। आशा माथुर (1979) के अनुसार लगभग एक-तिहाई अविवाहित अध्यापिकाएं माता-पिता से संज्ञात्मक असन्तुलन अनुभव करती हैं। मतभेद का मुख्य क्षेत्र अध्यापिकाओं का व्यावसायिक क्षेत्र है। यशोदा कोठारी (1981) के अनुसार प्रधान अध्यापकों एवं अध्यापकों के परस्पर मानवीय सम्बन्ध योजना निर्माण, विद्यालय संगठन और परिवीक्षण के क्षेत्र में मधुर किन्तु क्रियान्वयन के क्षेत्र में शिथिल पाए गए। बद्रीनारायण सोनी (1982) ने पाया कि उच्च माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत छात्र मुख्यतः बुद्धिमान एवं राष्ट्र भक्त बनना चाहते हैं। दीपिका दवे (1984) के "अध्यापक शिक्षकों का सामाजिक समायोजन एवं मूल्य" में अधिकांश छात्राध्यापक समायोजित पाए गए। सुसमायोजित छात्राध्यापक वर्ग के जीवन मूल्य थे– सुखद जीवन, समानता, कार्य सम्पूर्ति, प्रसन्नता, सुन्दरता तथा शान्तिमय विश्व। बीना गुप्ता (1986) ने ज्ञात किया कि उच्च बुद्धिलब्धि वाले और उच्च सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रों वाले बालकों में स्वतन्त्रता, सहिष्णुता तथा व्यवसाय प्रियता के मूल्य अधिक मात्रा में होते हैं तथा उच्च-स्तरीय मूल्यों का पोषण करने वाली समस्याएं छात्रों में उच्च मूल्य स्थापित करने में सक्षम हैं। बीना तरन (1986) के तुलनात्मक अध्ययन में कामकाजी महिलाओं के बच्चों की अपेक्षा गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चे अधिक महत्त्वाकांक्षी, भावात्मक रूप से अधिक स्थिर, सैद्धान्तिक तथा आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों से सम्पन्न पाये गये। हरिदास हर्ष (1986) के अनुसार कौटिल्य का शिक्षा-दर्शन काफी सीमा तक वर्तमान के सन्दर्भ में ठीक बैठता है। विज्ञान की उन्नति पर बल देते हुए भी आध्यात्मिक उन्नति की शिक्षा पर इस दर्शन में बल दिया गया है। अनवरत शिक्षा तथा छात्रों की शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता जैसे आधुनिक विचार भी कौटिल्य के शिक्षा-दर्शन में हैं। सरोज चौधरी (1986) के अनुसार शिक्षित माता-पिता के परिवार छोटे आकार के पाये गये। स्नेहलता शर्मा (1988) ने निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि सामाजिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक कारणों से बालिकाओं की शिक्षा की निरन्तरता भंग होती हैं। अभिभावकों की राय में बालिकाओं का सुरक्षित भविष्य, विवाह के समय आने वाली कठिनाइयों से बचाव तथा उच्च सामाजिक स्तर प्राप्त करने की लालसा बालिकाओं की शिक्षा की निरन्तरता को बनाए रखने में सहायक कारक हैं।

नैतिक मूल्य

विजय बहादुर सिंह (1976) ने पाया कि अधिकांश स्कूली छात्रों में नैतिकता अधिक है और नैतिकता के विकास में घर का योगदान महत्त्वपूर्ण है। ललित चन्द्र तिवाड़ी (1978) ने पाया कि ग्रामीण छात्र-छात्राओं में धर्म व नैतिकता सम्बन्धी ज्ञान शहरी छात्र-छात्राओं की अपेक्षा अधिक है और इस ज्ञान का विभिन्न कक्षाओं में उत्तरोत्तर विकास हुआ है। कल्पना उपमन्यु (1980) ने हिन्दी और अंग्रेजी भाषा के अध्यापकों के मूल्यों में अन्तर पाया। धार्मिक मूल्य हिन्दी भाषा अध्यापकों में दृढ़ थे। अनुभव बढ़ने के साथ कार्य-सन्तुष्टि में भी वृद्धि हुई।

रतनलाल जैन (1981) ने पाया कि छात्र-छात्राएं महत्वाकांक्षी होते हैं और प्रेरणादायक, उत्साहपूर्ण, क्रियाशील जीवन में विश्वास करते हैं। अमरसिंह खरबड़ (1982) के अनुसार भिन्नता पूर्ण व्यवहार, वफादारी, कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी एवं नैतिकता के गुणों में छात्रों व अध्यापकों के विश्वासों में सार्थक अन्तर है। चन्द्रसिंह (1982) ने निष्कर्ष निकाला कि सभी अध्यापक ईमानदारी एवं सत्य पूर्ण जीवन में विश्वास रखते हैं। शहरी अध्यापक शालीनता एवं कृतज्ञता में ग्रामीण अध्यापकों से अच्छे पाये गये। सुबोध कुमारी शर्मा (1982) के अध्ययन में किशोर विद्यार्थियों ने परस्पर सहयोग, जीवन में सद्व्यवहार, दृढ़ निश्चय, कर्मनिष्ठा, क्षमा, ईमानदारी के महत्व को जीवन में स्वीकार किया। जीवन में आदर्शों के प्रति छात्र-छात्राओं का दृष्टिकोण नकारात्मक रहा। जयनारायण त्रिपाठी (1983) ने सैनिकों में नैतिकता, श्रद्धा, कर्तव्यनिष्ठा, ईश्वर में आस्था, वफादारी, साहस एवं ईमानदारी की अभिवृत्तियों का बाहुल्य पाया जबकि सेवाभाव व निष्ठा में कमी पाई। रश्मि कपूर (1984) के अनुसार विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर वाणिज्य वर्ग की छात्राओं की दृष्टि में सौन्दर्यात्मक मूल्य महत्वपूर्ण हैं जबकि महाविद्यालय स्तर पर विज्ञान वर्ग की छात्राओं को आर्थिक मूल्य अधिक आकर्षक लगे। दोनों स्तरों पर दोनों वर्ग की शिक्षिकाओं को नैतिक मूल्यों की अपेक्षा सौन्दर्यात्मक मूल्य अधिक प्रभावी लगे। राजेन्द्र गौड़ (1985) ने सामाजिक मूल्यों के विकास के लिए जिन माध्यमों को उपयोगी पाया, वे हैं : समाज सेवा के कार्यक्रम, महापुरुषों के जीवन-प्रसंग, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल, शैक्षणिक भ्रमण, अध्यापकों द्वारा शिक्षक राष्ट्रीय खेलों का आयोजन आदि। उमा एरन (1985) मे ग्रामीण छात्रों-छात्राओं की अपेक्षा शहरी छात्र-छात्राओं को विभिन्न नैतिक क्षेत्र के मूल्यों में पिछड़ा पाया। छात्रों की अपेक्षा छात्राएं नैतिक मूल्यों से अधिक सम्पन्न पाई गईं जबकि रजनी कुलश्रेष्ठ (1986) ने बताया कि अधिकांश छात्र व छात्राएं नैतिक हैं। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में नैतिकता अधिक है। उच्च नैतिकता और उच्च वैज्ञानिक अभिवृत्ति बहुत कम छात्र-छात्राओं में पाई गई। एस. के. सेठी (1986) ने उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों में व्यक्तिगत स्वास्थ्य, शाला सम्पत्ति की सुरक्षा, स्वच्छ गृह कार्य, पर्यावरण सुरक्षा तथा सुसम्बन्ध के मूल्यों को वरीयता क्रम में प्राप्त किया। आराधना (1986) ने "महर्षि दयानन्द के शिक्षा-दर्शन की वास्तविक पृष्ठभूमि की समीक्षा" में बताया कि महर्षि दयानन्द के शिक्षा-दर्शन में शिक्षा पाठ्यक्रम 20-वर्षीय है।

दृष्टिकोण

उमाशंकर तिवाड़ी (1977) के अनुसार शहरी/ग्रामीण छात्र-छात्राओं का सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न पक्षों के प्रति सकारात्मक दृष्किोण है। चन्द्रकिरण शर्मा (1978) ने जनसंख्या शिक्षा के प्रति छात्र तथा छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति अनुकूल बताई।

नीता बोर्डिया (1979) ने समंजन समस्याओं वाले विद्यालयी बालकों के बारे में बताया कि अभिभावक अपने बालकों के भविष्य के बारे में चिन्तित थे यद्यपि उनकी अभिवृत्ति बालकों,

व्यवस्था के क्षेत्रों में साक्षर महिलाओं का दृष्टिकोण आधुनिक व निरक्षर महिलाओं का परम्परावादी है।

शशि माथुर (1982) ने गृह विज्ञान स्नातकों एवं अन्य स्नातक महिलाओं की पोषण-आहार सम्बन्धी मनोवृत्तियों में भोजन तत्व एवं संतुलित भोजन के क्षेत्र में सार्थक अन्तर पाया। महफूजा ताज (1982) ने पाया कि राजनैतिक एंव सामाजिक क्षेत्र में परम्परावादी और धार्मिक क्षेत्र में सुधारवादी दाऊदी बोहरों ने प्रश्नावली के कथनों से सहमति व्यक्त की। पूर्णिमा गुप्ता (1983) के अनुसार बालक एवं बालिकाएं जाति-व्यवस्था के प्रति बहुत अधिक सकारात्मक अभिव्यक्ति प्रदर्शित करते हैं। राजेश कुमार पाल (1984) के अनुसार शहरी अध्यापकों एवं छात्रों की अपेक्षा ग्रामीण अध्यापक एवं छात्र नैतिक शिक्षा के प्रति अधिक समर्थक पाए गए। सभी प्रधानाध्यापकों ने समान रूप से नैतिक शिक्षा का कालांश विद्यालयों में लगाए जाने पर बल दिया। सुलेखा गुप्ता (1985) ने पाया कि सवर्ण जाति के छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति असवर्ण छात्रों की अपेक्षा अधिक थी। जयश्री शर्मा (1986) ने पता लगाया कि नैतिक शिक्षा के लिए प्रार्थना-सभा कार्यक्रम, खेलकूद, छात्र संघ, पुस्तकों एवं अध्यापकों/अभिभावकों द्वारा आदर्श प्रस्तुति के महत्व को स्वीकार किया जाता है। छात्र/छात्राओं के नैतिक विकास में अभिभावक के स्वयं के आचरण को अधिक महत्वपूर्ण माना गया। सावित्री माथुर (1986) ने मूल्य परिवर्तन एवं अभिवृत्ति परिवर्तन के अध्ययन में पाया कि उत्प्रेरणा के फलस्वरूप छात्र/छात्राओं में मूल्य परिवर्तन सम्भव है। अभिवृत्ति में भी अनुकूल दिशा में परिवर्तन पाया गया। यह परिवर्तन छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में अधिक था। अशोक कुमार सिडाना (1987) ने पाया कि छात्र-छात्राओं की विभिन्न कार्यक्रमों में रुचि में भिन्नता है। कई कार्यक्रमों को दोनों वर्ग पसन्द करते हैं। समग्र रूप से दूरदर्शन कार्यक्रम देखने में छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की रुचि अधिक है। सन्तोषरानी माथुर (1988) ने माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पक्ष में पाई। अल्पना बी. गुप्ता (1988) ने सामाजिक परिवर्तन के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण का निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि समाज सुधार के विभिन्न कार्यक्रमों तथा महिला शिक्षा, कुरीतियों का निवारण, सस्ती शिक्षा की उपलब्धता, बेरोजगारी समापन, धार्मिक क्रूरता का निवारण तथा अनेक आर्थिक एवं सांस्कृतिक उत्थान के कार्यक्रमों को लागू करके सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

सामान्य सर्वेक्षण

शैल कुमारी पालीवाल (1978) ने महिला न्यादर्श पर आधारित राजस्थान में शिक्षा अनुसन्धान की प्रवृत्तियों के अध्ययन में पाया कि महिला न्यादर्श पर आधारित पीएच. डी. स्तर का कोई अनुसन्धान कार्य नहीं हुआ है, जबकि एम.एड. स्तर के अनुसन्धानों का प्रतिशत बहुत कम है। वनस्थली विद्यापीठ में एम.एड. कक्षाएं खुलने से प्रतिशतता में कुछ वृद्धि हुई है।

प्रेम बहादुर सक्सैना (1978) ने पाया कि शिक्षा के सम्बन्ध में राजनीतिज्ञों की टिप्पणियां समान नहीं हैं। अधिकांश टिप्पणियों में राजनीतिज्ञों ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि वे किस प्रकार की शिक्षा-योजना चाहते हैं और किस प्रकार का आदमी चाहते हैं। निशा नाडकर्णी (1978) ने राजस्थान की मध्यमवर्गीय महिलाओं की प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पीढ़ियों में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सैद्धान्तिक और सौन्दर्यात्मक मूल्यों के अध्ययन में पाया कि वे हर पीढ़ी में भिन्न-भिन्न हैं। योग माया माथुर (1978) ने आवासीय विद्यालय में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तरों की किशोर छात्राओं के राजनैतिक समाजीकरण के अध्ययन में पाया कि मध्यम वर्ग की छात्राएं निर्णय प्रक्रिया में अधिक भाग लेती हैं। चन्द्रभानु जोशी (1978) ने छात्रों की सामाजिक अस्वीकृति के प्रमुख कारणों में झगड़ा करना, पढ़ने में कमजोर होना, गन्दा रहना, अच्छा खेलना न आना, दम्भी होना और अनुशासनहीन होना बताए हैं। उनके अनुसार व्यक्तित्व समायोजन घटने से सामाजिक अस्वीकृति बढ़ती हैं। ज्योति कपूर (1980) ने विभिन्न छात्र समूहों में विज्ञान के सामाजिक आधार व विज्ञान की प्रकृति के समझ के बीच सम्बन्ध के अध्ययन में विज्ञान की प्रकृति और विज्ञान के सामाजिक आधारों का अवबोधन पाया। चरणदीप कौर (1982) ने विकास के विभिन्न स्तरों पर सामाजिक व्यवहार के प्रतिमानों के अध्ययन में पाया कि 10+ से 15+ तक की आयु-वर्ग की छात्राओं के वय विकास क्रम में नकार वृत्ति, आक्रामक प्रवृत्ति, प्रभावी व्यवहार की प्रवृत्ति, मित्रता की प्रवृत्ति, सहयोग की प्रवृत्ति, निर्भरता की प्रवृत्ति, सहानुभूति, सामाजिक अनुमोदन, अनुकरण एवं प्रतिस्पर्धा की विभिन्न प्रवृत्तियां वय-क्रम के अनुसार घटती अथवा बढ़ती हैं। कमलेश कस्तुरिक (1983) ने पाया कि किशोर छात्र-छात्राओं का राजनैतिक समाजीकरण (राजनैतिक संस्थाओं, राजनैतिक दलों, भारतीय संविधान एवं स्थानीय स्वशासन आदि से सम्बन्धित जानकारी) उनके द्वारा अध्ययन किये जा रहे पाठ्यक्रम के अनुरूप होती हैं। उनका राजनैतिक समाजीकरण प्राथमिक शिक्षा से ही प्रारम्भ हो जाता है। रेखा उत्तरेजा (1983) ने पाया कि शिशुओं की सामाजिक आदतों, उनकी सहयोग की भावना, उत्सुकता, उनकी बुद्धि अथवा उनके आर्थिक स्तर से कोई सम्बन्ध नहीं है। तीव्र बुद्धि और अच्छे चारित्रिक व्यवहार में सकारात्मक सह-सम्बन्ध है। बीना रावत (1984) के अध्ययन में शब्द निर्माण, वाक्य निर्माण, प्रत्यय निर्माण, स्वतः शब्दावली तथा स्वयं प्रभुत्व के क्षेत्र में शहरी छात्र ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा अधिक सक्षम पाये गये। विजय लक्ष्मी कपूर (1985) ने पाया कि अनौपचारिक एवं औपचारिक शिक्षण विधियां विभिन्न क्षेत्रों में लोगों की ज्ञान सीमा में वृद्धि करने हेतु समान रूप से प्रभावी हैं। रजनी पाण्डे (1985) के अनुसार चिकित्सा-व्यवसाय में लगी महिलाएं, अध्यापिकाओं तथा गैर कामकाजी महिलाओं की अपेक्षा अपने व्यवसाय के प्रति उत्तम अभिवृत्ति रखती हैं। सामाजिक एवं आर्थिक स्तर तथा व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में धनात्मक सह-सम्बन्ध है। कांता टाक (1986) के 25 से 35 वर्ष की कामकाजी महिलाओं एवं शिक्षित घरेलू महिलाओं के व्यावसायिक दृष्टिकोण के अध्ययन में शिक्षित घरेलू महिलाएं उच्च सामाजिक

भोपालसिंह (1976) ने पाया कि अध्यापक जनसंख्या के सन्दर्भ में पूर्णतः जागृत हैं। वे छोटे परिवार के समर्थक हैं। शिक्षा को जनसंख्या नियन्त्रण का प्रभावी साधन मानते हैं। ओ.पी. शर्मा (1978) ने विज्ञान व कला के छात्रों व अध्यापकों में विज्ञान के सामाजिक आधार के कुछ बिन्दुओं पर अवबोध उत्तम पाया। पापा गोस्वामी (1978) ने जनसंख्या शिक्षा विषय पर दो छात्र समूहों के तुलनात्मक अध्ययन में प्रायोगिक समूह की जनसंख्या शिक्षा ग्रहण क्षमता नियन्त्रित समूह से अधिक पाई। बंशीधर शर्मा (1978) ने कक्षा 10 में अनुत्तीर्ण पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत छात्रों का प्रकरण अध्ययन किया। छात्र आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न परिवारों के थे, किन्तु बुद्धि परीक्षण में औसत अथवा औसत से नीचे पाए गये।। वे सामान्यतः बहिर्मुखी व्यक्तित्व के थे। उनका व्यक्तित्व समायोजन सन्तोषजनक था किन्तु उनमें खराब आदतें पाई गईं। दमयन्ती सक्सैना (1979) ने विद्या भवन उच्च माध्यमिक विद्यालय के अधिकांश छात्रों को उच्च एवं मध्यम वर्ग का पाया। चन्द्रमोहन उपाध्याय (1981) ने पाया कि छात्र, अध्यापक एवं अभिभावक लगभग समान रूप से जनसंख्या वृद्धि के कुपरिणाम को जानते थे। विमला सिंह (1981) ने अधिकारी वर्ग, व्यापारी वर्ग और लिपिक वर्ग के बालकों के सामाजिक व्यवहार के प्रतिमानों में सार्थक अन्तर पाया। सरिता रानी (1981) ने मानविकी तथा विज्ञान के माध्यमिक स्तरीय किशोर छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक जागरूकता के तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि वर्ग-चयन का छात्र-छात्राओं की सामाजिक जागरूकता पर कोई प्रभाव नहीं है। विद्यालय में उपलब्ध वातावरण भी जागरूकता को प्रभावित नहीं करता। अलका गाजरी (1981) ने उच्च व न्यून परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों के किशोर छात्रों की राजनैतिक जागरूकता के तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि विज्ञान वर्ग व उच्चतम कक्षा 11 के छात्र अन्य वर्गों की अपेक्षा अधिक राजनैतिक जागरूकता रखते थे। विद्यालय के परीक्षा परिणाम का छात्रों की राजनैतिक जागरूकता पर कोई प्रभाव नहीं था। रीना कुमारी गुप्ता (1982) के अनुसार ग्रामीण विद्यालयों में जाने वाले छात्रों की समस्याओं का मुख्य क्षेत्र शैक्षिक था। पाठों का सार लेने, प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने आदि में उन्हें कठिनाई महसूस होती थी। हरविन्दर कौर (1982) ने निरीक्षण गृह के अन्तेवासियों का वृत्त अध्ययन किया। अधिकतर अन्तेवासियों के उपचारी व्यवहार का कारण उनका निम्न आर्थिक/सामाजिक स्तर का होना पाया गया। उनका अपने माता-पिता व निरीक्षण-गृह के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया। स्नेह प्रभा शर्मा (1982) ने पता लगाया कि छात्राओं में सामाजिक चेतना विद्यमान रहती है और अध्ययन-विषय तथा आयु-स्तर का सामाजिक चेतना पर प्रभाव पड़ता है। सरोज शर्मा (1983) ने ज्ञात किया कि सामाजिक-आर्थिक वर्ग भेद बालकों की भाषा सम्पन्नता को प्रभावित करते हैं। बालिकाओं की भाषा सम्पन्नता बालकों की अपेक्षा अधिक है। श्याम मनोहर (1984) ने सघन ग्राम्य विकास के प्रति ग्रामीण किशोरों की संचेतना का अध्ययन किया। उनके अनुसार ग्रामीण किशोर ग्रामों की समस्याओं के प्रति सचेत हैं। उनमें शैक्षिक, राजनैतिक, व्यावसायिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी क्षेत्रों के प्रति भी चेतना है। राष्ट्रीय चेतना कम है। पुष्पलता शर्मा (1984) ने विभिन्न स्तरों पर कार्यरत महिलाओं की समस्याओं के तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि नर्स, पुलिस कांस्टेबल, टेलीफोन ऑपरेटर, अध्यापिका आदि व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं को कई तरह की

समस्याओं का सामना करना पड़ता है। नर्स को आर्थिक क्षेत्र में, पुलिस कांस्टेबल को सुरक्षा के क्षेत्र में और अध्यापिका को सामंजस्य के क्षेत्र में सबसे अधिक कठिनाई है। सतीश पाल सिंह (1985) ने परिवार के आकार के आधार पर किशोर छात्रों के समायोजन एवं दुश्चिन्ता का मापन कर पाया कि छोटे परिवार के छात्र बड़े परिवार के छात्रों की अपेक्षा अधिक समायोजित हैं। कद की दृष्टि से भी छोटे परिवार के छात्र अधिक उत्तम पाए गए। अंशुमाली (1985) ने गरीबी के रेखा से नीचे के परिवारों की छात्राओं की दुश्चिन्ता एवं उत्तरदायित्व की भावनाओं का मापन किया। छात्राओं की उत्तरदायित्व की भावनाओं व उनकी दुश्चिन्ताओं में कोई सार्थक-सम्बन्ध नहीं है। आशा बाकलीवाल (1985) ने जैन समाज में जैन धर्म के प्रति माता-पिता के विश्वासों एवं उनके बच्चों के विश्वासों के मध्य सह-सम्बन्ध ज्ञात किया। पिता एवं उनकी सन्तानों के मध्य धार्मिक विश्वासों में सह-सम्बन्ध पाया गया। शिवचरण लाल मेनारिया (1985) ने पाया कि छात्रों की अध्ययन स्थिति एवं निरन्तरता पर छात्रों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का प्रभाव पड़ता है किन्तु उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। मंजु सुखवाल (1985) ने पाया कि गन्दी बस्तियों का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर बुरा प्रभाव पड़ता है। वे विद्यालय में नियमित नहीं रह पाते और उनमें कई चारित्रिक दोष आ जाते हैं। अनिल कुमार शुक्ला (1986) ने पाया कि उदयपुर शहर में स्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत छात्रों का, पर्यावरण प्रदूषण के प्रति, जागरूकता का स्तर बहुत नीचा था। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में यह जागरूकता अधिक पाई गई। रामप्रकाश शर्मा (1986) ने मालूम किया कि हमारे परिवेश में बालक में वर्ग व वर्गीकरण की क्षमता 8 वर्ष की आयु के पश्चात् आती है। लिंग का इस आयु सीमा पर कोई प्रभाव नहीं है। शैक्षिक निष्पत्ति और वर्गीकरण क्षमता में धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया। विमल व्यास (1987) ने माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक पिछड़ेपन के कारणों का अध्ययन किया और पाया कि बड़ा परिवार, अशिक्षित माता-पिता, असुविधाजनक निवास, शैक्षिक सामग्री की अनुपलब्धता आदि प्रमुख कारण हैं। इसके साथ ही शिक्षकों का अभिमत संकलित किया गया जिसमें सभी सामान्यतः चर्चित कारणों को गिनाया गया। अशोक कुमार पूनिया (1987) ने पाया कि आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से कमजोर बालक-बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में न्यूनता रहती है। अनीता अरोड़ा (1988) ने पाया कि औपचारिक शिक्षा लड़कियों के गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, संवेगात्मक समायोजन तथा मानसिक विकास में कोई विशेष सहायता नहीं करती जबकि लड़कियों का सामाजिक समायोजन, साहित्यिक व सांस्कृतिक रुचियाँ तथा समग्र रुचियां औपचारिक शिक्षा से प्रभावित होती हैं। सरला माथुर (1987) ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में शिक्षण संस्थाओं के योगदान का अध्ययन किया और पाया कि राजधानी दिल्ली के निकट होने के कारण भरतपुर, अलवर तथा जयपुर जिले की शिक्षण संस्थाओं ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में प्रमुखता से भाग लिया। कमला जैन (1987) ने राजस्थान विद्यापीठ के संगठन और असुविधाजीवी वर्ग के शैक्षिक विकास में इसकी भूमिका का अध्ययन कर निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि विद्यापीठ के संगठन [illegible]

विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त हो गया है। दया दवे (1987) ने विद्याभवन वन शाला शिविर का किशोर छात्र-छात्राओं के सामाजिक मूल्यों एवं मैत्री प्रतिरूपों पर होने वाले प्रभावों का अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकाला कि किशोर छात्र-छात्राओं के सामाजिक मूल्यों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता और नेतृत्व गुण विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

इन अध्ययनों के अवलोकन से यह विदित होता है कि अधिकांश अध्ययनों में सर्वेक्षण विधि का ही उपयोग किया गया है क्योंकि सर्वेक्षण विधि ही सामाजिक शोध के क्षेत्र के लिये अधिक उपादेय है। अधिकांश अध्ययन कार्य माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों के न्यादर्श पर लिए गए हैं। अधिकांश अध्ययनों में विवरणात्मक सांख्यिकी विधियां ही काम में ली गई हैं जबकि निष्कर्षों को उच्च सांख्यिकी पद्धतियों के उपयोग से अधिक पुष्ट एवं प्रामाणिक किये जाने की उपेक्षा बनी हुई है। दत्त सामग्री के संकलन में शिक्षक निर्मित उपकरणों का उपयोग किया गया है। उपकरणों में प्रश्नावली, साक्षात्कार, प्रेक्षण अनुसूची, सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी, परीक्षाओं आदि का प्रयोग अधिकांश शोध कार्यों में किया गया है।

सम्भावनाएं एवं सुझाव

यद्यपि शिक्षा-दर्शन के सम्बन्ध में पूर्वापेक्षा मात्रात्मक दृष्टि से अधिक शोध कार्य हुआ हैं परन्तु क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से देखें तो लगेगा कि बहुत से महत्वपूर्ण क्षेत्र छूट गये हैं। उदाहरणार्थ – गांधी, टैगोर आदि के दर्शन पर शोध कार्य अवश्य हुआ है परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इनकी प्रभावी प्रासंगिकता का अध्ययन अपेक्षित है।

वाचस्पति शोध-सार

माया भार्गव: गांधी दर्शन के प्रति किशोरों की अभिवृत्ति का आलोचनात्मक अध्ययन तथा उसका बुद्धि, समानार्थिक स्तर तथा सम्प्राप्ति का आलोचनात्मक अध्ययन। पीएच. डी., राजस्थान विश्वविद्यालय , 1981

मुख्य निष्कर्ष

1. भारतीय किशोरों का दृष्टिकोण सत्य के पक्ष में है । अधिकांश किशोरों मे प्रेम, शारीरिक श्रम, स्वास्थ्य तथा हरिजन एवं महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित किया । 2. अहिंसा मूल्य के प्रति किशोरों का दृष्टिकोण नकारात्मक पाया गया । 3. किशोरों की प्रतिभा और उनके अहिंसा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक सह-सम्बन्ध पाया गया । 4. किशोरों के आर्थिक-सामाजिक स्तर और उनके महिलाओं के प्रति सम्मान के भाव में सार्थक सह-सम्बन्ध दृष्टिगत हुआ । 5. किशोरों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का सार्थक सह-सम्बन्ध उनके अहिंसा एवं स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण में पाया गया ।

Education
110016
Date

आर. एस. गौड़ : राजस्थान के माध्यमिक विद्यार्थियों के मूल्यों एवं प्रत्यक्षण तथा उनके सन्दर्भ में अधिगम का अध्ययन। पीएच. डी., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1974

मुख्य निष्कर्ष

1. शहरी छात्र छात्राएँ अपने आर्थिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों में भिन्नता रखती हैं। 2. ग्रामीण छात्र-छात्राएँ अपने विभिन्न मूल्यों में कोई भिन्नता नहीं रखतीं। 3. ग्रामीण और शहरी छात्राएँ अपने सैद्धान्तिक और आध्यात्मिक मूल्यों में भिन्नता रखती हैं। 4. शहरी छात्र-छात्राएँ उनके स्व-प्रत्यय के पाँचों प्रकारों में अपने आप में प्रात्यात्मिक समानता रखती हैं। 5. लिंग भेद का प्रभाव शहरी छात्र-छात्राओं में नहीं देखा गया जबकि ग्रामीण छात्र-छात्राओं में इसका अत्यधिक प्रभाव है । 6. ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि शहरी क्षेत्र के छात्रों की तुलना में अधिक है । छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि (ग्रामीण शहरी दोनों में) समानता का आभास है। 7. शहरी और ग्रामीण छात्र-छात्राओं की घर, विद्यालय, समाज और परिवार के सम्बन्ध में अभिवृत्ति समान है ।

शान्ता कुमारी अग्रवाल : राजस्थान में माध्यमिक स्तर पर न्यून सम्प्राप्ति का मनोसामाजिक अध्ययन। पीएच. डी., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1975

मुख्य निष्कर्ष

1. न्यून उपलब्धि वाले छात्र वास्तविकता का सामना करने में अक्षम होते हैं । ऐसे छात्र मूल रूप से अनुशासनहीन, कम जागरूक तथा कम उत्तरदायित्व निभाने वाले व्यक्तियों से मेल खाते हैं । 2. न्यून उपलब्धि वाले छात्र अधिक उपलब्धि वाले छात्रों की तुलना में कम हिम्मत वाले कार्य करते पाए गए । सामाजिक दृष्टि से ऐसे छात्र कम बहादुर व कम उत्तरदायी पाए गए। वे छात्र अधिकांश रूप से परावलम्बी पाए गए । 3. न्यून उपलब्धि वाले छात्र अधिकतर व्यक्तिवादी, शंकालु, अड़चनें पैदा करने वाले, कार्य में अरुचि दिखाने वाले तथा स्वयं निर्णय लेने में कम क्षमतावान पाए गए । 4. शहरी न्यून उपलब्धि वाले छात्र ग्रामीण न्यून उपलब्धि वाले छात्रों की अपेक्षा अधिक उत्तेजित, अधिक अधीर, अधिक ईर्ष्यालु तथा अधिक स्वार्थी पाए गए । 5. जीवन-मूल्यों के क्षेत्र में अधिक उपलब्धि वाले छात्र शैक्षिक, सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों में अधिक समृद्ध पाए गए जबकि भौतिक, धार्मिक तथा व्यक्तिगत मूल्यों में दोनों समूह समान थे । 6. न्यून उपलब्धि वाले छात्रों के माता-पिताओं की अपेक्षा अधिक उपलब्धि वाले छात्रों के माता-पिताओं की मान्यताएँ अधिक शैक्षिक पाई गईं । 7. सामाजिक एवं आर्थिक स्तर का न्यून अथवा अधिक उपलब्धि के साथ सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं पाया गया ।

जगदीश नारायण भटनागर : राजस्थान के किशोरों के मूल्यों, आकांक्षाओं तथा व्यक्तित्व घटकों का अध्ययन। पीएच. डी., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

मुख्य निष्कर्ष

महत्त्वपूर्ण मानते हैं क्योंकि यह उनको आरामदायक जीवन बिताने में सहायता प्रदान करता है। 3. छात्रों की एक बहुत बड़ी संख्या ने देश सेवा को महत्वपूर्ण माना है और वे समाजवाद के पक्षधर हैं। 4. सभी छात्रों ने विश्वबन्धुत्व और भाईचारे को चाहा है । 5. छात्र नेता अपने माता-पिता के प्रति सम्मान का भाव रखते हैं । 6. अधिकांश छात्र आशावादी और महत्वाकांक्षी हैं ।

नरेन्द्र एन. श्रीवास्तव : अनुसूचित जाति और जनजाति के विज्ञान और कला के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन । पीएच. डी., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1983

मुख्य निष्कर्ष

1. विज्ञान के छात्र कला के छात्रों की अपेक्षा ज्यादा वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रदर्शित करते हैं। 2. सामान्य जातियों के छात्र-छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर उनके लैंगिक भेद का प्रभाव पड़ता है जबकि अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्र/छात्राओं पर यह प्रभाव नगण्य है। 3. शैक्षिक स्तर के अनुसार वैज्ञानिक अभिवृत्ति कें विकास में परिपक्वता उच्च माध्यमिक स्तर तक आ पाती है। 4. वैज्ञानिक अभिवृत्ति में उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं स्नातक स्तर के छात्रों में कोई विशेष अन्तर नहीं पाया गया। 5. अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति तथा सामान्य जाति के छात्रों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास में स्पष्ट अन्तर पाया गया ।

उषा पाटनी : महाविद्यालयी छात्राओं के मूल्य तथा उनकी सम्प्राप्ति उत्प्रेरण से सम्बन्ध का अध्ययन। पीएच. डी., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

मुख्य निष्कर्ष

1. तीनों संकायों (कला, वाणिज्य और विज्ञान) में अध्ययनरत छात्राओं की मूल्य संरचना में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है । 2. सभी छात्राओं द्वारा सौन्दर्यबोधक मूल्यों के प्रति प्राथमिकता दर्शाई गयी है जबकि नैतिक मूल्यों को अन्तिम प्राथमिकता दी गई है । 3. उच्च सम्प्राप्ति उत्प्रेरित समूह धन एवं भौतिक मूल्यों को शीर्ष प्राथमिकता तथा सौन्दर्यबोध मूल्य को उसके बाद प्राथमिकता देता है जबकि निम्न सम्प्राप्ति उत्प्रेरित समूह द्वारा सामाजिक मूल्यों के प्रति अपेक्षाकृत अधिक व्यग्रता एवं चिन्ता व्यक्त की गई है । 4. तीनों समूहों की सम्प्राप्ति उत्प्रेरणा स्तर निम्न कोटि का पाया गया है ।

श्रीराम : राजस्थान के विशिष्ट सन्दर्भ में धर्मनिरपेक्ष, वाद आधारित तथा आदर्शात्मक शिक्षा संस्थान के दर्शन एवं व्यवहार का अध्ययन। पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1985

मुख्य निष्कर्ष

1. 1947 में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् संविधान में धर्मनिरपेक्षता को मूल के रूप में स्वीकार कर लिया गया और सार्वजनिक वित्त पर आधारित सम्पूर्ण प्रबन्धन व्यवस्था धर्मनिरपेक्ष हो गई। 2. सम्प्रदाय आधारित प्रबन्धन व्यवस्था की नींव ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारियों/कर्मचारियों के साथ आए ईसाई पादरियों द्वारा डाली गई। विदेशी मिशनों द्वारा प्रेषित तथा सीरामपुर ट्रायों,

चार्ल्स ग्रेन्ट और अलैग्जेंडर डफ जैसे अग्रगामी पादरियों द्वारा प्रचलित यह प्रबन्धन व्यवस्था भारत में अंग्रेजी राज्य के उत्तरोत्तर विस्तार के साथ फैलती गई। शिक्षा में इस प्रबन्ध व्यवस्था का योगदान प्रभावी रहा। 3. विचार आधारित प्रबन्धन व्यवस्था का जन्म ईसाई मिशनरियों द्वारा स्थापित सम्प्रदाय आधारित प्रबन्धन व्यवस्था की भारतीय प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। उस प्रबन्धन व्यवस्था के तीन मुख्य आधार थे–धर्म का तर्कसंगत स्वरूप, समाज-सुधार और राष्ट्रीय चेतना। ब्रह्म समाज, आर्य समाज और थियोसोफी आन्दोलन के नेताओं ने उस व्यवस्था को बल दिया। उस व्यवस्था के राष्ट्रीय स्वरूप को बंगभंग, स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा, जामिया मिलिया के आन्दोलनों तथा वर्धा शिक्षा योजना से बल मिला। 4. विभिन्न ऐतिहासिक कारणों से उपजी अलगाववादी प्रवृत्तियों की प्रतिक्रिया स्वरूप 1947 में विचार आधारित प्रबन्धन व्यवस्था की अग्रगामी संरचना स्वरूप कुरुक्षेत्र में हिन्दू समिति की स्थापना की गई। कालान्तर में उन्हीं विचारों से प्रभावित 'विद्या भारती' और 'भारतीय शिक्षण मण्डल' का राष्ट्रीय स्तर पर और 'भारतीय शिक्षा समिति' का राजस्थान प्रदेश स्तर पर जन्म हुआ। 5. तीनों प्रबन्धन व्यवस्थाओं ने अपने-अपने दर्शन के अनुकूल विस्तृत एवं प्रभावी पद्धतियाँ विकसित कीं। 6. दर्शन एवं पद्धतियों के ऐक्य के आधार पर विचार आधारित प्रबन्धन व्यवस्था अन्य दोनों प्रबन्धन व्यवस्थाओं की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुई है।

रामेश्वरी शर्मा: कार्यरत और अकार्यरत माताओं के बच्चों का तुलनात्मक अध्ययन। पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1986

मुख्य निष्कर्ष

1. दोनों समूहों के बच्चों का समायोजन तीनों क्षेत्रों (संवेगात्मक, सामाजिक तथा शैक्षिक) में अच्छा पाया गया। 2. कार्यरत माताओं के बच्चों का स्वत्व बोध अकार्यरत माताओं के बच्चों की अपेक्षा अच्छा पाया गया। 3. व्यक्तित्व विशेषकों की दृष्टि से दोनों समूहों के बच्चों के अधिकांश व्यक्तित्व कारकों में सार्थक अन्तर पाया गया। 4. दोनों समूहों के बच्चों के व्यक्तित्व कारकों का गुणात्मक स्तर औसत दर्जे का था। 5. लालन-पालन की विभिन्न विधियों के आधार पर अधिकांश कार्यरत माताओं के बच्चे अकार्यरत माताओं के बच्चों से आगे पाए गए। 6. अध्ययन की आदतों, मनोवृत्तियों, परीक्षा प्राप्तांकों की दृष्टि से दोनों समूहों के बच्चों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

पदमनाथ मेहरोत्रा: समूह चिन्तन में प्रवृत्तियाँ। पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1986

मुख्य निष्कर्ष

1. शैक्षिक क्षेत्र से सम्बन्धित 30 समूहों की चिन्तन प्रक्रिया का अध्ययन कर पाया गया कि अनुभव, लैंगिक अन्तर, सामाजिक वातावरण, सम्बन्धित संकाय, शैक्षिक स्तर, आय का स्तर, आयु तथा व्यावसायिक शैक्षिक योग्यता का चिन्तन प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ता है। 2. यह पाया गया है

कथनों में संख्यापरक है। 4. सामाजिक वातावरण को आधार मानते हुए शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के दो समूहों का अध्ययन कर पाया गया कि शहरी समूह के सदस्य अपने कथनों में एकरूप सुनिश्चित और मौलिक थे जबकि ग्रामीण समूह के सदस्य अपने कथनों में बहुरूप, सार्वभौमिक और सामान्य थे। 5. संकाय के आधार पर पाया गया कि विज्ञान संकाय के छात्र अपने कथनों में एकरूप सुनिश्चित, संख्यापरक, संबन्धित और मौलिक थे जबकि कला संकाय के छात्र इनके विपरीत थे। 6. शैक्षिक स्तर का प्रभाव स्पष्ट हुआ जब पाया गया कि स्नातकोत्तर छात्रों के कथन इनके विपरीत थे। 7. उच्च आय वर्ग के व्यक्तियों के पालितों के कथन सुनिश्चित, गुणापरक, सम्बन्धित और मौलिक पाये गये जबकि निम्न आय स्तर के परिणाम इससे भिन्न थे। 8. आयु का प्रभाव आंकते हुए पाया गया कि अध्यापक समूह के सदस्यों के कथन सुनिश्चित और मौलिक थे जबकि छात्र समूह के सदस्यों के कथन सार्वभौम, सामान्य थे। 9. व्यावसायिक योग्यताधारी व्यक्तियों के कथन सुनिश्चित और मौलिक थे। जबकि अकादमिक योग्यताधारी व्यक्तियों के कथन सार्वभौम, सामान्य थे।

रेणु चौधरी : राजस्थान के अध्यापकों एवं प्रशासकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियाँ। पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1985

मुख्य निष्कर्ष

1. शिक्षा विभाग राजस्थान में कार्यरत अध्यापकों और अध्यापिकाओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है। 2. शिक्षा विभाग, राजस्थान में कार्यरत पुरुष शिक्षा प्रशासकों और महिला शिक्षा प्रशासकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अन्तर है। 3. जनसंख्या शिक्षा के महत्व को प्रशासक ज्यादा अच्छी तरह समझते हैं। 4. अध्यापिकाएं और महिला प्रशासक जनसंख्या शिक्षा के महत्व को ज्यादा अच्छी तरह समझते हैं।

शोध-अनुक्रमणिका

अग्निहोत्री, विमलेश : A critical study of the theory of education as advocated by Gandhiji, M. Ed., Raj. Uni., 1976

अग्रवाल, प्रभा : कक्षा 10 के परिगणित एवं उपरिगणित जातियों के सामाजिक, आर्थिक स्तर के आधार पर विभिन्न वर्गों के छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

अग्रवाल, मंजू : अनुसूचित जाति के किशोर बालकों की रुचियों, समायोजन, बुद्धि-लब्धि तथा भग्नाशाओं के प्रति प्रतिक्रियाओं का समाजान्तिक स्थिति के सन्दर्भ में अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

अग्रवाल, शान्ता : A Psycho-social study of academic under achievement at secondary school level in the State of Rajasthan, Ph. D., Raj. Uni., 1975

आडवानी, ऋतु : अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की समायोजन समस्याएँ , एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

श्रीमाली, अंशु : गरीबी की रेखा से नीचे के परिवारों की छात्राओं की दुश्चिन्ता एवं उत्तरदायित्व की भावनाओं का मापन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

बानू, अमीना : अनुसूचित जाति एवं जनजाति के किशोर छात्र-छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं एवं जीवन-मूल्यों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

अरोड़ा, अनीता : छात्राओं के विकास पर औपचारिक शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1988

अरोड़ा, रीता : Social mobility among teachers, Ph. D., Raj. Uni., 1986

उत्तरेजा, रेखा : शिशुओं के सामाजिक व्यवहार का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, राज. विश्वविद्यालय, 1983

उपमन्यु, कल्पना : भाषा अध्यापकों के मूल्य एवं कार्य सन्तुष्टि, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

उपाध्याय, चन्द्रमोहन : जनसंख्या शिक्षा के प्रति छात्रों, अध्यापकों एवं अभिभावकों की अभिवृत्ति एवं जागरूकता का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

एरन, उमा : माध्यमिक स्तर के ग्रामीणों एवं शहरी बालक-बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

कपूर, ज्योति : A study of the reactionship between an understanding of the social aspects of science and the nature of science among different groups of students, M. Ed., Raj. Uni., 1980

कपूर, रश्मि : विद्यालय तथा महाविद्यालय स्तर पर शिक्षकों एवं छात्राओं के जीवन मूल्यों के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन,

कस्तुरिक, कमलेश : किशोर छात्र व छात्राओं के राजनैतिक समाजीकरण का एक विकासात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

किंग, डायनाडॉली : वर्तमान सन्दर्भ में बाईबल का शिक्षा में योगदान, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

कुमार, दिनेश : अनुसुचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर, अध्ययन आदतें एवं समायोजन स्तर का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

कुमारी, सुधा : अर्थ ग्रहण की योग्यता को प्रभावित करने वाले कुछ कारकों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

कुलश्रेष्ठ, रजनी : उच्च माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों में नैतिकता और उसका वैज्ञानिक अभिवृत्ति से सम्बन्ध, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

कोठारी, यशोदा : माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों एवं अध्यापकों के परस्पर मानवीय सम्बन्ध–एक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

कौर, चरनदीप : विकास के विभिन्न स्तरों पर सामाजिक व्यवहार के प्रतिमानों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

कौर, हरजिन्दर : निरीक्षण गृह के इनमेट्स का वृत्त अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

खरवड़, अमरसिंह : उदयपुर नगर के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों व अध्यापकों के नैतिक विश्वास, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

खांट, कमलकिशोर : जनजातीय क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के पुस्तकालयों की कार्य-व्यवस्था का अध्ययन, एम. एड., ...1977

गाजरी, अलका : उच्च व न्यून परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों के विभिन्न पाठ्य विषय समूहों के किशोर छात्रों की राजनैतिक जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

गुप्ता, अल्पनानी : सामाजिक परिवर्तन के प्रति अध्यापकों का दृष्टिकोण –तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

गुप्ता, बीना : मूल्य पोषण एवं व्यावहारिकता के प्रति किशोरों में भिन्नता के कारणों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

गुप्ता, पूर्णिमा : जाति-व्यवस्था के प्रति छात्रों की अभिवृत्ति एवं शोध-प्रबन्ध गवेषणात्मक, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

गुप्ता, रीताकुमारी : ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में जाने वाले छात्रों की समस्याओं का अध्ययन, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1982

गुप्ता, शोभा : उदयपुर विश्वविद्यालय के छात्राध्यापकों के दार्शनिक विश्वासों का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

गुप्ता, सुलेखा : माध्यमिक स्तर के सवर्ण जाति एवं असवर्ण जाति के छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1985

गोस्वामी, गोविन्द लाल : राजस्थान की जिला स्तर पर चयनित विद्यालय पत्रिकाओं का शिल्प-परक एवं वस्तुपरक विश्लेषणात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

गोस्वामी, पापा : A comparison of achievements of two groups of students exposed to the content on population education, M. Ed., Udaipur Uni., 1978

गोस्वामी, शिखा : गीता दर्शन का मूल्य मीमांसिक आधार और शिक्षा – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

गौड़, राजेन्द्र कुमार : सामाजिक मूल्यों के विकास हेतु माध्यमों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

गौड़, आर. एस. : A study of values and perceptions of high school students of the State of Rajasthan and their relation learning, Ph. D., Raj. Uni., 1974

चौधरी, रेणु : Attitude of teachers and administrators towards population education in Rajasthan, Ph. D., Raj. Uni., 1985

जैल सिंह : A study of some aspects of thinking among certain groups of scheduled caste pupils, M.Ed., Raj. Uni., 1986

जैन, अनिलकुमार : अनुसूचित जनजाति के आवासीय व अनावासीय विद्यार्थियों की जीवन-शैली व शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड.,

जैन, रतनलाल : माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन एवं उनका कक्षानुशासन और अनुशिक्षण से सम्बन्ध, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

जोशी, ओमप्रकाश : माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति और सवर्ण जाति के छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा (सिद्धीजन्य मूल्य) स्वधारणा एवं शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

जोशी, गीता : स्वामी विवेकानन्द का आदर्शवादी दर्शन तथा उसका शिक्षा पर प्रभाव, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

जोशी, चन्द्रभानू : माध्यमिक स्तर पर छात्र-छात्राओं में सामाजिक अस्वीकृति के कारण तथा उनका व्यक्तित्व समायोजन व आर्थिक स्थिति से सम्बन्ध निर्देशन हेतु, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

टाक, कान्ता : 25 से 35 वर्ष की कामकाजी महिलाओं एवं शिक्षित घरेलू महिलाओं के व्यावसायिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1986

सम्बर, मधु : विद्याभवन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर के सत्र 1975–76 के छात्राध्यापकों की सामाजिक आर्थिक परिस्थिति, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1976

तिवाडी, ललितचंद्र : किशोरावस्था में धार्मिक और नैतिक विकास, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

ताज, महफूज़ा : उदयपुर नगर के दाऊदी बोहरा समुदाय के सुधारवादी तथा परम्परावादी व्यक्तियों की विचारधाराओं से सम्बन्धित अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्येयन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

तिवारी, उमाशंकर : किशोर छात्रों का सामाजिक परिवर्तन के प्रति दृष्टिकोणों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

दक, प्रेम : विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का छात्राध्यापक एवं समूह सम्बन्ध पर प्रभाव, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1976

दशोरा, यशवंत : उदयपुर नगर की उच्चतम एवं निम्नतम शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में मानवीय सम्बन्धों का स्वरूप, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

दवे, दया : विद्याभवन वनशाला शिविर का किशोर छात्र-छात्राओं के सामाजिक मूल्यों एवं मैत्री प्रतिरूपों पर होनें वाले प्रभाव का अध्ययन, एम. एड., डबोक विश्वविद्यालय, 1987

दिवाकर, गोवर्धन : शहरी एवं आदिवासी समुदाय की माध्यमिक शिक्षा से अपेक्षाएँ, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

दुबे, दीपिका : अध्यापक शिक्षकों का सामाजिक समायोजन एवं मूल्यांकन –एक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1984

नागर, महेन्द्रा : लोकमान्य तिलक शिक्षक महाविद्यालय में आयोजित शैक्षिक सामाजिक कार्य का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

नाडकर्णी, निशा : राजस्थान की मध्यमवर्गीय महिलाओं के सामाजिक परिवर्तन का शिक्षा के सन्दर्भ में अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

नौलखा, रंजना : संयुक्त परिवार के सामाजिक परिवेश में पले विद्यालयी किशोरों के व्यक्तित्व सम्बन्धी कतिपय तत्वों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

पाटनी, उषा : The values held by college girls and their relation with achievement motivation, Ph. D., Udaipur Uni., 1983

पाण्डे, रजनी : कामकाजी महिलाओं के व्यावसायिक दृष्टिकोण का उनके आर्थिक, सामाजिक एवं आकांक्षाओं के सन्दर्भ में अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

पारीक, मदनमोहन : राजस्थान में प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का मूल्यांकन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

पारीक, स्नेहलता : बीकानेर शहर की मध्यम वित्तवर्गीय साक्षर व निरक्षर महिलाओं के सामाजिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

पाल, राजेशकुमार : नैतिक शिक्षा के प्रति विद्यालयीय घटकों की अभिवृत्ति का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

पालीवाल शैलकुमारी : महिला न्यादर्श पर आधारित राजस्थान में शिक्षानुसन्धान की प्रवृत्तियाँ – एक विकासात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

पालीवाल, मोहनी : रामचरितमानस का शिक्षा-दर्शन – एकअध्ययन,

पुरोहित, ओमप्रकाश : अनुसुचित जनजाति के छात्राध्यापकों की जीवन-शैली का समायोजन पर प्रभाव, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

बंसल, सरोज : आदिवासी एवं गैर आदिवासी किशोरों के मूल्य, उनका व्यक्तित्व कारकों से सह-सम्बन्ध ज्ञात करना, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

बहल, सत्येन्द्रसिंह : Relationship between morality academic achievement and social adjustment of adolescents, Ph. D., Udaipur University, 1982

बाकलीवाल, आशा : जैन समाज में जैन धर्म के प्रति माता-पिता के विश्वासों एवं उनके बच्चों के विश्वासों के मध्य सह-सम्बन्ध, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

बोर्डिया, नीता : समंजन समस्याओं वाले प्रा. विद्यालयी बालकों के अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन,एम.एड.,उदयपुर विश्वविद्यालय,1979

भट्ट, करुणा : अनुसुचित जाति, जनजाति एवं उच्च वर्ग की किशोरियों के विद्यालय में सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

भटनागर, जगदीशनारायण An investigation into values aspirations and personality traits of adolescents of Rajasthan, Ph. D., Udaipur, Uni., 1979

भटनागर, रीता : माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता की समझ का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

भंडारी, धनरूपचंद : अध्यापकों के सामाजिक परिवर्तन – एक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1977

भार्गव, माया : A critical study of attitudes of adolescents towards Gandhian philosophy and its relationship with intelligence socio-economic status and achievement, Ph. D., Raj. Uni., 1981

मकवाना, राजकुमारी : महात्मा गांधी का शिक्षा-दर्शन – एक तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

मेहता, महावीर : माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं कक्षाकक्ष वातावरण के साथ सह-सम्बन्ध, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

माथुर, आशा : अविवाहित अध्यापिकाओं एवं उनके माता-पिता के मध्य संज्ञानात्मक असन्तुलन का अध्ययन,एम.एड.,उदयपुर विश्वविद्यालय,1979

माथुर, दुर्गेश : उदयपुर शहर में अनुसूचित जाति व जनजाति महिलाओं की उच्च शिक्षा की समस्याएँ, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1978

माथुर, योगमाया : आवासीय विद्यालय में विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तरों की किशोर छात्राओं के राजनीतिक समाजीकरण का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

माथुर, शशि : उदयपुर के गृह विज्ञान स्नातक एवं अन्य स्नातक महिलाओं की पोषण आहार सम्बन्धी मनोवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

मीणा, भरतलाल : गीता में जीवन्त और सन्तुलित शिक्षा का स्वरूप, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

माथुर, सन्तोषरानी : माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, एम. एड., डबोक विश्वविद्यालय, 1988

माथुर, सरला : स्वतन्त्रता आन्दोलन में शिक्षण संस्थाओं का योगदान, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

माथुर, सावित्री : मूल्य परिवर्तन एवं अभिवृत्ति परिवर्तन हेतु उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों को उत्प्रेरित करना एवं परिवर्तन का आंकना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

मेनारिया, शवचरणलाल : उदयपुर नगर के माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं का सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धियाँ, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

मेहरोत्रा, पद्मनाथ : Trends in group thinking, Ph. D., Raj. Uni., 1986

मोगरा, राजकुमार : आवासी जनजाति तथा सामान्य शिक्षक शिक्षार्थियों के मध्य अन्तःक्रिया का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

रतन, बीना : कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की व्यावसायिक आकांक्षाएँ समायोजन तथा मानवीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

राम, के. के. : A study into the concept of teacher and teaching in Gandhian philosophy, M. Ed., Raj. Uni., 1976

रावत, बीना : शहरी छात्रों तथा ग्रामीण छात्रों के भाषा विकास प्रत्यय निर्माण तथा सामाजिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

व्यास, विमला : माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत छात्राओं के शैक्षिक पिछड़ेपन के कारणों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

वागरानी, लक्ष्मीनारायण : ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित स्नातक अध्यापकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड....., 1975

श्याम, मनोहर : ग्रामीण किशोरों की सघनग्राम्य विकास के प्रति सचेतना का अध्ययन, एम. एड. राज. विश्वविद्यालय, 1984

शर्मा, ओ. पी. : A study of an understanding of the social aspects of science among certain groups of students and teachers, M. Ed., Raj. Uni., 1978

शर्मा, कमला : नई शिक्षा नीति में मानवतावादी दर्शन के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

शर्मा, गिरीशकुमार : शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्राध्यापकों की समायोजनात्मक समस्याओं का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

शर्मा, चन्द्रकिरण : जनसंख्या शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

शर्मा, जगदीशचन्द्र : माध्यमिक स्तर के आदिवासी एवं सवर्ण छात्र-छात्राओं की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्तियाँ, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

शर्मा, जयश्री : Attitude of teacher and parents towards moral education, M.Ed., Raj. Uni., 1986

शर्मा, पुष्पलता : विभिन्न स्तर पर कार्यरत महिलाओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

शर्मा, बन्शीधर : कक्षा 10 में अनुत्तीर्ण पब्लिक स्कूलों में अध्ययनरत छात्रों का प्रकरण अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

शर्मा, मधुबाला : आधुनिक शैक्षिक परिवेश में गीता के शिक्षा-दर्शन की उपादेयता का एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

शर्मा, राधेश्याम : बीकानेर डिवीजन में औपचारिक शिक्षा की उपयोगिता – एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

शर्मा, रामप्रकाश : Inclusion among primary children, M. Ed., Raj. Uni., 1986

शर्मा, रामेश्वरी : A comparative study of the children of the working and non-working mothers, Ph. D., Raj, Uni., 1986

शर्मा, स्नेहप्रभा : सामाजिक चेतना का परिपक्वता व औपचारिक शिक्षा के सन्दर्भ में एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

शर्मा, स्नेहलता : उदयपुर नगर में बालिका शिक्षा की निरन्तरता को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1988

शर्मा, सरोज : विभिन्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग के सन्दर्भ में बालकों की भाषा सम्पन्नता का अध्ययन,

शर्मा, सुबोधकुमारी : किशोर विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियाँ तथा नैतिकता सम्बन्धी आदतों का एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

शर्मा, सन्ध्या : A critical study of John Dewy's educational theory of instrumentatism, M.Ed., Raj. Uni., 1986

शुक्ल, अनिलकुमार : उदयपुर शहर में स्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत छात्रों की पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

सक्सैना, दमयन्ती : विद्याभवन हायर सैकण्ड्री स्कूल के छात्रों की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

सक्सैना, प्रेम बहादुर : A study of Politicians remarks on education and the reactions of the field workers there on, M. Ed., Raj. Uni., 1978

भटनागर, प्रभा : अनुसूचित जनजाति के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति

सिंह, कुशलपाल : माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान शिक्षण में व्यक्तिगत अनुदेशन तथा परम्परागत शिक्षण विधि का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

सिंह, चन्द्र हंस : A study of the morality of the prospective teachers of Udaipur University, M.Ed., Udai., Uni, 1982

सिंह, जोरावर : A comparative study of the expectations of the non-Adivasi mixed community of Gara with the expectations of the Adivasi community of Netaji-Ka-Bara Bon school, M. Ed., Udai., Uni., 1978

सिंह, मंजू : बी. एड. स्तर के अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों की बुद्धि एवं व्यावसायिक रुचि का उनकी शिक्षण अभिरुचि से सह-सम्बन्ध का अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1986

सिंह, विजय बहादुर : उदयपुर शहर के उच्च माध्यमिक छात्र एवं छात्राओं की नैतिकता पर और पाठ्यचर्या द्वारा विकसित नैतिकता के विशिष्ट सन्दर्भ में, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1976

सिडाना, अशोककुमार : किशोर छात्र-छात्राओं की दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रति रुचि एवं उनके विचार – एक सर्वेक्षण, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

सिंह, विमला : विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में बच्चों के सामाजिक व्यवहार के प्रतिमानों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

सिंह, सतीशपाल : परिवार के आकार के आधार पर किशोर छात्रों के समायोजन एवं दुश्चिंता का मापन – एक तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

सिंह, सरला : कक्षा 9 की छात्राओं की सामाजिक स्वीकृति को प्रभावित करने वाले तत्व, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

सिंह, सुरेशपाल : Gandhian philosophy and Indian education., M.Ed., Raj. Uni., 1982

सुखवाल, मंजू : उदयपुर शहर की मलिन बस्तियों में रहने वाले बालकों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

सुश्री, आराधना : महर्षि दयानन्द के शिक्षा-दर्शन की वास्तविक पृष्ठभूमि समीक्षा एवं समीचीनता, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

सेठी, एस. के. : The values as social indicator of the quality of life in Higher Secondary students. M.Ed., Raj. Uni., 1986

सेठी, बद्रीनारायण : Social systems of adolescents studying in Higher Secondary classes, M.Ed., Udaipur Uni., 1982

हर्ष, हरिदास : वर्तमान सन्दर्भ में कौटिल्य का शिक्षा-दर्शन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

श्रीराम : A study of philosophy and practices of the secular, denominational and ideological educational institutions with special reference to Rajasthan. Ph. D., Raj., Uni. 1985

श्रीवास्तव, नगेन्द्र एन. : A study of scientific attitudes of science and arts students belonging to scheduled caste scheduled tribes vis-a-vis non-scheduled communities. Ph. D., Raj., Uni., 1983

त्रिपाठी, जयनारायण : सैनिकों की नैतिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

यादव, सुरेशचन्द्र : राजस्थान में औद्योगिकरण से उत्पन्न शैक्षिक समस्याओं का कोटा नगर के सन्दर्भ में अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1987

पारीख, मथुरेश्वर : विद्यालय में शिक्षारत किशोरों के राजनीतिक, समाजीकरण का विकासात्मक अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1987

✧ ✧ ✧ ✧

पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकें

- सत्यनारायण मेठी
- ललिता गोयल
- सन्तकुमार शर्मा

भारत में शैक्षिक एकरूपता एवं राष्ट्रीयकरण की लहर स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही व्याप्त होने लग गई थी। पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तक सम्बन्धी अनुसंधान कार्यों का प्रथम विवरण (1925-65 तक) पारीक व कुमार (1966) ने दिया, जिसमें विज्ञान-विषयक शोध सम्मिलित हुए। इसी प्रकार प्रकाशित एवं अप्रकाशित न्यूनाधिक शोध कार्यों की सूची पारीक एवं सूद (1971) ने दी। एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली ने 1966 एवं 1968 में पीएच.डी. एवं लघु शोध प्रबन्ध (एम. एड.) की सूची प्रकाशित कराई। 1974 में बुच द्वारा सम्पादित "ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन" के "पाठ्यचर्या विधाएं एवं पाठ्यपुस्तकें" शीर्षक में 108 शोध अध्ययनों को प्रस्तुत किया गया, जिसमें 71 पीएच. डी. स्तरीय शोध सार भी सम्मिलित हैं। इनसे ज्ञात हुआ है कि सर्वाधिक कार्य भाषा (हिन्दी, अंग्रेजी, बंगाली, गुजराती, तेलुगु, पंजाबी) विशेषतः हिन्दी व अंग्रेजी पर हुआ है, जिसमें 35 पीएच. डी. स्तरीय शोध प्रस्तुत हुए। विज्ञान में 6, गणित में 2, गृहविज्ञान में 2, पाठ्यक्रम मूल्यांकन में 9, दृश्य-श्रव्य साधन में 5, वाणिज्य में 4, पठनगति में 3, सामाजिक ज्ञान, दर्शन शास्त्र, जनसंख्या शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा पर एक-एक शोध उपलब्ध हुए हैं। विभिन्न पक्षों को छूने पर भी अनेक पक्ष राष्ट्रीय स्तर पर इसलिए अछूते रहे कि पाठ्यक्रम में एकरूपता नहीं थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 में एकरूपता की दृष्टि से 10+2 पद्धति राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार की गई। इससे शोध में एकरूपता आई है तथा राष्ट्रीय स्तर पर समान विचारधारा को लागू करने के आयाम खुले।

राजस्थान में शिक्षा का विकास एवं उन्नयन 1949 से आरम्भ हुआ तथा शिक्षाक्रम एवं पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण 1952 में हुआ। 1973 से राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तक मण्डल स्वायत्तशासी संस्थान बना किन्तु राज्य-स्तरीय पाठ्यचर्या समिति का अभाव आज तक बना ही

रहा। यद्यपि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा विषय समिति गठित की जाती है, एस. आई. ई. आर. टी. एवं यूनीसेफ के सामंजस्य से पाठ्यक्रम सम्बन्धी निर्णय भी लिये जाते हैं फिर भी पाठ्यचर्या निर्माण में छात्रों एवं शिक्षकों का सकारात्मक सहयोग अद्यावधि विचारणीय बना हुआ है। राजस्थान में शिक्षाक्रम एवं पाठ्य-पुस्तकों से सम्बन्धित अनुसंधान कार्यों के प्रारम्भ का विवरण 1954 से मिलता है। 1954 से 1974 तक की अवधि में 44 अनुसंधान कार्य सम्पन्न हुए। इन अनुसंधान कार्यों में सामान्य शिक्षाक्रम, भाषा, सामाजिक ज्ञान, विज्ञान विषय एवं सह-शैक्षिक क्षेत्र सम्मिलित हुए हैं।

आलोच्य अवधि (1975-1988) में राजस्थान में 69 अनुसंधान कार्य सम्पन्न हुए हैं, जिनमें 3 पीएच. डी. स्तरीय एवं 66 लघु शोध प्रबन्ध हैं। 1974 का एक शोध भी सम्मिलित है जिसमें अनुसंधान कार्य के विषयगत पाठ्यक्रम में विभिन्न भाषाएँ, विज्ञान, सामाजिक ज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र, गृहविज्ञान एवं वाणिज्य विषय समाहित हुए हैं। पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियों में आन्तरिक मूल्यांकन, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य, पर्यावरण शिक्षा, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा, पुस्तकालय आदि पर कार्य सम्पन्न हुए। इनके अतिरिक्त साप्ताहिक प्रार्थना, नवाचार आधार बने हैं। विकलांग बालकों की शिक्षा भी शोध के आधार बने हैं। कुछ शोधार्थियों ने शिक्षक प्रशिक्षण भी छुआ है। परिव्याप्ति की दृष्टि से कहा जा सकता है कि सन् 1974 तक सम्पन्न हुए अनुसंधान कार्य की तुलना में आलोच्य वर्षों के अनुसंधान कार्य अधिक व्यापकता लिए हुए हैं।

शोध कार्य में प्रयुक्त अध्ययन प्रविधियों की दृष्टि से मात्र दो अनुसंधान कार्यों में प्रयोगात्मक विधि को अपनाया गया है। शेष सभी में सर्वेक्षण विधि उपयोग में ली गई है। सर्वेक्षण विधि में प्रत्यक्षन प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची का सर्वाधिक उपयोग हुआ है। सांख्यिकी विधियों में प्रतिशत माध्यमान, प्रामाणिक विचलन, क्लोज टैस्ट एवं सह-सम्बन्ध का प्रयोग हुआ है। 1975 से 1988 तक सम्पन्न हुए शोध कार्यों का विवरण पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकों के विभिन्न आयामों को पृथक-पृथक करके दर्शाया गया है जिससे पाठ्यचर्या एवं विषयगत स्थिति को समझने में सरलता रहेगी।

पाठ्यचर्या का समग्र मूल्यांकन :

पाठ्यचर्या छात्र को देय ज्ञान का प्रमुख आधार है। इस पाठ्यचर्या का निर्माण कतिपय शिक्षाविद् करते हैं, किन्तु शिक्षा के नैमित्तिक पक्ष को इससे अछूता रखा जाता है। यह अनुभव चौहान (1983) ने किया। छात्रों की पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में अभिरुचि एवं धारणाओं को जानकर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग के लिए पाठ्यचर्या अनुकूल, वाणिज्य वर्ग के लिए प्रतिकूल एवं विज्ञान वर्ग के लिए सामान्य साबित हुई। पाठ्यचर्या के प्रति छात्रों की धारणा विशद् स्तर पर जाननी चाहिए। छात्र पाठ्यचर्या का सही उपयोग शिक्षक के हाथों में है। शिक्षक को प्रशिक्षित करने वाली पाठ्यचर्या जैसी होगी, तदनुकूल शिक्षक छात्र को

छात्राध्यापिकाएँ व्यवसाय के प्रति मानसिक रूप से अधिक समर्पित होती हैं। व्यवसाय के प्रति सकारात्मक संबंध बताया गया है। छात्रों के वातावरण की दृष्टि से ग्रामीण एवं शहरी स्थिति भिन्न होती है। अतः इनका विषयात्मक दृष्टिकोण भी भिन्न होगा, इस ओर गौड़ (1978) ने ध्यान आकर्षित किया। बालकों में शैशवावस्था भावी जीवन एवं शिक्षा की नींव मानी जाती है। इस सन्दर्भ में अध्ययन कर गुप्ता (1984) ने बताया कि पूर्व प्राथमिक अवस्था के बालकों में शारीरिक विकास एवं भाषिक योग्यता के विकास की अपेक्षाएं पाठ्यक्रम से पूरी नहीं होतीं। पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में यह स्थिति निश्चय ही विचारणीय हैं। पत्राचार पाठ्यक्रम का विश्लेषण करते हुए जोशी (1981) ने बताया कि पत्राचार पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक ज्ञान जटिल है। वहां व्यक्तिगत सम्पर्क का अभाव है। सुझाव दिया कि प्रत्येक तीन वर्ष बाद पाठों पर पुनर्विचार होना चाहिए। इसी विषय पर पत्राचार पाठ्यक्रम से सम्बन्धित छात्रों की अनुभूत समस्याओं का अध्ययन कर कोठारी (1988) ने पुष्टि की है कि पाठ्यक्रम अध्यापक की पूर्ति बहुत कम करते हैं, सम्पर्क सूचनाएं यथासमय नहीं मिलतीं, जाँच निर्देश अस्पष्ट एवं अपर्याप्त हैं। आर्थिक भार भी अधिक बताया गया है। त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल एवं रा. विश्वविद्यालय, भारत के पाठ्यक्रम का विश्लेषण करते हुए लायसल (1981) ने स्पष्ट किया कि दोनों विश्वविद्यालयों की प्रभाविता और अध्यापकों की अभिवृत्ति समान हैं। श्रीमती नारंग (1976) ने उच्च माध्यमिक छात्राओं की अभिरुचि जानकर निष्कर्ष निकाला कि अधिकांश छात्राएँ सूर्योदय से पूर्व उठती हैं, डिजाइन का कार्य पसन्द करती हैं, मनोरंजन प्रिय हैं। अतः छात्राओं के पाठ्यक्रम में अभिरुचि के अनुकूल विशेष पाठ्यचर्या की अपेक्षा भी महसूस की जाती है।

पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकों का भाषिक स्वरूप :

अधिगम एवं अभिव्यक्ति की सहज वाहिका है भाषा। यही कारण है कि अनुसंधित्सुओं का सर्वाधिक ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। आलोच्य अवधि (1976-88) में इस पक्ष में 16 अनुसन्धान कार्य हुए हैं। इनमें 3 शोध अंग्रेजी में, 4 शोध संस्कृत में, 7 शोध हिन्दी में, एक उर्दू में एवं एक सिन्धी भाषा से सम्बन्धित है। भाषिक दृष्टि से छात्र की लिखित, मौखिक अभिव्यक्ति तथा रचनात्मक कार्य के समुचित उपयोग हेतु अग्निहोत्री (1985) ने सुझाव दिया है कि पाठ्यचर्या में पाठों के अभ्यास कार्य की योजना भी बनाई जाए। मूल्यांकन प्रक्रिया सामान्य होने के कारण उसमें भी संशोधन अपेक्षित समझा गया है। माध्यमिक स्तर में प्रवेश से पूर्व अष्टम कक्षा के स्तर का ज्ञान संतोषजनक हो तो भाषा की नींव मजबूत होती है। किन्तु पाठ्यचर्या में इसका ध्यान नहीं रखा जाता। इस ओर ध्यानाकर्षित करते हुए कुमार (1981) ने बताया कि विशेष कक्षा के लिए पठन सामग्री निर्धारित करने से पूर्व पठनकर्ता के लिए पठन क्षमता अंक का निर्धारण आवश्यक हैं। मूल्यांकन मापन प्रक्रिया उद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर पाती। छात्रों द्वारा सस्ती कुंजियों का प्रयोग करना अधिगम प्रत्यय के मूल सिद्धान्त के विरुद्ध है। इन छोटी कक्षाओं में विभिन्न दार्शनिक अभिप्रेरणाएँ कितनी सम्मिलित हो पा रही हैं, इसकी जानकारी श्रीमती बंसल (1981) ने दी। शोध के अनुसार दार्शनिक अभिप्रेरणा पक्ष (49.16 प्रतिशत) सर्वाधिक पाया गया। यथार्थवादी पक्ष (28.50 प्रतिशत) रहा। ये दार्शनिक अभिप्रेरणाएं जीवन के नैतिक पक्ष को उभारने में बहुत सहायक सिद्ध होती हैं।

बालकों में लिपि शिक्षण एवं उच्चारण क्षमता हेतु गहलोत (1982) ने 18वीं शताब्दी के परम्परागत शिक्षण (पट्टी लेखन, बार-बार बोल कर याद करना) की संपुष्टि करते हुए बताया कि इसकी उपादेयता लघु अवधि की है। किन्तु अधिगम हेतु यह कम खर्चीला एवं सहज बोधगम्य है। कक्षा दस का अध्ययन करते हुए सुश्री मदान (1988) ने बताया कि शिक्षक का प्रभावी व्यवहार छात्रों में उच्च गुणात्मक उपलब्धि पर अच्छा प्रभाव डालता है। इसी क्रम में अनौपचारिक शिक्षा की पाठ्यपुस्तकों के भाषिक स्वरूप का अध्ययन करके वर्मा (1988) ने निष्कर्ष निकाला है कि वर्तमान पाठ्यपुस्तक अनौपचारिक स्तर के बालकों हेतु उपयुक्त नहीं है। उनमें कविता शैली का अभाव भी है और वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप भी नहीं है।

आंग्ल भाषा शिक्षण में द्विभाषीय विधि पर अध्ययन करके अयूब (1984) का मत रहा है कि यह विधि अंग्रेजी अधिगम को प्रभावी बनाने हेतु उपयोगी है। अंग्रेजी शिक्षण की व्यावहारिक कठिनाइयों को जोशी (1987) ने उद्धृत करते हुए लिखा हैं कि अंग्रेजी अध्यापकों में सेवारत प्रशिक्षण की बहुत आवश्यकता है। अध्यापक एवं छात्र दोनों में शुद्ध उच्चारण का अभाव है। यहां तक कि प्रशिक्षित अध्यापक भी इससे अछूते नहीं हैं। इसी को माध्यमिक स्तर की ओर अग्रसर करते हुए अनिल पालीवाल (1988) ने वाचन में उचित कौशलों के अभाव की ओर ध्यानाकर्षित किया है।

भाषा ही एक ऐसा विषय है जिसके द्वारा नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का सहज सम्प्रेषण हो सकता है। माध्यमिक स्तर पर तो यह पक्ष अधिक महत्व रखता है। माध्यमिक कक्षा की हिन्दी पुस्तक का विश्लेषण करते हुए गर्ग (1980) ने बताया कि गद्य-पद्य दोनों में सामाजिक पक्ष का प्रतिनिधित्व अधिक है। गद्य में साहित्य तथा मानवीय पक्ष का अभाव है तो पद्य में वैयक्तिक विकास, चारित्रिक, आर्थिक, ज्ञानात्मक, सुरक्षा, परिवार तथा वैज्ञानिक पक्षों का। दोनों पक्षों में तुलनात्मक एकरूपता नहीं है।

संस्कृत भाषा को सांस्कृतिक धरोहर एवं विपुल पुरातन साहित्य की रक्षा हेतु आवश्यक माना जाता है। कक्षा अष्टम तक तो यह अनिवार्य है। किन्तु उपलब्ध पुस्तक, युगीन मूल्यों के विकास में सहायक नहीं मानी गई एवं विद्यार्थियों के मानसिक स्तरानुकूल नहीं पाई गई। इस तथ्य को प्रजापति (1986) ने उजागर किया। माध्यमिक स्तर पर इसे तृतीय भाषा के रूप में अपनाया गया, किन्तु संस्कृत के प्राप्तांकों को श्रेणी निर्धारण में नहीं जोड़ा जाता। फलतः छात्र-छात्राओं में अभिवृत्यात्मक सम्बन्ध ऋणात्मक रहता है। यह जानकारी व्यास (1984) ने अपने लघु शोध में दी। व्यास ने भाषा पाठ्यक्रम को व्यावहारिक नहीं माना एवं छात्रों के मानसिक स्तर के कम अनुकूल माना। इसी सन्दर्भ में गर्ग (1984) ने बताया कि पाठ्यक्रम में उपदेशात्मक, ज्ञानवर्द्धक, ऐतिहासिक, धार्मिक कथाओं के साथ युगीन सन्दर्भ के रूप में वैज्ञानिक आविष्कार, महान जीवन चरित्र, पर्यावरणीय ज्ञान आदि को विभिन्न विधाओं में उपलब्ध कराया जाए। छात्रों के साथ शिक्षक की अभिरुचि मापने के लिए पूनिया (1983) ने शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का अध्ययन किया और बताया कि संस्कृत विषय के प्रति प्रशिक्षणार्थियों में सर्वमान्य, स्पष्ट एवं

अनुकूल अभिवृत्ति प्रकट हुई। सिन्धी भाषा पर कार्य करते हुए श्रीमती चतुर्वेदी (1979) का अभिमत रहा कि छात्र-छात्राएं अनुस्वार एवं चन्द्र बिन्दु की सर्वाधिक भूल करते हैं। वाक्य गठन एवं मात्राओं की भूलें भी पर्याप्त रह जाती हैं। उर्दू की स्थिति संस्कृत जैसी ही है। अली (1986) ने पाठ्यक्रम के प्रति तो छात्रों का सकारात्मक रुख पाया, किन्तु विज्ञान एवं वाणिज्य विषय में इसे कम मुफीद बताया है।

सामाजिक ज्ञान, इतिहास एवं भूगोल पाठ्यचर्या तथा पाठ्यपुस्तकें :

इतिहास, नागरिक शास्त्र, भूगोल और इन तीनों क्षेत्रों से सम्बन्धित सामाजिक ज्ञान छात्र का दस-वर्षीय आदर्श ज्ञान है। किन्तु पूर्व शोधों से भी ये तथ्य सामने आए हैं कि इन क्षेत्रों में संगठन एवं समन्वय बिलकुल नहीं था। इसी तथ्य की पुष्टि आलोच्य अवधि में हुए जोशी (1982) के शोध द्वारा होती है। प्रतीत होता है कि शोध कार्य की ओर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का ध्यान कम रहा। शोध में पुस्तक को "अप-टु-डेट" बनाने की अनुशंसा भी की गई। गोयल (1979) को भी ऐसा ही प्रतीत हुआ है कि पाठ्य-वस्तु का निर्माण करते समय सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों से संबंधित कुछ विशिष्टीकरण की ओर ही ध्यान दिया गया है। बोर्ड तथा विभाग की ओर से पाठ्यक्रम लेखन का दायित्व निर्धारित करते समय इन तथ्यों से लेखकों को अवगत कराना चाहिए जिससे पुनरावृत्ति दोष से बचा जा सके।

इतिहास विषय छात्रों की अपेक्षा छात्राओं को अधिक रुचिकर होता है। इस तथ्य की पुष्टि करते हुए गौड़ (1983) ने बताया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की अभिवृत्ति अनुकूल है। इसके अतिरिक्त अनुसन्धान में कोई उल्लेखनीय तथ्य नहीं बताया गया। इतिहास विषय में परिवर्त्यमान युग सन्दर्भ कितना है, यह अध्यायवार विश्लेषण अग्रवाल (1977) ने किया और बताया कि 75 प्रकरणों में से 66 पाठ्यक्रम में रहने लायक थे किन्तु 9 पर पुनर्विचार की आवश्यकता बताई गई।

भूगोल विषय पर एक लघु शोध पृथक प्राप्त हुआ है। इसमें विषय की त्रुटियों एवं अधिगम कठिनाइयों पर अध्ययन कर सुरेन्द्र कुमार (1988) ने बताया कि निजी और सरकारी विद्यालय के परिप्रेक्ष्य में सरकारी विद्यालय सहायक सामग्री का प्रयोग विषयाध्यापन में नहीं कर पाते। यह शोध सरकारी विद्यालयों में भूगोल प्रायोगिक की उपयुक्तता एवं व्यावहारिकता पर एक प्रश्नचिन्ह लगाता है। गृहकार्य में भी ये पीछे है।

अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकें :

इन विषयों में एक-एक शोध ही उपलब्ध होता है। ऐच्छिक विषय छात्र ले तो लेते है किन्तु उन्हें निराशा तो तब होती है जब वे उसमें सम-सामयिक ज्ञान का अभाव पाते हैं। सन्ध्या अग्रवाल (1988) ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया है कि इस विषय के प्रति शहरी वर्ग की अभिवृत्ति ग्रामीण वर्ग की तुलना में अधिक अनुकूल है। छात्र-छात्राओं और सरकारी-निजी क्षेत्र में अभिवृत्तिजन्य अन्तर होता है। यह कथन तर्क युक्त पुष्टि का उदाहरण नहीं बनता।

नागरिक शास्त्र विषय ने राजस्थान में 1947 से लागू होने के साथ कई उतार-चढ़ाव देखे। राजपूत (1979) ने इस स्थिति को स्पष्ट करते हुए बताया कि जैसे-जैसे नागरिक शास्त्र की संकल्पना में परिवर्तन आए, वैसे-वैसे उद्देश्यों में विकास होता गया। इसके बाद एक दीर्घ अन्तराल से कोई अनुसन्धान नहीं हुआ।

गणित, विज्ञान पाठ्यचर्या व पाठ्यपुस्तकें :

विज्ञान के क्षेत्र में अनुसन्धान कार्य विशेष रूप से 1962 से प्रारम्भ हुआ। 1962 से 1974 तक चार अनुसन्धान कार्यों का उल्लेख मिला है। शर्मा (1975) ने प्रथम बार कक्षा अष्टम् की पाठ्यपुस्तक का समग्र मूल्यांकन कर कमियों की ओर ध्यानाकर्षित किया। यह प्रयास निश्चय ही पाठ्यक्रम का स्वरूप सुधारने में प्रशंसनीय माना जाना चाहिए। माध्यमिक स्तर तक विज्ञान पाठ्यचर्या ग्रामीण व कमजोर मानसिक स्तर के छात्रों के अनुकूल नहीं है। यह स्पष्ट करते हुए माण्डलिया (1976) ने लिखा है कि पाठ्यक्रम में तारतम्य नहीं है तथा पाठ्यक्रमानुसार प्रयोगशालाओं का अभाव है। इसी प्रकार कक्षा 8 से 11 तक के 300 छात्रों का अध्ययन करके मल्होत्रा (1979) ने निष्कर्ष निकाला कि स्तर वृद्धि के साथ-साथ अवबोध क्षमता बढ़ती है किन्तु अभिवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं होता। कटियार (1979) ने यूनीसेफ पाठ्यक्रम से परम्परागत पाठ्यक्रम की तुलना करते हुए बताया कि यूनीसेफ पाठ्यक्रम अधिक प्रभावशाली रहा। तुलनात्मक दृष्टिकोण से राजस्थान व उत्तर प्रदेश की उच्च माध्यमिक कक्षाओं का अध्ययन कर कुमार (1980) ने निष्कर्ष निकाला कि राजस्थान के छात्रों में उच्च शैक्षिक संप्राप्ति के साथ न्यून अभिवृत्ति व उत्तर प्रदेश के छात्रों में उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति के साथ उच्च अभिवृत्ति पाई गई। सक्सेना (1980) ने सीखने के परम्परागत एवं आधुनिक ज्ञानात्मक पाठ्यक्रम प्रारूप की तुलना करते हुए स्पष्ट किया कि उपलब्धि का सृजनात्मकता से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसी प्रकार श्रीमती राजवन्त कौर (1981) ने वैयक्तिक निर्देशन विधि एवं परम्परागत विधि में सीखने की दृष्टि से कक्षा 5 के छात्रों के लिए वैयक्तिक निर्देशन विधि को उपयोगी माना। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विज्ञान पाठ्यक्रम की समीक्षा कर के. एम. गोयल (1982) ने बताया कि विज्ञान और वैज्ञानिक दोनों के सामाजिक आधार की अवबोध में काफी समानता पाई गई। इसी प्रकार अग्रवाल (1986) ने केवल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के सामान्य विज्ञान पाठ्यवृत्ति का अध्ययन कर निष्कर्ष दिया कि तीनों वर्गों में छात्र-छात्राओं की अभिवृत्ति अनुकूल रही। अन्तर करें तो अधिगम अभिवृत्ति की विज्ञान में मध्यम तथा वाणिज्य वर्ग एवं कला वर्ग में न्यून स्थिति रही।

विज्ञान पर अनुसन्धान प्रत्येक स्तर में हुआ है। उच्च प्राथमिक कक्षाओं की विषयवस्तु का अध्ययन कर श्रीमती दीक्षित (1979) ने जानकारी दी कि कक्षा 6-8 के सभी स्तरों पर विज्ञान पाठ्यक्रम छात्र एवं छात्राओं की जिज्ञासा का एक-चौथाई भाग सन्तुष्ट नहीं करता। इसी विषय की ओर अग्रसर होते हुए शर्मा (1987) के लघु शोध में कक्षा 8 के छात्रों एवं अध्यापकों ने विषय का प्रत्यक्षीकरण किया और बताया कि वर्तमान विज्ञान पाठ्यक्रम अध्यापकों की दृष्टि से भी उपयुक्त है। अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने में सक्षम भी है एवं छात्रों की

दृष्टि से भी उपयुक्त है। श्रीमती दीक्षित एवं शर्मा दोनों के शोध निष्कर्ष में हल्का-सा विरोधाभास है। दीक्षित जहां एक-चौथाई भाग ठीक नहीं मानती, वहीं शर्मा प्रदूषण सम्बन्धी ज्वलंत समस्याओं का समावेश अधिक चाहते हैं। माध्यमिक स्तर पर निगम (1982) का मत था कि विज्ञान के प्रति सा. विज्ञान अथवा वैकल्पिक विज्ञान दोनों प्रकार के छात्रों ने धनात्मक अभिवृत्ति का प्रदर्शन किया है। इसी स्तर पर जारोली (1983) में भौतिक विज्ञान पाठ्यक्रम का अध्ययन कर बताया कि पाठ्यक्रम से वैज्ञानिक अभिवृत्ति, रुचि, गुण और कौशल का विकास होता है किन्तु ज्ञान, तर्क एवं प्रयोग विधि का उपयोग गौण है।

गृह विज्ञान के क्षेत्र में शाह (1975) ने सर्वप्रथम अनुसन्धान किया। इसके बाद श्रीवास्तव (1976) का उल्लेख मिलता है। आलोच्य अवधि में शांडिल्य (1979) ने विद्यालयी एवं महाविद्यालयी छात्राओं का अभिमत जानकर बताया कि दोनों के मत में समानता है। पाठ्यक्रम से 75% छात्राएँ (विद्यालयी) सहमत थीं किन्तु 60% महाविद्यालयी छात्राएँ असहमत थीं। अग्रवाल (1975) ने पता लगाया कि बाल विकास, वस्त्र, विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान एवं जन-स्वास्थ्य में सर्वाधिक अनुकूल अभिवृत्ति पाई जाती है। दीर्घान्तराल के पश्चात आमेटा (1987) ने इस विषय में माध्यमिक स्तर की छात्राओं में गृह प्रबन्ध, शिशुपालन एवं राष्ट्रीयता के प्रति अभिवृत्ति का अनुशीलन करते हुए स्पष्ट किया कि गृह प्रबन्ध की दृष्टि से तो कला वर्ग—गृह विज्ञान एवं समूह गृह विज्ञान में धनात्मक अभिवृत्ति है किन्तु शिशुपालन में समूह गृह विज्ञान की छात्राएँ आगे हैं।

गणित विषय पर पृथक से उदयपुर शहर के कला-वाणिज्य (कक्षा—10) वर्ग में संज्ञानात्मक वरीयता शैली पर लिंग भेद का प्रकार जान सुनीता शर्मा (1987) ने निष्कर्ष दिया कि उपलब्धि परीक्षण एवं संज्ञानात्मक वरीयता परीक्षण शैली में सम्बन्ध कम है।

शारीरिक विज्ञान एवं मानसिक विज्ञान का सम्बन्ध जानते हुए जेकब (1986) ने स्पष्ट किया कि कतिपय शारीरिक विज्ञान के सम्प्रत्ययों और मानसिक विकास में परस्पर गहन सम्बन्ध होता है। यह सम्बन्ध मानसिक रूप से निम्न स्तर के बालकों में अधिक होता है।

वाणिज्य पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकें :

वाणिज्य विषय में सर्वप्रथम अनुसन्धान (राजस्थान) की सूचना बहुगुणा (1973) से प्राप्त होती है। वाणिज्य व्यवसाय के पक्ष में बैंक व्यवसाय एक ठोस आधार माना जाता है। इस सन्दर्भ में जब जैन (1977) ने अनुसन्धान किया तो यह तथ्य उजागर हुआ कि बैंकों में श्रेष्ठ कार्य-निष्पत्ति के लिए वाणिज्य उपाधि का कोई उल्लेखनीय योगदान नहीं है। इस शोध से भले ही वाणिज्य छात्रों की मानसिकता प्रभावित हो, किन्तु इससे विषय का महत्व कम नहीं होता। इस तथ्य की पुष्टि शर्मा (1983) के अनुसन्धान से भी प्राप्त होती है। उनके अनुसार नियुक्तियों एवं रोजगार के प्रति इनका बहुत उपयोग है। सिंह (1982) ने तो इस विषय को विज्ञान के समकक्ष बनाए रखने के लिए प्रायोगिक परीक्षा की आवश्यकता पर बल दिया है। इसके साथ ही सिंह ने व्यावहारिक लाभों का पता लगाया तथा इन सब के लिए शिक्षकों,

प्रधानाध्यापकों एवं बोर्ड अधिकारियों की सहमति प्राप्त की। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के बहीखाता विषय के कक्षा-अनुभवों का प्रत्यक्षीकरण करते हुए ठाकुर (1985) ने बताया कि बहीखाता पाठ्यचर्या को अधिकांश छात्र अनुकूल मानते हैं एवं उबाने वाली पाठ्यचर्या नहीं मानते। बहीखाता एवं लेखाकर्म विषय के ज्ञानार्जन पर आंकिक योग्यता, गति और शुद्धता की अभिरुचि जानने का प्रयत्न सेजरा (1981) ने किया। राजकीय व मान्यता प्राप्त विद्यालयों में उन्हें इस ओर कोई अंतर दृष्टिगोचर नहीं हुआ। बहीखाता विषय के ज्ञानार्जन में सार्थक अन्तर माना गया है।

सह-शैक्षिक प्रवृत्तियाँ :

शिक्षा में पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियों की नींव तो 1947 से आगरकर द्वारा शारीरिक शिक्षा के रूप में लोकनृत्य की सिफारिश से पड़ चुकी थी। राष्ट्रीय स्तर पर चतुर्वेदी (1957), देसाई (1963), पणी (1969) एवं पटेल (1965) ने समय-समय पर अनुसन्धानात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किए। राजस्थान में 1982 से शा. शिक्षा विशेष प्रभावी बनी। 1956 तक इन प्रवृत्तियों को पाठ्येतर माना जाता रहा किन्तु 1960 से इन्हें पाठ्य सहगामी कहने की विचारधारा बनी। 1967 से मा. शि. बोर्ड, अजमेर ने आंतरिक मूल्यांकन के तहत इन प्रवृत्तियों को समाहित किया और शिक्षा विभाग ने इसे पाठ्यचर्या का अभिन्न अंग बनाए रखने पर जोर दिया। आलोच्य अवधि से सिंघी (1956) एवं शर्मा (1962) के अनुसन्धान कार्य ही साक्ष्य रूप में उपलब्ध हैं। रावल (1981) ने इस कार्य को गति देते हुए शहरी और ग्रामीण स्तर पर अध्यापकों की अभिवृत्ति जानी और उसे धनात्मक पाया। इसी प्रकार हींगड़ (1986) ने निष्कर्ष निकाला कि साहित्यिक/सांस्कृतिक/समाजसेवा/खेलकूद आदि क्षेत्रों में ग्रामीण अथवा शहरी अनुपात समान रहा।

सहशैक्षिक प्रवृत्तियों में आंतरिक मूल्यांकन के सम्भागीत्व क्षेत्र में गनी (1978) ने शोध किया और बताया कि 80% छात्र इसके पक्ष में हैं। किन्तु संस्था प्रधान इसके क्रियान्वयन में समय एवं स्थानाभाव बताते हैं तथा शिक्षकों की अरुचि मानते हुए इसे अपव्यय मानते हैं। इसकी व्यावहारिकता निश्चित रूप से एक चुनौती ही रही है। जैन (1979) ने उदयपुर नगर का अध्ययन कर स्पष्ट किया कि इसकी उपयोगिता सर्वमान्य है एवं छात्राएँ इसमें अधिक रुचि लेती हैं। इसी प्रकार शर्मा (1985) ने सुझाव दिया कि इस योजना को ग्रामीण क्षेत्रीय विद्यालयों में सफलतापूर्वक लागू किया जा सकता है।

विद्यालयों में प्रार्थना का अपना महत्व है। इससे स्वस्थ भावनात्मक वातावरण का सृजन होता है। इस सन्दर्भ में साप्ताहिक प्रार्थना के प्रति छात्रों की अभिवृत्ति जानकर शर्मा (1981) ने निष्कर्ष निकाला कि इससे धार्मिक कट्टरता में तो कमी नहीं आती किन्तु नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा की आवश्यक पूर्ति होती है।

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य :

छात्रों में श्रम, निष्ठा एवं श्रम उत्पादकता के प्रति उदासीनतापरक दृष्टिकोण के परिवर्तन एवं परिमार्जन हेतु 1984-85 में एस. यू. पी. डब्ल्यू. को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाने के प्रयत्न किए गए। 10+2 पद्धति में तो इसकी महत्ता को पूर्णतः स्वीकार किया गया है। इस

सन्दर्भ में स्वामी (1985) ने अनुसन्धान किया और बताया कि अधिकांश संस्था-प्रधानों ने इसके क्रियान्वयन में समय को बाधा माना है। उपयोगिता को सबने स्वीकार किया है एवं प्रशिक्षित शिविर संचालन की उपेक्षा की है। यह तथ्य भी सामने आया कि जिन प्रधानाध्यापकों को प्रवृत्ति का ज्ञान नहीं वे इसे सफल नहीं मानते । इस ओर पर्याप्त अनुसन्धान की अपेक्षा है।

स्वास्थ्य शिक्षा, पौधशाला एवं पुस्तकालय :

अनुसन्धान का क्षेत्र बहु आयामी बनता जा सहा है, जो अनुसन्धान क्षेत्र में शुभ लक्षण है। स्वास्थ्य बालक की पहली आवश्यकता है। अतः पाठ्यक्रम में इसका यथास्थान समावेश आवश्यक है। इस ओर शोध करते हुए नन्दवाना (1984) ने बताया है कि राजस्थान में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम का इस दृष्टि से पुनरावलोकन आवश्यक है। राजस्थान के पाठ्यक्रम में 78 प्रतिशत स्वास्थ्य शिक्षक कार्यक्रमों की आगत स्थिति है किन्तु उसमें विषयगत तथा अन्तर्विषयी पुनरावृत्ति अधिक है। अतः पाठ्यक्रम का विश्लेषण आवश्यक है।

वृक्षारोपण आज देश की आवश्यकता है, जिसे विद्यालयी स्तर पर स्वीकार कर लिया जाए तो इस ओर महती उपलब्धि हो सकती है। वन विभाग ने इस ओर शिक्षकों को पौधशाला प्रशिक्षण देने की योजना भी रखी है। इस सन्दर्भ में अनुसन्धान करते हुए हीतावला (1984) मे यह निष्कर्ष दिया है कि वनशाला का विकास चहुँमुखी विकास के अवसर प्रदान करता है।

शिविरा पत्रिका, अगस्त, '86 में प्रकाशित शिक्षा अनुसन्धान कार्यों के सन्दर्भ में बाड़मेर जिले से सम्बन्धित विद्यालयी पुस्तकालयों की उपयोगिता व्यास (1986) ने दर्शाई है। इस सन्दर्भ में श्रेष्ठ-स्तरीय पुस्तकों का क्रय एवं विद्यालयों को प्रेषण हेतु विभागीय दायित्व को सचेष्ट किया है। विषय समिति प्रणाली एवं नवीनतम तकनीकी विद्या की पुस्तकों के क्रय हेतु चयन समितियों की अनुशंसा को प्राथमिकता देने का सुझाव दिया है। पुस्तकालय को श्रेष्ठतम बनाने हेतु शोध की आवश्यकता है।

नवाचार, विकलांग बालक शिक्षा एवं शिक्षक प्रशिक्षण :

अनुसन्धानकर्ताओं ने अपनी रुचि में नवाचार एवं विकलांग बालक की एकीकृत शिक्षा को भी स्वीकार कर लिया है। नवाचारों के सन्दर्भ में राजोरा (1984) ने विद्यालय संगम एवं कार्यानुभव को लिया है। विद्यालय संगम में चर्चित समस्याओं को ही बताया गया है कि विद्यालय संगम में प्रधानाध्यापक विद्यालयी सहयोग के प्रति उदासीनता ही रखते हैं। इसी प्रकार से कार्यानुभव में अध्यापक एवं उपकरण की कमी बताते हुए इस उदयपुर नगर में असफल माना है। यह शोध सूचना मात्र ही रहा, किन्तु नूतन आयाम प्रदान नहीं कर सका।

उदयपुर की एक कॉलोनी विशेष को आधार बनाकर श्रीमती बोर्डिया (1983) ने विकलांग बालकों की एकीकृत शिक्षा का अध्ययन किया एवं बताया कि विकलांगों में अधिकांश बालक पोलियो रोग से पीड़ित रहे। मानसिक विकलांगता जन्म से ही पाई गई। यदि इन बालकों के प्रति सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार किया जाए एवं मनोवैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग किया जाए तो वे सामान्य स्तर के साथ आ सकते है।

शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में बी. एड. स्तर का एक लघु शोध प्राप्त हुआ हैं। शोध में गौड़ (1974) ने सैद्धान्तिक शिक्षण के उद्देश्यों एवं उनकी प्राप्ति का प्रशिक्षणरत अध्यापकों एवं सेवारत अध्यापकों पर अन्वेषण कर निष्कर्ष दिया कि दोनों वर्गों के छात्राध्यापकों, बुद्धि स्तर एवं व्यक्तित्व समायोजन में कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया। दोनों पक्ष सैद्धान्तिक शिक्षण को किसी न किसी सीमा तक स्वीकार नहीं करते। इससे शिक्षण का व्यावहारिक पक्ष विचारणीय बन गया है।

सम्भावनाएँ एवं सुझाव :

समग्रतया पाठ्यचर्या को विभिन्न विषयों के रूप में देखा जाना निश्चय ही श्लाघनीय पक्ष है। इसके बाद भी बहुत से पक्ष ऐसे रह जाते हैं, जिन पर अद्यावधि शोध की महती आवश्यकता है। अनुसन्धान कार्य में जो कमियाँ रह जाती हैं, वे इन शोधों में भी रही हैं। उदाहरणार्थ शोध क्षेत्र कुछ विद्यालय एवं एक नगर विशेष तक ही सीमित रहे तथा सीमित न्यादर्श का ही प्रयोग हुआ। सर्वेक्षण विधि अधिकांश शोध कार्यों में प्रयुक्त की गई। ये कमियाँ 1974 तक की समीक्षा में भी दर्शाई गई थीं। कहीं-कहीं तो लघु शोध प्रबन्ध शोध की दृष्टि से नहीं अपितु प्रस्तुत करने की दृष्टि से ही प्रस्तुत हुए। अधिकांश शोध पाठ्यक्रम की अभिरुचि जानने के लिए ही किए गए हैं। उसे व्यावहारिक बनाने के सुझाव कम ही आ पाए हैं।

परिव्याप्ति की दृष्टि से 3% शोध प्राथमिक क्षेत्र में, 5.5% उच्च प्राथमिक क्षेत्र में एवं 85.5% माध्यमिक स्तर पर सम्पन्न हुए हैं। स्पष्ट झलकता है कि प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर शोधार्थियों का न्यूनतम प्रयत्न हुआ है। इस ओर विशेष ध्यानाकर्षण किया जाता है क्योंकि प्राथमिक शिक्षा बाल विकास का मूल आधार है। यह तथ्य 1974 तक हुई शोध समीक्षा में भी उभरकर सामने आया था, तदुपरान्त भी शोधार्थियों के शोध में माध्यमिक स्तर ही मुख्य रहा है। अनुसन्धान क्षेत्र में मुख्यतः जो बिन्दु उभरकर सामने आए हैं, उन्हें एक दृष्टि में इस प्रकार देखा जा सकता है :

1. पाठ्यचर्या निर्माण के पश्चात् छात्र प्रतिक्रियाएँ ज्ञातव्य होनी चाहिए तथा सुझावों के अनुसार संशोधन की ओर अग्रसर होना भी आवश्यक है।

2. प्राथमिक स्तर पर शारीरिक विकास, भाषा ज्ञान एवं शैक्षिक वातावरण का निर्माण एक चिन्तनीय पक्ष है।

3. भाषा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में रीढ़वत है, अतः भाषा पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन आवश्यक है।

4. सामाजिक ज्ञान विषय के तीनों क्षेत्रों (इतिहास, नागरिक शास्त्र और भूगोल) में संग्रथन एवं समन्वय नहीं पाया गया। 10+2 में यह क्षेत्र व्यापक हो गया। अतः सन्तुलन क्षमता का महत्व अधिक बढ़ गया है।

5. विज्ञान, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र, इतिहास एवं वाणिज्य पाठ्यचर्या की समीक्षा करके भी कतिपय सुधार हेतु सुझाव दिए हैं। विज्ञान विषय को छोड़कर शेष का महत्व अब उच्च माध्यमिक स्तर पर ही है।

अनुसन्धान में निरन्तर प्रगति के बाद भी कतिपय क्षेत्र लगभग अछूते रह रहे हैं। इस ओर राष्ट्रीय और प्रांतीय दोनों स्तरों पर पर्याप्त शोध की अपेक्षा है। यथा –

(क) 10+2 पद्धति में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का महत्व बढ़ गया है, अतः इस ओर पर्याप्त अनुसन्धान की आवश्यकता है।

(ख) पाठ्यचर्या में गृह कार्य का महत्व एक चिन्तनीय विषय है।

(ग) पाठ्यचर्या अध्यापन को प्रभावी बनाने के उपाय, सैद्धान्तिक कम, व्यावहारिक अधिक हैं।

(घ) पाठ्यचर्या में नैतिक मूल्यों का समावेश एवं गिरते नैतिक मूल्य राष्ट्रीय स्तर पर चिन्तनीय हैं।

(ङ) शिक्षक छात्र की अध्ययन-अध्यापन में अरुचि, कारण एवं सुझाव।

(च) मूल्यांकन कार्य की विश्वसनीयता।

(छ) छात्र अभिरुचि एवं योग्यतानुरूप पाठ्यचर्या।

(ज) प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर शोध अपेक्षाएँ।

(झ) पुस्तकालय का समुचित उपयोग।

(ण) पाठ्यचर्या का रोजगार से सम्बन्ध।

(ट) पाठ्यचर्या एवं परिस्थितियों का सामंजस्य।

(ठ) प्रौढ़ शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा एवं जनसंख्या शिक्षा पर भी शोध की आवश्यकता है।

शोध का महत्व व्यवहार्य कम दृष्टिगोचर होता है। अधिक अनुसंधान होने पर भी परिणाम संतोषजनक नहीं है। भाषिक स्तर निरन्तर ह्रास की ओर है। साक्षरता एवं शिक्षित का अंतर बढ़ रहा है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि अनुसन्धान कार्य का महत्व कम है अपितु अनुसन्धान में अभिनव प्रयोग, नवाचारों की खोज तथा उनका शिक्षा क्षेत्र में प्रयोग विचारणीय है।

शैक्षिक महत्व : विभिन्न निष्कर्षों पर विचारोपरांत उनकी शिक्षा में उपयोगिता की दृष्टि से इनको शैक्षिक महत्व देना अनिवार्य है ताकि ये व्यवहार्य बन सकें।

- माध्यमिक स्तर की वाणिज्य वर्ग की पाठ्यचर्या का पुनरावलोकन किया जाना चाहिए तथा शिक्षकों को प्रशिक्षित करने वाली पाठ्यचर्या को भी विद्यालयी पाठ्यचर्या के अनुसार किया जाना चाहिए।

- अध्यापिकाएँ मानसिक रूप से व्यवसाय के प्रति अधिक समर्पित होती हैं। अतः अध्यापिकाओं की नियुक्ति अधिक उपयुक्त रहेगी।

- पूर्व प्राथमिक कक्षाओं की पाठ्यचर्या में शारीरिक विकास एवं भाषिक योग्यता पर जोर दिया जाना आवश्यक है।
- महिलाओं के पाठ्यक्रम में उनकी विशेष अभिरुचि की पाठ्यचर्या जोड़ी जानी चाहिये।
- कक्षा आठ तक भाषिक योग्यता विकास पर बल दिया जाए। सस्ते नोट्स का प्रयोग करना अधिगम प्रत्यय सिद्धान्त के प्रतिकूल है, अतः इनका प्रयोग सख्ती से रोका जाए, किन्तु यह तब ही होगा जब अध्ययन प्रभावी बने।
- नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को उभारने के लिए पाठ्यचर्या का आधार दार्शनिक होना चाहिए।
- बालक के वैयक्तिक, चारित्रिक आदि पक्षों का विकास उपयुक्त माना जाए।
- संस्कृत (तृतीय भाषा) के प्रति बालकों के ऋणात्मक रुख को बदलने के लिए इसके अंकों को श्रेणी में जोड़ा जाना चाहिए।
- पाठ्यचर्या में वैज्ञानिक अविष्कार, पर्यावरणीय ज्ञान, उपदेशप्रद, ज्ञानवर्धक एवं ऐतिहासिक कथाएँ जोड़ी जानी चाहिए।
- माध्यमिक स्तर की सामाजिक ज्ञान विषय की पाठ्यचर्या को उसके उद्देश्यानुसार लिखने हेतु लेखकों को निर्देश प्रदान किए जाने चाहिए।
- शिक्षकों को सामाजिक ज्ञान से सम्बन्धित उद्देश्यों की जानकारी करानी चाहिए।
- कक्षा अष्टम की विज्ञान की पाठ्यपुस्तक का पुनरवलोकन कराकर उसकी कमियों को दूर कराया जाना चाहिए।
- विद्यालयों में प्रयोगशाला की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- विज्ञान शिक्षण में अभिवृत्ति परिवर्तन पर जोर दिया जाना चाहिए।
- यूनिसेफ की पाठ्यचर्या विभागीय पाठ्यचर्या से अधिक प्रभावी रही है।
- विज्ञान के शिक्षण में तर्क एवं प्रयोग विधि की उपयोगिता पर जोर दिया जाना चाहिए।
- महिलाओं को सर्वाधिक अनुकूल अभिवृत्ति बाल विकास, वस्त्र विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान एवं जनस्वास्थ्य में अधिक होने के कारण पाठ्यचर्या में इनका समावेश अधिक होना चाहिए।
- वाणिज्य विषय को विज्ञान के समकक्ष बनाये रखने के लिए प्रायोगिक परीक्षाओं की आवश्यकता पर बल देना चाहिए।
- 80 प्रतिशत छात्र आंतरिक मूल्यांकन के क्रियान्वयन के पक्ष में हैं, अतः इसे प्रभावी ढंग से चलाया जाए।

- प्रार्थना से धार्मिक कट्टरता में तो कमी नहीं आती किन्तु नैतिक व धार्मिक शिक्षा की अवश्य पूर्ति होती है।
- एस.यू.पी.डब्ल्यू. को वे ही प्रधानाध्यापक सफल नहीं मानते जिन्हें इस प्रवृति का पूर्ण ज्ञान नहीं है अतः उन्हें इसका पूरा ज्ञान कराया जाए।
- अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों में स्वास्थ्य शिक्षा एवं पौधशाला को जोड़ा जाए।
- विकलांग बालकों के लिए सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार एवं मनोवैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग पर बल देना आवश्यक है।

उपर्युक्त शैक्षिक महत्व प्रशासकों, शैक्षिक योजना निर्माताओं एवं अध्यापकों से क्रियान्विति की अपेक्षा करता है। शोध का महत्व भी तब ही उजागर होता है, जब क्षेत्र में उसका क्रियान्वयन हो।

वाचस्पति शोध-सार

के. एम. गोयल : राजस्थान तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विज्ञान "सुमेटिव" पाठ्यक्रम का मूल्यांकन परख तुलनात्मक अध्ययन। पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1985

निष्कर्ष :

1. छात्रों एवं शिक्षकों में वैज्ञानिक समझ का अभाव पाया गया। 2. विज्ञान एवं वैज्ञानिकों के विषय में अभिरुचि पक्ष में मिली, जबकि यह अभिरुचि विज्ञान एवं बिना विज्ञान के केन्द्रीय एवं राजस्थान बोर्ड के छात्रों में पृथक-पृथक मिली। 3. विज्ञान अध्यापकों की अभिरुचि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। 4. विज्ञान की प्रकृति की अनुभूति पक्ष में नहीं पाई गई, किन्तु वैज्ञानिकों के पक्ष में पाई गई। 5. दोनों बोर्डों के छात्रों की अनुभूति में सार्थक अन्तर पाया गया। इसी प्रकार का अन्तर समाज व विज्ञान के पक्ष में पाया गया। 6. वैज्ञानिक कार्यों के प्रति अनुभूति पक्ष में रही एवं विज्ञान एवं वैज्ञानिक दोनों के सामाजिक आधार के अवबोध में समानता पाई गई। 7. विज्ञान अभिशाप है एवं समाज को विज्ञान की अद्भूत देन है.... दोनों ही कथन विचार पक्ष में आए।

के. सी. एस. जैन : बैंक कर्मचारियों की कार्य अपेक्षाओं के सन्दर्भ में पूर्व स्नातक स्तर पर वाणिज्य पाठ्यक्रम का मूल्यांकन। पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1977

1. योग्यता एवं कार्य-सम्पादन दोनों प्रकार के समूहों में योग्यता का सार्थक प्रभाव प्रतीत नहीं हुआ। 2. कार्यक्षमता में समयबद्धता एवं नियमबद्धता का प्रभाव ही सार्थक प्रतीत हुआ। परन्तु

इन चारों मूल्यों में नियमितता, समयबद्धता, सामाजिक व्यवहार, व्यक्तित्व दृष्टिकोण में वाणिज्य के अतिरिक्त विषय वाले स्नातक, अधिस्नातक अधिक अच्छे पाए गए। 3. बैंकों में श्रेष्ठ कार्य-निष्पत्ति के लिए वाणिज्य स्नातक उपाधि का कोई योगदान नहीं है। बैंकों में कार्यरत वाणिज्य एवं गैर वाणिज्य स्नातकों की कार्य-निष्पत्ति के मध्य कोई अन्तर नहीं है। 4. बैंकों में कार्य-निष्पादन एवं प्रवीणता में आयु तथा कार्यानुभव का कोई योगदान नहीं हैं। 5. प्रतिभा एवं कार्य-सम्पादन समस्त कर्मचारियों में सार्थक पाया गया। 6. वर्तमान वाणिज्य पाठ्यक्रम में बैंक कर्मचारियों के कुशलता सम्बन्धी कुल 41 तत्व हैं। 7. शोध में वर्णित अन्य कुशलताएँ भी पाठ्यक्रम में समाहित हैं, की जाएँ।

श्री जैन का यह शोध महाविद्यालयी पाठ्यक्रम से सम्बन्धित है, जहाँ बैंकिंग कुशलताओं का वाणिज्य पाठ्यक्रम में व्यावसायिक समायोजन नहीं है। 10+2 पद्धति में विद्यालय स्तर पर भी यह चिन्तनीय है।

श्रवण कुमार : कक्षा–8 की हिन्दी विषय की पाठ्यपुस्तक के सन्दर्भ में न्यून एवं उच्च पठन क्षमता एवं अधिगम अनुभव के प्रभाव का अध्ययन। पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1981

शोध से प्राप्त निष्कर्ष निम्नांकित हैं–

1. पाठ्यपुस्तक का कठिन स्तर छात्र की पठन योग्यता प्रभावित करता है। 2. अध्यापकों और पुस्तक लेखकों के लिए पठन क्षमता सारणी का निश्चय करना महत्वपूर्ण है। 3. विशेष कक्षा के लिए सामग्री निर्धारित करने से पूर्व पठनकर्ता के लिए पठन क्षमता अंक निर्धारण करना आवश्यक अंग है। 4. पाठ्य-पुस्तक में प्रत्येक पाठ के अन्त में दिए गए अभ्यास प्रश्न ज्ञान को मापने के लिए मूल्यांकन उद्देश्यों की पूर्ति नहीं करते हैं। 5. सस्ती कुंजियों का प्रयोग अधिगम प्रत्यय के मूल सिद्धान्त के विपरीत है।

शोध-अनुक्रमणिका

अग्निहोत्री, सुषमा : माध्यमिक हिन्दी पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों एवं शिक्षकों द्वारा प्रत्यक्षन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

अग्रवाल, उमा : गृह विज्ञान पाठ्यचर्या के प्रति छात्राओं की अभिवृत्तियाँ । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1975

अग्रवाल, ज्योत्सना : राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सामान्य विज्ञान पाठ्यक्रमों के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

अग्रवाल, सन्ध्या : उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति । एम. एड., विद्या भवन, उदयपुर, 1988

अग्रवाल, हरिशंकर : परिवर्त्यमान युग सन्दर्भ में हमारा इतिहास पाठ्यक्रम राज. के सन्दर्भ में एक सुधार लक्ष्यी आलोचनात्मक अध्ययन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

अयूब, मोहम्मद : A comparative study of Bilingual method and the direct method of teaching English as a foreign language, M. Ed., Raj. Uni., 1984.

अली, शाकिर अहमद: राजस्थान में माध्यमिक स्तर पर उर्दू (तृतीय भाषा) पाठ्यक्रम का मूल्यांकन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

आमेटा, गायत्री : उच्च माध्यमिक स्तर पर गृह विज्ञान छात्राओं की गृह प्रबन्ध, शिशुपालन एवं राष्ट्रीयता के प्रति अभिवृत्तियाँ । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

कटियार, जे. के. : A post effect study of Unicef and conventional science curricula on scientific attitude nature of Science and achievement motivation of students at secondary level. M. Ed., Raj. Uni., 1979

कौर, राजवन्त : A comparative study of the effects of the personalised system of instruction and conventional method on achievement of children in Science and Mathematics and at primary stage. M. Ed., Raj. Uni., 1980

कोठारी, सुनीता : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा संचालित पत्राचार पाठ्यक्रम से सम्बन्धित छात्रों की समस्याओं का अध्ययन । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1988

गर्ग, अशोक कुमार : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा माध्य. कक्षाओं के लिए निर्धारित हिन्दी विषयक पाठ्यपुस्तक में व्यंजित सांस्कृतिक अन्तर्वस्तु का विश्लेषणात्मक अध्ययन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

गर्ग, रामकृष्ण : माध्यमिक स्तरीय संस्कृत अध्ययन के वर्तमान पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तक की उद्देश्यों के आधार पर समीक्षा। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

गनी, उस्मान : राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की आंतरिक मूल्यांकन योजना का क्रियान्वयन तथा शिक्षकों की उसके प्रति अभिवृत्तियाँ । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

गहलोत, सरिता : पश्चिमी भारत (18वीं व 19वीं शती) की भाषा ज्ञान (लिपि, उच्चारण व व्याकरण) के शिक्षण सम्बन्धी पाठशालाओं में प्रचलित प्रक्रिया तथा उसका मूल्यांकन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

गुप्ता, अलका : राजस्थान शिक्षा विभाग द्वारा विशिष्ट पूर्व प्राथमिक संस्था के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम का वस्तु विश्लेषणात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

गोयल, के. एम. : A comparative study of summative evaluation of science curriculum Board of Secondary Education, Rajasthan and Central Board of Secondary Education. Ph. D., Raj. Uni., 1982

गोयल, रेखा : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राज., अजमेर द्वारा वृत्त वर्तमान माध्यमिक कक्षाओं के लिये सामाजिक ज्ञान पाठ्यपुस्तक का विश्लेषणात्मक अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

गौड़, अरुणकान्त : Students attitude towards school subjects. M. Ed., Raj. Uni., 1978

गौड़, सन्ध्या : अनिवार्य व ऐच्छिक विषय के रूप में इतिहास के प्रति छात्र-छात्राओं की अभिवृत्ति । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982-83

गौड़, रवीन्द्रनाथ : बी. एड. सैद्धान्तिक प्रशिक्षण से उद्देश्य एवं उनकी प्राप्ति का अन्वेषण। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1974

चतुर्वेदी, सुलोचना : सिंधी भाषी छात्र-छात्राओं की हिंदी वर्तनी एवं व्याकरण की त्रुटियों का अध्ययन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

चौहान, सरिता : माध्यमिक स्तर की पाठ्यचर्याओं का छात्रों द्वारा प्रत्यक्षीकरण । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

जारोली, निर्मलकुमार : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के सैकण्डरी स्तर के भौतिक विज्ञान पाठ्यक्रम का अध्ययन । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

जेकब, अनमेरी : A study of some physical science concept formation and its relationship to intellectual development. M. Ed., Raj. Uni., 1980

जैन, कालरा : उदयपुर नगर के माध्यमिक विद्यालयों में व्यापक आंतरिक मूल्यांकन योजना के प्रति शिक्षक व शिक्षार्थियों की अभिवृत्तियों का अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

जोशी, मधु : माध्यमिक स्तरीय सामाजिक अध्ययन के वर्तमान पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों की उद्देश्यों के आधार पर समीक्षा । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय,1982

जोशी, मीनाक्षी : प्राथमिक शिक्षकों हेतु पत्राचार पाठ्यक्रम –एक समालोचनात्मक अध्ययन । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

जोशी, वी. के. : Problems of English language teaching. M.Ed., Raj. Uni., 1987

ठाकुर, भारती : उच्चतर माध्यमिक स्तर पर बहीखाता विद्यार्थियों द्वारा कक्षा अनुभवों का प्रत्यक्षीकरण एवं विषयों के प्रति अभिवृत्ति से उसका सम्बन्ध । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

दीक्षित, मिथिलेश : छात्र-छात्राओं की जिज्ञासा के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक कक्षाओं के विज्ञान पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु का अध्ययन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

नन्दवाना, हर्षलाल : राजस्थान राज्य में प्राथमिक स्तर पर स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम का अध्ययन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

नारंग, सरोज : उच्च माध्यमिक छात्राओं की अभिरुचियों और पाठ्यचर्यात्मक निहितार्थ। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1976

निगम, रश्मि : विज्ञान के प्रति माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981-82

पारीक, मदनमोहन : राजस्थान में प्राथमिक स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण की वर्तमान पाठ्यचर्या का मूल्यांकन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

पालीवाल, अनिलकुमार Relationship between teaching and testing strategies in developing reading comprehension in English at the secondary level. M. Ed., Udai., Uni., 1988

पूनिया, मनीषराम : संस्कृत विषय के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

प्रदीप, कुमार : A comparative study of attitude towards chemistry and chemists amongst post secondary science students of Rajasthan and Utter pradesh. M. Ed,, Raj. Uni., 1979

प्रजापति, वासुदेव : राजस्थान की राष्ट्रीयकृत अष्टम कक्षा की संस्कृत विषय की पाठ्यपुस्तक का इस विषय के निर्धारित उद्देश्यों के सन्दर्भ में अध्ययन। एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1986

प्रतिभा, रानी : राजस्थान बोर्ड द्वारा निर्धारित माध्यमिक कक्षाओं के लिये अर्थशास्त्र की पाठ्यचर्या का समीक्षात्मक अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

बंसल, रुक्मणी : राजस्थान में कक्षा 6, 7, 8 के हिन्दी विषय पाठ्यक्रम में विभिन्न दार्शनिक प्रेरणाओं के समावेश की स्थिति। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

बोर्डिया, निर्मला : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बलूचिस्तान कॉलोनी, उदयपुर में विकलांग बालकों के लिये एकीकृत विषय का अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

मल्होत्रा, रीता : A study of relationship between understanding of the nature of science and attitude towards science and among certain groups of students. M. Ed., Raj. Uni., 1979

मदान, सपना : Solo in the context of teaching of Hindi in class-X, certain learner characteristics and teacher behaviour a status study. M. Ed., Ajmer Uni., 1988

मांडलिया, श्याम : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विज्ञान पाठ्यक्रम के प्रति उपलब्धियाँ एवं अभिप्रेरणा से उसका सम्बन्ध। एम.एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1976

राजपूत, चित्रा : परिवर्तित होता हुआ समाज व समाज व नागरिक शास्त्र का पाठ्यक्रम (एक सुधार संलक्ष्यी अध्ययन) एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

राजोरा, जवानसिंह : विद्यालय नवाचारों का एक अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

रावल, सुरेन्द्र कुमार : माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियों के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

लाभसल, रामचन्द्र : A comparative study of teacher education in terms of content analysis, attitudinal change and effectiveness. M. Ed., Raj. Uni., 1981

व्यास, शिवशंकर : राज. शिक्षा बोर्ड के संस्कृत (तृतीय भाषा) पाठ्यक्रम के प्रति कक्षा 10 के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

वर्मा, कमला : अनौपचारिक शिक्षा सम्बन्ध पाठ्यपुस्तकों का भाषाई एवं विषय-वस्तुपरक अध्ययन । एम. एड., डबोक विश्वविद्यालय, 1988

स्वामी, राजेन्द्रकुमार : समाजोपयोगी उत्पादन कार्य के प्रति विद्यालयी घटकों की अभिवृत्तियों का अध्ययन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

सक्सैना, मंजुला : A comparative study of the traditional versus advanced curriculum model of cogenitive learning as science teaching in relation to achievement and creativity at the elementary level. M. Ed., Raj. Uni., 1980

सजेश, मधु : माध्यमिक कक्षाओं में बहीखाता एवं लेखाकर्म विषय के ज्ञानार्जन पर आंकिक योग्यता और गति एवं शुद्धता अभिरुचियों का प्रभाव । एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1981

सांडिल्य, दीप्ति : राजस्थान में माध्यमिक स्तर पर गृह विज्ञान पाठ्यक्रम का मूल्यांकन एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

सिंह, वेदपाल : वाणिज्य विषय में प्रायोगिक परीक्षा की आवश्यकता एवं संगठनात्मक समस्याओं का एक अध्ययन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981-82

शर्मा, जयपाल : 10+2+3 शिक्षा प्रणाली के प्रति छात्र-छात्राओं की अभिवृत्तियों का अध्ययन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

शर्मा, भंवरलाल : वाणिज्य विषय के प्रति माध्यमिक स्तर के छात्रों की अभिवृत्ति (लिकर्ट पद्धति) एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

शर्मा, राधेश्याम : शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के लिए शैक्षिक सामाजिक कार्य पाठ्यक्रम का समीक्षात्मक मूल्यांकन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

शर्मा, योगेश्वर : साप्ताहिक प्रार्थना के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

शर्मा, सुमन : राजस्थान में वर्तमान में निर्धारित कक्षा–8 की सामान्य विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों का उद्देश्यनिष्ठ विश्लेषणात्मक अध्ययन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

शर्मा, शकुन्तला : उदयपुर जिले के ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों में आन्तरिक मूल्यांकन योजना के प्रति शिक्षक शिक्षार्थियों की अभिवृत्ति । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

शर्मा, सुनीता : Achievement and cognitive preference styles in Mathematics of class X students of Udaipur city, M. Ed., Udai. Uni., 1987

शर्मा, अन्तराम : कक्षा–8 के छात्रों एवं उनके अध्यापकों द्वारा विज्ञान पाठ्यक्रम का प्रत्यक्षीकरण, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

श्रवण कुमार : The study of the effect low and high read ability and lerning experience in school text books up on reading-comprehension in Hindi for class VIII. Ph. D., Raj. Uni, 1987

हीतावाला, सलमा : विद्या भवन उच्च माध्यमिक विद्यालय द्वारा संचालिता वन शालाओं (1971-80) के कार्यक्रमों का संक्षिप्त मूल्यांकन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

हींगड, सुरेखा : माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियों के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

शिक्षण विधि एवं शिक्षक व्यवहार

❑ सतीशकुमार बचलस
❑ रामपाल शर्मा
❑ विद्योत्तमा वर्मा

विषय-शिक्षण

समीक्ष्य अवधि में संस्कृत भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में मात्र एक शोध अध्ययन शिक्षा अधिस्नातक स्तर पर मंजू दवे (उदयपुर विश्वविद्यालय, 1986) ने बी. एड. के अध्यापकों की संस्कृत विषय के प्रति अभिवृत्ति अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में अभिव्यक्त किया कि पाठ्यक्रम व्यावहारिक हो तथा सम्प्राप्ति में प्रचलित परम्परागत पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन हो। व्याकरण शिक्षण के लिए आगमन विधि उपादेय है । संस्कृत शिक्षण में मौखिक अभिव्यक्ति पर अधिक बल दिया जाए तथा हिन्दी शिक्षण के सन्दर्भ में राजकुमारी बन्सल (उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981) ने शिक्षा स्नातक प्रशिक्षणार्थियों की वर्तनी की अशुद्धियों का वर्गीकरण करते हुए निष्कर्ष निकाला कि हिन्दी एवं अन्य विषय शिक्षण लेने वाले प्रशिक्षणार्थियों की वर्ण, स्वर, अनुस्वार, चन्द्र बिन्दु, विसर्ग, रेफ, धन्वान्तर की अशुद्धियाँ पाई गईं। ब्रज किशोर शर्मा (उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981) ने शोध द्वारा पाया कि परम्परागत विधि की तुलना में प्रायोजना विधि से सृजनात्मकता का विकास अधिक होता है । कु. रत्ना भटनागर ने हिन्दी में उपचारात्मक कार्य के निष्कर्ष में बताया कि स्वरों के त्रुटि सुधार में आ, इ, ई, उ, ऐ, अं स्वरों के त्रुटि सुधार में सार्थक अ, उ, ए, ओ पर नकारात्मक तथा अं, औ पर निरर्थक प्रभाव रहा । रेखा मित्तल (राजस्थान विश्वविद्यालय, 1983) ने निष्कर्ष निकाला कि स्वाधिगम आधारित खेल विधि परम्परागत विधि की अपेक्षा अधिक प्रभावी एवं रुचिकर है।

आंग्ल भाषा के एक मात्र शोध अध्ययन में मंजू ठाकरे (1981) ने निष्कर्ष निकाला कि संरचनात्मक विधि अंग्रेजी अध्यापन के लिए अनुवाद विधि से अधिक प्रभावी रही। अमरेन्द्र नारायण सिंह (1986) ने पाया कि सेवारत एवं सेवापूर्व अध्यापकों की इतिहास शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है। माया अग्रवाल (उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982) के अनुसार सामाजिक

ज्ञान के अध्यापक व्याख्यान अधिक देते हैं। विज्ञान अध्यापक प्रश्न अधिक पूछते हैं तथा छात्रों को अधिक स्वतन्त्रता देते हैं। सुमन बोस (बीकानेर, 1981) के सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि नागरिक शास्त्र के अध्यापक व्याख्यान अधिक देते हैं । छात्रों की भावनाओं को कम स्वीकार करते हैं । उन पर नियन्त्रण अधिक रखते हैं तथा परिहास को कोई स्थान नहीं देते। रेहाना शेख (1985) ने प्रयोगात्मक विधि द्वारा निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक अध्ययन शिक्षण हेतु व्याख्यान विधि की तुलना में समाजीकृत विधि अधिक प्रभावशाली है।

विज्ञान शिक्षण के सन्दर्भ में डी. एन. डाणी (उदयपुर वि. वि., 1974) ने सर्वेक्षण के आधार पर पाया कि विज्ञान अध्यापक 75 प्रतिशत समय अध्यापक कथन में, 10 प्रतिशत छात्र कथन में तथा शेष मौन/भ्रम में लगाते हैं। वे छात्रों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते हैं। ओम प्रकाश सिंह (राज. 1983) का शोध परिणाम निकला कि प्रयोग प्रदर्शन एवं नियम तथा सूत्र संस्थापन की तुलना में सूक्ष्म अध्यापन प्रविधि अधिक प्रभावी है। त्रिलोकीनाथ व्यास (उदयपुर वि.वि., 1981) ने सर्वेक्षण का निष्कर्ष निकाला कि ऐच्छिक विज्ञान लेने वाले छात्रों में अन्य छात्रों की अपेक्षा अधिक धनात्मक वैज्ञानिक अभिवृत्ति है। छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई विशेष अन्तर नहीं पाया गया।

वाणिज्य संकाय से सम्बन्धित दो अध्ययन किए गए । मोहन लाल ढांका (राज. वि. वि., 1986) के शोध का निष्कर्ष निकला कि राजकीय वाणिज्य अध्यापक निजी अध्यापकों से, स्नातकोत्तर अध्यापक स्नातक अध्यापकों से, प्रशिक्षित अध्यापक अप्रशिक्षित अध्यापकों से अधिक प्रभावी होते हैं। प्रभावी अध्यापकों में अधिक उपलब्धि की चाह, प्रदर्शन की इच्छा, अप्रभावी में कार्य की क्रमिकता तथा दोनों में स्वायत्तता और लगाव होता है । दिनेश कुमार शर्मा (राज. वि. वि., 1985) ने अवलोकन विधि से ज्ञात किया कि वाणिज्य अध्यापक व्यवसाय के प्रारम्भ में प्रश्न प्रविधि का विशेष उपयोग नहीं कर पाते । अनुभव के साथ-साथ आत्म-विश्वास में वृद्धि होती है । सेवारत शिक्षकों की तुलना में नवीन प्रशिक्षणार्थी अधिक कुशलता से प्रश्न प्रविधि का उपयोग करते हैं ।

शिक्षण विधियाँ

शिक्षण विधियों के सन्दर्भ में कुल 23 अध्ययन किए गए हैं जिनमें से दो शिक्षा वाचस्पति (पीएच. डी.) स्तर के तथा 2 शिक्षा अधिस्नातक स्तर के शोध कार्य हैं । पन्द्रह शोधार्थियों ने दो अथवा तीन शिक्षण विधियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रयोगात्मक विधि से किया है। इनमें से भी अधिकांश ने तुलना का आधार परम्परित व्याख्यान विधि को बनाया। विद्या पुणेकर (1982), यादव (1977), मंजू माथुर एवं सिंह (1978), पुष्पा नारंग (1983), अंजना गोयल (1979) राजकुमारी भार्गव (1986), प्रभा भार्गव (1981), सुभाष चन्द्र (1979), हसीना कासम (1986) ने अपने शोध के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि व्याख्यान विधि की तुलना में स्व-अधिगम विधि,

छात्र केन्द्रित विधियों के अन्तर्गत विद्या पुणेकर (1982) ने स्व-अधिगम विधि को अधिक प्रभावी बताया, प्रेमा शर्मा (1979) के निष्कर्ष के अनुसार अध्यापक वर्ग की अभिवृत्ति दल शिक्षण, अभिक्रमित अधिगम, प्रायोजना विधि के प्रति अनुकूल पाई गई। अरुणा (1986) ने भी अभिक्रमित अधिगम विधि को व्याकरण के लिए अधिक लाभप्रद पाया । शान्ति सिंह (1984) के निष्कर्षानुसार वाद-विवाद विधि, समस्या समाधान, विचार-विमर्श एवं अन्य विधियों की तुलना में अधिक प्रभावी है। अणु/सूक्ष्म शिक्षण के सन्दर्भ में इस अवधि में तो तीन अध्ययन किए गए । राजकुमारी माथुर (1980) के लघु शोध का निष्कर्ष निकला कि अणु शिक्षण एवं अन्य प्रविधियों द्वारा प्रशिक्षित छात्राध्यापकों में शाब्दिक अन्तःक्रिया में तो कोई सार्थक अन्तर नहीं आया, परन्तु मौन/भ्रान्ति, शिक्षक प्रश्न, छात्र स्वोपक्रम एवं विषय-वस्तु अवान्तर अनुपात में सार्थक अन्तर आया है । शीला सिंह (1977) एवं प्रेमलता पाण्डे (1985) के लघु शोधों के निष्कर्षों से भी ऐसे निष्कर्ष की पुष्टि हुई है ।

प्रयोगशाला विधि के सन्दर्भ में सावित्री मसी (1976) के शोध प्रबन्ध के निष्कर्षानुसार छात्र केन्द्रित शिक्षण विधियाँ–विशेषरूप से प्रयोगशाला विधि एवं प्रयोग प्रदर्शन विधि जिसमें छात्रों का अधिकतम उपयोग होता है, ज्यादा लाभदायक विधियाँ हैं । कु. अमृता चौधरी (1987) ने प्रगत संघटक प्रतिमान (एडवान्स ऑर्गेनाइजर मॉडल) की विविध प्रशिक्षण नीतियों की प्रभावशीलता का अध्ययन कर पाया कि सैद्धान्तिक के पश्चात प्रदर्शन तथा प्रदर्शन के पश्चात् सैद्धान्तिक प्रशिक्षणोपरान्त बोधगम्यता में कोई अन्तर नहीं आता । प्रायोगिक तथा नियन्त्रित समूहों में शिक्षण कौशल के विकास में भी अन्तर नहीं है परन्तु सूचनाओं के अर्थपूर्ण परिणाम की उपलब्धि में प्रथम नीति अधिक प्रभावी रही । कु. सुषमा चोधरी (1987) ने ज्यूरिस प्रूडेन्शियल इन्क्वायरी प्रतिमान (मॉडल) में प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन कर निष्कर्ष पाया कि शिक्षण कौशलों के सन्दर्भ में प्रयोगात्मक एवं नियन्त्रित समूहों का अन्तर असार्थक है, परन्तु सार्वजनिक प्रश्नों का निर्माण, वाद-विवाद तथा चिन्तन योग्यता विकास के प्रतिमान को अधिक प्रेरणादायक, तर्क शक्ति विकसित करने वाला पाया गया ।

मानसिक स्वास्थ्य

मनस्तापी बालकों के शिक्षण, उनकी कुण्ठा, परिस्थितियों, कारणों एवं प्रतिक्रियाओं के सन्दर्भ में सात शोध कार्य किए गए हैं जिनमें से एक शिक्षा वाचस्पति (पीएच. डी.) स्तर का है। नवल किशोर जोशी (1975) के लघु शोध निष्कर्ष के अनुसार सामान्य पुरुष एवं महिलाओं की तुलना में अध्यापकों और अध्यापिकाओं में मनस्ताप, दब्बूपन, समर्पण भाव अधिक पाया जाता है। रामपालसिंह (1983) के अध्ययन के अनुसार विद्यालयी कुण्ठा परिस्थितियों में अध्यापिकाओं तथा अध्यापकों में समान रूप से अहं प्रतिरक्षा सबसे अधिक, तत्पश्चात् अध्यापिकाओं में आवश्यकता प्रदर्शन तथा तीसरे स्थान पर बाधा की प्रधानता पाई गई । इसके विपरीत अध्यापकों में बाधा प्रधानता दूसरे स्थान पर एवं आवश्यकता प्रदर्शन तीसरे स्थान पर पाया गया । अग्रघर्षण की दिशा में तत्वों का क्रम दोनों में पूर्णतः समान पाया गया, यथा–बाह्य अग्रघर्षण अधिक मात्रा में उसके पश्चात् अनाक्रमण एवं अन्तः अग्रघर्षण सबसे कम पाया गया । सुचेता

(1986) के लघु शोध निष्कर्षानुसार ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं में आवश्यकता प्रदर्शन अत्यन्त, अंतः अतिक्रमण की अधिकता तथा अहं प्रतिरक्षा की न्यूनता है । इसके विपरीत शहरी अध्यापकों में बाधा प्रधानता, अहं प्रतिरक्षा, अनाक्रमण समूह अनुरूपता, बाह्य अतिक्रमण की अधिकता एवं आवश्यकता प्रदर्शन तथा अंतः अतिक्रमण की न्यूनता है । राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं में बाधा प्रधानता, अत्यन्त बाह्य अतिक्रमण, समूह अनुरूपता की अधिकता तथा अहं प्रतिरक्षा, की न्यूनता है । इसके विपरीत अराजकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं में अहं प्रतिरक्षा, आवश्यकता प्रदर्शन, अत्यन्त अन्तः अतिक्रमण की अधिकता तथा बाधा प्रधानता की न्यूनता है। इसी प्रकार जहां बालिका विद्यालयों की अध्यापिकाओं में अत्यन्त अंतः अतिक्रमण एवं अनाक्रमण की अधिकता तथा अहं प्रतिरक्षा की न्यूनता है वहां छात्र विद्यालयों के अध्यापकों में बाह्य अतिक्रमण, अहं प्रतिरक्षा, आवश्यकता प्रदर्शन की अधिक तथा बाधा प्रधानता की न्यूनता है। सन्दीप भार्गव (1985) ने कुण्ठा के कारणों का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि भार क्रम से कुण्ठा की परिस्थितियाँ-समस्याओं के प्रति शिक्षा अधिकारियों की उपेक्षा, प्रशासन में राजनेताओं का हस्तक्षेप, अभिभावकों की उदासीनता, अध्यापकों का पारस्परिक झगड़ा, भौतिक संसाधनों का अभाव अथवा जीर्ण स्थिति, अयोग्य एवं कनिष्ठ की पदोन्नति, स्थानान्तरण का भय, कार्य की अधिकता, विद्यार्थियों के पास पठन-सामग्री का अभाव, शिक्षणेतर कार्य का भार है ।

महेन्द्रकुमार गोयल (1985) ने अध्यापकों की कुण्ठा प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया जिसके निष्कर्षानुसार अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियाँ समान हैं । अध्यापकों की प्रतिक्रियाओं का क्रम अहं प्रतिरक्षा (E-D), बाधा प्रधानता (O-D), तथा आवश्यकता प्रदर्शन (N-P) पाया गया । अतिक्रमण की दिशा के सन्दर्भ में क्रम बाह्य अतिक्रमण (E-A), अनाक्रमण (M-A), अन्तः अतिक्रमण (E-A) रहा । लिंग, विद्यालयों के प्रकार, शैक्षिक स्तर आदि के आधार पर तुलना करने पर कुण्ठा परिस्थितियों के क्रम में अन्तर पाया गया । शोधकर्त्ता ने इस सन्दर्भ में अध्यापकों के लिए उपकरण का निर्माण कर उसका मानकीकरण किया। शंकरलाल (1988) ने प्रशिक्षणार्थियों की समायोजना समस्याओं का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि विद्यालयीय वातावरण सम्बन्धी समस्याएँ सर्वाधिक हैं । व्यावसायिक आर्थिक तथा सहपाठियों से सम्बन्धित समस्याओं से छात्राध्यापक, छात्राध्यापिकाओं की अपेक्षा अधिक ग्रसित है। प्रेम सिंह राठौड़ (1984) ने प्रधानाध्यापकों की कुण्ठा परिस्थितियों का अध्ययन कर पाया कि इनसे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास तथा विद्यालय की शैक्षिक प्रक्रिया प्रभावित होती हैं ।

अध्यापन मनोबल

मनोबल किसी भी कार्य अथवा व्यवसाय की सफलता/असफलता को प्रभावी करता है। भूदेव भारद्वाज (1979) के लघु शोध के निष्कर्षानुसार अध्यापकों की सर्वोपरि मनोबल की स्थितियाँ, व्यवसाय के अतिरिक्त अन्य कार्य, समस्त अवकाश सुविधा, तुरन्त स्वीकृति, पारस्परिक

प्रगति सूचना प्रेषण, छात्र-अनुशासन, क्रमोन्नति नियम क्षेत्रों में सुधार लाना और छात्रों का उपचारात्मक शिक्षण है। लाडलीलाल शर्मा (1977) के लघु शोध के निष्कर्षानुसार उच्च प्राथमिक स्तर पर अधिकांश अध्यापकों का मनोबल औसत या उससे निम्न स्तर का है । अध्यापिकाओं का मनोबल अध्यापकों से श्रेष्ठ पाया गया। ग्रामीण की तुलना में शहरी अध्यापकों-अध्यापिकाओं का मनोबल अधिक है राजीव कुमार (1976) के लघु शोध के अनुसार माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों का मनोबल सामान्य श्रेणी का है। अध्यापिकाएँ मनोबल में अध्यापकों से श्रेष्ठ हैं। निजी संस्थाओं के अध्यापकों का मनोबल राजकीय अध्यापकों से उच्च है।

दुर्गा जोशी (1982) के अध्ययन के अनुसार लोकप्रिय अध्यापक आत्म-सम्प्रत्यय के क्षेत्र में अलोकप्रिय अध्यापक की तुलना में अधिक सजग हैं तथा निजी संस्थाओं के लोकप्रिय अध्यापकों का आत्म-सम्प्रत्यय राजकीय तथा केन्द्रीय विद्यालयों के अध्यापकों की तुलना में अधिक सार्थक पाया गया । राजवी (1988) ने आत्म-सम्प्रत्यय की दृष्टि से अध्यापकों-अध्यापिकाओं, प्राथमिक एवं सैकेण्डरी स्कूल अध्यापकों तथा नवीन एवं सेवारत प्रशिक्षणार्थियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया।

प्रकाश चन्द्र जैन (1980) के लघु शोध के आधार पर पंचायत समितियों में कार्यरत प्रशिक्षित स्नातकों में कार्य सन्तुष्टि के अभाव के कारण—कच्चे मकान, विद्युत का अभाव, खाद्य सामग्री, औषधालय का अभाव, शिक्षणेत्तर उत्तरदायित्व, सहायक सामग्री, पुस्तकालय, बैंक व्यवस्था का अभाव, नगर से दूरी, कम वेतन, पक्षपात पूर्ण पदोन्नति तथा सामाजिक मान्यता का अभाव आदि हैं।

ललिता काबरा (1983) के लघु शोध के आधार पर आंगनबाड़ी प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन समस्याओं के अन्तर्गत 43 में से 15 तिरस्कृत एवं 2 अस्वीकृत पाई गईं। 30% को लिखित अभिव्यक्ति में कठिनाई होती थी; 90.68 प्रतिशत मानदेय की राशि से असन्तुष्ट थीं तथा अधिकांश पानी की अपर्याप्त व्यवस्था, स्वच्छता एवं शौचालय व्यवस्था से असन्तुष्ट थीं। सविता (1978) के लघु शोध निष्कर्षानुसार समायोजित अध्यापिका विद्यार्थियों के विचार स्वीकार करने, प्रश्न करने, छात्रों की वार्ता, पहल, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष व्यवहार में अधिक श्रेष्ठ पाई गईं। दूसरी ओर कुछ समायोजित अध्यापिकाएँ विद्यार्थियों को निर्देश देने, उनकी आलोचना करने, भ्रामक व्यवहार करने एवं शारीरिक दण्ड देने में लीन रहती हैं।

प्रशिक्षण

शिक्षक प्रशिक्षण की उपयोगिता के सन्दर्भ में प्रेम प्रभाकर (1982) के लघु शोध के निष्कर्षानुमार प्रशिक्षण के अनिवार्य विषय अच्छे अध्यापन में सहायक हैं। नवीन विधियों, साधनों, उपकरणों का उपयोग सीखा जाता है। अनेक समस्याओं का समाधान सीखते हैं तथा शिक्षण में आत्म-विश्वास प्राप्त होता है। दूसरी ओर स्नातक राजेन्द्र यादव (1986) ने सेवारत कर्मियों के कार्य में शैक्षिक उपाधि की उपयोगिता का अध्ययन किया जिसके परिणाम पूर्वोक्त से विपरीत निकले। स्नातक/स्नातकोत्तर उपाधि का सेवा-कर्मियों के कार्य, आर्थिक पक्ष, पदोन्नति आदि पर

कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् इसकी उपयोगिता शून्य लगती है। रीटा भट्टाचार्य (1979) के अनुसार सृजनात्मक कल्प एवं विज्ञान समूह में से अभिव्यक्ति विज्ञान समूह में अधिक पाई गई परन्तु शैक्षिक सम्प्राप्ति दोनों में समान थी ।

मदनलाल शर्मा (1978) के शिक्षा वाचस्पति शोध के निष्कर्षानुसार प्रशिक्षण द्वारा छात्राध्यापकों में शिक्षक क्षमता, कक्षागत व्यवहार, नवाचार आकर्षण में सार्थक प्रभाव पड़ता है। जो एक तत्व में उच्च है वह अन्य तत्वों में उच्च पाया गया। शिक्षण क्षमता विकसित होने में आयु, अनुभव, आर्थिक-सामाजिक स्तर का प्रभाव नहीं पड़ता । कुसुम संचेती (1977) के अनुसार व्यावहारिक अभ्यास शिक्षण के प्रति विज्ञान छात्राध्यापकों की सबसे कम अनुकूल अभिवृत्ति एवं अत्यधिक भिन्नता पाई गई। वैज्ञानिक साहित्य व उपकरण निर्माण की आवश्यकता समझी गई। खीमसिंह बोलिया (1982) के अनुसार छात्राध्यापक (एस.टी.सी.) वीर रस की कविताएँ, उपन्यास पढ़ने तथा वात्सल्य रस की कविताएँ, सामाजिक उपन्यास पढ़ने में रुचि रखते हैं परन्तु उन्हें समय नहीं मिलता है। छात्राध्यापक खेल-कूद तथा छात्राध्यापिकाएँ सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अधिक रुचि रखती हैं । मनोरमा दानी (1981) के अध्ययन के अनुसार अध्यापन अभिक्षमता एवं बुद्धिलब्धता के बीच अल्प धनात्मक सह-सम्बन्ध है

आर. पी व्यास (1982) के शोध निष्कर्षानुसार छात्राध्यापक की आयु, शैक्षिक सम्प्राप्ति, शाब्दिक-अशाब्दिक प्रतिभा, शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण और आर्थिक-सामाजिक स्तर शिक्षण की सफलता को परिभाषित करते हैं ।।

सात शोधार्थियों ने तुलनात्मक अध्ययन किए। रेणुका स्वरूप (1977) तथा बी. एल. मुद्गल (पीएच. डी.) ने अपने निष्कर्षों में बताया कि परम्परागत प्रशिक्षण की तुलना में कौशल आधारित प्रशिक्षण अधिक प्रभावी पाया गया। कौशल आधारित प्रशिक्षण प्राप्त छात्राध्यापकों के अध्यापन व्यवहार, सामाजिक संवेगात्मक वातावरण, श्याम पट्ट कार्य तथा मूल्यांकन की उपलब्धि अधिक पाई गई। हरिकान्त खण्डेलवाल (1984) ने उदयपुर मण्डल के शिक्षकों के स्तर का अध्ययन कर पाया कि 90.6 प्रतिशत व्याख्याता, 3.12 प्रतिशत प्रोफेसर/रीडर हैं। अधिकांश द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण है। पीएच. डी. उपाधि 6.2 प्रतिशत ने ही प्राप्त की है। आर्थिक दृष्टि से मात्र 5 प्रतिशत पूर्ण सन्तुष्ट, 82.5 प्रतिशत सामान्य सन्तुष्ट, तथा 12.5 प्रतिशत असन्तुष्ट हैं। 59.4 प्रतिशत अनुसन्धान कार्य कर रहे हैं जबकि 40.6 प्रतिशत नहीं। यही प्रतिशत लेखन कार्य करने तथा न करने वालों के हैं। 18.97 प्रतिशत को शिक्षक पुरस्कार प्राप्त हुआ है तथा शत-प्रतिशत समाज से सम्मान पाते हैं।

सम्पत कुमार सारण (1979) के तुलनात्मक अध्ययन के परिणाम के आधार पर चतुर्थ वर्षीय बी. एड. छात्राध्यापकों में एक-वर्षीय एवम् पत्राचारियों की तुलना में कक्षागत अभिव्यक्ति श्रेष्ठतम होती है। पत्राचारियों में अपेक्षाकृत उच्च स्वानुभूति तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव की क्षमता

सफलता चार-वर्षीय पाठ्यक्रम वाले छात्राध्यापकों को अधिक प्राप्त है। हरिशचन्द्र दीक्षित (1979) के निष्कर्षानुसार शिक्षण से पूर्व छात्राध्यापकों ने गत सत्र की अभ्यास पाठ पुस्तिकाओं, सन्दर्भ पुस्तकों, प्राख्याताओं से सहायता ली। विषय-वस्तु के सन्दर्भ में पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकों एवं प्राख्याताओं से सहायता प्राप्त की तथा शिक्षण विधियों की जानकारी शिक्षण विधि की पुस्तकों, प्रदर्शन पाठों से प्राप्त की । शिक्षण के पश्चात् अधिकांश छात्राध्यापक सकारात्मक प्रयास करते हैं। सतीश चन्द्र अग्रवाल (1980) ने पाँच प्रशिक्षण महाविद्यालयों के अध्यापनाभ्यास का अध्ययन कर पाया कि सभी महाविद्यालय अभिनवन कार्यक्रम चलाते हैं। प्रदर्शन पाठ दिलवाते हैं। इकाई, दैनिक पाठ योजना की जाँच एवं परिवीक्षण किया जाता है तथा वार्षिक पाठ नई विधाओं में पूर्ण तैयारी से दिलवाते हैं।

रमेश चन्द्र शर्मा (1984) ने पीएच. डी. स्तर के शोध अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि शैक्षिक मानदण्डों के आधार पर चर्चित भावी अध्यापकों में अध्यापन अभिक्षमता एवं नैतिकता का अभाव तथा बौद्धिक स्तर सामान्य हैं। अतः चयन का आधार शैक्षिक के साथ-साथ अध्यापन अभिक्षमता तथा नैतिकता भी होना चाहिए । स्नेहलता अग्रवाल (1988) ने शोध अध्ययन कर पाया कि पूर्व अध्यापक शिक्षा परख (पीटीईटी) द्वारा चयन प्रक्रिया के प्रति छात्राध्यापकों, प्राध्यापकों व प्रबंधकों की प्रतिक्रिया सकारात्मक रही। 75% के अनुसार आरक्षण समाप्त करना चाहिए क्योंकि इससे अयोग्य छात्राध्यापकों का चयन होता है तथा सैकेण्डरी परीक्षा के आधार पर जिला निर्धारण अनुचित है ।

कक्षाध्यापन

साहबसिंह (1978) ने अपने पीएच. डी. शोधकार्य में पाया कि शिक्षक की सफलता उसके सैद्धान्तिक एवं सामाजिक मूल्यों के साथ चलती है। द्वितीय बुद्धिमता, भावनात्मक स्थिरता, जागरूकता, सहभागिता और नियन्त्रण क्षमता का सम्बन्ध शैक्षिक सफलता से हैं। तृतीय, शिक्षक की शैक्षिक सफलता उसके समायोजन पर निर्भर करती है। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि छात्रों के व्यवहार में वांछित या अवांछित परिवर्तन के लिए शिक्षकों का व्यक्तित्व वैमनस्य बहुत हद तक उत्तरदायी हैं।

एम. एड. स्तर पर किये गए शोध कार्यों में मोहन कुँवर सिसोदिया (1976) के अनुसार अध्यापक डायरी केवल दबाव के कारण महीने में एक या दो बार पूरी की जाती है। अध्यापक बालकों से स्नेह रखते हैं तथा कक्षा अनुशासन बनाए रखते हैं। श्यामपट्ट का उपयोग करते हैं। पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेते हैं। कार्य-गोष्ठी में भाग लेते हैं। अध्यापक योजना बनाने में छात्रों की सलाह नहीं लेते। गृहकार्य देते तो हैं किन्तु नियमित रूप से नहीं जाँचते। कमजोर छात्रों के लिए निदानात्मक कार्य नहीं करते तथा छात्रों को कक्षा में समायोजन के लिए सहायता नहीं करते। डी. एन. डाणी (1974) ने पाया कि सफल विज्ञान अध्यापक 75 प्रतिशत समय अध्यापक कथन (टी. टी.) में लगाते हैं तथा 10 प्रतिशत समय वे छात्रों की पहल तथा प्रतिक्रिया में लगाते हैं। उदयपुर शहर में सफल विज्ञान अध्यापक व्याख्यान या प्रदर्शन विधि द्वारा पढ़ाने में ही रुचि लेते हैं। विषय वस्तु पर अधिक बल दिया जाता है न कि उद्देश्यों पर। छात्रों में विचारों व भावनाओं को सफल विज्ञान शिक्षक शीघ्र ही स्वीकार करके प्रतिक्रिया दर्शाते हैं। दूले सिंह (1983) के अनुसार छात्राध्यापकों में अध्यापन अभियोजना, लगनशीलता का

गुण सबसे अधिक पाया गया। छात्राध्यापकों में सबसे कम धैर्य का गुण पाया गया। डी. पी. गर्ग (1977) ने अपने अध्ययन में पाया कि अनुभवी व नये अध्यापकों में अध्यापक कथन, छात्र कथन एवं शान्ति या सन्देह स्थिति इन तीनों बातों में काफी अन्तर पाया गया। अध्यापक प्रतिक्रिया दोनों में समान रही। अध्यापक द्वारा प्रश्न एवं छात्र पहल इन दोनों बिन्दुओं में अनुभवी अध्यापक अधिक श्रेष्ठ रहे। शिक्षण, छात्र तथा समुदाय के प्रति अभिवृत्ति दोनों में समान पाई गई।

सुशीला चौरसिया (1981) ने पाया कि सामान्य विज्ञान में ग्रामीण शिक्षकों में शहरी शिक्षकों की अपेक्षा प्रत्यक्ष व्यवहार अधिक रहा। छात्र कथन शहरी क्षेत्रों में अधिक रहा। वाणिज्य में छात्र कथन ग्रामीण में अधिक तथा मानविकी में ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक का भाग अधिक रहा। विज्ञान संकाय में छात्र कथन ग्रामीण अध्यापकों का अधिक रहा। देवकृष्ण दीक्षित (1981) के अनुसार सहायक सामग्री के प्रयोग का प्रभाव मंद बुद्धि वाले छात्रों पर अधिक पड़ता है। कला एवं विज्ञान वर्ग में पाठ के विकास हेतु छात्रों से पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों की प्राप्ति केवल 25 प्रतिशत छात्राध्यापकों की अच्छी होती है।

वन्दना भारद्वाज (1980) ने पाया कि भाषा एवं विज्ञान के अध्यापक अपनी कक्षा में सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों की अपेक्षा अधिक परोक्ष प्रभाव निर्माण करते हैं। गिरधारीलाल सोनी (1981) ने ज्ञात किया कि अध्यापक छात्रों पर अपनी बात अधिकाधिक थोपते हैं तथा सहायक शिक्षण सामग्री का कम उपयोग करते हैं। बसन्त चटर्जी (1979) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च ज्ञानात्मक परिपक्व अध्यापकों की कक्षा में अध्यापक अनुक्रम, प्रश्न पूछना तथा छात्र अभिप्रेरण में अधिक समय बीतता है जबकि निम्न ज्ञानात्मक परिपक्व अध्यापकों की कक्षा में छात्र पहल व मौन स्थिति अधिक रहती है। महेन्द्रप्रताप शर्मा (1979) के अनुसार सेवा पूर्व अध्यापक बालकों को विज्ञान पाठ में सेवारत अध्यापकों की अपेक्षा अधिक सम्मिलित करता है।

ललिता शर्मा (1980) ने पाया कि प्रभावशाली विज्ञान अध्यापकों का झुकाव विद्यार्थियों के व्यवहार की प्रशंसा व प्रोत्साहित करने की तरफ होता है। जबकि अप्रभावशाली अध्यापक व्याख्यान में अधिक समय लगाते हैं। प्रभावशाली अध्यापकों की अध्ययन के प्रति अभिवृत्ति धनात्मक पाई गई। उषा शर्मा (1983) के अध्ययन में अन्ध विद्यालय के शिक्षक सामान्य विद्यालयों के शिक्षकों से अधिक उत्तरदायी होते हैं। अखिलेश कुमार शर्मा (1982) का निष्कर्ष है कि वाणिज्य के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का कक्षागत शाब्दिक अन्तःक्रिया के साथ सह-सम्बन्ध है ।

विजेन्द्र सारस्वत (1985) निष्कर्ष प्राप्त करते हैं कि चार-वर्षीय पाठ्यक्रम वाले विज्ञान शिक्षक छात्रों से प्रश्न अधिक पूछते हैं जबकिं एक-वर्षीय पाठ्यक्रम वाले कक्षा में कथन का प्रयोग अधिक करते हैं। कमला मुखर्जी (1981) के अनुसार उच्च सृजनशील अध्यापक निम्न सृजनशील अध्यापक की तुलना में छात्रों को बोलने का अधिक अवसर तथा उनके भावों को अधिक

रमेश (1979) ने ज्ञात किया कि अधिक प्रभावशाली अध्यापक अपने छात्रों द्वारा पूछे गए प्रश्नों तथा दिए हुए उत्तरों का पाठ के विकास में अधिक प्रयोग करते हैं तथा इनकी शाब्दिक अन्तःक्रिया अधिक जटिल व व्यापक होती है। ये अध्यापक अपेक्षाकृत कथन कम करते हैं। सुमनलता शर्मा (1975) के अनुसार अप्रत्यक्ष व्यवहार वाली छात्राध्यापिकाएँ अधिक बहिर्मुखी, प्रखर बुद्धि, विनम्र स्वभाव, निवेदनशील होती हैं। जितेन्द्र सिंह नेगी (1985) ने अपने पीएच. डी. शोध अध्ययन में पाया कि अल्पायु शिक्षकों की अपेक्षा वयोवृद्ध शिक्षक अधिक बार अधिकारियों की आलोचना करते हैं। अल्पायु शिक्षक छात्रों की समस्या पर चिन्तन के लिए पर्याप्त समय नहीं देते। अध्यापिकाओं की अपेक्षा अध्यापक अपने कक्षागत व्यवहारों में अधिक समन्वयी दृष्टिकोण रखते हैं। विवाहित शिक्षक अपने छात्रों की अधिक बार प्रशंसा करते हैं जबकि अविवाहित शिक्षक अधिक बार उनके विचारों को स्वीकारते है। अमूर्त तर्क शक्ति के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों के संज्ञानात्मक विकास स्तर में वृद्धि अन्तः क्रिया अनुपातों की भी वृद्धि करती है। अल्पायु शिक्षक अपेक्षाकृत अधिक बार चित्र एवं दृष्टान्त-प्रदर्शन का कौशल व्यवहार में लाते हैं जबकि अनुभवी वृद्ध शिक्षक आरेखन के कौशल का अधिक प्रयोग करते हैं। अध्यापिकाओं की अपेक्षा अध्यापक आरेखन कौशल का अधिक प्रयोग करते हैं। अध्यापिकाओं की वैवाहिक स्थिति शिक्षण कौशल के प्रयोग की प्रवृत्ति में बाधक नहीं है। उच्च बुद्धि शिक्षक निम्न बुद्धि शिक्षकों की अपेक्षा आरेखन व प्रश्न कौशलों का अधिक बार प्रयोग करते हैं। यही स्थिति शिक्षक अभिवृत्ति के क्रम में पाई जाती है। श्यामपट्ट सार, शिक्षक का कक्षागत व्यवहार, वृत्त वर्णन कौशल अन्तःक्रिया सूचकों से धनात्मक सह-सम्बन्ध रखते हैं। छात्र विचारों को स्वीकार/प्रयोग करने वाले एवं कक्षागत वार्तालाप में पर्याप्त विराम देने वाले शिक्षक अधिक प्रभावी होते हैं। कक्षागत अन्तःक्रिया में समन्वयी दृष्टिकोण शिक्षक अधिगम परिणामों के अनुकूल हैं। चित्रांकन कौशल का अधिक उपयोग करने वाले तथा प्रश्न व वृत्त कौशल का कम प्रयोग करने वाले शिक्षक अधिक प्रभावी पाए गए। रसायन विज्ञान में शिक्षक चर व चित्रांकन कौशल छात्र अधिगम परिणामों के सन्दर्भ में अधिक प्रभावी हैं। रसायन विज्ञान में छात्र अधिगम परिणामोन्मुखी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति से सार्थक रूप से प्रभावित होते हैं। मृदुला गुप्ता (1986) ने पाया कि अधिकांश पुरुष एवं महिला प्रभावी शिक्षकों में वेशभूषा के प्रति सुरुचि पाई गई जबकि अप्रभावी शिक्षकों में उपेक्षावृत्ति पाई गई। प्रभावी शिक्षकों में सहानुभूति, स्नेह, विद्यार्थियों की स्वीकृति, सहायता, अवलोकन शक्ति तथा सहज उपलब्धिता पाई गई जबकि अप्रभावी अध्यापकों में अपरिपक्व हास्य, झुंझलाहट, उदासीनता तथा शिक्षण को दस्तूरी कार्य-सा प्रदर्शित किया।

किरन शाह (1985) ने पाया कि कक्षा अन्तःक्रिया विषय की प्रवृत्ति से प्रभावित होती है। शशिबाला पुरवार (1985) के अनुसार, प्रश्न प्रवाह, प्रश्न पूछने का कौशल, खोजपूर्ण प्रश्न व उद्दीपन परिवर्तन के विकास में सूक्ष्म शिक्षण उपयोगी है। कमलेश अग्रवाल (1977) के अनुसार, अध्यापक में शिक्षण की अच्छी विधि, कक्षानुशासन, उपयुक्त वस्त्र, अच्छी सुन्दर आकृति, सहानुभूति पूर्ण प्रकृति, व्यवहार में निष्पक्षता को पसन्द किया गया। महेन्द्रजीत कौर (1986) के अनुसार उपलब्धि व स्मृति, एस.ई.एस. व बुद्धिमत्ता, उपलब्धि व बुद्धिमत्ता में सह-सम्बन्ध है। स्मृति व एसई.एस. में सह-सम्बन्ध नहीं है।

सुशील कुमार (1982) ने पीएच. डी. स्तरीय शोध अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि सामान्यतः आयु, शैक्षिक उपलब्धि, शाब्दिक-अशाब्दिक प्रतिभा, अध्यापन-अभिवृत्ति तथा

सामाजिक-आर्थिक स्तर अध्यापन सफलता से सम्बन्धित हैं। महिलाओं की अध्यापन सफलता की भविष्यवाणी–शैक्षिक उपलब्धि, शाब्दिक-अशाब्दिक प्रतिभा, अध्यापन अभिवृत्ति तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर की जा सकती है। परन्तु अध्यापकों की अध्यापन सफलता की नहीं। सुशील गोयल (1983) ने अर्थशास्त्र अध्यापकों की कक्षा अध्यापन अन्तःक्रिया का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि सम्पूर्ण समय का 80% अध्यापक कथन, 12% छात्र कथन तथा 8 प्रतिशत मौनविभ्रम में व्यय होता है और सुझाव दिया कि छात्र कथन को प्रोत्साहित करना चाहिए।

जयपालसिंह (1984) ने पीएच. डी. स्तर पर ज्ञात किया कि सफल विज्ञान शिक्षक में असफल विज्ञान शिक्षक की तुलना में निम्न अध्यापन योग्यता परन्तु अधिक बुद्धि होती है। उनका उद्देश्य स्पष्ट तथा कक्षागत अधिगम कार्य सुव्यवस्थित होता है। रमेशचन्द्र पारीक (1985) ने पीएच. डी. स्तरीय अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि अध्यापकों द्वारा अवधारित अपेक्षित भूमिका, विद्यार्थियों द्वारा अनुभूत अध्यापक की वास्तविक भूमिका लगभग समान रही। अध्यापकों की तुलना में अध्यापिकाओं के कक्षा-व्यवहार की अनुभूति विद्यार्थी को अधिक अच्छी रही। सन्ध्या त्रिवेदी (1987) के अनुसन्धान निष्कर्षानुसार अध्यापन अभ्यास अनुवर्ती कार्यक्रम की उपादेयता को सबने स्वीकार किया परन्तु इसके लिए नियमित एवं सुनियोजित योजना तथा व्यवस्था का अभाव है। वाचन एवं उच्चारण सम्बन्धी दोष निवारण हेतु कोई उचित साधन नहीं है। त्रिवेदी ने परिवीक्षण एवं निर्देशन हेतु विषय विशेषज्ञ की अधिकतम सीमा दस रखने का सुझाव दिया है।

अध्यापक व्यवहार

जगदीशचन्द्र व्यास (1981) ने पीएच. डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध कार्य में पाया कि छात्रों की शालायी उपलब्धि में शिक्षक की अभिव्यक्ति का पूर्ण एवं ठोस प्रभाव पड़ता है। उन्होंने यह पाया कि कठोरता, भावनात्मक स्थिरता एवं विश्वसनीयता का स्थान शिक्षक के व्यक्तित्व के प्रभावी कारकों में प्रमुख है जबकि शिक्षक की साहसिक प्रवृत्ति का स्थान दूसरा है। परीक्षा में छात्रों के व्यवहार को प्रभावित करने में शिक्षक का शैक्षिक व्यवहार प्रमुख है। शिक्षक अनुक्रिया अनुपात (TRR) और शिक्षक प्रश्न (TELR) का प्रभाव छात्र उपलब्धि पर अधिक पाया गया।

एम. एड. स्तर पर किये गये शोध कार्यों में अनिल कुमार सक्सेना (1975) ने पाया कि अन्तःक्रिया विश्लेषण विधि का उपयोग कक्षा में अध्यापकों के परम्परागत व्यवहार को बदलने में किया जा सकता है। छात्रों के नियन्त्रित समूह व अनियन्त्रित समूह में ज्ञानान्तर, अवबोध स्तर व उपयोग स्तर की निष्पत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया। मथुरा प्रसाद गुप्ता (1976) के अध्ययन के अनुसार परम्परागत प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की अपेक्षा कौशल आधारित प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों में पुनर्बलन एवं प्रश्न अनुमान के कौशल में महत्वपूर्ण भिन्नता पाई गई। परन्तु

अधिकांश समय छात्रों के निर्देशन, आलोचना, डाँटना श्यामपट्ट पर लिखना, छात्रों के कार्य के निरीक्षण में व्यय होता है। प्रशिक्षित अध्यापकों की अध्यापन विधि में प्रायः व्याख्यान विधि होती है। पूर्णिमा शर्मा (1980) ने पाया कि छात्र उन अध्यापकों को अधिक पसन्द करते हैं जो तैयारी करते हैं और प्रोत्साहित करते हैं जबकि छात्राएँ अपेक्षाकृत उन अध्यापकों को पसन्द करती हैं जो गृह कार्य नहीं देते। रामपाल बन्सवार (1980) के अनुसार अनुभवी अध्यापक अनुभव हित की तुलना में भयप्रद वातावरण बनाये रखने, बालकों को दण्डित करते का भय बनाए रखने, छात्रों को दया का पात्र समझने, कक्षा व्यवस्था बनाए रखने, बालकों के समूचे हित की रक्षा करने की प्रवृत्ति के सन्दर्भ में सहमति व्यक्त करते हैं। सुशील कुमार पुरोहित (1981-82) के अनुसार प्रभावशाली भाषा अध्यापकों का कक्षा में अप्रत्यक्ष प्रभाव रहता है जबकि अप्रभावशाली भाषा शिक्षकों का प्रत्यक्ष प्रभाव रहता है।

उषा सिंघवी (1988) ने अपने अध्ययन में पाया कि पारिवारिक पृष्ठभूमि का पुरस्कृत होने में महत्वपूर्ण स्थान है। पुरस्कृत अध्यापकों के माता-पिता की सामुदायिक समाज सेवा में विशेष उपलब्धि रही है। इन शिक्षकों की खेलकूद के अतिरिक्त अन्य सह शैक्षिक क्षेत्रों में विशेष रुचि हैं। ये अध्यापक नवीन विधियों को अपनाते हैं तथा अन्तर्मुखी हैं। विनीता जोशी (1988) के अनुसार भावी शिक्षक प्रथम स्थान आर्थिक एवं भौतिक मूल्यों को देते हैं जबकि सेवारत शिक्षक प्रथम स्थान राजनैतिक मूल्यों को देते हैं। उपदेश कुमारी (1987) के पीएच. डी. स्तर के अध्ययन के आधार पर यह पाया गया कि :

1. निम्न शिक्षण अभिक्षमता युक्त भावी अध्यापक विशेष दण्डात्मक पाए गए।
2. उच्च शैक्षिक योग्यता वाले भावी अध्यापकों में अहं के बचाव के प्रति प्रवीणता होती है।
3. इन अध्यापकों में उत्तरदायित्व भावना, नैतिक साहस, ईमानदारी व स्वामीभक्ति के गुण पाए गए।
4. न्यून शैक्षिक योग्यता वाले भावी अध्यापकों में मैत्री भाव अधिक पाया गया।

अध्यापक की समस्याएँ

पुष्पा जोशी (1979) ने अपने अध्ययन में पाया कि अविभक्त इकाई शिक्षण में प्रशिक्षण अवधि कम है तथा एक ही अध्यापक द्वारा सब विषय पढ़ाए जाते हैं। लक्ष्मी ठाकुर आमेटा (1979) के अनुसार अध्यापक के लिए रहने की सुविधा का अभाव है। विद्यालय सेवा के अतिरिक्त अन्य अभिकरणों को भी सेवाएँ देनी पड़ती है। विद्यालय घर के निकट न होने के कारण अध्यापक पूर्ण रूप से कर्त्तव्य पूरा नहीं कर पाता। लक्ष्मीनारायण वागरानी (1975) ने पाया कि अध्यापक को विभिन्न प्रकार की, यथा–सामाजिक, पारिवारिक, वैयक्तिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक समस्याओं से जूझना पड़ता है। कुसुम शर्मा (1978) के अनुसार कार्य की अधिकता, सेवा असुरक्षा सेवा की विविधता अध्यापक के कुसमायोजन के कारण हैं। दीप चरन दास माथुर (1986) के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों के पास शहरी क्षेत्र के अध्यापकों की तुलना में अवकाश काल अधिक होता है। भँवरलाल नागदा (1984) के अनुसार, अधिकतर अध्यापकों ने अध्यापन व्यवसाय स्वेच्छा से चुना है और वे सन्तुष्ट हैं। किन्तु उनका कहना है कि अन्य

राष्ट्रों की भाँति उन्हें भी अधिक वेतन मिलना चाहिए। अधिकतर अध्यापक विभिन्न सुविधाओं के कारण शहर में रहना पसन्द करते हैं। अध्यापकों का मानना है कि ट्यूशन प्रवृत्ति से अध्यापकों की गरिमा को ठेस लगती है। श्रीमती गीता कालरा (1981) ने अपने अध्ययन में पाया कि विवाहित अध्यापिकाएँ अपने व्यवसाय से पूर्णतया सन्तुष्ट हैं। प्रथम श्रेणी की प्रशिक्षित अध्यापिकाएँ अधिक सन्तुष्ट पाई गईं। सरला (1985) के अनुसार अनुभव की दृष्टि से 21 से 30 वर्ष के अनुभव वाले शिक्षक सन्तुष्ट हैं।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति

विमलेश कुमार मिश्रा (1983) ने अपने अध्ययन में पाया कि सवर्ण अध्यापक तुलनात्मक दृष्टि से अधिक बुद्धिमान हैं। अनुसूचित जाति के अध्यापक अपेक्षाकृत अधिक कोमल व तनावयुक्त पाए गए। सवर्ण जाति के उच्च बुद्धिलब्धि के छात्राध्यापक अपने ही वर्ग के कम बुद्धिलब्धि के छात्राध्यापकों की तुलना में अधिक सकारात्मक विचारों को शीघ्र ही ग्रहण करने में सक्षम एवं बहिर्मुखी हैं। हंसराज मीना (1983) के अनुसार अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के अध्यापकों का मनोबल औसत से नीचे है। अनारसिंह (1982) ने पाया कि अनुसूचित जाति के अध्यापक सवर्ण अध्यापकों की तुलना में भाषण का कम प्रयोग, कम प्रश्न, कम दिशा-निर्देश, अधिक आलोचना, छात्रों को कम अवसर एवं प्रोत्साहन कम देते हैं। जे. सी. मैथ्यू (1986) ने पाया कि शैक्षिक स्तर एवं अभिवृत्ति की दृष्टि से अनुसूचित जाति के अध्यापक अन्य अध्यापकों से न्यून हैं। शीला चन्द्र (1983) के अध्ययनानुसार अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों का समायोजन अनुसूचित जनजाति के छात्राध्यापकों के समायोजन से गुणात्मक दृष्टि से अधिक है। समायोजन में सुधार के लिए इन वर्गों की पृथक यूनिट के बजाय अन्य वर्ग के साथ ही अध्ययन श्रेयस्कर है। इन वर्गों को पर्याप्त आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए।

कुमारी अरुणा धवन (1987) ने अपने अध्ययन में पाया कि माडा और टी. एस. पी. छात्राध्यापकों में समायोजन समस्या उच्च है तथा इनमें संवेगात्मक स्थायित्व, सामाजिक एवं गृह समायोजन का भी अभाव है। सुनीता शर्मा (1988) के अनुसार स्नेहशीलता, बहादुरी, परोपकार, स्थिरता, ओजस्विता, ईमानदारी, दयालुता, आज्ञाकारिता, सज्जनता, उत्साह, धार्मिकता व सहानुभूति, स्वधारणा के गुण सवर्ण अध्यापकों में अधिक पाए गए जबकि अनमनापन, सतर्कता, क्रोध, गप्पीपन, बचपना, निर्दयता, जिज्ञासा, ईर्ष्यालुपन, वफादारी, क्षमाशीलता, आलस्य, दुर्भावना, घमण्ड, सादगी, सज्जनता, चुप रहना, कंजूसी, सुस्ती, झगड़ालूपन, हीनता, जल्दबाजी आदि गुण अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति में उच्च पाए जाते हैं।

व्यावसायिक दायित्व/सन्तुष्टि/अभिवृत्ति

रानी गुप्ता (1986) के अध्ययन के अनुसार समाज के लोग अध्यापिकाओं से यथार्थ से अधिक अपेक्षा रखते हैं। अध्यापिकाओं को शाला के काम से बाहर जाना पसंद नहीं है। 80 प्रतिशत महिलाओं ने आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने हेतु इस व्यवसाय में जाना बताया। ललिता मेहता (1986) ने [illegible]

छात्राध्यापकों की शिक्षण योग्यता एवं शिक्षण अभिवृत्ति छात्राध्यापिकाओं से अधिक है। राजकुमारी कपूर (1979) के अनुसार नई पीढ़ी के लोग इस व्यवसाय में स्वयं की इच्छा से आए हैं। पारिवारिक दृष्टि से यह व्यवसाय उनके अनुकूल है। महेन्द्रसिंह चौधरी (1979) के अनुसार स्नातक स्तर पर छात्राध्यापिकाओं की शैक्षिक और व्यावसायिक उपलब्धि छात्राध्यापकों की तुलना में अच्छी है। नरेश कुमार माथुर (1979) ने पाया कि छात्राध्यापकों की अध्यापक, विषय-वस्तु, अध्यापन क्षेत्र, कक्षान्तर्गत अध्यापन तथा छात्रों के प्रति अभिवृति के बारे में धनात्मक राय सामने आई है। सजा के प्रति अभिवृत्ति नकारात्मक है। ओमप्रकाश शर्मा (1984) के अनुसार बी. एड. की अपेक्षा शिक्षाशास्त्री के प्रशिक्षण में निम्न शैक्षिक निष्पत्ति वाले प्रशिक्षणार्थी प्रवेश लेते है। उच्च शैक्षिक निष्पत्ति वाले अध्यापन के प्रति रुचि नहीं रखते। छात्राध्यापिकाएँ इसमें अधिक सुरक्षा होने से प्रवेश लेती हैं । अच्छी नौकरी मिलने पर अध्यापन छोड़ने की बात सभी ने कही। देवेन्द्र आमेटा (1984) के अनुसार अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा महिला प्रशिक्षणार्थियों में अधिक है। यह भी पाया गया कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का अध्यापन अभिवृत्ति के साथ धनात्मक सह-सम्बन्ध है। सुरेश चन्द्र दीक्षित (1977) ने पाया कि अध्यापकों का अध्ययन अपर्याप्त तथा बहुत ही कम हैं। इसका कारण विद्यालय में अधिक कार्य, पारिवारिक चिन्ताएँ, कमजोर आर्थिक स्थिति है। चमन सिंह बासयत (1979) के अनुसार भारत और नेपाल के अध्यापकों की शिक्षण रुचियों में कोई अन्तर नहीं है। इनकी शिक्षण योग्यता समान है और उनमें परस्पर गहरा सम्बन्ध है। ललिता जगदीश (1978) ने पाया कि नवाचार के प्रति सभी शिक्षक सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। नवाचार का आयु, योग्यता व अनुभव से कोई सम्बन्ध नहीं है। बी. के. देवकोटा (1984) के अनुसार भारत व नेपाल के भावी शिक्षकों व कार्यरत शिक्षकों में शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है।

बहादुर सिंह (1984) ने अपने अध्ययन में बताया कि पुरुष अध्यापकों की अपेक्षा महिला अध्यापक "अध्यापकों एवं माता-पिता के प्रति" अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति रखते है। गोपाल सिंह चौहान (1984) के अनुसार वाणिज्य अध्यापक जो कि अपने व्यवसाय से पूर्णतया सन्तुष्ट थे, उनमें आर्थिक आत्म-विश्वास था। उनकी बुद्धिलब्धि का उनकी सेवा से गहरा सम्बन्ध था। बृजलाल स्वामी (1980) के अनुसार प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के अध्याप्कों की अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है। इन्दिरा (1986) के अनुसार राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की तुलना में अधिक सन्तुष्ट हैं। 5 वर्ष से कम तथा 15 वर्ष से अधिक अनुभव प्राप्त अध्यापकों का व्यवसाय-सन्तुष्टि का स्तर समान हैं। प्रेमलता परिहार (1986) के अनुसार शैक्षिक क्षमता का शैक्षिक प्रभाविता से स्पष्ट सम्बन्ध है। श्रीमती विमला बालानी (1985) के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में बिना अनुदान प्राप्त संस्थाएँ अच्छा योगदान दे रही हैं । द्रौपदी मेंहदीरत्ता (1980) ने पाया कि समुदाय के दृष्टिकोण से शिक्षक का व्यावसायिक एवं सामाजिक स्तर उच्च है जबकि आर्थिक परिस्थिति स्तर तुलनात्मक रूप से निम्न है। भगवान सहाय यादव (1977) के अनुसार उच्च परोपकारी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में निम्न परोपकारी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में व्यक्तिगत मूल्य अधिक पाए गए।

उषा राठी (1987) के अनुसार राजकीय विद्यालयों की अपेक्षा अनुदान प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की तथा अध्यापकों की अपेक्षा अध्यापिकाओं की शैक्षिक परिवर्तन के प्रति अभिवृत्ति अधिक

है। उम्मेदसिंह भाटी (1987) ने अपने अध्ययन में पाया कि अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति सबसे अधिक गैर व्यावसायिक महिला विद्यालय प्राध्यापिकाओं की है तथा सबसे कम गैर व्यावसायिक महाविद्यालय के प्राध्यापकों की है तथा अध्यपिकाओं की व्यवसाय के प्रति सन्तुष्टि अधिक है। चन्द्रकान्ता व्यास (1988) के अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर अराजकीय विद्यालय के अध्यापकों एवं अराजकीय विद्यालय की अध्यापिकाओं की निर्देशन के प्रति अभिवृत्ति के सह-सम्बन्ध गुणांक में सार्थकता नहीं पाई गई। तेज प्रकाश वैष्णव (1988) के अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों के राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नवोदय विद्यालय, शिक्षा प्रशासन से सम्बन्धित अभिमतों में सार्थक अन्तर नहीं है ।

कु. लता मिश्र (1987) के अनुसार कार्यरत अध्यापकों की अपेक्षा छात्राध्यापकों में अध्यापकों और माता-पिता के प्रति तथा देश के प्रति अधिक अभिवृत्ति है, जबकि अनुशासन, जीवन व मानवता के प्रति समान अभिवृत्ति है। गीता सिंह (1988) ने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षक महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों-छात्राध्यापिकाओं की पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियों के प्रति अभिवृत्ति धनात्मक पाई गई। विष्णुदत्त शर्मा (1988) के अनुसार राजकीय विद्यालयों के अध्यापक-अध्यापिकाएँ संस्थागत वातावरण के प्रति भिन्न दृष्टिकोण रखते हैं। निजी विद्यालयों के अध्यापक-अध्यापिकाएँ व्यावसायिक उत्तरदायित्व निभाने में आगे हैं ।

संगीता नागर (1988) ने अपने अध्ययन में पाया कि अजमेर जिले की शिक्षिकाओं एवं शिक्षकों की सामाजिक मूल्यों के प्रति चेतना सामान्य है। राजकुमार शर्मा (1986) के अनुसार पुस्तापालन शिक्षण के विभिन्न उपागमों के प्रति वाणिज्य शिक्षकों की सार्थक सकारात्मक अभिवृत्ति है। शहनाज (1988) के शोध निष्कर्षों के अनुसार विज्ञान वर्ग के भावी अध्यापकों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता भावी अध्यापिकाओं की तुलना में अधिक है ।

कल्पना सोलंकी (1988) के अनुसार पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र, आवश्यकता, विषय-वस्तु और शिक्षण विधि के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की अभिवृत्ति सामान्य है। देवेन्द्र कुमार शर्मा (1988) ने पाया कि प्रधानाध्यापक में विभिन्न क्षेत्रों के प्रति ग्रामीण एवं शहरी अध्यापक व अध्यापिकाओं की अभिवृत्ति धनात्मक है। ज्योति जागेटिया (1987) के अध्ययन के आधार पर संस्कृत शिक्षण से अन्तर्राष्ट्रीय तथा विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास होता है। संस्कृत शिक्षक गर्व का अनुभव करते हैं। अर्चना डेविड (1987) के निष्कर्षों के आधार पर अधिकांश शिक्षक अपने कार्य, कार्य-दशाओं, आर्थिक स्थिति, उन्नति के अवसर तथा महाविद्यालयी गतिविधियों से सन्तुष्ट हैं।

मंजू खण्डेलवाल (1988) के अनुसार अध्यापन व्यवसाय के प्रति समाज में आदर नहीं है, ऐसा सेवापूर्व अध्यापक मानते हैं किन्तु सेवारत इसमें कम विश्वास करते हैं। सेवापूर्व के अनुसार अध्यापकों को विद्यार्थियों से यथोचित सम्मान नहीं मिल पा रहा है। राजलक्ष्मी श्रीमाली (1987) के अनुसार महिलाएँ शिक्षण व्यवसाय की ओर उन्मुख होती हैं तथा सामाजिक कारकों की वजह से इस ओर विशेष अभिवृत्ति पाई जाती है ।

अनुकूल है। अर्चनासिंह (1981) के अनुसार सेवापूर्व विज्ञान अध्यापकों एवं सेवापूर्व कला अध्यापकों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण भिन्नता है । वैज्ञानिक अभिवृत्ति का व्यक्तित्व के कारकों से कोई महत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति और उपलब्धि में महत्वपूर्ण सम्बन्ध है।

सम्भावनाएँ एवं सुझाव

विभिन्न अध्ययनों के विश्लेषण से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि अन्य शोध क्षेत्रों की तुलना में सन्दर्भित क्षेत्र अति समृद्ध है। उदाहरणार्थ विषय शिक्षण एवं शिक्षण विधियाँ व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं अभिवृत्ति कक्षाध्यापन एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में 23 से 42 तक शोध अध्ययन किए गए हैं। इसके विपरीत अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति तथा अध्यापक की समस्याओं पर मात्र 5 एवं 10 शिक्षानुसन्धान ही किए गए हैं ।

इन अध्ययनों में कतिपय क्षेत्र अछूते रह गए यथा – अभिप्रेरण, शिक्षक-शिक्षार्थी सम्बन्ध, शिक्षक प्रभावशीलता तथा पूर्व प्राथमिक एवम् प्राथमिक स्तर पर उद्देश्यनिष्ठ शिक्षण, शिक्षक की सफलता का मूल आधार है। तथापि इस ओर इस अवधि में अनुसन्धाताओं ने ध्यान नहीं दिया। अतः आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षण उद्देश्यों के विभिन्न पक्षों, जैसे–संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों पर पर्याप्त अध्ययन किए जाएं ।

अधिकांश अनुसन्धान कार्य सर्वेक्षण विधि पर आधारित है । आवश्यकता इस बात की हैं कि प्रयोगात्मक एवं ऐतिहासिक शोध विधियों का प्रयोग भी किया जाए। विषय शिक्षण के अनुसन्धानों की दृष्टि से निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण पर शोध कार्य की बहुत सम्भावनाएँ हैं।

यद्यपि शिक्षा के नवीन परिवर्तनों के सन्दर्भ में अनुसन्धान कार्य किया गया है तथापि दल शिक्षण, प्रायोजना पद्धति, अन्वेषण विधि आदि पर कार्य किए जाने की आवश्यकता है।

वाचस्पति शोध-सार

आर. पी. व्यास : राजस्थान के भावी सफल अध्यापकों की अध्यापन क्षमता का अध्ययन। पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1982

शोध का मुख्य उद्देश्य छात्राध्यापकों की आयु , शैक्षिक सम्प्राप्ति, शाब्दिक एवं अशाब्दिक प्रतिभा, वैयक्तिक समायोजन, शिक्षण कुशलता और सामाजिक-आर्थिक स्तर का शिक्षण में सफलता के मानदण्ड तथा पर्यवेक्षकों द्वारा अंकन, प्रायोगिक कार्यों का आंतरिक मूल्यांकन, विश्वविद्यालय के सैद्धान्तिक अंक और कुल अंकों के साथ सम्बन्धों का अध्ययन करना है। अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं :

1. छात्राध्यापक की आयु , शैक्षिक सम्प्राप्ति, शाब्दिक एवं अशाब्दिक प्रतिभा, शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण एवं सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण ही शिक्षण सफलता से सम्बन्धित माने गए। शिक्षकों

में शाब्दिक प्रतिभा एवं आर्थिक-सामाजिक स्तर तथा शिक्षिकाओं में शैक्षिक सम्प्राप्ति, शाब्दिक प्रतिभा और शिक्षण दृष्टिकोण शिक्षण सफलता से अधिक सम्बन्ध रखते हैं। 2. आयु, शैक्षिक सम्प्राप्ति एवं अशाब्दिक प्रतिभा पर्यविक्षक के अंकन को निर्धारित करते पाए गए । 3. अशाब्दिक प्रतिभा और शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण स्व-अंकन को निर्धारित करते हैं । 4. आयु, व्यक्तित्व समायोजन, शैक्षिक सम्प्राप्ति, शाब्दिक प्रतिभा एवं आर्थिक व सामाजिक स्तर, विश्वविद्यालय के प्रायोगिक अंकों को निर्धारित करते हैं। 5. शैक्षिक सम्प्राप्ति, अशाब्दिक प्रतिभा, शिक्षण कुशलता, शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण एवं आर्थिक-सामाजिक स्तर विश्वविद्यालय के सैद्धान्तिक अंकों का निर्धारण करते हैं।

सुभाष चन्द्र जैन : किशोरावस्था के कुछ समूहों के बालकों की भौतिक विज्ञान की समस्या-समाधान व्यवहार का अध्ययन। पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1982

शोध का मुख्य उद्देश्य भौतिक विज्ञान की उन मूल समस्याओं को पहचानना था जो विभिन्न तर्क प्रवृत्तियों पर सीधी आधारित हैं। साथ ही समस्या की हल प्रक्रिया में आने वाली कठिनाइयों की प्रवृत्ति का अध्ययन करना तथा किशोरावस्था के बालक की समस्या-हल योग्यता का अध्ययन करना है। अध्ययन से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं :-

1. समस्या-हल योग्यता के लिए बुद्धिलब्धि एवं बुद्धि विकास के तीनों स्तरों के समूह में अत्यधिक भिन्नता है । 2. समस्या-हल के लिए संकेत दिए जाने के पूर्व तथा पश्चात् बुद्धिलब्धि एवं बुद्धि विकास के तीनों स्तरों के समूहों में समस्या-हल योग्यता प्राप्तांकों में अत्यधिक भिन्नता है। सृजनात्मकता के लिए प्राप्तांकों में भिन्नता नहीं है । 3. बुद्धिलब्धि में लिंग का प्रभाव नहीं है । 4. जो छात्र बुद्धिलब्धि, मानसिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि में उच्च स्तर के होते हैं उन्हें भौतिक विज्ञान में समस्या-समाधान में ज्यादा सफलता मिलती है । 5. सृजनात्मकता तथा बुद्धिलब्धि की तुलना में मानसिक विकास के स्तरों का महत्वपूर्ण स्थान है ।

मदनलाल शर्मा : राजस्थान के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में बी. एड. छात्राध्यापकों में विकसित होने वाली अध्यापन क्षमताओं का अध्ययन। पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1978

शोध का मुख्य उद्देश्य भावी शिक्षकों के कक्षागत व्यवहार का पता लगाना तथा भावी-शिक्षकों में शिक्षक क्षमता विकसित करने में शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय की भूमिका ज्ञात करना है। अध्ययन से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं :

1. जो छात्राध्यापक शिक्षक क्षमता के एक तत्व में उच्च है तो वह अन्य तत्वों में भी उच्च पाया गया। 2. प्रशिक्षण महाविद्यालयों द्वारा छात्राध्यापक में कक्षागत व्यवहार उत्पन्न होते हैं। 3. महाविद्यालयों द्वारा छात्राध्यापकों के लिए विचाराधीन नियन्त्रण एवं नवाचार आकर्षक कार्यक्रमों

पुष्पलता कुशवाहा : माध्यमिक अध्यापकों की अभिवृत्ति और भूमिका प्रत्यक्षण का अध्ययन। पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1978

शोध का मुख्य उद्देश्य सैकेण्डरी विद्यालय के शिक्षकों का बालकों के प्रति एवं विद्यालय/कार्य के प्रति दृष्टिकोण, उनकी गुणवत्ता की योजना, अनुभव व लिंग के आधार पर पता लगाना है। शोध से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं :

1. उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षक छात्रों की समस्याओं का समाधान करने का उत्तरदायित्व दूसरों पर नहीं टालते हैं। ये नियमों का कठोरता से पालन भी नहीं करते तथा छात्रों के सुधार हेतु दण्ड प्रक्रिया को नहीं अपनाते। शिक्षक गुणवत्ता से सलाहकार, प्रेरक व निर्देशन के छात्रों का सम्बन्ध सिद्ध नहीं हुआ । 2. शिक्षक के पाँच कार्यों में से किसी से भी शिक्षक की सेवा अवधि का सम्बन्ध प्रतीत नहीं हुआ। सभी शिक्षक, सलाहकार, प्रासंगिक निर्देश, प्रेरक, निर्देशन एवं अनुशासन सम्बन्धी कार्यों का सम्पादन करते हैं ।

भवानी सिंह : अध्यापकों की कार्य उत्प्रेरणा । पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1977

शोध का मुख्य उद्देश्य अध्यापकों को कार्य के प्रति प्रेरित करने का, परख निर्माण एवं उसका प्रमाणीकरण ज्ञात करना, कार्य के प्रति अध्यापकों के प्रेरक स्तर तथा कारणों को ज्ञात करना है। शोध से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं :

1. निजी शिक्षण संस्थाओं के अध्यापकों में तथा उच्च वेतनधारी अध्यापकों में कार्य के प्रति ज्यादा प्रेरणा है। 2. तरक्की के साधनों के प्रचार-प्रसार, अध्यापकों से सम्बन्धित प्रकरणों का तुरन्त निष्पादन, स्थानान्तरण की निश्चित प्रक्रिया, उच्चाधिकारियों द्वारा शिक्षक समस्या पर तुरन्त ध्यान देने से अध्यापक कार्य के प्रति प्रेरित होते हैं। 3. शिक्षक पुरस्कार को वस्तुनिष्ठ करना, अध्यापक प्रशिक्षण पर बल देना, ग्रामीण क्षेत्र में आवासीय व्यवस्था करना, अध्यापक के श्रेष्ठ कार्यों का प्रकाशन, उच्चाधिकारियों का सतत परिवीक्षण इत्यादि से कार्य के प्रति प्रेरणा बढ़ती है।

बी. एस. मुद्गल : विज्ञान, गणित प्रशिक्षण पूर्व अध्यापकों के परम्परागत और कौशल आधारित प्रशिक्षण का उनके विद्यार्थियों की सम्प्राप्ति और व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन। पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1983

शोध का मूल उद्देश्य गणित अध्यापन हेतु उपयोगी विभिन्न कौशलों का चयन, उपयोग, इनमें प्रशिक्षण देना तथा प्रशिक्षण प्राप्त छात्राध्यापक व परम्परागत अध्यापन करने वाले छात्राध्यापकों में तुलनात्मक अध्ययन करना है । शोध से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं :

1. अध्यापकों के सेवापूर्व प्रशिक्षण के लिए परम्परागत प्रशिक्षण की तुलना में कौशल आधारित प्रशिक्षण अधिक प्रभावी पाया गया। 2. अध्यापन प्रभावित से सम्बन्धित विभिन्न कौशलों में प्रशिक्षण का प्रभाव भिन्न-भिन्न रहा। 3. परम्परागत प्रशिक्षण की तुलना में कौशल आधारित प्रशिक्षण का ज्ञानात्मक कक्षागत वातावरण में अध्यापन व्यवहार पर प्रभाव अधिक रहा। कौशल आधारित

प्रशिक्षण प्राप्त छात्राध्यापकों की कक्षा में सामाजिक संवेगात्मक वातावरण अधिक समन्वित रहा तथा श्यामपट्ट कार्य, मूल्यांकन व उपलब्धि भी अधिक पाई गई ।

जितेन्द्र सिंह नेगी : शिक्षकों के कक्षागत व्यवहार, शिक्षण कौशल एवं संज्ञानात्मक विकास के सन्दर्भ में रसायन विज्ञान में विद्यार्थियों के अधिगम परिणाम। पीएच.डी., राज. विश्वविद्यालय, 1985

शोध का मुख्य उद्देश्य आयु, अनुभव, लिंग तथा वैवाहिक स्थिति के सन्दर्भ में शिक्षकों के कक्षागत-व्यवहारों तथा शिक्षण कौशलों का अध्ययन करना, शिक्षकों के संज्ञानात्मक विकास तथा तदनुरूप कक्षागत-व्यवहारों तथा शिक्षण कौशलों के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करना था। रसायन विज्ञान में विद्यार्थियों को अधिगम परिणामों तथा विविध शिक्षक चरों के मध्य क्रियात्मक सह-सम्बन्ध स्थापित करना है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष निम्न हैं :

1. अल्पायु शिक्षकों की अपेक्षा वयोवृद्ध शिक्षक अधिक बार अधिकारियों की आलोचना करते तथा उनका औचित्य सिद्ध करते हैं। 2. आयु वृद्धि के साथ शिक्षकों व अन्तःक्रिया अनुपातों की संख्या घटती है परन्तु अल्पायु शिक्षकों के सन्दर्भ में यह संख्या बढ़ती है। 3. शिक्षिका की अपेक्षा शिक्षक अपने कक्षागत-व्यवहारों में अधिक समन्वयी दृष्टिकोण रखते हैं। 4. शिक्षकों की वैवाहिक स्थिति शिक्षण कौशलों के प्रयोग की प्रवृत्ति में बाधक नहीं है। 5. उच्च बुद्धि शिक्षक निम्न बुद्धि शिक्षकों की अपेक्षा आरेखन व प्रश्न कौशल का अधिक बार प्रयोग करते हैं। यही स्थिति शिक्षक अभिवृत्ति के क्रम में पाई गई। 6. रसायन विज्ञान में शिक्षक चर व चित्रांकन कौशल अधिगम परिणामों के सन्दर्भ में सर्वाधिक प्रभावी है। 7. रसायन विज्ञान में अधिगम परिणाम शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति से सार्थक रूप से प्रभावित होते हैं।

जगदीशचन्द्र व्यास : शिक्षक के व्यक्तित्व, अभिवृत्तियों एवं कक्षागत-व्यवहारों का छात्रों की शालीय उपलब्धि पर प्रभाव । पीएच. डी., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

शोध का मूल उद्देश्य छात्रों की शालीय उपलब्धि पर शिक्षकों के व्यक्तित्व, आदत एवं व्यवहार के प्रभाव का अध्ययन करना है। शोध से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं :

1. छात्रों की माध्यमिक शिक्षा बोर्ड परीक्षाओं में उपलब्धि में शिक्षक के दृष्टिकोण का पूर्ण एवं ठोस प्रभाव पड़ता है। यद्यपि यह अलग से तो नगण्य होता है पर सामूहिक कक्षा शिक्षण में प्रभावी होता है। 2. कठोरता, भावनात्मक स्थिरता, विश्वसनीयता का स्थान शिक्षक के व्यक्तित्व के प्रभावी घटकों में प्रमुख है जबकि शिक्षक की साहसिक प्रवृत्ति का स्थान दूसरा है । 3. परीक्षा में छात्रों के व्यवहार को प्रमाणित करने का शिक्षक का शैक्षिक-व्यवहार प्रमुख है । 4. टी. आर. आर. और टी. पी. आर. का प्रभाव उपलब्धि पर अधिक पाया गया है।

महेन्द्र कुमार गोयल : विद्यालयी परिस्थितियों में भग्नाशाओं के प्रति अध्यापक प्रतिक्रियाओं का अध्ययन । पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1985

ग्रामीण/शहरी एवं सरकारी/गैर सरकारी विशिष्ट विद्यालयों के अध्यापकों की भग्नाशाओं के प्रति प्रतिक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना तथा विद्यालयगत परिस्थितियों में भग्नाशाओं के प्रति प्रतिक्रियाओं पर सेवाकाल की लम्बाई के प्रभाव का अध्ययन करना है। अध्ययन द्वारा कुछ परिकल्पनाओं को पूर्णतः तथा कुछ को आंशिक संशोधन के साथ स्वीकार किया गया है। स्वीकार्य परिकल्पनाएँ निम्न प्रकार से हैं :

1. अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं में भग्नाशा परिस्थितियाँ समान हैं। 2. अध्यापकों, प्रशासकों (प्रधानाध्यापकों एवं शिक्षा अधिकारियों) एवं छात्रों द्वारा प्रतिपादित भग्नाशा परिस्थितियों में समानता है।

प्रेमपुरी गोस्वामी : प्रभावी और गैर प्रभावी अध्यापकों के समायोजन के स्तर पर कक्षागत सहज अन्तःक्रिया और उसका ब्लूम के अधिगम सोपान के सम्प्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन । पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1984

शोध का मूल उद्देश्य प्रधानाचार्यों, सहकर्मियों, विद्यार्थियों तथा प्राध्यापक विशेषज्ञों द्वारा मूल्यांकित प्रभावी एवं अप्रभावी अध्यापक के कक्षा-व्यवहार प्रतिरूपों का अध्ययन कर प्रभावी एवं अप्रभावी शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त व्यूह रचनाओं एवं युक्तियों का अन्तर ज्ञात करने के लिए कक्षा-व्यवहार प्रतिरूपों की तुलना करना है । साथ ही प्रभावी एवं अप्रभावी शिक्षकों के उच्च एवं निम्न स्थान प्राप्त विद्यार्थियों की सम्प्राप्ति को प्रभावित करने वाले विभिन्न कक्षा-कक्ष व्यवहार प्रतिरूपों का अध्ययन करना है। शोध से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं :

1. प्रभावी अध्यापकों तथा उच्च अभिवृत्ति अध्यापकों की कक्षाओं में अप्रभावी एवं निम्न अभिवृत्ति वाले अध्यापकों की तुलना में विद्यार्थियों की क्रियाओं में पहल तथा निरन्तरता पाई गई । 2. उपर्युक्त अध्यापक वर्गों में सामाजिक, संवेगात्मक पर्यावरण तथा जाँच प्रतिरूप एवं कक्षा प्रबन्ध में दक्षता का अन्तर भी पाया गया। 3. निम्न अभिवृत्ति अध्यापकों की कक्षाओं में विद्यार्थियों की पहल एवं निरन्तरता वाली क्रियाओं पर उच्च संज्ञानात्मक पर्यावरण का अपेक्षित प्रभाव नहीं पाया गया। 4. समग्र रूप से अप्रभावी अध्यापकों की तुलना में प्रभावी अध्यापकों के शिष्यों की उपलब्धि उच्च रही। 5. 'ज्ञान' स्तर पर अनुदेशनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु विद्यार्थियों की सहायता दोनों प्रकार के अध्यापकों की समान रही।

जी. पी. उपाध्याय : भावी विज्ञान अध्यापकों के प्याजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास और उनके अध्यापन प्रभावोत्पादकता का अध्ययन । पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1984

शोध का मूल उद्देश्य भावी विज्ञान शिक्षकों की संज्ञानात्मक परिपक्वता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं शाब्दिक सृजनात्मकता का स्तर निश्चित कर संज्ञानात्मक परिपक्वता के तीन स्तरों पर शिक्षण व्यवहार के प्रारूपों में अन्तर का तीनों स्तरों पर भिन्न-भिन्न वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं शाब्दिक सृजनात्मकता वाले अध्यापकों के महत्वपूर्ण व्यवहार अनुपातों का अध्ययन करना है।

साथ ही भावी विज्ञान अध्यापकों की गणितीय संरचना का अध्ययन करना है। शोध से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं :

1. संज्ञानात्मक परिपक्वता और सृजनात्मकता/वैज्ञानिक दृष्टिकोण में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया। 2. अनुभवी अध्यापकों के व्यवहार प्रतिरूप-अनुभवहीन अध्यापकों की तुलना में अधिक प्रभावी पाया गया। 3. अनुभवी अध्यापकों के अध्यापक प्रश्न अनुपात में सार्थक अन्तर पाया गया। 4. अध्यापक वार्ता, अध्यापक प्रश्न अनुपात आदि अध्यापक व्यवहार का औसत तथा कम वैज्ञानिक दृष्टि वाले अध्यापकों के व्यवहार प्रतिरूपों की तुलना में सार्थक अन्तर पाया गया।

साहब सिंह : शिक्षकों के व्यक्तित्व, शैक्षिक सफलता और उसके फलस्वरूप छात्रों के व्यवहारगत परिवर्तन का अध्ययन । पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1978

शोध का मुख्य उद्देश्य सैकेण्डरी–हायर सैकेण्डरी विद्यालयों के सफल-असफल शिक्षकों के व्यक्तित्व विशेषताओं का पता लगाकर व्यक्तित्व विशेषता के उच्च, औसत तथा कम स्तर का उनकी शैक्षिक सफलता के आधार पर वर्गीकरण करना तथा शिक्षकों की व्यक्तित्व विभिन्नता, शैक्षिक सफलता एवं इसके कारण छात्रों के व्यवहारगत-परिवर्तन में पारस्परिक सम्बन्ध ज्ञात करना है । अध्ययन से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं :

1. शिक्षक की शैक्षिक सफलता उसके सैद्धान्तिक एवं सामाजिक मूल्यों के साथ चलती है पर आर्थिक एवं सौन्दर्यबोधपरक मूल्यों का प्रवाह शैक्षिक सफलता की विपरीत दिशा में होता है। 2. बुद्धिमत्ता, भावात्मक स्थिरता, जागरूकता, साहसिकता और नियन्त्रण क्षमता का सम्बन्ध शैक्षिक सफलता में है। 3. शिक्षक की शैक्षिक सफलता उसके समायोजन पर निर्भर करती है। जिस अध्यापक की समायोजन क्षमता जितनी अधिक होगी उसकी शैक्षिक सफलता भी उतनी ही अधिक होगी। 4. छात्रों के व्यवहार में वांछित या अवांछित परिवर्तन के लिए शिक्षकों की व्यक्तित्व भिन्नता बहुत हद तक उत्तरदायी है।

उपदेश कुमारी : उच्च एवं न्यून शिक्षण अभिक्षमता के भावी अध्यापकों की पहचान तथा व्यवहार प्रतिमानों का अध्ययन । पीएच. डी., वनस्थली विद्यापीठ, 1987

शोध का उद्देश्य उच्च व न्यून शिक्षण अभिक्षमता के भावी अध्यापकों की पहचान तथा व्यवहार प्रतिमानों का अध्ययन करना, विभिन्न शैक्षिक अभिक्षमता स्तरों के चारित्रिक गुणों का अध्ययन तथा शैक्षिक अभिक्षमता जाँच बेट्री के विभिन्न अवयवों तथा व्यवहार प्रतिमान एवं चारित्रिक गुणों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष निम्न हैं :

1. निम्न शिक्षण अभिक्षमता युक्त भावी अध्यापक विशेष दण्डात्मक पाए गए। 2. उच्च शिक्षण अभिक्षमता के भावी अध्यापकों में अहं के बचाव के प्रति प्रतीक्षा होती है। 3. ...

रमेश चन्द्र शर्मा : भावी अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमता, बौद्धिक स्तर एवं नैतिकता । पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1984

शोध से प्राप्त निष्कर्ष निम्न हैं :

राजस्थान राज्य में शैक्षिक मानदण्डों के आधार पर प्रशिक्षण के लिए चयन किये गये अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं में अध्ययन अभिक्षमता एवं नैतिकता का अभाव है। बौद्धिक स्तर सामान्य स्तर का है। अध्यापन अभिक्षमता, नैतिकता एवं बौद्धिक स्तर तीनों में धनात्मक सार्थक सहसम्बन्ध है। प्रशिक्षण के लिये चयन केवल शैक्षिक आधार पर ही न करके अध्यापन अभिक्षमता व नैतिकता के आधार पर भी किया जाना चाहिए।

जयपालसिंह मलिक : राजस्थान के चयनित विद्यालयों में सफल तथा असफल रहे अध्यापकों का व्यक्तित्व तत्वों तथा अधिगम वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन । पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1984

शोध से प्राप्त निष्कर्ष निम्न हैं :

1. सफल विज्ञान अध्यापक निम्न अध्यापन योग्यता के साथ अधिक बुद्धिमान होते हैं। विज्ञान में सफल अध्यापन के साथ वैयक्तिक कारक (बुद्धिमता, संवेगात्मक स्थिरता) जुड़े रहते हैं।
2. असफल विज्ञान अध्यापकों की तुलना में सफल विज्ञान अध्यापक का स्पष्ट उद्देश्य, सुव्यवस्थित कक्षागत अधिगम कार्य होता है। छात्रों को कम कठिनाई होती है। अध्यापक स्वानुभूति एवं छात्र स्वानुभूति दोनों के आधार पर वैयक्तिक कारक एवं कक्षागत अधिगम वातावरण अध्यापन की सफलता से सम्बन्धित है।

रमेश चन्द्र पारीख माध्यमिक अध्यापक की अपनी भूमिका का तथा विद्यार्थियों के प्रत्यक्षण का कक्षागत व्यवहार की दृष्टि से अध्ययन । पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1985

शोध से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न है :

परम्परागत और औद्योगिक समाज में शिक्षक की भूमिका पूर्णतः भिन्न है। अध्यापक की भूमिका अध्यापक स्वयं की दृष्टि में, छात्र की दृष्टि में एवं वास्तविक परिस्थिति में समान है। छात्रों का प्रतिबोध अध्यापकों की तुलना में अध्यापिकाओं के कक्षागत व्यवहार के प्रति अच्छा है।

शोध-अनुक्रमणिका

अग्रवाल, कमलेश : विद्यार्थियों की दृष्टि में अध्यापकों की विशेषताएँ, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

अग्रवाल, माया : विज्ञान एवं सामाजिक ज्ञान अध्यापकों के कक्षा-कक्ष अन्तःक्रिया प्रतिमानों का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

अग्रवाल, विमला : उदयपुर शहर के उच्च प्राथमिक विद्यालय स्तर पर कार्यरत अध्यापिकाओं की समस्याओं का एक अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1977

अग्रवाल, बीना : जनसंख्या शिक्षा के प्रति माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की अभिवृत्ति की तुलना। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1987

अग्रवाल, सतीशचन्द्र : राजस्थान विश्वविद्यालय के शिक्षा महाविद्यालयों में अध्यापनाभ्यास की स्थिति। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

अग्रवाल, सुभाषचन्द्र : भौतिक विज्ञान शिक्षण में व्याख्यान प्रदर्शन तथा स्वयं खोज अध्ययन विधियों का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

अग्रवाल, स्नेहलता : राजस्थान में पूर्व शिक्षक शिक्षा परीक्षण द्वारा बी. एड. चयन प्रक्रिया के प्रति छात्राध्यापकों, प्राध्यापकों एवं प्रबन्धकों की प्रतिक्रियाएँ। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1988

अरोड़ा, वन्दना : प्रभावी व अप्रभावी कार्यरत एवं भावी स्नातक अध्यापकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1985

अवस्थी, राजेन्द्रकुमार: प्राथमिक शाला स्तर पर कार्यरत अध्यापिकाओं की समस्याएँ। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1975

आमेटा, देवेन्द्रकुमार : भावी अध्यापकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के सम्बन्ध का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

आमेटा, लक्ष्मीशंकर : पंचायत समिति, भिंडर के एक अध्यापकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के व्यावसायिक विकास की समस्याओं का अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

इन्दिरा : कार्यरत अध्यापकों की व्यवसाय सन्तुष्टि तथा समस्याओं का लिंग भेद, विद्यालय प्रवृत्ति, विषय प्रवृत्ति एवं सेवाकाल अवधि के सन्दर्भ में अध्ययन। एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1986

उपाध्याय, जीपी : A studies of Piagetion cognitive development relationship with teaching effectiveness of prospective science teachers. Ph. D., Raj. Uni., 1984

काबरा, ललिता : ऑंगनबाड़ी प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन समस्याएँ। एम. एड., सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, 1983

काबरा, गीता : A study of job satisfacation and adjustment teachers and its effection on the achievement their students. M. Ed., Raj. Uni., 1981

कासम, हसीना : सामान्य विज्ञान विषय में आठवीं कक्षा के छात्रों की उपलब्धि पर निर्देशित अन्वेषण विधि और परंम्परागत विधि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

कुमारी, अरुणा : Preparation and validation of programmed instruction on methodology of teaching of English programmer for B. Ed. students. M. Ed., Raj. Uni., 1986

कुमारी, उपदेश : A study of behaviour pattern and certain character traits of prospective teachers with high teaching aptitude and low teaching aptitude. Ph. D., Banasthali Vidhyapeeth, 1987

कुमारी, सविता : प्राथमिक स्तर की समायोजित एवं असमायोजित अध्यापिकाओं के कक्षा व्यवहार का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

कुशवाहा, पुष्पलता : An investigations into the attitudes and role perceptions of secondary teachers. Ph. D., Raj. Uni., 1978

कुसुमलता : Analysis of the teachers qestions and pupils poses in teaching science. M. Ed., Udai. Uni., 1982

कौर, महेन्द्रजीत : The efficacies of the reapproachment of the geniva, approach and of the new behaviour site model in the development of creativities and achievement with preference to some other psychological traits at the primary level. M. Ed., Raj. Uni., 1986

खण्डेलवाल, मंजू : अध्यापन व्यवसाय के प्रति पूर्व सेवारत तथा सेवारत प्रशिक्षणार्थियों की अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, डबोक, 1988

खण्डेलवाल, हरिकांत : उदयपुर मण्डल के अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के स्तर का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

खिआणी, सरला : मावली तथा भिंडर पंचायत समिति शिक्षकों की सन्तुष्टि का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

गर्ग, डी. पी. : A comparative study of the interaction patterns of experienced and fresh student teachers of social sciences and their attitude towards teaching. M. Ed., Udai. Uni., 1977

गुप्ता, मथुराप्रसाद : A comparative study of classroom teaching behaviour of science teachers trainees exposed to micro-teaching and conventional training. M. Ed., Raj. Uni., 1976

गुप्त, मृदुला : प्रभावी एवं अप्रभावी विज्ञान शिक्षकों के कक्षा अन्तःक्रिया प्रतिरूपों के वृत्त अध्ययन। एम. एड., वनस्थली विश्वविद्यालय, 1986

गुप्ता, रानी : अध्यापिकाओं की सीमाएँ एवं व्यावसायिक दायित्वों का निर्वाह, – एक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

गोयल, अंजना : बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों द्वारा निर्मित विज्ञान विषय की पाठ योजनाओं में वस्तुतः प्रयुक्त विधि व प्रविधि के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

गोयल, सुशील : अर्थशास्त्र के अध्यापकों के कक्षा अध्यापन की अन्तःक्रिया का विश्लेषणात्मक अध्ययन। एम.एड. राजस्थान विश्वविद्यालय, 1983

गोयल, महेन्द्रकुमार : A study of the teachers reactions to frustration in school situations. Ph. D., Raj. Uni., 1985

गोस्वामी, प्रेमपुरी : A comparative study of spontaneous classroom interaction and its effects on Bloom's Hierarchy of learning outcomes as revealed in the levels of attainment of students of effective and non-effective teachers. Ph. D., Raj. Uni., 1984

चटर्जी, बसन्ती : To study the level of cognitive development and spontaneous classroom interaction of the in-service language teachers. M. Ed., Raj. Uni., 1979

चन्द्रा, शीला : सुखाड़िया विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के अनुसुचित जाति एवं अनुसुचित जन-जाति के छात्राध्यापकों का समायोजन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

चपलोत, उषा : विद्यार्थियों की छात्राध्यापकों से अपेक्षाएँ (बी. एड.)। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

चित्तौड़ा, रमेशचन्द्र : अप्रशिक्षित छात्राध्यापकों और प्रशिक्षित अध्यापकों के कक्षा-कक्ष वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

चौरसिया, सुशीला : ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों का कक्षागत व्यवहार—एक तुलनात्मक अध्ययन। एम.एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

चौधरी, अमृता : Effectiveness of strategies of training of B. Ed., pupil teachers in using advance organizer model in teaching social-science. M. Ed., Vanasthali Vidyapith, 1987

चौधरी, महेन्द्रसिंह : उदयपुर विश्वविद्यालय के सत्र 1977 के छात्राध्यापकों की शैक्षिक और व्यावसायिक उपलब्धियों का सम्बन्ध । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

चौधरी, सुषमा : Studying effectiveness of different techniques of training B. Ed. pupil-teachers in the use of prudential inquiry model. M. Ed., Vanasthali Vidyapith, 1987

चौपड़ा, किरणबाला : A comparative study of classroom verbal interaction of RCE in-service teachers and teacher trainees of the initial and final stage of internship programme. M. Ed., Raj. Uni., 1975

चौहान, गोपालसिंह : A study of job satisfaction and job conditions of commerce teacher in Ajmer city. M. Ed., Rajasthan University, 1984

जगदीश, ललिता : कक्षा शिक्षण में नवाचार के प्रति शिक्षक वर्ग की अभिवृत्ति। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

जैन, निशा : छात्राध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति और शिक्षण योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1986

जैन, प्रकाश चन्द्र : पंचायत समितियों में कार्यरत प्रशिक्षित स्नातकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

जैन, सुभाषचन्द्र : A study of problem solving behaviour in physics among certain groups of Adoloscent pupils. Ph. D., Raj. Uni., 1982

जोशी, इन्द्रा : अपनी प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में शिक्षक के आत्म-सम्बन्ध का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

जोशी, दुर्गा : लोकप्रिय अध्यापकों के आत्म-सम्प्रत्यय का अध्ययन। एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1982

जागेटिया, ज्योति : संस्कृत अध्यापक व अध्यापिकाओं की संस्कृत शिक्षण के प्रति अभिरुचि का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

जोशी, नवलकिशोर : Neurotic tendencies among teachers. M. Ed., Raj. Uni., 1975

जोशी, पुष्पा : अविभक्त इकाई शिक्षण व्यवस्था में कार्यरत अध्यापकों की समस्याएँ। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

जोशी, विनीता : भावी व सेवारत शिक्षकों के जीवन-मूल्य एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1988

ठाकरे, मंजू : A comparative study of grammar translation method and structural approach in teaching English to class VI students. M. Ed., Udai. Uni., 1981

डाणी, डी. एन. : Interaction patterns of successful science teachers. M. Ed., Udai, Uni., 1976

डेविड, अर्चना : अध्यापकों की कार्य-सन्तुष्टि का अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1987

ढाका, मोहनलाल : अजमेर नगर के माध्यमिक विद्यालयों के प्रभावी तथा अप्रभावी वाणिज्य शिक्षकों के व्यक्तित्व के गुणों का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

तबेसरा, मिलेश : शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों के पूर्व अध्यापन अभ्यास (अध्यापन से प्रथम परिचय) कार्यक्रम का एक अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1977

त्रिपाठी, मदनलाल : एसटीसी छात्राध्यापकों की प्रवक्ताओं से अपेक्षाएँ। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

त्रिपाठी, महेशचन्द्र : पंचायत समिति, मावली के एकल अध्यापकीय विद्यालयों के अध्यापकों की समस्याओं का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

त्रिपाठी, श्याम किशोर अध्यापक शिक्षकों की कार्य-सन्तुष्टि का अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

त्रिवेदी, सन्ध्या : अध्यापन अभ्यास से अनुवर्ती कार्यक्रम एवं अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

दत्त, माधुरी : जोधपुर शहर के राजकीय एवं अराजकीय माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यवसाय सन्तुष्टि एवं प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 198[illegible]

दाधीच, सविता : सेवारत महिलाओं के बालकों की समस्याएँ। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

दानी, मनोरमा : भावी अध्यापकों की मताग्रहिता, अध्यापन अभिक्षमता एवं बौद्धिक स्तर। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

दीक्षित, देवकृष्ण : विद्याभवन शिक्षक महाविद्यालय, उदयपुर के छात्राध्यापकों द्वारा अभ्यास पाठ में सहायक सामग्री के उपयोग का अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

दीक्षित, सुरेशचन्द्र : उदयपुर शहर के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विभिन्न आयु वर्ग के अध्यापकों की अध्ययन अभिरुचि का अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1977

दीक्षित, हरिश्चन्द्र : छात्राध्यापकों के शिक्षण पूर्व एवं विश्लेषण क्रियाकलापों का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

देवकोटा, बी. के. : A cross-cultural study of teacher education in terms of self-perception on teaching effectiveness, innovations and attitudinal change. M. Ed., Raj. Uni., 1984

देवी, कौशल्या : इक्कीसवीं शताब्दी हेतु नई शिक्षा नीति की व्यावहारिक उपयोगिता का एक सर्वेक्षण । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

दोशी, प्रवीणकुमार : उदयपुर के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

धवन, अरुणा : A study of adustment of mode and J.S.T. tribal pupil teachers. M. Ed., Deemed Uni., 1987

नागदा, भँवरलाल : उदयपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापक, अध्यापिकाओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

नागर, संगीता : सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में अजमेर जिले के हायर सैकेण्डरी स्कूल की महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

नारंग, पुष्पारानी : जरच जिस्सप शिक्षण के लिये व्याख्यान विधि, व्याख्यान प्रदर्शन विधि व निर्देशित अन्वेषण विधि की प्रभावोत्पादकता का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

नेगी, जितेन्द्रसिंह : शिक्षकों के कक्षागत व्यवहार, शिक्षण कौशल एवं संज्ञात्मक विकास के सन्दर्भ में रसायन विज्ञान में विद्यार्थियों के अधिगम परिणाम। पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1985

पंड्या, शकुन्तला : बी. एड. छात्राध्यापकों की प्राध्यापकों से अपेक्षाएँ। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

परमार, बी. एल. : Probloms of teachers teaching English in class VIII. M. Ed., Udai, Uni., 1977

परिहार, प्रेमलता : The predictability of teaching competence of teaching effectiveness relation to teaching attitude and teaching altitude. M. Ed., Jodh. Uni., 1986

पाई, प्रेमलता : माइक्रोटीचिंग एवं प्रचलित तकनीक का शिक्षक प्रशिक्षण में छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक क्षमता पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1985

पाण्डे, शशि : Attitude of non-Hindi speaking students towards Hindi. M. Ed., Raj. Uni., 1986

पारीक, रमेशचन्द्र : A study of secondary school teachers perceptions of their own role and students perceptions of their teachers classroom behaviour. Ph. D., Raj. Uni., 1985

पारीक, सन्तोष : विभिन्न कक्षा स्तरों पर शिक्षक के कक्षा-व्यवहार का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

पुणेकर, विद्याभास्कर : कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों के लिये विज्ञान शिक्षण में स्वअधिगम विधि की अनुकूलता एवं प्रभाविता। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

पुरवार, शशिबाला : शिक्षण कौशलों में प्रशिक्षित छात्र अध्यापिकाओं की अध्यापन क्षमता का अध्ययन। एम. एड., वनस्थली विश्वविद्यालय, 1985

पुरुषोत्तम, शंकरलाल : शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन समस्याएँ। एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

पुरोहित, सुशीलकुमार : Ex-post facto study of the verbal behaviour and some characteristics of effective and ineffective language teachers. M. Ed., Raj. Uni., 1982

पोद्दार, एम. वी. : A comparative study of the effectiveness of some

प्रभाकर, प्रेम : माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षक प्रशिक्षण की उपयोगिता । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

बंसल, राजकुमारी : बी. एड. छात्राध्यापकों की हिन्दी विषय के अन्तर्गत वर्त्तनीगत अशुद्धियों का अध्ययन । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

बंसवार, रामपाल : अध्यापन में अनुभवी एवं अनुभव रहित छात्राध्यापकों की अध्यापन-वृत्तियों का अध्ययन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

बाफना, कुसुम : सह-सहयोगी विद्यालयों की अध्यापन अभ्यास कार्यक्रम के प्रति स्वभूमिका एवं उनसे छात्राध्यापकों की अपेक्षाएँ । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

बालानी, विमला : A study of relationship between job satisfaction, teacher adjustment and their effect on student achievement in non-government Higher Secondary School of Jodhpur. M. Ed., Jodh. Uni., 1985

बासयत, चमनसिंह : A cross-cultural study of reaction between teaching competency and attitude towards teaching among different groups of Indian Nepalis Secondary School teachers. M. Ed., 1979

बोस, सुमन : नागरिकशास्त्र अध्यापकों के कक्षा अध्यापन की अन्तःक्रिया का विश्लेषणात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

बोलिया, खीमसिंह : एस. टी. सी. छात्राध्यापकों की रुचियों एवं उनकी सम्पूर्ति सुविधाएँ । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

बौराय, सरला : माध्यमिक स्तर पर कार्य करने वाले अध्यापकों के व्यवहार गुणों का एक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

भटनागर, भुवनेश्वरी : राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर द्वारा संचालित सेवारत शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

भटनागर, रत्ना : हिन्दी में उपचारात्मक कार्य का भाषा सुधार पर प्रभाव। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

भट्टाचार्य, रीटा : A study of relationship of cognitive and non-cognitive traits determining achievement of teacher trainees in practice teaching. M. Ed., Raj. Uni., 1979

ऑकर, रामकुमार : विज्ञान अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

भाटी, उम्मेदसिंह : व्यावसायिक व गैर व्यावसायिक महाविद्यालयों के प्राध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति व व्यावसायिक सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1987

भारद्वाज, भूदेव : अध्यापक मनोबल का उसकी आर्थिक स्थिति एवं अध्यापन अनुभव से सम्बन्ध। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

भारद्वाज, वन्दना : छात्राध्यापकों की सृजनात्मक एवं कक्षा-कक्ष व्यवहार में सम्बन्ध । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

भार्गव, प्रभा : सामान्य विज्ञान शिक्षण में सातवीं कक्षा के छात्रों की उपलब्धि पर पृच्छा विधि और परम्परागत विधि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

भार्गव, राजकुमारी : Effect of guided discovery method on creativity and achievement of IX class biology student. M. Ed., Udai. Uni., 1986

भार्गव, संदीप : प्राथमिक अध्यापकों में कुण्ठा के कारणों का सर्वेक्षण। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

भार्गव, एस. सी. : Influence of certain personality variables on classroom interaction of trainees of experimental and control group of R.C.E. Ajmer. M. Ed., Raj. Uni., 1976

मलिक, जयपालसिंह : A comparative study of personality factors and learning environment of successful and unsuccessful science teachers in selected schools of Rajasthan. Ph. D., Raj. Uni., 1984

महरोत्रा, सविता : जीव विज्ञान शिक्षण के लिये अन्वेषण विधि की प्रभावोत्पादकता । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

महेन्द्र, पी. के. : A class cultural study of science teachers attitude towards discovery teaching. M.Ed., Raj. Uni., 1975

माथुर, दीपचरन दास: A study of the leisure time activities of teachers of rural and urban areas in Udaipur District. M. Ed., Raj. Uni., 1986

माथुर, नरेशकुमार : उदयपुर विश्वविद्यालय के सबसे शैक्षिक रूप से गहन एवं बुद्धिमान छात्राध्यापकों का कक्षान्तर्गत मौखिक व्यवहार तथा अध्यापन के प्रति इनकी अभिवृत्ति । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

development of concept in biology students. M. Ed., Raj. Uni., 1978

माथुर, राजदुलारी : अणु शिक्षण द्वारा प्रशिक्षित तथा अन्य प्रविधियों से प्रशिक्षित छात्राध्यापिकाओं की कक्षागत शाब्दिक अन्तःक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

मित्तल, रेखा : प्रारम्भिक प्राथमिक स्तर पर हिन्दी पढ़ाने की परम्परागत विधि तथा स्वाधिगम पर आधारित खेल विधि का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

मिश्र, गोपाल : अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति एवं उनका कक्षा व्यवहार – एक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

मिश्र, मिथिलेशकुमार : सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों में बुद्धिलब्धि एवं व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

मिश्र, लता : कार्यरत अध्यापकों एवं छात्राध्यापकों की अध्यापकों व माता-पिता, अनुशासन, जीवन व मानवता, देश तथा धर्म के प्रति अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

मीणा, हंसराज : अनुसूचित जातियों, जनजातियों एवं सवर्ण जातियों में कार्यरत अध्यापकों के मनोबल का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

मुखर्जी, कमला : उच्च एवं निम्न सृजनशील अध्यापकों का कक्षा व्यवहार। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

मुद्गल, बी. एस. : A comparative study of effects of conventional teacher training and skill based teacher training on teaching behaviour and secondary school pre-service mathematics teachers and the achievements and learning behaviour of pupils. Ph. D., Raj. Uni., 1983

मेंहदीरत्ता, द्रौपदी : विद्यार्थियों, समुदाय एवं स्वयं शिक्षक प्रस्थिति। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

मेहता, ललिता : विद्यालय अध्यापकों की शैक्षणिक उपलब्धि और व्यावसायिक सन्तुष्टि का एक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

मेहरा, सुशीला : A study of relationship between attitudes towards Biology of personality trades among biology teachers. M. Ed., Raj. Uni., 1979

मैथ्यू, जे. सी. : A comparative study of scheduled caste and non-scheduled cast graduate student teacher in relation to the Intelligence, Achievement and Teaching Attitude. M. Ed., Jodh. Uni., 1986

मोदी, आभा : कक्षा स्तर व विषय की प्रकृति के सन्दर्भ में कक्षा अन्तःक्रिया के परिवर्त्यों का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

कौलख, गुरमीतसिंह : अध्यापकों की स्वयं व दूसरों के प्रति अभिवृत्ति अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

यादव,भगवानसहाय : Personal values and altruistic attitude of students teachers. M. Ed., Raj. Uni., 1977

यादव, आर. एस. : A comparative study of lecture method guided discovery method and discovery method in teaching science. M. Ed., Raj. Uni., 1977

यादव, राजेन्द्र : सेवारत कर्मियों के कार्य में शैक्षिक उपाधि की उपयोगिता का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

यादव, हरपालसिंह : A comparative study of attitudes to language and non-language teachers towards teaching. M. Ed., Raj. Uni., 1979

रमेश (कुमार) : विभिन्न विषयों के अधिक प्रभावशाली और कम प्रभावशाली अध्यापकों की कक्षागत शिक्षक छात्र अन्तःक्रिया का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय,1979

रमेशचन्द्र : भावी अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमता, बौद्धिक स्तर व नैतिकता पीएच. डी., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1984

सजनी,अजीजअहमद : A comparative study of characteristics of primary and secondary teachers. M. Ed., Ajmer Uni., 1988

राजेश्वरी : राजस्थान के शिक्षकों को दिये गये राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय पुरस्कारों का एक अध्ययन। एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1976

राठी,उषा : माध्यमिक विद्यालयों के वातावरण तथा शैक्षिक परिवर्तन के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति के सम्बन्धों का अध्ययन। एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1987

राणा, शक्तिजंग : Relationship between attitudes towards teaching of personality traits of in-service teachers from Nepal and India. M. Ed., Raj. Uni., 1983

वायरानी, लक्ष्मी : ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित स्नातक अध्यापकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1975

वाजपेयी, आभा : उदयपुर विश्वविद्यालय के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मूल्य तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्तियों से सह-सम्बन्ध । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

वैष्णव, तेजप्रकाश : नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रति सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के अभिमतों का तुलनात्मक अध्ययन । एम. एड., 1988

व्यास, चन्द्रकांता : राजकीय व अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की निर्देशन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन । एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1988

व्यास, जगदीशचन्द्र : Impact of personality traits, attitudes and classroom behaviour of teachers on pupil's scholastic attainments. Ph. D., Udai. Uni., 1981

व्यास, त्रिलोकीनाथ : Effectiveness of science programme in developing scientific attitude at the secondary level. M. Ed., Udai. Uni., 1981

व्यास, आर. पी. : Relationship of selected teachers with the teaching success of prospective teachers in Rajasthan. Ph. D., Raj. Uni., 1982

शर्मा, अखिलेश : A study of the relationship between attitude towards teaching and class-room verbal interaction of teachers. M. Ed., Raj. Uni., 1982

शर्मा, अशोक : उदयपुर जिले में पंचायत समिति स्तर पर चयनित श्रेष्ठ शिक्षकों का शैक्षिक व सामाजिक क्षेत्र में योगदान । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1978

शर्मा, उषा : A comparative study of classroom interaction and pupil preparation of teaching of teacher of visually impaired pupils with teachers of sighted pupils. M. Ed., Raj. Uni., 1983

शर्मा, ओमप्रकाश : शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति, उम्र और अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति के बीच का सम्बन्ध। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

शर्मा, कमलकान्त : A comparative study of classroom verbal interaction of in-service teachers of U.P. and Rajasthan states using STOS. M. Ed., Raj. Uni., 1980

शर्मा, कुसुम : उदयपुर नगर के गैर सरकारी माध्यमिक शालाओं में अध्यापिकाओं के समायोजन की समस्या, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1978

शर्मा, कुसुमलता : बी. एड. की छात्र-अध्यापिकाओं के कक्षा शिक्षण में उनके अप्रत्यक्ष तथा प्रत्यक्ष व्यवहार के कुछ निर्धारक तत्व (विशेष रूप से व्यक्तित्व सम्बन्धी तत्व)

शर्मा, दिनेश : वाणिज्य शिक्षण से सम्बन्धित अवधारणाएँ एवं प्रश्न करने की तकनीक — समालोचनात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

शर्मा, निर्मल : शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी. एड. प्रशिक्षण में सेवारत एवं नवीन प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

शर्मा, देवेन्द्रकुमार : माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की अपने प्रधानाध्यापकों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन। एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, डबोक, 1988

शर्मा, पूर्णिमा : Teachers behaviour liked and disliked by the pupils : A research study. M. Ed., Udai. Uni., 1980

शर्मा, प्रेमा : माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षा में अभिनवाचारों के प्रति अभिवृत्तियाँ। एम.एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1976

शर्मा, चन्द्रकला : A study of adjustment, general intelligence and personality of pre-service teachers and their bearing upon classroom verbal behaviour. Ph. D, Raj. Uni., 1986

शर्मा, ब्रजकिशोर : हिन्दी शिक्षण की परम्परागत तथा प्रायोजना विधियों से सृजनात्मकता का विकास। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

शर्मा, मदनलाल : A study into the development of teacher competence of the B. Ed. student teachers in the Training Colleges of Rajasthan. Ph. D., Raj. Uni,, 1978

शर्मा, महेन्द्रप्रताप : A comparative study of classroom verbal interaction of R.C.E. in-service teachers and teachers trainees at the initial and final stage of inter-link programme use STOS. M. Ed., Raj. Uni., 197[illegible]

शर्मा, राजीव : माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के मनोबल का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

शर्मा, ललिता : Comparison of verbal classroom interaction of science teachers judged effective with those judged ineffective using Secondary School Board Examination criteria. M. Ed., Raj. Uni., 1980

शर्मा, लाडलीलाल : उच्च प्राथमिक स्तर पर कार्यरत अध्यापकों के मनोबल का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

शर्मा, विष्णुदत्त : अध्यापकों के व्यावसायिक उत्तरदायित्व, संस्थागत वातावरण और शैक्षिक कार्य विमुखता का माध्यमिक स्तर पर एक अध्ययन। एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

शर्मा, सुनीता : सवर्ण हिन्दू जाति, अनुसुचित जाति एवं जनजाति के अध्यापकों की स्वधारणा, समायोजन एवं अध्यापन अभिक्षमता का एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन। एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

शर्मा, सुमनलता : बी. एड. की छात्र-अध्यापिकाओं के कक्षा शिक्षण में उनके अप्रत्यक्ष तथा प्रत्यक्ष व्यवहार के कुछ निर्धारक तत्व। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

शर्मा, स्वराज्यपाल : Classroom behaviour of pre-service and in-service teachers (Based on tanders classroom interaction analysis techinque). M. Ed., Raj. Uni., 1983

शहनाज : भावी अध्यापकों में पर्यावरणीय जागरूकता एवं अभिवृत्तियों का अध्ययन। एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, डबोक, 1988

शेख, रेहाना : सामाजिक अध्ययन शिक्षण में व्याख्यान, विचार-विमर्श तथा सामाजीकृत अभिव्यक्ति विधियों का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

श्रीमाली, राजलक्ष्मी : शिक्षण व्यवसाय के प्रति महिलाओं की अभिवृत्ति। एम. एड., सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, 1987

श्रीवास्तव, निशा : बी. एड., छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति एवं समायोजन का उनके कक्षागत व्यवहार से सह-सम्बन्ध का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

श्रीवास्तव, रमा : उदयपुर विश्वविद्यालय में शिक्षण प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्र अध्यापकों तथा छात्राध्यापिकाओं क अध्ययन। एम.एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

सक्सेना, अनिलकु. : A comparative study of teaching behaviour patterns and students achievements of knowledge understanding and application levels. M. Ed., Raj. Uni., 1975

सक्सेना, विपुला : विविध चिन्तन के उत्पाद पर कार्य समय एवं शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

संचेती, कुसुम : राजकीय शिक्षण प्रशिक्षण विद्यालय के छात्राध्यापकों की विज्ञान अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1977

सनाढ्य, चन्द्रकला : विद्यालय की वास्तविक आवश्यकताओं के आधार पर विज्ञान के अध्यापकों के लिये उपयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम का निर्माण। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

सांदू, धूलेसिंह : छात्राध्यापकों की अध्यापन अभियोग्यता का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

सांखला, रचना : छात्रों की माध्यमिक शालाओं में कार्यरत अध्यापिकाओं की समायोजन समस्याएँ। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

सारण, संपतकुमार : Effect of teacher education programmes on self-perception, classroom performance and teacher behaviour of regular and prospective science teacher. M. Ed., Raj. Uni., 1979

सारस्वत, विजेन्द्रप्रसाद : A comparative study of classroom verbal interaction of prospective science teachers trained through integrated conventional approaches using STOS. M. Ed., Raj. Uni., 1985

साह, किरण : विद्यालय विषयों की प्रकृति के सन्दर्भ में विभिन्न कक्षा-कक्ष अंतःक्रिया विश्लेषण पद्धतियों की प्रभावशीलता का अध्ययन। एम. एड., वनस्थली विश्वविद्यालय, 1985

साहनी, अमरजीतकौर: A study of the classroom interaction patterns of science teachers. M. Ed., Raj. Uni., 1977

सिंघवी, उषा : राज्य-स्तरीय पुरस्कार प्राप्त शिक्षकों का एक अध्ययन। एम. एड., सुखाड़िया विश्वविद्यालय, 1988

सिंह, अनार : अनुसूचित जाति एवं सवर्ण जाति के अध्यापकों का कक्षा व्यवहार। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

सिंह, अर्चना : अध्यापकों में विभिन्न समूहों के बीच वैज्ञानिक दृष्टिकोण, व्यक्तित्व एवं उपलब्धि से सम्बन्धित संबंध का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

सिंह, ओमप्रकाश : An exploratory study for identification of certain specific science teaching skills and study of their effectiveness. M. Ed., Raj. Uni., 1983

सिंह, किरतपाल : सामाजिक मूल्यों के सम्बन्ध में हायर सैकेण्डरी स्कूल के शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

सिंह, गीता : पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियों के प्रति शिक्षक महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति। एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, डबोक 1988

सिंह, नगेन्द्र : A comparative study of classroom verbal interaction of integrated and conventional courses using STOS. M. Ed., Raj. Uni., 1981

सिंह, बहादुर : बीकानेर नगर के विद्यालयों के पुरुष तथा महिला अध्यापकों का माता-पिता, अनुशासन, जीवन व मानवता, देश तथा धर्म के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

सिंह, भवानी : Teachers motivation to work. Ph. D., Raj. Uni., 1977

सिंह, रमाकान्त : बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अध्ययन अभिवृत्ति का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

सिंह, रामपाल : अध्यापकों की कुण्ठा प्रतिक्रियाओं का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

सिंह, शान्ति : प्रवचन विधि से नवोन्मेष शिक्षण विधियों का तुलनात्मक परीक्षण कर इनकी प्रभावोत्पादकता की जाँच करना। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

सिंह, शीला : अणु शिक्षण अध्यापन में परिवीक्षक तथा सहपाठी परिवीक्षक द्वारा दिये गये पुनर्निवेशन का छात्राध्यापिकाओं की सामान्य अध्यापन क्षमता पर प्रभावोत्पादकता का तुलनात्मक अध्ययन । एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1977

सिंह, एस. पी. : An experimental study of this effect of lecture-cum-discussion and guided self study methods on the academic achievement of biology students of different intelligence levels. M. Ed., Raj. Uni., 1978

सिंह, साहब : Relationship between teachers personality teaching success and behavioural change in students. Ph. D., Udai. Uni., 1978

सिंह, हरपाल : अजमेर नगर के प्राथमिक तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्तियों का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

सिसोदिया, मोहन : माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की अध्यापन भूमिका निष्पादन का अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1976

सुचेता : माध्यमिक स्तर की अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों का अध्ययन। एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1986

सोनी, गिरधारी : बी. एड., छात्राध्यापकों के अध्यापन में छात्रों का योगदान। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

सोलंकी, कल्पना : पर्यावरण शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, डबोक, 1988

स्वरूप, रेणुका : A comparative study of effect of conventional internship programme and skill-based internship programme on classroom interaction patterns of science teachers and on achievement of their pupils. M.Ed., Raj. Uni. , 1977

स्वामी, ब्रजलाल : अध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति । एम. एड., राजस्थानविश्वविद्यालय, 1980

हर्ष, कृष्ण कुमार : शिक्षकों की व्यावसायिक समस्याएं । एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1979

★ ★ ★

व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा एवं अधिगम

❑ जमना लाल बायती
❑ ज्ञानप्रकाश गुप्ता

राजस्थान में शिक्षा के क्षेत्र में पीएच. डी. तथा एम. एड. स्तर पर व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा एवं अधिगम को शोध के विषय मान कर जो अनुसंधान-कार्य 1975 से 1988 में हुआ है, उनमें व्यक्तित्व के 167 (13), अभिप्रेरणा के 25 (5) एवं अधिगम के 23 (2) शोध कार्य सम्पन्न हुए हैं । (कोष्ठक में दी हुई संख्याएं पीएच. डी. शोध कार्य की हैं) व्यक्तित्व अध्ययन में जो शोध कार्य हुआ है उन्हें 9 अनुभागों में विभक्त किया है, यथा—सृजनशीलता, व्यक्तित्व के घटक, व्यक्तित्व के विभेदक, व्यक्तित्व निर्धारण, दुश्चिन्ता एवं आक्रामकता, प्रत्यक्षन, आत्म-प्रत्यय, आवश्यकता एवं समायोजन और खिलाड़ियों का व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा एवं अधिगम के क्षेत्र में हुए शोध कार्य के अनुभाग नहीं किए गए हैं ।

सृजनशीलता

इस क्षेत्र में शोध कार्य 1983 से आरम्भ हुए हैं । वर्ष 1974 के पश्चात् एम. एड. व पीएच. डी. दोनों स्तर पर इस क्षेत्र में कार्य होता रहा है । शर्मा (1975) ने अपने शोध कार्य में पाया कि किशोर छात्रों में सृजनात्मकता उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर पर निर्भर करती है, पर ग्रामीण किशोरों की अपेक्षाकृत शहरी किशोरों पर यह प्रभाव अधिक है । किशोर छात्रों में सृजनशीलता हिन्दी व गणित की सम्प्राप्ति के साथ सार्थक सह-सम्बन्ध लिए हुए है । मिश्रा (1976) ने अपने पीएच. डी. शोध कार्य में पाया कि कला, वाणिज्य एवं विज्ञान के छात्र-छात्राओं की सम्प्राप्ति और सृजनशीलता में सकारात्मक सम्बन्ध है । लेकिन उन्होंने यह भी देखा कि कला संकाय के छात्र, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों के छात्रों की तुलना में कम सृजनात्मक एवं प्रतिभाशाली थे । शर्मा (1976) ने पाया कि उच्च व निम्न सृजनात्मक छात्रों के व्यक्तित्व, सामाजिक, स्वास्थ्य व विद्यालयी समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं था ।

सिंह (1977) ने अपने पीएच. डी. के शोध में ज्ञात किया कि विज्ञान के छात्र कला एवं वाणिज्य के छात्रों की तुलना में शाब्दिक सृजनात्मकता में उच्च पाए गए लेकिन अशाब्दिक सृजनात्मकता में तीनों संकायों के छात्रों में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। उन्होंने सृजनात्मक एवं प्रतिभा, सृजनात्मकता एवं व्यक्तित्व में धनात्मक सार्थक सह-सम्बन्ध पाया, जबकि सृजनात्मकता एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर में कोई सम्बन्ध नहीं ज्ञात किया। ओझा (1978) ने मालूम किया कि अहं-बल के विकास में आकृति एवं शब्दार्थ मूलक माध्यमों की अपेक्षा प्रतीकात्मक माध्यम अधिक अच्छी प्रकार से सहायक होते हैं।

मिश्रा (1979) ने अपनी पीएच. डी. शोध में पाया कि बालक-बालिकाओं के सृजनात्मक चिन्तन व सृजनात्मक क्षमताओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व के छात्र-छात्राओं में सृजनात्मक एवं 'चित्रकला' के क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। छात्राओं की अपेक्षा छात्र प्रवाहशीलता (Fluency) के क्षेत्र में अच्छे पाए गए, जबकि नमनीयता (Flexibility) तथा मौलिकता (Originality) में छात्रों की अपेक्षा छात्राएँ अच्छी पाई गईं। वर्मा (1979) ने अपने शोध में पाया कि सामान्य से न्यून बुद्धि वाली बालिकाएं बालकों से अपेक्षाकृत अधिक सृजनशील हैं। लेकिन उनका बहुविविध दिशाओं में चिन्तन (Divergent Thinking) एवं मौलिकता बालकों से न्यून है। गोयल (1979) ने अपने 'उच्च व निम्न सृजनशील' छात्राओं के अध्ययन में पाया कि उच्च-सृजनशील छात्राओं में विवेकपूर्ण जागरूकता, स्वायत्तता, पोषण, यौन प्रर्दशन निम्न सृजनशील छात्राओं से अधिक है। लेकिन आत्म-समर्पण, विनय की वृत्ति, अपेक्षाकृत निम्न-सृजनशील छात्राओं में अधिक है। दोनों प्रकार की छात्राओं में साहस, स्वावलम्बन, कल्पना व वस्तुनिष्ठ विचार की धारणा समान है। उच्च सृजनशील छात्राओं में पलायनशीलता, काल्पनिकता तथा क्षतिपूर्ति का विचार अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। गर्ग (1979) ने सृजनशील बालकों के व्यक्तित्व स्वरूपों के अध्ययन में पाया कि सभी सृजनशील छात्र-छात्राओं की रुचियाँ भी भिन्न थीं। सृजनशील छात्र-छात्राएँ एकान्तप्रिय, शान्त व उदासीन थे, लेकिन इसके साथ ही वे बुद्धिमान, विचारशील, क्रियाशील एवं ईर्ष्यारहित भी थे। इन छात्र-छात्राओं में संवेदनशील, कोमल हृदय व आत्म-विश्वास के गुण भी पाए गए। मीर (1980) ने कश्मीर के किशोर-किशोरियों के सृजनात्मक प्रतिभा के एक शोध में ज्ञात किया कि नगरीय किशोर-किशोरियाँ ग्रामीण किशोर-किशोरियों की तुलना में अधिक सृजनशील थीं। पन्त (1981) ने निष्कर्ष निकाला कि लिंगभेद का सृजनात्मक अभिव्यक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता जबकि सामाजिक, सांस्कृतिक व भौगोलिक विभिन्नताओं का सृजनात्मक अभिव्यक्ति पर प्रभाव पड़ता है।

सृजनशील लेखकों व चित्रकारों की विचार शैली तथा व्यक्तित्व के क्षेत्र में तिवारी (1982) ने पाया कि उच्च-सृजनशील लेखिकाएँ व छात्रा चित्रकारों में अभिव्यक्ति के माध्यम के सन्दर्भ

सृजनात्मकता, रचना उत्पादन शक्ति, प्रवाह क्षमता, मौलिकता, नमनीयता व समस्या समाधान शक्ति क्रमशः 3.5, 2.67, 4.66, 4.00, 6.00 तथा 4.7 प्रतिशत थी । मिश्रा (1983) ने पाया कि किशोरों में सृजनात्मकता चिन्तन की अभिव्यक्ति पूर्व किशोरों से अधिक होती है लेकिन बालक-बालिका की दृष्टि से इसमें कोई अन्तर नहीं है ।

सृजनात्मकता का व्यक्तित्व के अन्य घटकों से सम्बन्ध के अध्ययन में गुरबानी (1984) ने निष्कर्ष निकाला कि निम्न सृजनात्मकता का, कुण्ठा प्रतिक्रियाओं का दोषारोपण की प्रवृत्ति पर अधिक प्रभाव पड़ता है । लेकिन स्वदोषारोपण प्रवृत्ति का सृजनात्मकता के स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता । उन्होंने यह भी देखा कि बुद्धि तथा सृजनशीलता में कोई सम्बन्ध नहीं है । लेकिन कुण्ठा प्रतिक्रियाओं की प्रवृत्ति से सम्बन्धित पर-दोषारोपण प्रवृत्ति में उच्च-सृजनशीलता व उच्च बुद्धि वाले छात्रों की प्रतिक्रियाओं में अन्तर है । इसके विपरीत त्यागी (1986) ने पाया कि सृजनात्मकता का बुद्धि, भाषायी योग्यता व शैक्षिक सम्प्राप्ति से उच्च सह-सम्बन्ध है ।

विज्ञान-शिक्षण व्यूह रचना एवं सृजनात्मक चिन्तन के तत्वों के सम्बन्ध में जैन (1984) ने अपने अध्ययन में पाया कि विज्ञान-शिक्षण व्यूह-रचना से सृजनात्मक चिन्तन के तत्व—प्रवाहशीलता, नमनीयता व मौलिकता को बल मिला है । रेणा (1984) ने अपने पीएच. डी. शोध कार्य द्वारा यह निष्कर्ष निकाला कि उच्च सृजनात्मक समूह के बालक अधिक खुले मस्तिष्क वाले होते हैं ।

सोनी (1984) ने विज्ञान मेले में सहभागी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता सम्बन्धी अध्ययन में पाया कि विज्ञान मेले में सहभागी विद्यार्थी विज्ञान मेले में भाग नहीं लेने वाले विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों से सृजनात्मकता की शाब्दिक अभिवृत्ति में अपेक्षाकृत उच्च हैं लेकिन अशाब्दिक अभिव्यक्ति में इन दोनों समूहों में सार्थक अन्तर है ।

भटनागर (1985) ने स्वस्फूर्त चित्रों के माध्यम से विद्यार्थियों के सृजनात्मक अध्ययन में पाया कि न्यून मौलिकता एवं न्यून प्रवाहशीलता वाले विद्यार्थी निर्जीव वस्तु , प्राकृतिक दृष्य आदि अधिक बनाते हैं । जबकि अधिक मौलिकता वाले विद्यार्थी सजीव वस्तुएं जैसे मानव व पशु आदि के चित्र अधिक बनाते हैं । उन्होंने यह भी पाया कि न्यून बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थी ऐसे चित्र बनाते हैं जिसमें नूतनता का अभाव होता है जबकि अधिक बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों के बने चित्रों में नूतनता अधिक होती है । ऐसे ही निष्कर्ष भटनागर (1986) ने भी अपने शोध से प्राप्त किए ।

तिवारी (1987) ने डॉ. बाकर मेंहदी के परीक्षणों का उपयोग कर ज्ञात किया कि उच्च सृजनात्मक अभिक्षमता के अन्तर्गत लिंग भेद का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन निम्न सृजनात्मक अभिक्षमता के अन्तर्गत लिंग भेद प्रभाव डालता है । सृजनात्मक अभिक्षमता पर आयु विशेष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता । लाल (1987) ने अपने पीएच. डी. शोध में व सुश्री त्यागी (1988) ने भी उसी प्रकार के निष्कर्ष प्राप्त किये । बोहरा (1988) ने भी उदयपुर नगर के उच्च माध्यमिक विद्यालय की कक्षाओं के विद्यार्थियों का सृजनात्मक स्तर सामान्य स्तर का

पाया । सरला शर्मा (1988) ने ज्ञात किया कि नवोदय विद्यालय के छात्रों की सृजनात्मक अभिक्षमता सामान्य से उच्च थी । उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि इन छात्रों के सृजनात्मक चित्रण व स्वतंत्र चित्रण में एवं सृजनात्मक चित्रण व मानसिक योग्यता में धनात्मक सार्थक सहसंबंध था । डॉ. आर. पी. सिंह द्वारा निर्मित टेस्ट को प्रयुक्त करते हुए सुश्री सिंह (1988) ने निष्कर्ष निकाले कि भाषा व चित्रकला के क्षेत्र में उच्च सृजनशील व निम्न सृजनशील छात्राओं में सार्थक अन्तर था । चित्रकला एवं भाषा के क्षेत्र में उच्च सृजनशील किशोरियों के व्यक्तित्व के विभिन्न तत्वों पर प्राप्त टी मूल्य सार्थक नहीं था । ऐसा ही परिणाम निम्न सृजनशील किशोरियों के लिए भी प्राप्त हुआ । सुश्री सुधा गर्ग (1988) ने निष्कर्ष निकाला कि सवर्ण छात्र अनुसूचित जाति के छात्रों से अधिक सृजनशील पाए गये । आशा तिवारी (1988) ने ज्ञात किया कि अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले छात्र सिंधी माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों की तुलना में अधिक सृजनशील थे ।

सृजनात्मकता ज्ञात करने हेतु विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा टौरन्स के सृजनात्मक विचार प्रक्रिया परीक्षण, डॉ. वाकर मेंहदी का शाब्दिक एवं अशाब्दिक परीक्षण, डॉ. आर. पी. सिंह द्वारा निर्मित सर्किल टैस्ट, फिगरल सीमीलैरीटीज टैस्ट, फिगर ड्राइंग टैस्ट, वर्ड ग्रुपिंग टैस्ट, प्लांट टाइटल टैस्ट आदि काम में लिए गए ।

इस क्षेत्र में हुई उक्त गवेषणाओं से यह तथ्य स्पष्ट है कि सृजनशील छात्र-छात्राओं का व्यक्तित्व, असृजनशील छात्र-छात्राओं से अलग प्रकार का है । सृजनशील छात्र-छात्राएँ अधिक संवेदनशील, विचारवान व क्रियाशील होती हैं ।

व्यक्तित्व के घटक

वर्मा (1975) ने सामान्य व बुद्धिमान बालकों के अध्ययन में पाया कि विज्ञान के विद्यार्थी अन्य संकायों के छात्रों की अपेक्षा अधिक नियमित व एकाग्र होते हैं । वे गणित व जीव विज्ञान में अधिक रुचि लेते हैं । वे अवलोकन करने व प्रतिवेदन तैयार करने में अत्यधिक कुशल होते हैं, व कुशाग्रबुद्धि विज्ञान पढ़ने वाली छात्र-छात्राएँ पाठ्यक्रम सहभागी प्रवृत्तियों में अधिक रुचि लेती हैं। राणा (1976) के अनुसार उच्च एवं निम्न सम्प्राप्ति वाले छात्र व्यक्तित्व की वृद्धि तथा आशंका के गुणों पर असमान पाए गए । उच्च सम्प्राप्ति वाले अधिक बुद्धिमान् तथा कम आशंकाग्रस्त पाए गए । यादव (1976) ने पाया कि अनुसूचित जाति के छात्र अच्छे व्यवसाय के प्रति सजग, पारिवारिक वातावरण से जुड़े रहना, कम भय वाले, न्यून आग्रह वाले, अच्छे आत्म अहम्, पत्नी के निकट रहने वाले, न्यून आत्म-प्रत्यय, कम मित्र बनाने वाले, तनिक आत्मरत रहने वाले तथा दूसरों को कम दुःख देने वाले होते हैं । मोदी (1976) ने व्यक्तित्व प्रतिमानों का अध्ययन करते हुए पाया कि लोकप्रिय छात्राओं की बुद्धि अपेक्षाकृत अधिक होती है। उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति भी तिरस्कृत छात्राओं से अच्छी होती है । एकाकी तथा तिरस्कृत छात्राओं की

उन्मुक्तता, कल्पना में सांवेगिकता, बुद्धि में व्यावहारिकता एवं सक्रियता में गत्यात्मकता प्रमुख रूप से पाई गई । तिरस्कृत छात्राओं के व्यक्तित्व प्रतिमान में संवेग में आत्मरतता, बुद्धि में अधिक व्यावहारिकता पाई गई लेकिन कल्पना तथा सक्रियता में वे अन्य छात्रों के समान पाई गईं । सक्सेना (1977) के अनुसार अनाथ बालक अन्य बालकों की अपेक्षाकृत समस्याओं से अधिक ग्रसित हैं । दोनों वर्गों की वैयक्तिक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, मनोरंजन से जुड़ी समस्याओं में एवं आत्म-विश्वास, परावलम्बन, अन्तर्द्वन्द्व, विचलन, शान्त उद्विग्न, आदि व्यक्तित्व के कारकों में सार्थक भिन्नता है जबकि बुद्धि अन्तर्मुखी-बाह्यमुखी, संवेदन, साहस, संकोच, आज्ञापालन आत्माभिव्यक्ति गुणों में सार्थक भिन्नता नहीं है । गोयल (1977) ने अपने शोध से निष्कर्ष निकाला कि एकल परिवार के किशोरों का समायोजन अच्छा, समस्याएँ सामान्य, आवश्यकताएँ अधिक, नेतृत्व कम तथा स्वतन्त्रता अधिक होती है । उच्च वर्ग के किशोरों का गृह, स्वास्थ्य समायोजन अच्छा होता है लेकिन सामाजिक-आर्थिक स्तर का सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन, समस्याओं और आवश्यकताओं, नेतृत्व, स्वतन्त्रता तथा आत्म-प्रत्यय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता । बेनीवाल (1977) के अनुसार किशोरों की विनय, पोषण तथा प्रभुत्व की आवश्यकताएँ, समर्पण, आक्रामकता, सम्बन्ध, सम्प्राप्ति, पराक्रम, स्वायतत्ता, प्रतिरक्षण एवं प्रदर्शन की आवश्यकताएँ स्थिर पाई गईं तथा ये आवश्यकताएँ उनके संज्ञानात्मक विकास से नकारात्मक रूप से सह-संबंधित पाई गईं । जोशी (1978) ने पाया कि छठी कक्षा के छात्रों द्वारा चिन्तन प्रधान कार्य किए जाने पर उनकी चिन्तन योग्यता विकसित होती है और उसका उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है । गिरी (1978) के अनुसार कार्यरत महिलाओं के बच्चे अपेक्षाकृत अधिक सहनशील एवं भावानुभूतियुक्त होते हैं । उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति तथा उपलब्धि की आवश्यकता भी अधिक होती है । जबकि अकार्यरत महिलाओं के बच्चों में संवेगात्मक स्थिरता तुलनात्मक रूप से अधिक होती है । लेकिन ग्रोवर (1979) ने अपने शोध में पाया कि दोनों प्रकार के बच्चों की बुद्धि में कोई अन्तर नहीं होता । अकार्यरत महिलाओं के बच्चे समायोजन में अच्छे तथा पढ़ने में रुचि सम्पन्न होते हैं । इस वर्ग के बच्चे तथा बच्चियों के व्यक्तित्व समायोजन में भी अन्तर होता है । सोलंकी (1979) के अनुसार लोकप्रिय विद्यार्थी उपेक्षित विद्यार्थियों की अपेक्षा मानसिक योग्यता, शैक्षिक सम्प्राप्ति, चंचलता तथा रहन-सहन में उच्च-स्तर के पाए गए; इसी प्रकार लोकप्रिय विद्यार्थी मित्रता, स्नेह, आकांक्षा, उपकार, निर्भरता, प्रसन्नता तथा उपेक्षित विद्यार्थी अन्तर्द्वन्द, सांवेगिक, तनाव, अपराध भावना, दुश्चिन्ता, विरोध, बेईमानी गुणों से युक्त व्यक्तित्व वाले पाए गए । बाला (1979) ने नगरीय बालिकाओं का अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला कि कुण्ठा की प्रतिक्रियाओं में मुख्यतः अहम् प्रतिरक्षा, आवश्यकता प्रदर्शन तथा बाधा प्रधानता क्रमानुसार उत्तरदायी पाए गए । अग्रधर्षी तथा सहनशील बालिकाओं के व्यक्तित्व में भिन्नता पाई गई पर उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति में कोई अन्तर नहीं पाया गया। शर्मा (1979) ने इस क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शोध में पाया कि उनकी दुश्चिन्ता एवं आत्माभिव्यक्ति का स्तर तुलनात्मक रूप से उच्च है । उनकी मानसिक योग्यता तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति में अन्य समूहों से कोई भिन्नता नहीं है । पर उनकी मानसिक योग्यता तथा आत्माभिव्यक्ति और शैक्षिक सम्प्राप्ति तथा आत्माभिव्यक्ति में धनात्मक सह-सम्बन्ध है । सिंह

(1979) के अनुसार अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति, आत्म-प्रत्यय सामान्य व दुश्चिन्ता उच्च पाई गई। उनके दुश्चिन्ता तथा आत्म-प्रत्यय में नाम मात्र का सहसम्बन्ध पाया गया तथा उच्च सम्प्राप्ति वाला समूह उच्च दुश्चिन्ता वाला पाया गया । विद्यालय में नियमितता, अपने प्रयत्नों तथा परिवार के सदस्यों के सहयोग से ये विद्यार्थी अपने अध्ययन के प्रति सकारात्मक अभिव्यक्ति रखते पाए गए हैं । दो-तिहाई छात्रों के माता-पिता अशिक्षित तथा अदक्ष श्रमिक पाए गए । दुबे (1979) तथा मिश्रा (1979) के अनुसार ढाई वर्ष की बच्चियाँ भाषा के विकास में उच्च पाई गई पर आगे चलकर साढ़े चार वर्ष के बालक इस क्षेत्र में बालिकाओं से श्रेष्ठ बन गए । व्यावसायिक उपाधि प्राप्त माता-पिताओं के बच्चे तुलनात्मक रूप से भाषा विकास में उच्च पाए गए, पर व्यापारी वर्ग की सन्तान उनसे भी श्रेष्ठ पाई गई । प्रथम सन्तान का शब्द भण्डार उच्च पाया गया । बालक संज्ञा से सीखना आरम्भ करते हैं तथा क्रिया, विशेषण, सर्वनाम आदि क्रमशः सीखते भी जाते हैं । मिश्रा (1979) मे यह भी पाया कि पढ़ने वाले बच्चों का न पढ़ने वाले बच्चों से शब्द भण्डार ज्यादा अच्छा है । डेढ़ से ढाई वर्ष के बच्चे 5 शब्दों का वाक्य बना लेते हैं एवं उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के बच्चे तुलनात्मक रूप से लम्बा वाक्य बनाते हैं । धरेजा (1979) के अनुसार अकादमिक नेतृत्व देने वाली छात्राएँ शैक्षिक सम्प्राप्ति में उच्च, स्वयं निर्णय लेने वाली, अधिक भावुक, स्वावलम्बी, संवेदनशील, शान्त प्रकृति की तथा परिस्थिति एवं समयानुसार अपने व्यवहार को बदल लेने वाली पाई गई तथा इन छात्राओं में डॉक्टर, इंजीनियर आदि व्यवसाय लोकप्रिय पाए गए । शर्मा (1979) ने अपने शोध में पाया कि छात्राओं की उत्तरदायित्व भावना के अंकों के प्रथम व द्वितीय निर्धारकों के मूल्य में .93 सहसम्बन्ध गुणांक प्राप्त हुआ । उत्तरदायित्व तथा व्यक्तित्व में धनात्मक सार्थक, उत्तरदायित्व तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति में ऋणात्मक सार्थक सम्बन्ध पाया गया जबकि उत्तरदायित्व तथा आर्थिक स्थिति में कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया । बंगा (1980) ने नगरीय राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों में अपने पीएच. डी. के शोध कार्य से निष्कर्ष निकाला कि केन्द्र द्वारा संचालित अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित विद्यार्थी तर्क शक्ति में उच्च, सीखने में अधिक सामर्थ्यवान तथा अधिक प्रत्यक्षपरक थे, पर वे उत्तेजित, व्याकुल तथा भग्नाशा से ग्रसित भी थे । अंग्रेजी माध्यम के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में (विशेषकर बालिकाओं में) संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का अधिक विकसित होना पाया गया । ये विद्यार्थी संकोची, डरपोक , असांवेगिक तथा जिद्दी पाए गए । हिन्दी माध्यम के राजकीय विद्यालय अपने विद्यार्थियों में दृढ़ संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के विकास में असफल रहे । ये विद्यार्थी अशान्त, भग्नाशी, दुश्चिन्ता से पीड़ित पाए गए एवं सामाजिक रीतिरिवाजों के प्रति लापरवाही भी पाए गए । बालिकाएँ अत्यधिक अशान्त पाई गईं । हिन्दी माध्यम के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में कुछ संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का विकास होना पाया गया । इन विद्यालयों की बालिकाओं का संज्ञानात्मक एवं तार्किक विकास, केन्द्र के अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यार्थियों के समान पाया गया ।

सीखने की गति एवं क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया एवं विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं एवं व्यक्तित्व के विकास में शिक्षण माध्यम के बजाय उच्च उत्प्रेरित वातावरण महत्वपूर्ण पाया गया । संधू (1980) ने अपने पीएच. डी. के शोध कार्य से निष्कर्ष निकाला कि कार्यक्षमता आयु के साथ-साथ बढ़ती है । विभिन्न आयु-स्तरों पर लड़कों की कार्यक्षमता लड़कियों से उच्च होती है । वैचारिक विकास का बुद्धि से व वैचारिक विकास का शैक्षिक सम्प्राप्ति से सार्थक सम्बन्ध है । तार्किक योग्यता एवं अमूर्त चिन्तन किशोरावस्था के प्रमुख तत्व पाए गए। किशोरावस्था सम्प्रत्यय का अन्तःमाप पियाजे के कार्यों की उपलब्धि पर निर्भर पाया गया । बाहरी (1980) ने अपनी शोध से निष्कर्ष निकाला कि अनुसूचित जाति तथा अन्य जाति के छात्रों में व्यक्तित्व के अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, बुद्धि, आज्ञापालन, शान्त, नियन्त्रण, व्याकुलता, परावलम्बी तथा स्वावलम्बी गुणों में सार्थक अन्तर पाया गया जबकि भावुकता, स्थिरता, उत्तेजित होना, संयम, मनमौजीपन, विवेक, संकोच, साहस, कठोर, विनम्र, शिथिलता, उद्विग्नता, आत्म-प्रत्यय तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । रायजादा (1981) ने पाया कि छात्राएँ छात्रों की अपेक्षा अनुपात तथा समानुपात का क्षेत्र छोड़कर पियाजे के कार्यों में अच्छी हैं । छात्र-छात्राओं की बुद्धि का पियाजे के कार्यों से सहसम्बन्ध है परन्तु उनके व्यक्तित्व के गुणों का पियाजे के समस्या-समाधान की योग्यता से कोई सम्बन्ध स्पष्ट नहीं है । फगेरिया (1981) ने अपने शोध के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि लोकप्रिय, उपेक्षित तथा तिरस्कृत छात्रों में बुद्धि तथा कठोर इच्छा से भेद किया जा सकता है । लोकप्रिय तथा उपेक्षित छात्र अन्यों से अधिक बुद्धिमान तथा कठोर इच्छा वाले होते हैं । एकाकी, उपेक्षित तथा तिरस्कृत छात्रों की अपेक्षा लोकप्रिय छात्र नेतृत्व के गुणों में उच्च होते हैं। व्यास (1981) ने माध्यमिक छात्रों के अध्ययन में पाया कि विज्ञान संकाय के छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति अन्य संकायों के छात्रों की तुलना में अधिक होती है परन्तु इस अभिवृत्ति में छात्र-छात्राओं में कोई अन्तर नहीं होता। गुप्ता (1981) ने प्राथमिक विद्यार्थियों पर शोध से निष्कर्ष निकाला कि सभी वर्ग के बच्चों में तर्क योग्यता, आवश्यकता तथा पर-दोषारोपण की भावना समान पाई । चिकित्सक तथा अध्यापक वर्ग के बच्चों में तर्क, बाधा, प्रभुत्व, अहम् प्रतिरक्षा समान तथा स्वदोषारोपण की प्रवृत्ति सर्वाधिक पाई गई । अध्यापक तथा लिपिक वर्ग के बच्चों की स्मृति समान, इंजीनियर, चिकित्सक तथा अध्यापक वर्ग के बच्चों की अधिगम गति समान, तथा व्यवसायी व लिपिक वर्ग के बच्चों में स्वदोषारोपण की प्रवृत्ति सबसे कम पाई गई। सिंह (1982) ने पाया कि कृषि में उच्च सम्प्राप्ति वाले छात्र कृषक परिवारों से आये थे, वे उच्च आय वाले शिक्षित परिवारों से थे तथा वे कृषि के साथ नौकरी भी करते थे, वे कृषि संकाय में पास होना सरल मानते थे । ये छात्र बुद्धिमान, बाहरी सहायता नहीं चाहने वाले, परिवार को कृषि कार्यों में मदद करने वाले पाए गए । अध्ययन के लिए कृषि संकाय इन्होंने अपने माता-पिता की राय से चुना था । चौधरी (1982) ने पठन अभिरुचियों पर शोध में पाया कि बालक तथा बालिकाओं की अतिरिक्त पठन अभिरुचियों में कोई अन्तर नहीं हैं । बालक पुस्तकालय से बाहर तुलनात्मक रूप से अधिक पढ़ते हैं । छात्र-छात्राओं की तुलना में भूगर्भ-विज्ञान की पत्रिकाएँ तथा दैनिक समाचार-पत्र अधिक पढ़ते हैं। छात्राएँ विद्यालय पत्रिकाओं में अधिक लिखती है । कुमार (1982)

ने अपनी शोध में पाया कि छात्रावास में वैयक्तिक ध्यान नहीं दिया जाता । शहर के मध्य या सड़क के किनारे छात्रावास के स्थित होने से वाहन या अन्य प्रकार का शोर, फर्नीचर का अभाव, अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण न होना, कमजोर छात्रों की कक्षाध्यापन के समय अवहेलना, विद्यालय की वार्षिक पत्रिका में लेख न छपना, आदि प्रमुख समस्याएँ हैं । सिंहल (1982) ने अपनी शोध के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए कि किशोर विद्यार्थियों का सांस्कृतिक अवबोध विभिन्न आयुवर्ग से प्रभावित होता है तथा संस्कृति के विभिन्न उपक्षेत्रों में समान अवबोध नहीं पाया जाता । कला विद्यार्थियों का सांस्कृतिक अवबोध, विज्ञान के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया । राठी (1982) ने पाया कि प्राकृतिक वातावरण बोध आयु की अपेक्षा विषय से अधिक प्रभावित होता है । कला छात्राओं की अपेक्षा विज्ञान की छात्राएँ प्राकृतिक वातावरण बोध में उच्च होती हैं । विभिन्न शैक्षिक स्तर की समान विषय-वर्ग की छात्राओं के प्राकृतिक वातावरण के बोध में कोई अन्तर नहीं होता तथा असमान विषय-वर्ग, विभिन्न आयु-वर्ग व प्राकृतिक वातावरण बोध उच्च वर्ग में अधिक तथा निम्न आयु-वर्ग में कम होता है । शर्मा (1982) के अनुसार वाणिज्य वर्ग के छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में शाब्दिक, तार्किक व बौद्धिक योग्यता अधिक होती है। दार्शनिक, भाषाविद् , शिक्षाशास्त्री, उपन्यासकार, पुस्तकसमीक्षक, लेखनकार्य व साहित्यिक क्षेत्रों से सम्बन्धित धन्धों, समाज शास्त्री, कहानी लेखक, कवि, कथा समालोचक समाचारपत्र सम्पादक, संवाददाता, पत्रकार आदि धन्धों में छात्र-छात्राओं की अपेक्षा अधिक रुचि रखते हैं । सन्तोष (1982) ने पाया कि अपराधी किशोर-किशोरियों में समान, अन्वेषणात्मक योग्यता होती है । अपराधी किशोर-किशोरियों के चिन्तन का विकास अन्य किशोर-किशोरियों के समान ही होता है । धमीजा (1983) ने प्राथमिक शिक्षा को सार्वजनिक बनाने के प्रयासों में पाया कि गैर सेवारत महिलाओं के विचारों में कोई भिन्नता नहीं होती व सेवारत महिलाएँ अपने विचारों में लगभग एक सी होती हैं । माथुर (1983) ने पाया कि प्रत्येक कार्य में चिन्तन, प्रक्रिया स्तर आयु के साथ बढ़ते है । बुद्धि तथा चिन्तन में बालक-बालिकाओं में कोई अन्तर नहीं होता । वर्मा (1983) ने पाया कि कामकाजी महिलाओं के बच्चों का आकांक्षा स्तर गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों से न्यून होता है, परन्तु दोनों ही प्रकार की महिलाओं के बच्चों के सोचने-विचारने के ढंग में कोई अन्तर नहीं होता । दोनों प्रकार के बच्चे अपनी सफलता का कारण माताओं को बताते हैं । दोनों प्रकार की माताएँ अपने बच्चों को पढ़ाई तथा खेल के लिए प्रोत्साहन देती हैं । शिष्टाचार सिखाती हैं । उनके मित्रों तथा सहेलियों से मिलकर प्रसन्न होती हैं । कामकाजी महिलाओं के बच्चे तुलनात्मक रूप से सुसमायोजित होते हैं जबकि गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चे समायोजन में कठिनाई अनुभव करते हैं । कामकाजी महिलाओं के बच्चे विद्यालय, कार्यक्रम, पाठ्यक्रम तथा शिक्षण में कम रुचि लेते हैं । ऐसे ही एक अन्य अध्ययन में सुश्री मधु (1987) ने ज्ञात किया कि कार्यशील महिलाओं के

मंजू (1984) ने अपने पीएच. डी. के शोध कार्य में पाया कि किशोरों के मूर्त चिन्तन में ह्रास रहता है । 11 से 14 आयुवर्ग के अधिकांश किशोर तर्क का उपयोग नहीं कर पाते । किशोरावस्था में 50 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी समस्या को समझने में तर्क का उपयोग कर लेते हैं । आयु के साथ किशोरावस्था में कार्यों के निष्पादन में क्रमानुसार सुधार पाया जाता है। आयु के साथ वर्गीकरण, व्यकलन तथा समुच्चय के कार्यों में सुधार आता है जबकि सम्भावनाएँ, संवाद तथा अनुपात आदि में यह सुधार नहीं हो पाता । कार्य तथा योजनाओं के निष्पादन के सम्बन्ध में राजकीय तथा निजी विद्यालय के विद्यार्थियों में अन्तर पाया जाता है । छात्राएँ छात्रों की तुलना में वर्गीकरण तथा समुच्चय में उच्च पाई जाती हैं जबकि छात्राओं की तुलना में छात्र समस्या को समझने तथा अनुपात में श्रेष्ठ होते हैं व किशोरों की बुद्धि तथा भाषिक विकास में धनात्मक सह-सम्बन्ध होता है । साहू (1985) तथा जैन (1985) ने पाया कि तर्क तथा अभिव्यक्ति स्तर के साथ बढ़ती है पर यह वृद्धि छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में अधिक होती है । समस्या को समझना, अनुमान लगाना आदि क्रियाओं का दूसरी क्रियाओं से कोई सम्बन्ध नहीं होता । जैन ने यह भी पाया कि बालक व बालिकाओं की अभिव्यक्ति में भिन्नता है पर उनकी बुद्धिलब्धि में कोई अन्तर नहीं है । बालक-बालिकाओं की अपेक्षा अभिव्यक्ति में अच्छे हैं । सोलोमन (1986) ने पाया कि किशोरावस्था में आयु के साथ तर्क का विकास होता है तथा बुद्धि व शैक्षिक सम्प्राप्ति क्रमशः बढ़ती है । उन्होंने किशोरावस्था तथा सृजनात्मक में भी सह-सम्बन्ध पाया । अली (1984) ने अपने शोध से निष्कर्ष निकाला कि परिपक्वता तथा अन्य बालकों के व्यक्तित्व, आर्थिक तथा धार्मिक मूल्यों व सृजनात्मक में धनात्मक अन्तर है । दोनों प्रकार के बालकों के पिताओं की शिक्षा का इन घटकों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता । चौधरी (1984) ने बताया कि मोटे रूप में सांवेगिक परिपक्वता सभी वर्गों में समान हैं । छात्राओं की रुचियाँ सभी क्षेत्रों में छात्रों से अच्छी हैं । विद्यार्थियों की सर्वाधिक रुचि क्रमानुसार बाह्य क्षेत्र, कलात्मक, सामाजिक व साहित्यिक क्षेत्र में समान तथा संगीतात्मक क्षेत्र में सबसे कम है । गौतम (1984) ने पाया कि छात्रों की रोमांटिक एवं व्यापार साहित्य में अधिक रुचि है, लेकिन पशु-पक्षी, खेल, जासूसी, कला, विनोद, प्रशासन एवं व्यवसाय, धार्मिक एवं ऐतिहासिक साहित्य में सामान्य तथा साहसिक साहित्य व वैज्ञानिक, परिवहन, विनिमय, तकनीकी, ललितकला, कृषि तथा सुरक्षा में कम रुचि है ।

शर्मा (1985) ने अपने शोध में पाया कि अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के उच्च बुद्धि के विद्यार्थी नमनीयता के सिवाय सृजनात्मकता के अन्य क्षेत्रों में उच्च पाए गए । इसी वर्ग के कम बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थी अशाब्दिक सृजनात्मकता में उच्च पाए गए । इसी वर्ग के ग्रामीण छात्र सामाजिक रीति-रिवाजों के प्रति वैज्ञानिक अभिवृत्ति नहीं रखते पाये गये। मोती (1985) ने अपने शोध में पाया कि जनजाति के उच्च बुद्धिलब्धि के छात्र विज्ञान, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा तथा इंजीनियरिंग के विषय पढ़ने की आकांक्षा रखते हैं जबकि गैर जनजाति छात्र इन्हीं धन्धों के साथ-साथ वाणिज्य क्षेत्र में भी रुचि रखते है । इस बुद्धि वर्ग के जनजाति के छात्र बी. कॉम. तथा एम. एससी. तक पढ़ने की इच्छा रखते हैं । जबकि गैर जनजाति छात्र एम.ई., एम.बी.बी.एस. तथा एम.एससी. तक पढ़ना चाहते हैं । जनजाति के उच्च बुद्धिलब्धि के छात्र

पी. ई. टी. एवं पी. एम. टी. आदि प्रतियोगिताओं में बैठने की इच्छा रखते हैं, जबकि औसत तथा निम्न बुद्धिलब्धि वाले आर. पी. एस., आर. टी. एस. या बैंक परीक्षाओं में बैठना चाहते हैं । श्रीवास्तव (1985) ने सुरक्षित विद्यार्थियों की समस्याएँ सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, नैतिक व भविष्य की योजना से जुड़ी हुई ज्ञात कीं एवं सुरक्षित छात्राओं की तुलना में छात्रों की समस्याएँ स्वास्थ्य, व्यवसाय, विवाह तथा विद्यालय समायोजन की पाईं । असुरक्षित छात्राओं की तुलना में छात्रों की समस्याएँ अधिक पाई गईं । छात्राओं की अपेक्षा छात्रों को सुरक्षित छात्रों की अपेक्षा असुरक्षित छात्रों को अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है । त्यागी (1985) ने पाया कि परिपक्व छात्र कृषि, वाणिज्य, तकनीकी रुचियों में उच्च तथा परिपक्व व अपरिपक्व छात्राएँ गृहविज्ञान की रुचियों में उच्च थीं एवं अपरिपक्व छात्र तकनीकी रुचियों में उच्च थे । सांवेगिक परिपक्व तथा अपरिक्व छात्रों की शैक्षिक रुचियां समान थीं तथा छात्राओं की शैक्षिक रूचियों में अन्तर नहीं पाया गया । परिपक्व छात्र तुलनात्मक रूप से वैज्ञानिक, प्रशासकीय तथा कृषि के क्षेत्रों में छात्राओं से श्रेष्ठ पाए गए, जबकि परिपक्व छात्रों की अपेक्षा परिपक्व छात्राएँ गृह विज्ञान में, अपरिपक्व छात्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ पाई गई । दीक्षित (1985) के अनुसार गुरुकुल के छात्रों में निर्णय क्षमता, व्यवस्था, लक्ष्यनिर्धारण, अवलम्बन, अनुवर्तन मान्यता, नेतृत्व, समर्पण, विनय, प्रतिरक्षण, प्रभुत्व तथा गुरुकुल के बाहर के छात्रों में विविधता, स्वाधीनता, व्यावहारिकता तथा काम का अधिक विकास हुआ है । गुरुकुल के छात्र विद्यालय, सामाजिक, संवेगात्मक समायोजन में तुलनात्मक रूप से अन्य छात्रों से उच्च पाए गए । शर्मा (1985) के अनुसार ग्रामीण अनुसुचित जाति एवं अनुसुचित जनजाति के उच्च बुद्धिलब्धि के छात्र इसी प्रकार के शहरी विद्यार्थियों से सृजनात्मक चिन्तन में श्रेष्ठ पाए गए । ग्रामीण अनुसूचित जाति एवं अनुसुचित जनजाति के निम्न बुद्धिलब्धि के छात्र इसी प्रकार के शहरी छात्रों की अपेक्षा संवेगात्मक स्थिरता, उत्साह, साहस, तनावमुक्त, नियन्त्रित तथा हठधर्मिता में उच्च पाए गए तथा इन्हीं विद्यार्थियों की शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा वैज्ञानिक अभिवृत्ति कम पाई गई ।

कालरा (1986) के अनुसार स्वस्फूर्त आरेखन प्रकृति समझने में सहायक होता है तथा उन्होंने आरेखन की आयु, लिंग, बुद्धि के बीच सह-सम्बन्ध पाया है । सुश्री विनीता (1988) ने पाया कि न्यून तार्किक व न्यून आकांक्षा वाले विद्यार्थी पशु व निर्जीव वस्तु के आरेखन अधिक बनाते हैं जबकि उच्च तार्किक व उच्च आकांक्षा वाले विद्यार्थी मानव, सामाजिक व प्राकृतिक दृश्य के चित्र अधिक बनाते हैं । वर्मा (1986) के अनुसार उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालक असुरक्षित, भयातुर, स्वयं निश्चय न करने वाले, आज्ञापालक, निष्क्रिय, सहायक, खेलों में आनन्द लेने वाले, सन्देही, संघर्षपूर्ण, उदासीन, प्रभुत्वपूर्ण, परोपकारी, प्रदर्शन के इच्छुक पाए गए जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालक आत्मरक्षक, आत्मनिर्भर, स्वतन्त्र, सक्रिय चिन्तामुक्त, आक्रामक, आत्मविश्वासी, प्रतिद्वन्द्वी, संग्रही, मान्यता के इच्छुक, मित्र, प्रसन्न, सहयोगी, हीनता से ग्रसित, क्लेशी, ईर्ष्यालु, कठोर परिश्रमी, व्यावहारिक तथा आशावादी पाए गए । जैन

करने में सर्वाधिक अप्रभावी रहता है । वर्मा (1986) ने अपने शोध में पाया कि दसवीं कक्षा के विद्यार्थी सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों की अपेक्षा बुद्धि, संवेग तथा सामाजिक दृष्टि से अधिक परिपक्व थे । यही स्थिति स्वग्राहिता तथा मिलनसारिता के लिए भी पाई गई । दोनों कक्षा के विद्यार्थी अवचेतना, परोपकार, स्वायत्तता, स्पष्टता आदि गुणों पर तथा व्यक्तित्व के घटक कर्मठता, आत्मसुरक्षा एवं तटस्थता पर समान पाये गये, विकास के विभिन्न चरणों में महत्वाकांक्षा निरन्तर बढ़ी हुई प्राप्त हुई ।

टॉक (1987) के अनुसार केन्द्रीय कारागृह स्कूल के किशोरों एवं विद्यालय के किशोरों के मूल्यों में अन्तर था । श्रीमती रजनी (1987) ने माध्यमिक विद्यालयों में मनोनीत, निर्वाचित एवं समाजमितीय छात्र नेताओं के व्यक्तित्व अधिक प्रसन्नचित व अवसरवादी होते हैं । निर्वाचित नेता अपनी बात पर अड़े रहने वाले, समूहाश्रित व तनावग्रस्त होते हैं । समाजमितीय नेता सक्रिय, शान्तिप्रिय, चिन्तनशील व तनाव रहित व्यक्तित्व के होते हैं । विद्यार्थियों के मूल्यों का लिंगभेद, विद्यालयी वातावरण तथा अभिभावकीय मूल्यों के सन्दर्भ में सुश्री सतविन्दर कौर के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि सहशैक्षिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के धार्मिक, सामाजिक, प्रजातान्त्रिक, सौन्दर्यात्मक, ज्ञानात्मक, सत्ता व पारिवारिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, जबकि समलिंगीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में केवल आर्थिक मूल्यों में अन्तर पाया गया । उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि सहशैक्षिक तथा समलिंगीय स्कूलों में अध्ययनरत छात्रों के लिए विद्यालयी वातावरण उनके केवल पारिवारिक प्रतिष्ठा संबंधी मूल्य को प्रभावित करता है, जबकि छात्राओं के लिए चार मूल्य क्षेत्र सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञानात्मक व सत्ता को प्रभावित करता है । अभिभावकीय मूल्यों के सन्दर्भ में माता-पिता तथा पुत्र का केवल प्रजातान्त्रिक, माता तथा पुत्री के सौन्दर्यात्मक व ज्ञानात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया, जबकि पिता तथा पुत्र के किसी भी मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । ऐसे ही एक अध्ययन में श्रीमती सरस्वती (1988) ने ज्ञात किया "ज्ञानात्मक" मूल्य को सभी समूहों के सभी बौद्धिक स्तरों के किशोर-किशोरियों ने उच्च महत्व का माना जबकि आन्तरिक सामंजस्य, प्रेम, सुख आदि मूल्यों को कम महत्व का माना । सुश्री कनक (1988) ने ज्ञात किया कि महाविद्यालय की छात्राओं में धार्मिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक मूल्यों की तुलना में सामाजिक, सैद्धान्तिक एवं राजनैतिक मूल्यों का अधिक विकास हुआ । श्रीमती सुशीला (1988) के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर संगीत की छात्राओं में गैर संगीत की छात्राओं की अपेक्षा सौन्दर्यबोध अधिक था । दोनों ही समूहों की छात्राओं ने प्रजातान्त्रिक मूल्य को प्रथम वरीयता प्रदान की ।

व्यक्तित्व के विभेदक

विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में किशोरों की भग्नाशा-प्रतिक्रियाओं के अध्ययन में मूल्या (1975) ने ज्ञात किया कि ये भग्नाशा-प्रतिक्रियाएँ भिन्न-भिन्न थीं । अनुभव प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों व पिछड़े वर्ग के विद्यालयों को छोड़कर शेष सभी विद्यालयों में समायोजन की स्थिति सामान्य पाई गई । अध्यापकों एवं मित्रों द्वारा पृथक-पृथक रूप से उत्पन्न की जाने वाली भग्नाशा स्थितियों

के प्रति भिन्न-भिन्न विद्यालयों के किशोरों की प्रतिक्रियाएँ, अग्रघर्षण के प्रकार एवं दिशाओं की दृष्टि से भिन्न-भिन्न पाई गई । सारांश रूप में विद्यालय का प्रकार किशोरों की भग्नाशा परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रियाओं को प्रभावित करता है । विभेदकों के अध्ययन के क्षेत्र में खत्री (1983) के शोध से अनुसूचित जाति के किशोर छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व के अध्ययन के महत्वपूर्ण विभेदक प्रकाश में आए, यथा–समायोजन में कठिनाई, किसी सहगामी प्रवृत्ति में भाग नहीं लेना एवं हीन भावना । उन्होंने यह भी पाया कि समायोजित विद्यार्थी अपेक्षाकृत लोकप्रिय थे । लोकप्रिय एकाकी व तिरस्कृत छात्रों के व्यक्तित्व समायोजन के अध्ययन में सत्यप्रकाश (1984) ने ज्ञात किया कि लोकप्रिय छात्रों की अध्ययन आदतें, शैक्षिक सम्प्राप्ति व संवेगात्मक समायोजन अन्य वर्ग के बालकों से उच्च था । मूक, बधिर एवं सामान्य बालकों के व्यक्तित्व-संरचना के तुलनात्मक अध्ययन में लीलावती (1985) ने निष्कर्ष निकाला कि अप्रत्यक्ष रूप से विकलांग दिखने वाले बालकों व सामान्य बालकों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं था पर व्यक्तित्व संरचना में दोनों समूहों में आंशिक अन्तर पाया गया । अंजना (1980) ने अपने शोध से निष्कर्ष निकाला कि सुविधा प्राप्त बच्चों में सामान्य परिपक्वता, पराअहम की मात्रा सुविधाहीन बच्चों की तुलना में अधिक थी ।

बुद्धिलब्धि का व्यक्तित्व के अन्य घटकों से संबंध में उल्लेखनीय शोध कार्य सम्पन्न हुआ है । विद्यालय जाने वाले बालकों की बुद्धिलब्धि एवं वाचन योग्यता के क्षेत्र में गुप्ता (1975) ने मालूम किया कि श्रेष्ठ बुद्धिलब्धि वाले छात्रों की वाचन योग्यता श्रेष्ठ थी । त्रिपाठी (1976) ने अपने पीएच. डी. के शोध से निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक स्वीकृति व शैक्षिक सम्प्राप्ति में धनात्मक सार्थक सहसंबंध है । भगवती (1982) ने मेधावी व सामान्य छात्रों की अपेक्षाएँ व व्यावसायिक रुचियों के अध्ययन में पाया कि दोनों वर्गों के छात्रों की अपेक्षाएँ व व्यावसायिक रुचियों में अन्तर था । तिवारी (1982) ने अपने शोध से निष्कर्ष निकाला कि प्रतिभाशाली छात्रों की अभिरुचि व्यापार व वैज्ञानिक कार्यों में अधिक है । एक अन्य अध्ययन में विग (1983) ने ज्ञात किया कि कुशाग्र एवं सामान्य बुद्धि वाली बालिकाएं व्यक्तित्व के प्रतिमान, बुद्धि तथा सक्रियता में समान संरूप वाली व संवेग तथा कल्पना प्रतिमानों में भिन्न स्वरूप वाली पाई गईं। इसी प्रकार कुशाग्र बुद्धिवाली बालिकाएं संयोगिक कल्पना वाली व मंदबुद्धि बालिकाएं सृजनात्मक कल्पना वाली पाई गई । उषा रानी (1988) ने ज्ञात किया कि समाज स्वीकृत एवं समाज बहिष्कृत, समाज स्वीकृत तथा समाज उपेक्षित, समाज बहिष्कृत तथा समाज अपेक्षित पूर्व किशोरी छात्राओं की भग्नाशा प्रतिक्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । अपने अध्ययन में कामिनी (1988) ने मालूम किया कि ग्रामीण बालकों की अपेक्षा शहरी बालक, छात्रों की अपेक्षा छात्राएं स्वच्छता का अधिक ध्यान रखते हैं ।

व्यक्तित्व निर्धारण

व्यक्तित्व निर्धारण सम्बन्धी अनुसंधान कार्य अपने क्षेत्र में एक नवीन प्रयोग है तथा अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है । जोशी (1978) ने अनुसंधान से निष्कर्ष निकाला कि बालकों का मौलिक चित्रांकन उनके व्यक्तित्व का अभिदर्शक है । व्यास (1980)ने ज्ञात किया कि शिशुओं की कल्पनाएं मात्र दिवास्वप्न ही नहीं हैं वरन् वे उनके व्यक्तित्व की भविष्यवाणी भी करती हैं। ठीक इसी प्रकार के निष्कर्ष कौर (1982) ने भी निकाला । मधु (1980) ने ज्ञात किया कि परिकल्पना निर्माण और विज्ञान-सम्प्राप्ति दोनों आयु व स्तरानुसार बढ़ती हैं । पद्मिनी (1982) ने अपने पीएच. डी. के शोध से ज्ञात किया कि सफल समस्या समाधान वाले विद्यार्थी अच्छी परिकल्पनाओं का निर्माण करने वाले, अच्छे जांचकर्ता, स्वानुशासित व तनावमुक्त होते हैं । इस वर्ग के छात्रों में मस्तिष्क की यान्त्रिक प्रक्रिया अधिक प्रदर्शित करने का गुण भी विद्यमान होता है । जबकि छात्राओं में मूर्त चिन्तन, समूह निर्भरता व आज्ञाकारिता अधिक होती है । वन्दना (1983) ने अपने अनुसन्धान से निष्कर्ष निकाला कि बालिकाओं के स्वस्फूर्त चित्रों के माध्यम से व्यक्तित्व की भविष्यवाणी की जा सकती है । अधिक आन्तरिक सांवेगिक दबाव रखने वाली बालिकाओं के स्वस्फूर्त रेखांकन टूटी-फूटी रेखाओं से युक्त, नूतनता रहित व गलत कोण बनाने वाले होते हैं, जबकि कम आन्तरिक सांवेगिक दबाव रखने वाली बालिकाओं के स्वस्फूर्त रेखांकन अधिकांशतः सजीव वस्तुओं के व अपेक्षाकृत सही अनुपात के होते हैं ।

कुलश्रेष्ठ (1987) ने छात्रावासी छात्राओं पर अध्ययन कर पाया कि समग्रतः छात्राएं सामाजिक स्थितियों का चित्रण अधिक करती हैं । आक्रामक छात्राएं पोरट्रेट, सहसम्बन्ध गुण वाली छात्राएं मैत्री भाव दर्शाने वाले चित्र, प्रभुत्व गुण वाली छात्राएं मानक आकृतियां, पोषण गुण वाली छात्राएं प्राकृतिक वस्तुओं के चित्र, काम गुण प्रधान वाली छात्राएं पुरुष वर्ग के चित्र, स्थायित्व गुणवाली छात्राएं न्याय चित्र, पराश्रित छात्राएं प्राकृतिक दृष्यों तथा पक्षियों के अधिक चित्रण करती हैं । प्रदर्शन गुण प्रधान वाली छात्राओं के चित्रण में विविधता अधिक पाई गई । शर्मा (1987) ने निष्कर्ष निकाला कि आयु, चिन्ता, सामाजिक-आर्थिक स्तर, शहरी-ग्रामीण आर्थिक स्तर का किशोरों के मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है । किसी भी बालक के मूल्य हमेशा स्थिर नहीं रहते । परिस्थितियाँ बदलने पर मूल्यों में भी परिवर्तन होता हैं । 16+ आयु के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के शहरी छात्र आज्ञापालन, विनय तथा स्वार्थपरकता में उच्च पाए गए। ग्रामीण छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा दया, राष्ट्रीयता अधिक पाई गई, छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में सत्यता अधिक पाई गई जबकि छात्राओं में न्याय तथा भीरूता अधिक पाई गई । ग्रामीण छात्राओं में राष्ट्रीयता, ईमानदारी, अहसास, आत्मविश्वास तथा शहरी छात्राओं में राष्ट्रीयता, ईमानदारी, परोपकार तथा कर्तव्य-परायणता अधिक पाई गई । ग्रामीण छात्र 12+ आयु वाले तुलनात्मक रूप से अधिक ईमानदार तथा विनयशील पाए गए । निम्न आर्थिक स्तर की 16+ वाली शहरी छात्राएं अपेक्षाकृत अधिक आज्ञापालक और न्याय के प्रति सजग पाई गईं ।

दुश्चिन्ता एवं आक्रमकता

शर्मा (1975) ने अपने शोध में पाया कि ग्रामीण विद्यार्थी शहरी विद्यार्थियों के छात्र-छात्राओं से एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थी कला वर्ग के विद्यार्थियों से अधिक चिन्ताग्रस्त होते हैं । इसी

प्रकार के अन्य अध्ययन में शर्मा (1980) ने ज्ञात किया कि दुश्चिन्ता से घटता क्रम क्रमशः विज्ञान, वाणिज्य व कला वर्ग के छात्र-छात्राओं में पाया गया है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में दुश्चिन्ता के अध्ययन में बालिया (1986) ने निष्कर्ष प्राप्त किए कि निजी विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के छात्रों की दुश्चिन्ताएं सबसे अधिक हैं तथा इन विद्यालयों के विद्यार्थियों की दुश्चिन्ताएं राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों से अधिक व राजकीय विद्यालयों में छात्राओं की दुश्चिन्ता छात्रों से अधिक है। रश्मि (1981) ने अपने शोध से यह निष्कर्ष निकाला कि भाग्य की बात सोचकर चिन्तित, वादा पूरा न कर पाने के भय से आशंकित, यात्रा के आरम्भ पर चिन्ता, अनुचित सामाजिक व्यवहार को न भूल पाना आदि दुश्चिन्ताएं विज्ञान वर्ग के छात्रों में अधिक पाई गईं। अन्तःमुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों में दुश्चिन्ताओं के एक अन्य अध्ययन में सिंह (1976) ने ज्ञात किया कि दोनों प्रकार के विद्यार्थियों की दुश्चिन्ता में कोई अन्तर नहीं है। परन्तु बालिकाएं बालकों की तुलना में अधिक उदासी या दबाव (डिप्रेसिव) तथा दुश्चिन्ता से ग्रसित पाई गईं। गुप्ता (1982) ने गरीबी की रेखा से नीचे वाले परिवारों के अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं सवर्ण हिन्दू विद्यार्थियों की दुश्चिन्ताओं के बारे में अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला कि इन वर्गों के विद्यार्थियों में असफलता के भय से कार्य आरम्भ करने में हिचक, घर के बाहर जाने पर संदूक के ताले खुले रहने का सन्देह, दूसरों के सामने अपनी त्रुटि बताने पर विचलित होना, अनुचित कार्यों को न भूला पाना आदि दुश्चिन्ताएं प्रमुखता से हैं। गुप्ता (1976) ने ज्ञात किया कि उच्च व निम्न मौलिक विचारों वाली छात्राओं की चिन्ताओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। लेकिन निम्न मौलिक विचारों वाली छात्राओं में उच्च मौलिक चिन्तन वाली छात्राओं से भय की भावना ज्यादा है। कुण्ठा के क्षेत्र में रोजे ज्वाइंग तकनीक पर आधारित अध्ययन में श्रीवास्तव (1980) ने पाया कि कुण्ठा अग्रघर्षण के प्रकारों में बाधा प्रधानता का तत्व औसत बालकों में समान, परन्तु छात्राओं में छात्रों से अधिक पाया गया। अहम् प्रतिरक्षण एवं आवश्यकता गुण-सामान्य बालक-बालिकाओं में समान पाया गया। बाएं हाथ वाले छात्र-छात्राओं में बाधा प्रधानता व अहम् प्रतिरक्षण गुण औसत से भी अधिक तथा आवश्यकता प्रदर्शन औसत से कम था। इसी प्रकार विकलांग छात्र-छात्राओं के अध्ययन में समान निष्कर्षों के साथ ही कुण्ठा सम्बन्धी बाधा-प्रधानता गुण भी औसत पाया गया। एक अन्य अध्ययन में अग्रवाल (1980) ने ज्ञात किया कि सुविधाहीन लड़कों एवं लड़कियों में विषाद तथा कुण्ठाएं सुविधा प्राप्त विद्यार्थियों से अधिक पाई गईं। शाहजहां (1983) के अनुसार छात्राओं में कुण्ठा की स्थिति छात्रों से अधिक पाई गईं। शालिनी (1983) के अपने शोध से निष्कर्ष निकाला कि विषम लिंगीय तथा सम लिंगीय विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में भय ग्रन्थि तथा सहोदर प्रतिद्वन्द्विता समान रूप से पाई गई, प्रतिरक्षा प्रतिक्रियाओं के सम्बन्ध में दमन और आक्रामकता दोनों ही वर्गों में समान रूप से स्पष्ट हुई तथा पराअहम् प्रदर्शन दोनों प्रकार के विद्यालयों में समान पाया गया। उन्होंने यह भी पाया कि विषम लिंगीय विद्यालय के छात्रों में सम लिंगीय विद्यालय के छात्रों की तुलना में बाधक, प्रभुत्व एवं पर-दोषारोपण प्रवृत्ति अधिक पाई गई।

आवश्यकताएं स्वायत्तता, प्रभुत्व एवं प्रतिरक्षण स्पष्ट हुईं । इस प्रकृति के बच्चों ने प्रतिक्रिया निर्माण को संघर्ष तथा भय के लिए प्रतिरक्षण के रूप में अधिक प्रयोग किया तथा मौलिक विचार प्रदर्शन सामान्य से ऊपर, बुद्धि का प्रदर्शन, परिपक्वता, अहम तथा पराअहम का प्रदर्शन ज्यादा किया । इन्होंने यह भी ज्ञात किया कि शर्मीले बच्चों की प्रमुख आवश्यकताएँ क्रमशः विनय, निर्भरता, आत्मसमर्पण, खेल एवं उपलब्धि पाई गई । इन बच्चों ने परिवेश से सहयोग किया तथा इनमें अहम एवं पराअहम की मात्रा कम पाई गई, पर दोनों ही प्रकार के बच्चों में भग्नाशा उत्पन्न होने पर पर-दोषारोपण की प्रवृत्ति काफी अधिक मात्रा में पाई गई । दशोरा (1979) ने नर्सरी स्कूल के 4 से 6 आयु वर्ग के उच्च, सामान्य व निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बच्चों के अध्ययन से ज्ञात किया कि भयग्रन्थि संघर्ष तीनों समूहों के बच्चों में पाया गया । लेकिन पहले में कम, दूसरे में उस से ज्यादा तथा तीसरे में सबसे ज्यादा था । पहले समूह के बच्चों ने प्रतिक्रिया निर्माण को प्रतिरक्षण के रूप में अधिक प्रयुक्त किया जबकि तीसरे समूह के बच्चों ने दमन को प्रतिरक्षण के रूप में काम में लिया । इसके सिवाय पहले सपूह के बच्चों में पर-दोषारोपण, अहम, विचार-प्रक्रियाएं प्रभुत्व एवं आवश्यकता अन्य समूह के बच्चों की तुलना में अधिक पाई गई । मिश्रा (1976) ने अपने पीएच. डी. के शोध में पाया कि कला, वाणिज्य एवं विज्ञान तीनों संकायों के न्यून शैक्षिक सम्प्राप्ति वाले छात्र-छात्राएं सामान्य चिन्ता तत्व से अधिक पीड़ित हैं ।

प्रत्यक्षन

राजस्थान में इस क्षेत्र में बहुत कम शोध कार्य हाथ में लिया गया है । इस क्षेत्र में शोध कार्य का श्रीगणेश 1958 में ही हो गया था । आगे चलकर मिश्रा (1981) ने पीएच. डी. स्तर पर बच्चों के गृह तथा विद्यालयी वातावरण के प्रत्यक्षन ज्ञान के उनकी वैज्ञानिक सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन किया तथा ज्ञात किया कि जिज्ञासा के क्षेत्र में बालक-बालिकाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । लेकिन समग्र वैज्ञानिक सृजनात्मकता में लड़कियां लड़कों से आगे पाई गईं । विद्यालयी वातावरण में उच्च वैज्ञानिक सृजनात्मकता व निम्न वैज्ञानिक सृजनात्मकता के दोनों (छात्र एवं छात्राएं) सृजनात्मक उद्दीपन, संज्ञानात्मक उत्साह, स्वीकृति एवं अस्वीकृति, समान रूप से अनुभव करते पाए गए । घर के वातावरण में उच्च व न्यून वैज्ञानिक सृजनात्मकता के दोनों (छात्र एवं छात्राएं) नियंत्रण, दण्ड, पुरस्कार एवं उपेक्षा समान रूप से अनुभव करते पाए गए । उच्च वैज्ञानिक सृजनात्मकता वाली लड़कियां अपने घर के वातावरण में अधिक पोषण अनुभव करती पाई गईं लेकिन इसी प्रकार के लड़के घर के वातावरण में सामाजिक एकान्तता कम अनुभव करते पाए गए । घर के वातावरण का क्रमोन्नत उद्दीपन व पोषण की क्रमोन्नति, वैज्ञानिक सृजनात्मकता के विकास में सहायक पाई गई, बालिकाओं में घर व विद्यालय में उपेक्षा की कमी, वैज्ञानिक सृजनात्मकता के विकास में सहायक पाई गई । लड़कों में सृजनात्मक उद्दीपन एवं नमनीयता तथा संज्ञानात्मक उत्साह तथा मौलिकता में सार्थक सह-सम्बन्ध पाया गया ।

कोठारी (1987) ने शहरी 160 विद्यार्थियों पर किए गए शोध में पाया कि उत्तम अनुभव वाले विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि श्रेष्ठ है । सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा निजी

विद्यालयों के खिलाड़ियों के उत्तम अनुभव अधिक हैं तथा उनके अनुभव प्रत्यक्षीकरण के साथ उत्तम बुद्धिलब्धि का सह-सम्बन्ध पाया गया । विष्ट (1987) ने अपने शोध से निष्कर्ष निकाला कि छात्र-छात्राओं की विद्यालयी पाठ्यक्रम मूल्याकंन, प्रशासन, भौतिक साधन तथा सहगामी प्रवृत्तियां घटकों के प्रति धारणाओं में कम अन्तर पाया गया । उच्च वर्ग के छात्र-छात्राओं में भौतिक साधन एवं सहगामी प्रवृत्तियों के प्रति धारणाओं में अन्तर पाया गया जबकि पाठ्यदल, मूल्याकंन तथा प्रशासन पर धारणाएं समान थीं । सामान्य वर्ग के छात्र-छात्राओं की पाठ्यक्रम, मूल्याकंन तथा प्रशासन घटकों की धारणा में अन्तर पाया गया जबकि भौतिक साधनों एवं सहगामी प्रवृत्तियों के घटक पर अन्तर सार्थकता लिए हुए नहीं है । निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की धारणाओं का अन्तर मूल्यांकन व भौतिक साधनों पर सार्थकता लिए हुए है ।

आत्म-प्रत्यय

व्यक्तित्व एवं आत्म-प्रत्यय के क्षेत्र में शोध-कार्य की मात्रा अधिक नहीं है । खुलवे (1979) ने अपने शोध-कार्य से निष्कर्ष निकाला कि आत्म-प्रत्यय एवं समायोजन, आत्म-प्रत्यय एवं विद्यालयी सम्प्राप्ति में परस्पर सार्थक सह-सम्बन्ध है । पारीक (1986) ने ज्ञात किया कि 50 प्रतिशत से अधिक छात्रों में दयालुता, सहयोग, ईमानदारी, विश्वसनीयता, स्वामिभक्ति, लोकप्रियता, विनम्रता एवं शिष्टता के गुण विद्यमान हैं लेकिन बहादुरी एवं विचारशीलता के गुणों के बारे में वे मौन रहे । आलस्य, ईर्ष्या व लज्जा गुणों को अपने में मानने वाले छात्र 10 प्रतिशत से भी कम पाए गए । आत्म-प्रत्यय का अन्य घटकों के साथ सम्बन्ध के बारे में आठवीं कक्षा के छात्रों पर किए गए शोध में शर्मा (1980) ने पाया कि आत्म-प्रत्यय एवं बुद्धि में सार्थक सम्बन्ध हैं । छात्रों ने व्यावसायिक वरीयता के क्रम में डाक्टर व इंजीनियर बनने को प्रथम, अपना स्वरोजगार व अध्यापक बनने को द्वितीय तथा अन्य राजकीय सेवा को अन्तिम वरीयता दी, कृषि व पशुपालन की वरीयता का क्रम नगण्य रहा । कुमार (1982) ने विकलांग किशोर छात्रों एवं सामान्य किशोर छात्रों के आत्म-प्रत्ययों, व्यक्तित्व समायोजन व दुश्चिन्ताओं में सार्थक अन्तर पाया । अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के आत्म-प्रत्ययों के अन्तर का अध्ययन शर्मा (1984) ने किया और निष्कर्ष निकाला कि अंग्रेजी और हिन्दी माध्यम वाले विद्यालयों में क्रमशः 66.6 तथा 62.5 प्रतिशत छात्र स्वयं अपने बारे में बहुत अच्छी संकल्पना रखते हैं ।

अनुशासित एवं अनुशासनहीन विद्यार्थियों की महत्वाकांक्षा के स्व-अपेक्षित स्तर के तुलनात्मक अध्ययन में कौल (1985) ने ज्ञात किया कि अनुशासित छात्रों की स्व-अपेक्षा जहां अत्युत्तम पाई गई, वहीं दूसरी ओर अनुशासनहीन छात्रों की स्व-अपेक्षा निम्न स्तर की पाई गई । उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि अनुशासित छात्र भौतिक ऐश्वर्य यथा– धन सम्पदा को अधिक प्राथमिकता देते हैं जबकि अनुशासनहीन छात्र कल्पनाशील वं अयथार्थवादी होते हैं । अनुसुचित जाति एवं

सहकारिता और आज्ञाकारिता गुणों में इन दोनों प्रकार के छात्रों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । इसी प्रकार श्रेष्ठ एवं पिछड़े विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय के तुलनात्मक अध्ययन में अनिता (1986) ने ज्ञात किया कि शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षणिक, नैतिक एवं बौद्धिक सभी क्षेत्रों में श्रेष्ठ समूह का आत्म-प्रत्यय पिछड़े समूह के विद्यार्थियों की अपेक्षा ऊंचा पाया गया । इसी प्रकार श्रीवास्तव (1986) ने अपने शोध में पाया कि संवेगात्मक रूप से असामान्य छात्राओं का आत्म-प्रत्यय निम्न स्तर का पाया गया ।

यादव (1987) ने उच्च माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों पर हुए शोध में पाया कि आय तथा अभिव्यक्ति, अधिगम शैली तथा आत्म-प्रत्यय, आत्म-प्रत्यय एवं अभिव्यक्ति में धनात्मक सह-सम्बन्ध है । अधिगम शैली तथा आत्म-प्रत्यय पर आय का कोई प्रभाव नहीं पाया गया । पर उच्च व निम्न आय वाले अपने बच्चों को उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति के लिए प्रेरित करते हैं। अधिगम (शैक्षिक) पर विद्यालय प्रभावी घटक स्पष्ट हुआ । निम्न आय वाले शिक्षित माता-पिता के बच्चों की शैक्षिक सम्प्राप्ति भी निम्न होती है । उच्च व निम्न अधिगम शैली का अभिव्यक्ति पर प्रभाव पड़ता है पर आत्म-प्रत्यय पर नहीं । माथुर (1988) ने निष्कर्ष निकाला कि कार्यशील तथा सेवारहित महिलाओं की लड़कियों के सर्वांगिक समायोजन तथा उनके बच्चों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर था । सामाजिक समायोजन में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

आवश्यकता एवं समायोजन

व्यक्तित्व समायोजन के क्षेत्र में चौधरी (1976) ने समाजमिति स्तर को आधार मान कर अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्रों के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष निकाला कि दोनों प्रकार के छात्रों में कोई अन्तर नहीं है । उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि स्वास्थ्य सामाजिक, संवेगात्मक व शहरी, ग्रामीण की दृष्टि से इन दोनों प्रकार के छात्रों में कोई अन्तर नहीं पाया गया । सिंह (1979) ने एवं शर्मा (1982) ने छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति और समायोजन के अध्ययन में पाया कि उच्च समायोजन पर उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति रही । उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति के छात्रों का समायोजन समाज व विद्यालय की ओर अधिक संवेगात्मक रहा परन्तु उनका स्वास्थ्य समायोजन न्यून रहा । व्यास (1980) ने पाया कि 12+ स्तर पर स्वयं घर तथा स्वास्थ्य आयोजन सामाजिक व संवेगात्मक समायोजन सामान्य स्तर के पाए गए । 14+ स्तर पर ये क्षमताएं बढ़ीं लेकिन 15+ पर विद्यालय प्रशासन से, स्वयं के घर से व स्वास्थ्य से समायोजन पुनः कम होता पाया गया । धोलिया (1978) ने शहरी विद्यालयों में पढ़ रहे ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जाति के छात्रों का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि सभी ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जाति के छात्र शहरी विद्यालयों में समायोजन सम्बन्धी कठिनाई अनुभव करते हैं, जिसके फलस्वरूप वे विद्यालय प्रशासन की ओर नकारात्मक दृष्टिकोण अपना लेते हैं और हीन भावना से ग्रसित हो जाते हैं । ग्रोवर (1979) ने गंगानगर के छात्रों पर अध्ययन करके पाया कि 90 प्रतिशत सेवा रहित माताओं के बच्चों पर समायोजन उत्तम पाया गया । उनका व्यक्तित्व समायोजन भी सन्तोषप्रद पाया गया । ऐसी माताओं की बच्चियों तथा बच्चों की बुद्धिलब्धि में अन्तर नहीं पाया गया । बच्चियां बच्चों की अपेक्षा अधिक रुचिशील पाई गईं।

इसी प्रकार के अन्य अध्ययन में नीलम (1983) ने भी यही निष्कर्ष प्राप्त किए । शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अनुसुचित जाति, अनुसुचित जनजाति के छात्राध्यापकों की समायोजन समस्याओं के अध्ययन में शर्मा (1982) ने पाया कि ये छात्र शैक्षिक, पारिवारिक, सामाजिक, स्वास्थ्य तथा पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं सम्बन्धी समस्या अनुभव नहीं करते परन्तु संवेगात्मक तथा आर्थिक क्षेत्र में समायोजन की समस्या अनुभव करते हैं ।

व्यक्तित्व समायोजन के क्षेत्र में गायत्री (1981) ने ज्ञात किया कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में शहरी क्षेत्र की अपेक्षा उच्च स्तर का संवेगात्मक समायोजन होता है । अरुणा (1982) ने ज्ञात किया कि ग्रामीण छात्राएं समायोजन सम्बन्धी कोई समस्या अनुभव नहीं करतीं । कुमार (1982) ने अपने शोध से निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के व्यक्तित्व समायोजन तथा मूल्यों में सार्थक सह-सम्बन्ध है । ग्रामीण छात्रों के आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक मूल्यों का उनके व्यक्तित्व के समायोजन से सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं है परन्तु शहरी छात्रों के सौन्दर्यात्मक तथा सामाजिक मूल्यों का उनके व्यक्तित्व से सह-सम्बन्ध है । लेकिन भूपेन्द्रसिंह (1986) ने अपनी शोध से पाया कि ग्रामीण छात्र-छात्राओं को धोलिया के समान ही, शहरी विद्यालयों में समायोजन सम्बन्धी कठिनाइयां अनुभव होती हैं । उन्होंने यह भी निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण क्षेत्र की ये छात्र-छात्राएं जो शहर में आकर अध्ययन करती हैं इनमें विज्ञान वर्ग की छात्र-छात्राएं कला वर्ग की अपेक्षा हर क्षेत्र में अपने को परिस्थितियों के अनुकूल बनाने की अधिक क्षमता रखती हैं । गायत्री (1981) ने ज्ञात किया कि ग्रामीण छात्र-छात्राओं की अपेक्षा शहरी छात्र-छात्राएं अधिक वैज्ञानिक अभिवृत्ति रखती हैं । भटनागर (1979) ने कार्यशील महिलाओं के बच्चों की समायोजन सम्बन्धी समस्याओं के अधययन में पाया कि इन बच्चों का व्यक्तित्व समायोजन सन्तोषजनक है तथा ये बच्चे पढ़ने में अधिक रुचि लेते हैं । इन बच्चों के स्वास्थ्य व भावी व्यवसाय सम्बन्धी समायोजन में भी कोई दोष नहीं पाया गया । शर्मा (1986) ने अपने शोध में पाया कि बुद्धि के विकास के साथ-साथ नैतिक मूल्यों का भी विकास होता है । बुद्धि से तात्पर्य सीखने की योग्यता, अवधान से सामान्यीकरण प्राप्त करना, तर्क करना तथा समस्या समाधान खोजना है । इन योग्यताओं की वृद्धि के साथ-साथ नैतिक मूल्यों में वृद्धि होती है ।

शकुन्तला (1980) ने अपने पीएच. डी. शोध कार्य में अंग्रेजी माध्यम वाले केन्द्रीय विद्यालयों के छात्रों के व्यक्तित्व के अध्ययन में पाया कि अंग्रेजी माध्यम वाले केन्द्रीय विद्यालयों के छात्र तर्क एवं अधिगम में उच्च स्तर के तथा अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले पाये गये तथा छात्राएँ सहयोगी, उत्साही व मृदभाषी पाई गईं । मान्यता प्राप्त विद्यालयों के छात्र केन्द्रीय विद्यालयों के छात्रों से अधिगम में निम्न पाये गये ।

ताज (1984) ने अनुसंधान से पाया कि हिन्दी माध्यम की छात्राओं को अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं की अपेक्षा संवेगात्मक क्षेत्र में अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है ।

विकलांग बालक-बालिकाओं के व्यक्तित्व संरूपों के क्षेत्र में अध्ययन एक नवीनता है । आवासीय चक्षुहीन बालकों के व्यक्तित्व अध्ययन में कुमारी (1981) ने पाया कि इस प्रकार के बालकों में 75 प्रतिशत प्रसन्नचित एवं मिलनसार स्वभाव के, 25 प्रतिशत छात्र संकोची प्रवृत्ति के पाए गए । इन छात्रों में से 65 प्रतिशत छात्र भविष्य में व्यावसायिक क्षेत्र में, 10 प्रतिशत वकालात तथा 5 प्रतिशत छात्र लेखक या कवि बनने की इच्छा रखने वाले पाए गए । कौशिक (1982) ने विकलांग किशोर बालक-बालिकाओं के व्यक्तित्व समायोजन के अध्ययन में पाया कि संवेगात्मक, एवं विद्यालयी समायोजन, प्रभुत्व, प्रतिशोध व झगड़े की भावना बालिकाओं की अपेक्षा बालकों में अधिक पाई गई । दीक्षित (1982) ने एवं त्यागी (1986) ने पाया कि बहरे बच्चों की अपेक्षा सामान्य बच्चों में संरक्षण की भावना कम पाई गई । राठोड़ (1983) ने अपने शोध से स्पष्ट किया कि विकलांग बालक-बालिकाएं प्रसन्नचित्त, निष्कपट, यथार्थवादी, उत्तरदायित्व का पालन करने की प्रवृत्ति वाले पाए गए तथा वे सामाजिक व संवेगात्मक दृष्टि से अधिक परिपक्व भी पाए गए । उषा (1983) ने ज्ञात किया कि जन्मांध बालक, जन्म के बाद में अंधे होने वाले बालकों से अधिक प्रतिभाशाली, उत्साही व नैतिक पाए गए जबकि जन्म से बाद के अन्धे होने वाले बालक अधिक आज्ञाकारी व परोपकारी पाए गए । श्रीमाली (1985) ने पाया कि मानसिक विकलांग बालकों की शैक्षिक सम्प्राप्ति अत्यधिक न्यून थी ।

वन्दना (1982) ने पाया कि औद्योगिक क्षेत्र के छात्र-छात्राओं में समर्पण, महत्वाकांक्षा, आत्म-प्रदर्शन, आधिपत्य, आक्रामकता, उद्यमशीलता, अन्तर्मुखता व पराश्रय की प्रवृत्ति अधिक पाई गई जबकि गैर औद्योगिक क्षेत्र के छात्र-छात्राओं में आत्म प्रतिरक्षण व अस्वीकारात्मकता की प्रवृत्ति अधिक थी । इसके अलावा इस क्षेत्र के बालक-बालिकाओं में गृह, विद्यालयी, सामाजिक व संवेगात्मक समायोजन उच्च स्तर का था । नरूला (1982) ने अपने पीएच. डी. के शोध से निष्कर्ष निकाला कि नर्सरी स्तर के विद्यार्थियों में कमरे के अन्दर के खेलों में यथा– लकड़ी के भवनखण्ड, बाल फ्रेम, रंगीन तश्तरी, संगीत तन्त्रों के प्रति अधिक रुचि पाई गई । जबकि मैदानी खेलों में इन्होंने मात्र रुचि प्रकट की । सामाजिक व्यवहार के क्षेत्र में छात्रों में तंग करने का व्यवहार तथा दुश्मनी सामने आई जबकि छात्राओं में सहयोग व सहानुभूति अधिक प्राप्त हुई ।

शर्मा (1983) ने ज्ञात किया कि मैदानी भाग की छात्र-छात्राएं पढ़ना, रुचि, एकाग्रता में मरुस्थलीय व पठारी भागों के छात्र-छात्राओं से श्रेष्ठ थीं । बाला (1983) ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों के समस्याग्रस्त बालकों के समायोजन के अध्ययन में पाया कि बालकों में असमायोजन का कारण संवेगात्मक दबाव व पारिवारिक स्थिति है । सत्य प्रकाश (1984) ने पाया कि लोकप्रिय छात्रों की अध्ययन आदतें, शैक्षिक सम्प्राप्ति, गृह, विद्यालयी व सामाजिक समायोजन तिरस्कृत एवं एकाकी छात्रों की अपेक्षा उच्च था । कुमार (1984) ने सुधारगृहों में

रहने वाले लड़के-लड़कियों के व्यक्तित्व संरूपों के अध्ययन से ज्ञात किया कि इन गृहों के लड़के-लड़कियों दोनों में सामान्य थकान, अजीर्ण, कब्ज व सिरदर्द समान रूप से पाया जाता है तथा भय व हीन भावना दोनों में समान रूप से पाई जाती है, परन्तु लड़कियों का समायोजन लड़कों की अपेक्षा अधिक अच्छा पाया गया।

अंजुला (1986) ने अपने पीएच. डी. के शोध से राजस्थान विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विदेशी छात्र-छात्राओं की समायोजन समस्याओं के अध्ययन से ज्ञात किया कि सामाजिक क्षेत्र में कृषि, अभियान्त्रिकी के छात्रों का सर्वोत्कृष्ट एवं कला के छात्रों का सबसे हीन समायोजन था। शैक्षिक क्षेत्र में आयुर्विज्ञान छात्रों का समायोजन सर्वोत्कृष्ट एवं विज्ञान के छात्रों का सबसे हीन रहा। आर्थिक एवं संवेगात्मक क्षेत्र में छात्राओं का समायोजन छात्रों की अपेक्षा अधिक सन्तोषप्रद पाया गया। सुरक्षित एवं असुरक्षित छात्रों के स्वभाव, समायोजन एवं सम्प्राप्ति के अध्ययन में नीलम (1986) ने ज्ञात किया कि सुरक्षित छात्रों का गृह, स्वास्थ्य, विद्यालयी, सामाजिक व संवेगात्मक समायोजन असुरक्षित छात्रों की अपेक्षा उच्च रहा। चन्द्रकान्ता (1986) ने पाया कि छात्राएं छात्रों की तुलना में अपने अध्यापक-अध्यापिकाओं से अधिक समायोजित थीं।

श्रीवास्तव (1987) ने पाया कि छात्राओं के समग्र समायोजन तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति में कोई सह-सम्बन्ध नहीं है, पर सामाजिक, राजनैतिक तथा सौन्दर्यात्मक मूल्यों का शैक्षिक सम्प्राप्ति से सार्थक सह-सम्बन्ध स्पष्ट हुआ जबकि धार्मिक व सैद्धान्तिक मूल्यों का सम्प्राप्ति से कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया। लोहार (1987) ने अपने अध्ययन में पाया कि सवर्ण छात्रों का बुद्धि स्तर जनजाति छात्रों से उच्च है तथा समायोजन दोनों वर्गों का लगभग समान है। उच्च बुद्धिलब्धि वालों का समायोजन भी उच्च पाया गया। सवर्ण छात्रों की बुद्धिलब्धि में तथा उनके समायोजन में नाममात्र का धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया। गुप्ता (1987) ने निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक, आर्थिक तथा बौद्धिक स्तर विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित करता है। विभिन्न आयुवर्ग वाली बालिकाएं बालकों की अपेक्षा गृह, समाज तथा विद्यालय समायोजन के क्षेत्र में उच्च पाई गई। गुलाटी (1988) अपने शोध से इस निष्कर्ष पर पहुँची कि छठी, आठवीं तथा दसवीं कक्षा की छात्राओं की शाब्दिक तथा अशाब्दिक योग्यता में अन्तर था। इन किशोरियों की तार्किक, बौद्धिक योग्यता एवं साहित्यिक रुचियों में अन्तर नहीं पाया गया। इनका संवेगिक समायोजन, सामाजिक बाह्य क्षेत्र एवं कलात्मक क्षेत्र की रुचियों में अन्तर पाया गया। भटनागर (1988) ने अपने शोध में पाया कि नैतिक दृष्टि से सजग छात्राएं सर्वाधिक कॉन्वेन्ट स्कूलों में तथा सबसे कम निजी स्कूलों में पाई गईं। राजकीय स्कूलों का स्थान इन दोनों के मध्य में था। नैतिक मूल्य के विकास के साथ-साथ समायोजन भी उच्च स्तर का बनता है। निजी विद्यालयों में समायोजन तथा नैतिक मूल्यों का सह-सम्बन्ध ऋणात्मक है जबकि कॉन्वेन्ट स्कूलों में धनात्मक है। राजकीय विद्यालयों में अधिकांश छात्राओं को उत्सवों में भाग

वरीयता दी है । संवेगात्मक उच्च व निम्न समायोजन के छात्रों ने क्रमशः प्रजातान्त्रिक तथा सैद्धान्तिक मूल्यों को वरीयता दी । कोली (1988) ने अपने शोध में पाया कि कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति उच्च रही है। पर कक्षा 9 से 11वीं के छात्रों के लिए यह बात नहीं कही जा सकती । यही स्थिति गृह, सामाजिक तथा स्वास्थ्य व विद्यालय समायोजन के लिए भी स्पष्ट हुई है ।

खिलाड़ियों का व्यक्तित्व

इस क्षेत्र में अध्ययनकर्त्ताओं की रुचि उनके मूल्यों, अभिव्यक्ति, सृजनात्मकता, शारीरिक योग्यता, व्यक्तित्व, समायोजन तथा संज्ञानात्मक विकास में ही रही है । गुप्ता (1975) ने व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन करते हुए पाया कि खिलाड़ियों तथा गैर खिलाड़ियों के धार्मिक, सामाजिक, प्रजातान्त्रिक, आर्थिक ज्ञान, आनन्ददायिक शक्ति, पारिवारिक प्रतिष्ठा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्यों में कोई अन्तर नहीं पाया गया । जबकि सौन्दर्यात्मक मूल्यों में अन्तर स्पष्ट हुआ है । खिलाड़ियों ने दौड़ तथा वॉलीबॉल खेल पंसद किया । शर्मा (1975) के अनुसार खिलाड़ी छात्र तुलनात्मक रूपों का स्वप्रकटन माता-पिता, भाई-मित्र, अध्यापक के साथ अधिक करते हैं, जबकि गैर खिलाड़ी छात्र तुलनात्मक रूप से अपनी बहिन के साथ स्वप्रकटन अधिक करते हैं । खिलाड़ी छात्रा का अभिव्यक्ति स्तर गैर खिलाड़ी छात्रों से अधिक पाया गया । बाह्य खेलों में रुचिसम्पन्न छात्र तुलनात्मक रूप से अधिक हैं । वैसा ही निष्कर्ष सिनसिनवार (1981) ने पाया है । शर्मा (1976) ने पाया कि खिलाड़ी छात्र-छात्रा गैर खिलाड़ी छात्र-छात्राओं से आत्म-विश्वास में श्रेष्ठ थे । उन्होने यह भी पाया कि छात्र खिलाड़ियों तथा छात्रा खिलाड़ियों के आत्म-विश्वास में कोई अन्तर नहीं था । सैनी (1976) के अनुसार कुश्ती तथा कबड्डी के सिवाय शेष सभी खेलों के खिलाड़ियों की शारीरिक योग्यता उच्च थी । उन्होंने शारीरिक योग्यता के मुख्य घटकों (गत्यात्मक नम्यता, विस्तार नम्यता, कूदना, पर्वतारोहण) के संदर्भ में विविध खेलों के खिलाड़ियों की शारीरिक योग्यता में अन्तर नहीं पाया । सिंह (1977) ने अपने शोध से निष्कर्ष निकाला कि विज्ञान, वाणिज्य के खिलाड़ियों में मानविकी एवं चित्र कला वर्ग के छात्रों की अपेक्षा उच्च सृजनात्मकता पाई गई । सृजनात्मकता एवं बुद्धिलब्धि में धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया । मल्होत्रा (1979) ने अपने शोध में निष्कर्ष निकाला कि खिलाड़ी लोकप्रिय विद्यार्थियों का गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक तथा विद्यालय समायोजन उच्च स्तर का था । अप्रत्यक्षतः लोकप्रियता के लिए सुसमायोजन जरूरी बताया । उच्च व निम्न समायोजन के विद्यार्थी, खिलाड़ी क्रमशः कम लोकप्रिय होंगे । सिंह (1979) ने अपने शोध में पाया कि व्यायाम प्रेमी व खिलाड़ी छात्र की मांसपेशियां योग्यता तुलनात्मक रूप से श्रेष्ठ पाई गईं। खेलने वाले तथा व्यायाम प्रेमी छात्रों का बदन छरहरा नहीं पाया गया । खिलाड़ी छात्रों की हृदय क्षमता गैर खिलाड़ी छात्रों से अच्छी पाई गई । अबदी (1984) ने भी छात्राओं पर की गई शोध में समान निष्कर्ष पाए । सिनसिनवार (1981) ने पाया कि खेल सुविधाहीन विद्यालयों के छात्रों में खिलाड़ी भावना कम होती है । छात्राओं में खिलाड़ी भावना के विकास में सहशिक्षा मदद करती है। खिलाड़ी भावना के प्रति खिलाड़ियों का दृष्टिकोण गैर खिलाड़ियों की अपेक्षा सकारात्मक पाया गया। नरूला (1982) ने नर्सरी विद्यार्थियों पर किए गए शोध में पाया

कि आन्तरिक तथा बाह्य क्रियाओं के सन्दर्भ में बालक-बालिकाओं की खेल प्राथमिकताओं में सार्थक अन्तर नहीं है । आन्तरिक स्थितियों के सन्दर्भ में बालक व बालिकाओं की खेल प्राथमिकताएं उनके समाजार्थिक स्तर से सम्बन्धित पाई गईं । परन्तु बाह्य स्थितियों में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया । दोनों स्थितियों में बालक-बालिकाओं की खेल प्राथमिकताएं बुद्धि के सिवाय अन्य संज्ञानात्मक कारकों द्वारा प्रतिपादित होती नहीं पाई गई । बालक व बालिकाओं की खेल प्राथमिकताएं भग्नाशाओं के प्रति प्रतिक्रियाओं से प्रभावित होती नहीं पाई गई, पर बड़ी आयु के विद्यार्थियों के साथ ऐसा होना प्रतीत नहीं हुआ । दृढ़ अहम सुरक्षा वाले विद्यार्थी बाल फ्रेम, सिलेण्डर्स व मनकों से खेलना ज्यादा पसन्द करते हैं। दृढ़ आवश्यकता आग्रह (स्ट्रांग नीड परसीसेन्स) वाले विद्यार्थी खिलौने तथा पानी के खेल खेलना ज्यादा पसन्द करते हैं । बालक बदले की भावना एवं चिढ़ाना तथा बालिकाएं सहयोग एवं सहानुभूति प्रतिमानों को प्रदर्शित करती हैं, पर सामाजिक व्यवहार के अन्य प्रतिमानों में बालक-बालिकाओं की खेल प्राथमिकताओं में, सांख्यिकी की दृष्टि से महत्वहीन अन्तर पाया गया । भवन खण्डों से खेलने वाले बालकों ने आक्रामक, झगड़ना तथा चिढ़ाना प्रवृत्तियां प्रदर्शित कीं। डबल लेडर से खेलने वाली बालिकाओं ने सहानुभूति, झूले से खेलने वाली बालिकाओं ने बदले की भावना तथा चिढ़ाना कम प्रदर्शित किया। शर्मा (1983) ने पाया कि खेलकूद एवं शारीरिक कार्यक्रमों से जुड़ी सुविधाओं से सम्पन्न विद्यालयों के बालकों में खिलाड़ी भावना अधिक पाई गई। वर्मा (1984) के अनुसार खिलाड़ी छात्राओं में समर्पण का भाव कम और न खेलने वाली छात्राओं में समर्पण का भाव अधिक पाया गया । खिलाड़ी छात्राओं में उच्च महत्वाकांक्षा, आत्म-प्रदर्शन, संगप्रियता, आधिपत्य, आत्म प्रतिरक्षण, उद्यमशीलता पाई गई जबकि गैर खिलाड़ी छात्राओं में पराश्रय की भावना अधिक मिली। उनमें अन्तर्मुखी गुण भी अधिक पाया गया ।

अभिप्रेरणा

अभिप्रेरण के क्षेत्र में बुद्धि, चिन्तन अपेक्षाएं, उन्नयन, शैक्षिक सम्प्राप्ति, आकांक्षाएं, अभिवृत्ति, आदर्श, आत्म-प्रत्यय, मनोबल आदि कारक शोधकर्त्ताओं के केन्द्र बिन्दु रहे हैं । वैद्य (1974) के अनुसार छोटी कक्षा के छात्र समस्या पढ़ने में कठिनाई अनुभव करते हैं । उन्होंने यह भी पाया कि स्तर वृद्धि के साथ समस्या का सामान्य निष्पादन बढ़ जाता है । बुद्धिलब्धि के काफी अन्तर पर भी समस्या को हल किया जा सकता है । प्रत्येक छात्र समस्या को अपनी दृष्टि से देखता है तथा हल करने का प्रयत्न करता है । समस्या के हल में छात्र कई प्रकार की त्रुटियां करते हैं । छठी से आठवीं कक्षा तक के दो-तिहाई छात्र समस्या में निहित विपरीत चिन्तन की दृष्टि से असफल रहे हैं । समस्या को हल करने में अधिकांश विद्यार्थी सरल विधि का प्रयोग करते पाए गए । शर्मा (1973) ने अपने शोध में पाया कि उत्तीर्ण तथा अनुत्तीर्ण छात्राओं व उनके अभिभावकों की विद्यालयी अपेक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परन्तु उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति [illegible]

में साहित्यिक कार्यक्रम खेलकूद, समाज सेवा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, एन. सी. सी. एवं गाइडिंग वरीयता के क्रमानुसार पाए गए । अवकाश के उपयोग हेतु विषयों का अध्ययन, घर के कामकाज में हाथ बंटाना, इच्छानुसार रोचक साहित्य पढ़ना, रचनात्मक कार्य करना तथा रेडियो पर गीत सुनना क्रमानुसार पाए गए । दीक्षित (1975) के अनुसार 21 से 35 आयु वर्ग के अधिकांश शहरी उत्तरदाता अपने उन्नयन हेतु व्यावसायिक प्रशिक्षण लेना चाहते हैं। अनपढ़ सदस्य रात्रि में पढ़ना चाहते हैं । शिक्षित सदस्य यदाकदा पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाएं पढ़ते पाए गए । चिकित्सा एवं विद्युत सुविधाओं से वंचित ग्रामीण प्रौढ़ रात्रि में पढ़ना चाहते हैं । वे व्यावसायिक शिक्षा चाहते हैं । वे खेती तथा खेतीहर मजदूरी करते हैं तथा अपने कार्य से असन्तुष्ट हैं । जनजाति क्षेत्रों में शिक्षा का अभाव पाया गया । वे मुख्यतः कृषि पर निर्भर हैं। सिंचाई के साधन नहीं हैं । एक-तिहाई प्रौढ़ रात्रिकालीन शिक्षा की व्यवस्था में रुचि रखते हैं । पढ़ाई के दौरान आर्थिक सहायता की आशा करते हैं । सरकारी नौकरी को प्राथमिकता देते हैं । अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के 100 छात्रों पर किए गए शोध में मेहता (1976) ने पाया कि विभिन्न विद्यालयी वातावरण में पढ़ने वाले सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित छात्रों की बुद्धि, शैक्षिक सम्प्राप्ति, अभिप्रेरण व आकांक्षा में अन्तर था जबकि मेहता (1978). ने पाया कि सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित वर्गों के सन्दर्भ में पर्यावरण का उनके मानसिक विकास से सकारात्मक सह-सम्बन्ध है । विद्यालय द्वारा दी गई भौतिक सुविधाएं शैक्षिक सम्प्राप्ति पर अभिप्रेरण के रूप में प्रभाव नहीं डालतीं । गुप्ता (1976) ने शोध द्वारा निष्कर्ष निकाला कि भारतीय पर्यावरण में बालकों का बौद्धिक विकास अपेक्षाकृत धीमी गति से होता है । पियाजे के अनुसार बालक समस्त मानसिक संरचना का विकास न होने से मूर्त क्रियात्मक चिन्तन की अवस्था में नहीं आ पाता है । कुमार (1977) के अनुसार उच्च वर्ग के छात्रों में तुलनात्मक रूप से सम्प्राप्ति अभिप्रेरण अधिक होता है । उच्च सम्प्राप्ति अभिप्रेरण वाले छात्रों की संख्या उच्च वर्ग में तथा सामान्य सम्प्राप्ति अभिप्रेरण वाले छात्रों की संख्या अनुसूचित जनजाति में अधिक पाई गई । अलख (1977) के अनुसार ग्रामीण एवं शहरी पिछड़े क्षेत्र के बालक एवं बालिका, राजकीय एवं निजी, विद्यालयों के छात्रों में तथा वर्ग भेद के अनुसार कार्य के प्रति कोई अभिप्रेरण नहीं पाया गया है । कार्य के प्रति अभिप्रेरण के कारक हैं– उत्तरदायित्व की भावना, मृदु व्यवहार, सम्प्राप्ति, आत्माभिव्यक्ति, अध्ययन की आदतें, चिन्ताएं, आत्म-विश्वास, छात्र का व्यक्तित्व एवं सामाजिक आर्थिक स्तर । गोलवलकर (1978) ने पाया कि सामान्यतया सभी विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति, सामान्य अनपढ़ व्यक्ति से भिन्न नहीं होती । विज्ञान एवं वाणिज्य के छात्रों में मानविकी छात्रों की अपेक्षा वैज्ञानिक अभिवृत्ति अधिक होती है। वर्तमान पाठ्यक्रम एवं अध्यापन विधियां वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास में सहायक होती हैं । कच्छावा (1979) ने शोध में पाया कि योगाभ्यास से शारीरिक योग्यता, गत्यात्मक नम्यता एवं हृदय की क्षमता में वृद्धि होती है । सिंह (1980) के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र के नागरिक एवं विद्यार्थी प्रचलित शिक्षा को कृषि एवं ग्रामीण उद्योग-धन्धों, ग्रामीण विकास, नैतिक-धार्मिक, चारित्रिक विकास

में सहायक नहीं मानते हैं । पर ग्रामीण विद्यार्थी प्रचलित शिक्षा पद्धति को राष्ट्रीय एकता, सामाजिक हित तथा आर्थिक विकास में सहायक मानते हैं । वे इसे रोजगार प्राप्ति तथा आत्मनिर्भर बनने में सहायक नहीं मानते । ग्रामीण भी इसे देश के आर्थिक विकास में सहायक नहीं मानते । वर्मा (1980) के अनुसार किशोर एवं किशोरियां अपने जीवन में समाजसेवी, राजनेता तथा खिलाड़ी के व्यवसाय को (अभिनेता को नहीं) पसन्द करते हैं । किशोरों के सामने आदर्श प्रस्तुत करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएं निभाती हैं। वे अध्यापकों के नियमित पढ़ाने, स्नेह पूर्ण व्यवहार, सादा जीवन उच्च विचार, उच्च चरित्र तथा निर्देशन कार्य को पसन्द करते हैं । किशोर परिवार के सभी सदस्यों के पति सद्भाव, प्रेम, दुःख-दर्द में जुड़े रहते हैं तथा किसी एक की गलती होने पर उसे परिवार की गलती मानते हैं। उन्होंने विपत्तियों से घिरे लोगों की सामाजिक कार्यकर्ता द्वारा सहायता, कुसंस्कारों का निवारण, नारियों के अधिकारों की रक्षा, खिलाड़ियों के अच्छा खेल खेलने, मनोरंजन करने, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव, अपनी हार प्रसन्नता से स्वीकार करने तथा अभिनेताओं के उत्कृष्ट अभिनय करने, हास्य, अभिनय, उच्च संगीत, भावुक, अभिनय, आदर्श व्यक्तियों की अनुकृति बनाने की क्षमता के गुणों को पसन्द किया है । वर्मा (1981) के अनुसार छात्राओं के वैज्ञानिक सम्प्रत्ययों, पोषण की आवश्यकता एवं सम्प्राप्ति की आवश्यकता उनके वातावरण को समझने में मदद करता है । उनकी बुद्धिलब्धि का स्तर वैज्ञानिक सम्प्रत्ययों के विकास को प्रभावित करता है । उनकी सम्प्राप्ति की आवश्यकता वैज्ञानिक सम्प्रत्ययों के विकास के लिए उनको अभिप्रेरित करती है । उच्च बुद्धि छात्राओं में प्रदर्शन की आवश्यकता अधिक पाई गई । गुप्ता (1983) ने अपने शोध से निष्कर्ष निकाला कि छात्राओं की विज्ञान विषय की उच्च व निम्न दोनों सम्प्राप्ति तथा पर्यावरण अवबोध (उर्जा तथा कार्य उपक्षेत्र को छोड़कर) के मध्य सकारात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया । शर्मा (1984) के अनुसार छोटे एवं बड़े परिवार के छात्रों के गृह सामाजिक, संवेगात्मक तथा विद्यालय समायोजन में कोई अन्तर नहीं पाया गया। स्वास्थ्य के क्षेत्र में छोटे परिवारों के छात्र बड़े परिवारों के छात्रों से श्रेष्ठ पाए गए। त्यागी (1984) के अनुसार कृषि, वाणिज्य एवं तकनीकी विषयों के विद्यार्थियों की रुचियों में आत्म प्रत्यय की दृष्टि से कोई भिन्नता नहीं पाई गई। अच्छे प्रत्यय वाले छात्र-छात्राओं की आत्म-प्रत्यय के सन्दर्भ में व्यावसायिक रुचियां समान पाई गईं, निम्न आत्म-प्रत्यय वाली छात्राओं की रुचि, प्रशासकीय क्षेत्र में छात्रों की अपेक्षा, इसी प्रत्यय की छात्राओं की रुचि की अपेक्षा रचनात्मक क्षेत्र में अच्छी पाई गई। सभी प्रकार की छात्राएं छात्रों से घरेलू क्षेत्र में श्रेष्ठ पाई गईं। शर्मा (1984) ने अपने शोध से निष्कर्ष निकाले कि निजी छात्रावास के छात्रों में तुलनात्मक रूप से प्रभुत्व, स्वदोषारोपण एवं मुक्त दोषारोपण की प्रवृत्ति अधिक पाई गई। विद्यालयी छात्रावासों के छात्रों में अहम प्रतिरक्षण, पर-दोषारोपण की प्रवृत्ति

सामाजिक अनुमोदन, प्रतिस्पर्धा, चिढ़ाना आदि दुष्प्रवृत्तियां तुलनात्मक रूप से अधिक पाई गईं। आक्रामकता की प्रवृत्ति दोनों ही प्रकार के छात्रों में समान पाई गई। दानी (1984) ने अपने शोध में पाया कि वैज्ञानिक अभिवृत्ति में मुख्यतः तीन घटक – संज्ञानात्मक, क्रियात्मक तथा प्रभावी क्षेत्र आते हैं। अधिकांश छात्रों मुख्यतः विज्ञान पढ़ने वाले एवं शहरी छात्रों की अभिवृत्ति उच्च पाई गई। भट्ट (1986) ने भी समान निष्कर्ष प्राप्त किये हैं। छात्र-छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति व संज्ञानात्मक संरूप में अन्तर नहीं पाया गया। विकासात्मक स्थिति में तीनों क्षेत्रों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति क्रमशः कम होती गई। विज्ञान पढ़ने वाले छात्रों में, शहरी छात्रों में, प्रारम्भिक किशोर छात्रों में क्षेत्र स्वतन्त्रता तुलनात्मक रूप से उच्च होती है। क्षेत्र स्वतन्त्रता तथा वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सह-सम्बन्ध स्पष्ट हुआ । मसीह (1985) के अनुसार उच्च सम्प्राप्ति वाले बालक तीव्र गति से सीखने वाले तथा विचारों को ग्रहण करने वाले होते हैं । ऐसा ही निष्कर्ष बुरड़ (1986) ने भी पाया है । निम्न सम्प्राप्ति वाले छात्रों में सम्प्राप्ति अभिप्रेरण भी निम्न होती है । निम्न सम्प्राप्ति वाले छात्रों के पास स्तरीय पुस्तकें नहीं होतीं । गणित, भौतिक, रसायन, जीव-विज्ञान, अंग्रेजी समझ नहीं पाते । आर्थिक विवशता के कारण पुस्तकें व अन्य शिक्षण सामग्री खरीद नहीं पाते । राधानी (1985) ने पाया कि आर्थिक स्तर से जुड़ी व्यक्तित्व की आवश्यकता अभिव्यक्ति को प्रभावित करती है । निम्न स्तर के व्यवसाय के माता-पिता बच्चों को उनका मनोबल प्रभावित नहीं होता है । फलतः उनकी सम्प्राप्ति अधिक होती है, यद्यपि उनका मनोबल प्रभावित नहीं होता है । छात्राओं का अभिप्रेरण तुलनात्मक रूप से उच्च होता है । अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति तथा सामान्य जनजाति समूहों के अध्यापकों के मनोबल एवं व्यवहार में अन्तर नहीं पाया गया । उनकी व्यावसायिक वर्ग संरचना लगभग समान है परन्तु सम्प्राप्ति अभिप्रेरण में व आय के स्तर में काफी अन्तर पाया गया । सिंह (1985) अपने शोध से इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अनुसूचित जनजाति के छात्रों में आत्म-प्रत्यय का औसत स्तर पाया गया। शहरी अनुसूचित जनजाति के छात्रों का आत्म-प्रत्यय, सम्प्राप्ति अभिप्रेरण एवं आकांक्षाएं तुलनात्मक रूप से उच्च पाए गए । आत्म-प्रत्यय तथा सम्प्राप्ति अभिप्रेरण में धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया । व्यवसाय चयन के समय नैतिक मूल्यों पर अधिक आग्रह पाया गया । बुरड़ (1986) के अनुसार उच्च श्रेणी व तृतीय श्रेणी के किशोर-किशोरियों के आत्म-प्रत्यय में कोई अन्तर नहीं पाया गया। शर्मा (1986) अपने शोध द्वारा निष्कर्ष पर पहुंची कि स्वीकारोक्ति वर्ग छात्रों का समूह स्वास्थ्य, विद्यालय, सामाजिक, सांवेगिक समायोजन अधिक अच्छा था जबकि इसी प्रकार की छात्राओं का गृह, स्वास्थ्य, विद्यालय एवं सांवेगिक समायोजन तुलनात्मक रूप से और अच्छा था, स्वीकारोक्ति एवं एकाग्रता वर्ग के छात्रों एवं छात्राओं का गृह समायोजन समान है, अस्वीकारोक्ति वर्ग में छात्राओं का आत्म-प्रत्यय छात्रों से अच्छा है जबकि इसी वर्ग के छात्रों का समायोजन किसी भी क्षेत्र में अच्छा नहीं पाया गया । भट्ट (1986) के अनुसार विश्लेषण करने की अभिवृत्ति छात्र-छात्राओं में समान, शहरी छात्रों में सामान्यीकरण की अभिवृत्ति सर्वाधिक एवं ग्रामीण छात्र पिछड़े हुए पाए गए । वर्गीकरण की अभिवृत्ति में शहरी छात्र तथा छात्राएं समान पाई गईं । पाण्डे (1986) के अनुसार हिन्दी के प्रति गुजराती छात्रों की अभिवृत्ति प्रथम स्थान पर, पंजाबी तथा बंगाली की द्वितीय

स्थान पर तथा तमिल व मलयालम भाषी छात्रों की अभिव्यक्ति तृतीय स्थान पर है। दक्षिण भारत में इसके विरोध के कारण प्रशासनिक, सामाजिक तथा शैक्षिक हैं जबकि पंजाब में वहां की आन्तरिक ज्वलन्त समस्याएं।

अधिगम

अधिगम के क्षेत्र में पीएच. डी. एवं एम. एड. दोनों स्तरों पर कक्षागत वातावरण, वर्गीकरण योग्यता, समुच्चय सीखना, भाषा अधिगम, विज्ञान सम्प्रत्यय, अधिगमार्थी मूल्य, सीखने की गति एवं वाणिज्य विज्ञान अधिगम पर ही अध्येताओं ने अपने प्रयत्न केन्द्रित किए हैं। वर्मा (1976) ने अपनी शोध उपाधि हेतु अध्ययन में पाया कि कक्षा में अध्यापकों के बजाय अध्यापिकाओं द्वारा निर्मित सामाजिक भावात्मक वातावरण छात्रों के अधिगम में ज्यादा सहायक होता है। वे छात्रों के लिए ज्यादा निष्पक्ष होती है। आठ कारकों में से भावात्मक सम्बन्ध तथा स्वीकारोक्ति को छोड़कर शेष सभी में मान्यता प्राप्त संस्थाओं का कक्षागत वातावरण राजकीय संस्थाओं से श्रेष्ठ पाया गया। इन संस्थाओं में छात्र-छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति अच्छी पाई गई है। कक्षागत वातावरण तथा छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में गहरा सम्बन्ध है। छात्रों के सकारात्मक व्यवहार से कक्षागत वातावरण सुदृढ़ होता है तथा नकारात्मक व्यवहार से अध्ययन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अध्ययनशील बालक की सम्प्राप्ति का स्तर श्रेष्ठ तथा कक्षागत व्यवहार धनात्मक पाया गया, जबकि उद्दण्ड छात्र के परिणाम इसके विपरीत पाए गए। रानी (1976) के अनुसार ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में वर्गीकरण योग्यता में महत्वपूर्ण भिन्नता पाई गई। खेर (1976) ने अपने शोध में पाया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं को समुच्चय सीखने में कम कठिनाई होती है। छात्र कोष्ठक तथा कॉमा का प्रयोग नहीं करते हैं। संकेत तथा सांकेतिक भाषा विषय-वस्तु का सबसे कठिन भाग है। शर्मा (1977) के अनुसार मानसिक आयु अधिक होने पर विज्ञान के सम्प्रत्ययों का विकास भी अधिक होता है। कक्षोन्नति के साथ-साथ विज्ञान के सम्प्रत्ययों का भी विकास होता है। विज्ञान के जिन सम्प्रत्ययों का कक्षोन्नति के साथ-साथ पुनर्बलन होता है, उनका विकास होता है। पुनर्बलन न होने की स्थिति में वे धुंधले पड़ जाते हैं। दुबे (1979) अपने शोध से निष्कर्ष पर पहुंचे कि ढाई वर्ष की आयु तक छात्राएं भाषा विकास में छात्रों से श्रेष्ठ पाई गईं, परन्तु उसके बाद साढ़े चार वर्ष के छात्र आगे रहे। उच्च आय वर्ग, शिक्षित माता-पिता, व्यापारी वर्ग की सन्तान तथा प्रथम सन्तान की शब्दावली उच्च पाई गई। बालक संज्ञा, क्रिया, विशेषण, सर्वनाम. . . इस क्रम में सीखते हैं। व्यास (1979) ने ज्ञात किया कि वर्तनी शुद्धि व निबन्ध लेखन अधिगम में छात्र और छात्राएं बराबर रहे परन्तु कहानी लेखन अधिगम में छात्राएं छात्रों की अपेक्षा अधिक योग्य पाई गईं। इसके विपरीत प्रारम्भिक, मध्यम अक्षर, वाक्य व शब्द निमार्ण में छात्रों का अधिगम छात्राओं की अपेक्षा

नहीं पाया गया परन्तु रुचियों में भिन्नता देखी गई । कुमार (1981) के अनुसार छात्र-छात्राओं में शैक्षिक सम्प्राप्ति तथा विज्ञान विषयक ज्ञान में कोई भिन्नता नहीं पाई गई । भौतिक विज्ञानों की अपेक्षा जीव विज्ञानों में अधिक रुचि देखी गई । जैन (1982) ने अहिन्दी भाषी छात्रों की हिन्दी के अध्ययन में विभिन्न कठिनाइयों के सम्बन्ध में पाया कि इस वर्ग के छात्र निम्नांकित प्रकार की त्रुटियों करते पाए जाते हैं (अ) अनुस्वार व चन्द्रबिन्दु की गलती (आ) वर्तनी सम्बन्धी भूलों में श ष स का गलत स्थान पर प्रयोग करना (इ) वाक्य रचना में संज्ञा व क्रिया की त्रुटियां। नैय्यर (1982) के अनुसार अधिगमार्थी मूल्यों के उच्च स्तर पर मिशनरी विद्यालयी की तुलना में राजकीय विद्यालयों में छात्राओं की संख्या सवा दो गुनी है । मिशनरी विद्यालयी की अपेक्षा राजकीय विद्यालयों में छात्राओं अधिक मनाग्रही पाई गई । श्रेष्ठिया (1983) ने पाया कि आयु के बढ़ने के साथ-साथ अधिगम योग्यता भी बढ़ती है । पारीक (1983) ने एकल तथा संयुक्त परिवारों की छात्राओं पर अध्ययन में पाया कि दोनों प्रकार की छात्राओं का स्वास्थ्य साथियों के साथ समायोजन, सामाजिक, संवेगात्मक समायोजन में एवं संस्कृत तथा विज्ञान की सम्प्राप्ति में कोई अन्तर नहीं पाया गया । गृह समायोजन में संयुक्त परिवार की छात्राएं, गणित की सम्प्राप्ति में तथा विद्यालय समायोजन की दृष्टि से एकल परिवार की छात्राएं श्रेष्ठ पाई गई । गणित की सम्प्राप्ति के सम्बन्ध में कौशिक (1983) भी समान निष्कर्ष पर पहुंचीं जबकि विज्ञान की सम्प्राप्ति एकल या लघु परिवार की छात्राओं की अधिक पाई गई। स्वास्थ्य, विद्यालयी तथा संवेगात्मक समायोजन में तीनों प्रकार के परिवारों (एकल या लघु, मध्यम तथा संयुक्त या बृहद्) की छात्राओं का समायोजन समान पाया गया । लघु परिवार की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति तुलनात्मक रूप से श्रेष्ठ पाई गई । शर्मा (1983) ने अपने शोध से पाया कि शहरी छात्रों में ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा घनिष्ठता, विविधता, पर्यावरण, सोद्देश्यता तथा प्रतिस्पर्धा अधिक पाई गई जबकि ग्रामीण छात्रों में शहरी छात्रों की अपेक्षा उदासीनता, अव्यवस्था, लघु समूहता एवं गुटबन्दी की प्रवृत्ति अधिक पाई गई । कक्षा का वातावरण शैक्षिक सम्प्राप्ति को प्रभावित करता है तथा ग्रामीण छात्र कृषि में अपेक्षाकृत अधिक रुचि रखते हैं । सक्सेना (1984) ने अपने पीएच. डी. के शोध अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि विद्यार्थी भौतिक शास्त्र के लिए सकारात्मक समर्थक अभिवृत्ति रखते हैं । न्यादर्श एवं केन्द्रीय विद्यालयों के छात्रों में संज्ञानात्मक प्राथमिकताएं, प्रत्यास्मरण, सिद्धान्त, ज्ञानापयोग तथा आलोचनात्मक प्रश्न पूछने की क्षमता पाई गई जबकि राजस्थान की स्कूलों के विद्यार्थियों की प्राथमिकताओं में मध्य के दोनों स्थान आपस में बदल गए । राजस्थान तथा केन्द्रीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की भौतिकशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति, उसके अध्ययन एवं उसके प्रति सोच-विचार में महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया । दोनों प्रकार के विद्यार्थियों में भौतिक शास्त्र पढ़ने के प्रति उत्साह में किसी प्रकार का अन्तर नहीं पाया गया । दोनों प्रकार के विद्यार्थी, सिद्धान्तों की सम्प्राप्ति में असमान हैं जबकि प्रत्यास्मरण, ज्ञानापयोग तथा प्रश्न पूछने में असमान नहीं है । शर्मा (1984) के अनुसार छात्रों की वाणिज्य के प्रति अभिवृत्ति व ज्ञानार्जन, में उच्च सह-सम्बन्ध है । अधिगम पर्यावरण तथा वाणिज्य में ज्ञानार्जन, वाणिज्य के

प्रति अभिवृत्ति तथा अधिगम पर्यावरण में ऋणात्मक सह-सम्बन्ध रहा । बानू (1984) ने स्पष्ट किया कि राजकीय विद्यालयों की छात्राएं ज्ञानोपयोग, कौशल, अवबोध एवं उद्देश्यों में पौधों के वर्गीकरण, उनके वानस्पतिक नाम तथा उनके भागों के नाम याद रखने में अधिक कठिनाई अनुभव करती हैं । अधिगम कठिनाई का बुद्धिलब्धि से, राजकीय एवं निजी विद्यालय के छात्र-छात्राओं की कठिनाई में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । भदौरिया (1984) के अनुसार 26 प्रतिशत छात्र निर्योग्यता से वंशानुगत पीड़ित हैं । 10.85 प्रतिशत प्राथमिक विद्यार्थी अधिगम निर्योग्यता, 8.91 प्रतिशत व्यवहार अव्यवस्था, 9.3 प्रतिशत पठन एवं वर्तनी से तथा 8 प्रतिशत छात्र लिपि की सुघड़ता के आग्रह से पीड़ित हैं । निर्योग्य छात्र एकल परिवारों में अधिक पाए गए । उनके तथा सामान्य विद्यार्थियों के माता-पिता की शिक्षा में कोई अन्तर नहीं पाया गया । निर्योग्य छात्र बायें हाथ से लिखते पाए गए । निर्योग्यता तथा बुद्धि में कोई सह-सम्बन्ध नहीं पाया गया । लिपि की कठिनाई में अक्षरों को मिला देना, अंकगणित की कठिनाई, गुणा करना प्रमुखतः पाई गई । निर्योग्यता का प्रमुख कारण निम्न स्मृति स्तर पाया गया । जबकि डैनी (1985) ने दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों में पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों की अपेक्षा निर्योग्यता एवं सम्प्रेषण निर्योग्यता अधिक पाई तथा व्यवहार की कठिनाइयों में पठन , लेखन एवं सम्प्रेषण की निर्योग्यताएँ प्रमुख देखीं । व्यवहार की कठिनाई लिपि एवं चिन्तन की निर्योग्यता से जुड़ी पाई गई। गणित में स्वास्थ्य की अधिक कठिनाई वाले निर्योग्य छात्रों का प्रतिशत अधिक पाया गया। स्वास्थ्य की कम कठिनाइयों वाले छात्र सम्प्रेषण निर्योग्यता से पीड़ित पाए गए । पठन निर्योग्यता के निवाणार्थ चित्रों तथा कहानियों के माध्यम से अध्यापन उपयोगी पाया गया । चौधरी (1985) के अनुसार समन्वित विधि द्वारा विज्ञान अध्यापन से प्रयोगात्मक समूह के छात्रों में अवबोध क्षमता अधिक होती है । उनकी विज्ञान के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति शैक्षिक-सम्प्राप्ति उच्च बनाती है। कौर (1985) ने अन्धे व अन्य बालकों का भाषा ज्ञानार्जन समान पाया तथा यह भी पाया कि जन्मान्धता या जन्म से बाद में अन्धे हो जाने से भाषा ज्ञानार्जन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता । शर्मा (1985) ने अपने शोध में पाया कि छात्राओं की सम्प्राप्ति उनकी सीखने की गति से प्रभावित होती है । तीव्रगति से सीखने वाली छात्राओं की सम्प्राप्ति एवं समायोजन तुलनात्मक रूप से सही पाया गया ।

अन्य अध्ययन

नागर (1985) ने बालगृहों के छात्रों पर अध्ययन में पाया कि बालक-बालिका तथा जाति की दृष्टि से सामान्य तथा डेस्टीट्यूट गृहों के छात्रों की समस्याओं में महत्वपूर्ण अन्तर पाया जाता है । श्रीवास्तव (1986) ने वृत के अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि सभी

के अभिमतानुसार ये छात्राएं अध्ययन में मंद, आज्ञाकारी तथा आत्मकेन्द्रित होती हैं । परन्तु कुछ अनियमित, विद्यालय कार्यों में लापरवाह, आवेगशील तथा अवसादग्रस्त भी होती हैं । त्यागी (1986) ने पाया कि उच्च मानसिक विकलांग स्तर के विकलांग बच्चों की सभी कार्यों के प्रति अभिवृत्ति अच्छी रही । तर्क के क्षेत्र में सामान्य छात्रों की तथा अनुमान के क्षेत्र में दोनों प्रकार के बालकों की अभिव्यक्ति समान पाई गई । मल्होत्रा (1987) ने पाया कि समाज स्वीकृत विद्यार्थी अपने निकटतम साथियों से बुद्धि, सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, पारिवारिक सम्बन्ध, अभिरुचि तथा सम्प्राप्ति में धनात्मक अन्तर रखते हैं । समाज स्वीकृत बच्चे तुलनात्मक रूप से उच्च परिवारों के हैं । उनकी सम्प्राप्ति भी उच्च है । बुद्धि, सामाजिक-आर्थिक स्तर, अभिरुचि, सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक सम्बन्ध, सामाजिक स्वीकृति तथा तिरस्कार के आधार पाए गए हैं । शर्मा (1987) ने पाया कि दृष्टिहीन छात्रों की अपेक्षा दृष्टियुक्त गतिशीलता तथा मौलिकता में श्रेष्ठ होते हैं । निम्न बुद्धि वाले दृष्टिहीन छात्र क्रमबद्धता तथा वर्गीकरण में उच्च होते हैं जबकि दृष्टियुक्त उच्च बुद्धि वाले छात्र सभी क्षेत्रों में उच्च पाए जाते हैं । शर्मा (1988) ने पाया कि बुद्धि सामाजिक कौशल तथा अधिगम पर प्रभाव डालती है । दोनों प्रकार के छात्रों की बुद्धिलब्धि में अन्तर नहीं पाया गया, पर समन्वित शाला के अयोग्य बालक विशिष्ट विद्यालय के अयोग्य बालकों की अपेक्षा सामाजिक कौशल में उच्च होते हैं । सामाजिक स्तर के सुधार हेतु प्रत्येक खेल, सहकारी अधिगम, गतिविधियां, सामाजिक अन्तर्क्रिया तथा भागीदारी स्पष्ट हुई । शर्मा (1988) ने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि 20% विकलांग बालक ही पढ़ाई में रूचि रखते हैं । शारीरिक रूप से विकलांग बालक विद्यालय पहुंचने, उठने, बैठने, पढ़ने, खेलने, बौद्धिक क्षेत्र में याद होते हुए भी उत्तर न दे पाने, सामाजिक क्षेत्र में उपेक्षा का अनुभव, सहानुभूति व सुरक्षा का अभाव जैसी समस्याओं से पीड़ित रहते हैं । ऐसे बालक चिन्तित, ईर्ष्यालु, क्रोधी, संकोची एवं भयग्रस्त पाए गए । शर्मा (1988) ने प्रक्षेपण साधनों से अपने अध्ययन में पाया कि सामान्य तथा विकलांग बालकों के व्यक्तित्व प्रत्ययों में कोई अन्तर नहीं हैं । विकलांग बालक सामान्य बालकों की ही भांति कल्पना जगत में स्वच्छंद विचरण करते हैं । इससे उनका बाह्य व्यक्तित्व के साथ-साथ आन्तरिक व्यक्तित्व भी प्रकट होता है । पत्रिया (1988) ने प्रदूषण सम्बन्धी अपने शोध में पाया कि जल तथा वायु सम्बन्धी प्रदूषण के प्रति सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं में समान जागरूकता पाई गई । विज्ञान के विद्यार्थी कला विद्यार्थियों की अपेक्षा वायु तथा जल के प्रति अधिक सजग थे । वनों के प्रति छात्र तुलनात्मक रूप से अधिक सजग हैं, यही बात सरकारी विद्यालय के लिए सही है । जनसंख्या विस्फोट के सम्बन्ध में सरकारी व निजी विद्यालयों में कला तथा विज्ञान संकायों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं की अपेक्षा छात्राएं अधिक जागरूक पाई गईं । स्वास्थ्य संबंधी संकट के प्रति छात्रों की अपेक्षा छात्राएं अधिक जागरूक पाई गई ।

शैक्षिक उपयोगिता

शिक्षा के समस्त कार्य बालक के व्यक्तित्व की रचना के लिए ही हैं । इस बात को समझना अनिवार्य है कि व्यक्तित्व के विकास में वातावरण की अहम भूमिका होती है । उचित वातावरण मिलने पर बालक को उचित अभिप्रेरण मिलता है, उसके व्यक्तित्व का समुचित विकास

होता है और अधिगम भी अधिकतम हो जाता है । इन तथ्यों की जानकारी शैक्षिक प्रशासकों तथा शिक्षकों को होनी ही चाहिए ।

बालकों का अधिगम सकारात्मक रूप से अग्रसर हो इसके लिए उत्तरदायी घटकों का ज्ञान प्रधानाध्यापक, शिक्षक तथा अभिभावकों को होना ही चाहिए जिससे वे घर तथा विद्यालय में उपयुक्त स्थितियां विकसित कर सकें, बना सकें ।

सम्भावनाएं एवं सुझाव

व्यक्तित्व, अभिप्रेरण तथा अधिगम के क्षेत्र में सम्पन्न शोध कार्यों पर दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि 1975 से 1988 की अवधि में शोधार्थियों को कुछ विशेष घटकों ने ही आकर्षित किया है तथा उन पर एक के बाद एक निरन्तर शोध कार्य होता रहा है । उदाहरणार्थ विद्यालय विषयों की सम्प्राप्ति, सृजनात्मकता, शारीरिक विकास, व्यक्तित्व के घटक तथा सामाजिक स्वीकृति-अस्वीकृति समायोजन इसके दूसरी ओर कुछ ऐसे घटक भी थे जिन पर शोधार्थियों ने तुलनात्मक रूप से कम ध्यान दिया । इन घटकों में आत्म-प्रत्यय, पठन अभिरुचियां, परख रचना, अधिगम शैलियां, (लर्निंग स्टाइल्स) शब्द भण्डार आदि प्रमुख हैं ।

इन शोध कार्यों से एक यह बात भी स्पष्ट हुई कि पठन अभिरुचियों पर बहुत कम शोध कार्य हुआ है । मुख्यतः वयस्कों की अभिरुचियों पर । मनोवैज्ञानिक उपकरणों की रचना पर कोई ध्यान नहीं दिया गया । यद्यपि यह कार्य श्रम-साध्य तथा समय लेने वाला है, पर इस दिशा में प्रयत्न अपेक्षित हैं । एक अन्य अभाव यह भी देखा गया है कि प्रक्षेपण विधियों का उपयोग बहुत कम किया गया है । ऐसा शोध कार्य तत्काल ही केन्द्रित प्रयत्न चाहता है, इसलिए शोधार्थी इससे भी बचते रहे हैं । यही बात प्रयोगात्मक शोधों के लिए भी कही जा सकती है । लगभग 98 प्रतिशत शोधकार्य सर्वेक्षण विधि पर ही सम्पन्न किए गए हैं । जब तक प्रायोगिक कार्यों पर ध्यान नहीं दिया जाएगा, आगे के शोध कार्यों के लिये नींव ही तैयार नहीं होगी । विदेशी उपकरणों का भारतीय न्यादर्श पर प्रयोग करके मानक तैयार किए जा सकते हैं। इतना ही नहीं, भारतीय स्थितियों में उनकी उपयोगिता परखी जाए । एक लम्बे समय पूर्व भारत में बने उपकरणों की वैधता एवं विश्वसनीयता भी फिर से जांची जा सकती है तथा नये उपकरणों का विकास तो आवश्यक है ही, जिसका कि अभाव रहा है ।

शोधकर्ताओं का ध्यान मुख्यतः शहरी क्षेत्र, सहज पहुंच की ओर रहा है । ग्रामीण क्षेत्रों में भी पृथक से शोध कार्यों की योजना बनाई जा सकती है । न्यादर्श में प्रायः माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है । कितना अच्छा होता यदि इस क्षेत्र में प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को भी सम्मिलित किया जाता । छुटपुट प्रयत्न जनजाति के बालक-बालिकाओं पर भी हुए हैं, पर उनमें भी विविधता नहीं पाई जाती । जनजातियों में

इन शोध कार्यों में सांख्यिकी का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है । सांख्यिकी निश्चय ही वैध एवं विश्वसनीय निष्कर्षों तक पहुंचने में मदद करती है । पर इस क्षेत्र में भी उच्च साख्यिकी का प्रयोग उपेक्षित रहा है, जैसे— काई सक्वायर अनेलिसिस ऑफ बेरियन्स, फैक्टोरियल अनेलेसिस, शैफो टैस्ट एवं मल्टीवेरिएट का रिलेशन्स आदि ।

वाचस्पति शोध सार

डी. एन. दानी : उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति और संज्ञानात्मक शैलियों का अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1984

दानी (1984) ने 1265 उच्च माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली तथा वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि वैज्ञानिक अभिवृत्ति के मुख्य घटक संज्ञानात्मक, क्रियात्मक व प्रभारी क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं, अधिकांश छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति उच्च नहीं पाई गई, छात्र व छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति व संज्ञानात्मक शैली में अन्तर नहीं पाया गया । विज्ञान के छात्रों तथा शहरी छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति अपेक्षाकृत उच्च पाई गई, विकासात्मक स्तरों की वृद्धि के साथ-साथ ग्यारहवीं कक्षा के छात्रों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति के तीनों क्षेत्रों के छात्र न्यून होते जाते हैं, अधिकांश छात्रों में क्षेत्र निर्भरता होती है। विज्ञान के छात्रों में अन्य विषयों के छात्रों की अपेक्षा क्षेत्र में स्वतन्त्रता उच्च होती है, क्षेत्र स्वतन्त्रता तथा विज्ञान विषयों के चयन में सह-सम्बन्ध स्पष्ट हुआ । ग्रामीण एवं नगरीय छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों में उच्च क्षेत्र स्वतन्त्रता होती है, पूर्व किशोर अवस्था के छात्रों में पश्च किशोर अवस्था की अपेक्षा अधिक क्षेत्र निर्भरता होती है । क्षेत्र स्वतन्त्रता तथा वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सह-सम्बन्ध पाया गया ।

आर. आर. सिंह : राजस्थान के अनुसूचित जनजाति के किशोरों के आत्म-संप्रत्यय, आकांक्षाओं तथा सम्प्राप्ति उत्प्रेरकों का अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1985

सिंह (1985) ने अनुसुचित जनजाति के 500 विद्यार्थियों पर शोध में पाया कि अनुसूचित जनजाति के छात्रों में औसत सम्प्रत्यय पाया गया, ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति के किशोरों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों के अनुसूचित जनजाति के किशोरों में उच्च सम्प्रत्यय पाया गया । ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में पढ़ने वाले अनुसूचित जनजाति के किशोरों की आकांक्षायें उच्च पाई गईं तथा अपने व्यवसाय का चयन करने के पीछे उच्च नैतिक मूल्य समुदाय के उपेक्षित लोगों की सहायता करना पाया गया । शहरी क्षेत्रों के अनुसूचित जनजाति के किशोरों में अपेक्षाकृत सम्प्राप्ति उत्प्रेरण उच्च पाई गई, स्व-प्रत्यय तथा सम्प्राप्ति उत्प्रेरण का धनात्मक सम्बन्ध पाया गया ।

मंजुला, बावेल : राजस्थान विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विदेशी छात्रों की समायोजन समस्याओं का अध्ययन, पीएच. डी. राज. विश्वविद्यालय, 1986

बावेल (1986) ने 1981-82 में राजस्थान विश्वविद्यालय में पढ़ रहे 22 देशों के 425 विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं का अध्ययन किया और निष्कर्ष पर पहुँची कि समग्र दृष्टि से अधिक शैक्षिक क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट एवं भौतिक क्षेत्र में सबसे खराब समायोजन पाया गया। सामाजिक क्षेत्र में बंगलादेश, श्रीलंका तथा नेपाल के छात्रों का सर्वोत्कृष्ट तथा युगाण्डा एवं जैरे के छात्रों का समायोजन सबसे खराब रहा। भौतिक क्षेत्र में फ़िज़ी देश के छात्रों का सर्वोत्कृष्ट एवं युगाण्डा के छात्रों का सर्वाधिक खराब समायोजन रहा। संवेगात्मक क्षेत्र में भी यही स्थिति पाई गई। शैक्षिक क्षेत्र में फ़िज़ी देश के छात्र सर्वोत्कृष्ट तथा अफगानिस्तान, ईरान-ईराक, जोर्डन एवं फिलीस्तीन के छात्र सबसे बुरी स्थिति में पाये गये। सामाजिक क्षेत्र में विदेशी छात्र एवं छात्राओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। आर्थिक एवं संवेगात्मक क्षेत्र में छात्राओं का समायोजन अपेक्षाकृत अच्छा पाया गया। आर्थिक क्षेत्र में 33-38 वर्ष की आयु वर्ग के छात्र-छात्राओं का खराब समायोजन एवं इससे उच्च आयु-वर्ग का समायोजन अच्छा पाया गया। सामाजिक क्षेत्र में कृषि अभियान्त्रिकी के छात्रों का सर्वोत्कृष्ट एवं कला के छात्रों का सबसे हीन समायोजन पाया गया, शैक्षिक क्षेत्र में आयुर्विज्ञान छात्रों का सर्वोत्कृष्ट एवं विज्ञान के छात्रों का सबसे खराब समायोजन रहा। अध्ययन का स्तर तथा समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। सामाजिक क्षेत्र में 7-10 वर्ष अध्ययन अवधि वालों का सर्वोत्कृष्ट तथा 1-4 वर्ष वालों का सबसे हीन समायोजन पाया गया, आर्थिक क्षेत्र में 4-7 वर्ष अध्ययन अवधि वालों का सर्वोत्कृष्ट एवं 1-4 वर्ष की अवधि वालों का सबसे बुरा समायोजन पाया गया। विवाहित छात्र-छात्राएं अविवाहित की अपेक्षा उत्तम समायोजन वाले पाये गये, आर्थिक क्षेत्र में स्वावलम्बी छात्र सरकार द्वारा प्रायोजित छात्रों की अपेक्षा बेहतर समायोजन की स्थिति में पाये गये। विदेशी छात्रों की विशिष्ट समस्याएं क्रमानुसार इस प्रकार पाई गईं– स्थान सम्बन्धी, समुचित चिकित्सा परिचर्या, टेलीफोन सुविधा की अनुपलब्धता, स्वच्छ जल एवं ठण्डे पानी की समस्या, भोजन समस्या, शिक्षण शुल्क अधिक होना, घर की याद सताना, अरुचिकर पाठ्यक्रम, निष्प्रभावी सह पाठ्यगामी प्रवृत्तियाँ, भाषाई समस्या, विपरीत लिंग के छात्र-छात्राओं के साथ मित्रता पर प्रतिबन्ध, भारत की असहनीय गर्मी, अध्यापकों का सहानुभूति से परे व्यवहार, विदेशी छात्र क्रमानुसार निम्न कठिनाइयां महसूस करते हैं– अधिसंख्य छात्र भारतीय शिक्षण पद्धतियों एवं पाठ्यक्रम से असन्तुष्ट, भारतीय शिक्षकों का स्पन्दनहीन एवं सहानुभूति से परे व्यवहार, भारतीय साथी विद्यार्थियों का व्यवहार ठीक न होना, आवासीय सुविधायें आशानुकूल न होना, भाषागत कठिनाई, पुस्तकालयों में असुविधा संस्थानों में अस्वास्थ्यकर वातावरण आदि।

एन. वैद्या : किशोर छात्रों के वैज्ञानिक चिन्तन के कुछ पक्षों का अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 197

क्रमशः बड़ी कक्षा के छात्र समस्या को हल करने का प्रयास करते हैं । उच्च बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थी दी गई समस्या को सफलतापूर्वक हल कर लेते हैं, हर छात्र समस्या को अपनी दृष्टि से देखता है तथा हल करने का प्रयास करता है । प्रत्येक छात्र विभिन्न प्रक्रिया को बढ़ते अभ्यास के साथ दृढ़ता से लेता है । छात्र समस्या के हल करने में कई प्रकार की असाधारण अशुद्धियां करते हैं । छठी से आठवीं कक्षा के दो-तिहाई छात्र समस्या में निहित विपरीत चिन्तन के क्षेत्र में असफल रहे हैं, जबकि समस्या को दो विधाओं से हल किया जाता है तो अधिकांश छात्र सरल विधा का उपयोग करते हैं ।

आशा दीक्षित : राजस्थान के शहरी, ग्रामीण तथा जनजाति क्षेत्रों में प्रौढ़ों की शिक्षागत आवश्यकताओं प्रारूप का अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1975

दीक्षित (1975) ने शहरी, ग्रामीण तथा जनजाति क्षेत्रों में क्रमशः 598, 619 तथा 359 प्रौढ़ों का अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला कि –

शहरी समुदाय

वर्ष 21-35 आयु-वर्ग के अधिकांश प्रौढ़ विवाहित थे, 47.6 प्रतिशत महिलाएं माध्यमिक या इण्टर थीं जबकि पुरुषों का प्रतिशत 35.6 ही था । न्यादर्श में शिक्षक अधिक थे, अधिकांश व्यक्ति व्यावसायिक प्रशिक्षण में जाना चाहते थे, अधिकांश व्यक्ति आगे पढ़ने की इच्छा वाले पाये गये, नियोजित व्यक्ति अपने व्यावसायिक विकास हेतु शिक्षा चाहते थे, व्यक्ति पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाएं पढ़ते हैं, अधिकांश अनपढ़ों ने रात्रि में पढ़ने की इच्छा व्यक्त की ।

ग्रामीण समुदाय

वर्ष 21-35 आयु-वर्ग के प्रौढ़ विवाहित थे । अधिकांश प्रौढ़ अनपढ़ थे, वे कृषि, खेतिहर मजदूरी तथा व्यावसायिक कार्य करते थे, औसत आय 201-300 रु. प्रति माह पाई गई, इनमें औपचारिक शिक्षा का अभाव पाया गया, रात्रि में पढ़ने की इच्छा ज्ञात हुई, अधिकांश प्रौढ़ों ने व्यावसायिक शिक्षा के लिए प्राथमिकता बताई, वे अपने वर्तमान कार्य से सन्तुष्ट नहीं थे, चिकित्सा एवं विद्युत सुविधाओं का अभाव पाया गया ।

जनजाति समुदाय

वर्ष 21-35 आयु वर्ग के अधिकांश प्रौढ़ विवाहित थे । अधिकांश भील प्रौढ़ों का शैक्षिक स्तर नाममात्र का ही पाया गया, कृषि मुख्य व्यवसाय पर मजदूरी व अन्य व्यवसाय गौण धन्धे पाये गये, औसत आय 100/- प्रति माह पाई गई, औपचारिक विद्यालयों की कमी पाई गई, 33 प्रतिशत प्रौढ़ों ने शिक्षा प्राप्त करना चाहा, रात्रि कक्षाओं की मांग की गई, विद्याध्ययन के समय शिक्षावृत्ति दी जाय, अधिकांश प्रौढ़ अपने वर्तमान व्यवसाय से असन्तुष्ट प्रतीत हुए तथा राजकीय सेवा की इच्छा बताई, उचित मूल्य की दुकान तथा सिंचाई के साधनों का अभाव पाया गया ।

आर. पी. सिंह वर्मा : कक्षा के सामाजिक संवेगात्मक वातावरण का बालकों के अधिगम पार प्रभाव, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1976

वर्मा (1976) ने शहरी-ग्रामीण तथा राजकीय निजी विद्यालयों के 385 छात्रों पर किये गये अपने अध्ययन में कक्षा के सामाजिक-आर्थिक स्थिति का बालकों के अधिगम पर प्रभाव ज्ञात किया तथा निष्कर्ष निकाला कि कक्षा में अध्यापकों के बजाय अध्यापिकाओं द्वारा निर्मित सामाजिक भावात्मक वातावरण छात्रों के अधिगम में ज्यादा सहायक होता है। वे छात्रों के लिये ज्यादा निष्पक्ष होती हैं । आठ कारकों में से भावात्मक सम्बन्ध तथा स्वीकारोक्ति को छोड़कर शेष सभी में मान्यता प्राप्त संस्थाओं का कक्षागत वातावरण राजकीय संस्थाओं में श्रेष्ठ पाया गया । इन संस्थाओं में छात्र-छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति अच्छी पाई गई । कक्षागत वातावरण तथा छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में गहरा सम्बन्ध है । छात्रों के सकारात्मक व्यवहार से कक्षागत वातावरण सुदृढ़ होता है तथा नकारात्मक व्यवहार से अध्ययन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । अध्ययनशील बालक की सम्प्राप्ति का स्तर श्रेष्ठ तथा कक्षागत व्यवहार धनात्मक पाया गया जबकि उद्दण्ड छात्रों के परिणाम इसके विपरीत पाये गये ।

एस. पी. मिश्रा : सृजनात्मक बुद्धि तथा दुश्चिन्ता के सन्दर्भ में कला, विज्ञान तथा वाणिज्य संकाय की अधिक एवं न्यून सम्प्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1976

मिश्रा (1976) ने जिला मुख्यालयों पर अध्ययन कर रहे 2687 छात्रों के सृजनात्मक, बुद्धि तथा दुश्चिन्ता के सन्दर्भ में कला, विज्ञान तथा वाणिज्य संकाय की अधिक एवं न्यून सम्प्राप्ति का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष पर पहुंचे कि अधिक सम्प्राप्ति वाले तीनों संकायों के छात्र एवं छात्राएं सृजनात्मक एवं बुद्धि में उच्च श्रेणी के पाये गये । सामान्य चिन्ता की मात्रा कम पाई गई, न्यून सम्प्राप्ति वाले तीनों संकायों के छात्र-छात्राएं सृजनात्मकता एवं बुद्धि में कम तथा सामान्य चिन्ता में अधिक पाये गये । न्यून व अधिक सम्प्राप्ति वाली विज्ञान की छात्राएँ सामान्य चिंता में समान पाई गईं, बुद्धि एवं सृजनात्मकता का विज्ञान एवं वाणिज्य के अधिक सम्प्राप्ति वाले छात्र-छात्राओं के साथ भी सह-सम्बन्ध पाया गया । विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के न्यून सम्प्राप्ति वाले छात्र-छात्राओं के साथ भी सृजनात्मकता एवं सामान्य चिन्ता का सह-सम्बन्ध पाया गया । विज्ञान के दोनों तरह के छात्र दोनों प्रकार की छात्राओं से अधिक सृजनात्मक, बुद्धिलब्धि एवं कम चिन्तित पाये गये । कला के छात्र सृजनात्मकता एवं बुद्धि में न्यून एवं अधिक चिन्तित पाये गये ।

एस. पी. सिंह अलख : विद्यार्थियों की कार्य-प्रेरणा, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1977

अलख (1977) ने विद्यार्थियों

राजकीय एवं निजी विद्यालयों में कार्य के प्रति प्रेरणा में कोई विशेष अन्तर नहीं है। कार्य के प्रति प्रेरणा में वर्ग भेद भी कोई प्रभाव नहीं डालता है। कार्य के प्रति प्रेरणा को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक क्रमानुसार है– उत्तरदायित्व की भावना, व्यवहार, उपलब्धि प्रेरक, स्वयं का विचार, अध्ययन की आदतें, चिन्तायें, आत्म-विश्वास, छात्र का व्यक्तित्व तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर।

रणवीर सिंह : सृजनात्मकता से जुड़े कतिपय व्यक्तित्व सम्बन्धी गुण, भारतीय विज्ञान, कला तथा वाणिज्य के विद्यार्थियों का एक अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1977

सिंह (1977) ने 500 छात्रों पर सृजनात्मकता के सह-सम्बन्धकों के अध्ययन में पाया कि कला एवं वाणिज्य के छात्रों की अपेक्षा विज्ञान के छात्र शाब्दिक सृजनात्मकता में उच्च पाये गये, अशाब्दिक सृजनात्मकता में तीनों संकायों में कोई अन्तर नहीं पाया गया। सृजनात्मकता और बुद्धि, सृजनात्मकता एवं व्यक्तित्व में सार्थक तथा धनात्मक अन्तर पाया गया, अधिक सृजनशील बालक विशिष्टता लिये हुए, सहभागिता में आगे, उच्च बुद्धि, आज्ञापालन, गम्भीर, साहसी, बहादुर, स्वावलम्बी, आत्मसंयमी तथा स्वयं निर्णय लेने वाले पाये गये। सृजनात्मकता एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर पाया गया। उच्च सृजनात्मकता एवं उच्च चिंता औसत एवं न्यून चिंता की अपेक्षा सार्थक प्रमाणित हुई, सृजनात्मकता एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर में सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ, सृजनात्मकता एवं सम्प्राप्ति प्रेरणा में न्यून व औसत सम्प्राप्ति वाले छात्रों की अपेक्षा उच्च सम्प्राप्ति वाले छात्रों का उच्च सम्बन्ध पाया गया। सृजनात्मकता एवं मूल्यों के तीनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया, सृजनात्मकता तथा अधिकारिकता में तीनों प्रकार की सम्प्राप्ति वाले छात्रों के साथ सार्थक अन्तर पाया गया।

डी. एन. मिश्र : किशोर पूर्व छात्रों की सृजनात्मक सम्भाव्यता और उसका उनकी उसृजनात्मक चिंतन, व्यक्तित्व तथा बुद्धि से सम्बन्ध, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1979

मिश्रा (1979) ने 11+ से 13+ वर्ष की आयु-वर्ग के 200 विद्यार्थियों पर सृजनात्मक चिंतन, व्यक्तित्व तथा बुद्धि का कला से सह-सम्बन्ध ज्ञात करते हुए पाया कि मानवीय चित्रकला में छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की देन अधिक थी। जबकि स्पेस में छात्र-छात्राओं से आगे पाये गये, छात्र-छात्राओं में रंग के प्रति भावनात्मक प्रभाव समान पाया गया, डिजाइनिंग में छात्राएँ अच्छी पाई गईं, छात्रों के चित्रण में पुरुष तत्व अधिक पाया गया जबकि छात्राओं के चित्रण में सुन्दरता (यथा–वस्त्र मेकअप) पर अधिक ध्यान दिया गया, छात्राओं की अपेक्षा छात्र विषय का चित्रण अधिक विस्तृत ढ़ंग से करते प्रतीत हुए।

छात्र-छात्राओं में सेन्सिटिविटी, रेडेफिनिशन, एक्स्ट्रैक्शन, सिन्थेसिजेशन तथा आर्गेनाइजेशन में कोई अन्तर नहीं पाया गया। छात्र प्रवाहिता में अच्छे पाये गये जबकि छात्राएँ नमनीयता व मौलिकता में अच्छी पाई गईं, छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई अन्तर नहीं पाया गया। सृजनात्मकता एवं बुद्धि में सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

तेगसिंह संघू : किशोरावस्था के प्याजे के कार्यों द्वारा कार्यकारी अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1986

संघू (1986) ने अमृतसर तथा फरीदकोट जिले के ग्रामीण क्षेत्र में 11+ से 15+ आयुवर्ग के छात्रों पर प्याजे पर आधारित अपने शोधकार्य में पाया कि बालक की कार्यक्षमता उम्र के साथ बढ़ती है । विभिन्न आयु स्तर पर लड़कों की क्षमता लड़कियों की क्षमता के बराबर या अधिक बढ़ती है । किशोरावस्था में विचार के आयामों एवं बुद्धि का धनात्मक सम्बन्ध है । शैक्षिक सम्प्राप्ति किशोरावस्था में विचार विकास पर आधारित है । तार्किक योग्यता एवं अमूर्त चिन्तन दोनों किशोरावस्था में विचार विकास के प्रमुख भाग हैं। प्रारम्भिक चिन्तन का विकास समायोजन को अग्रसर करता है । किशोरावस्था में विचार की अन्तःमाप प्याजे के कार्यों पर निर्भर करती है।

शकुन्तला बंगा : प्राथमिक विद्यालयी बालकों की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं एवं व्यक्तित्व विशेषताओं का अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1980

बंगा (1980) ने नगरीय राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले 400 विद्यार्थियों के अपने पीएच. डी. के शोध कार्य से निष्कर्ष निकाला कि केन्द्र द्वारा संचालित अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित विद्यार्थी तर्क शक्ति में उच्च, अधिक सीखने में सामर्थ्यवान तथा अधिक प्रत्यक्षनपरक पाये गये । पर वे उत्तेजित, व्याकुल तथा भग्नाशा से पीड़ित भी पाये गये । निजी अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों में विशेष कर बालिकाओं में संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का अधिक विकसित होना पाया गया । ये विद्यार्थी संकोची, डरपोक, असांवेगिक तथा जिद्दी पाये गये । हिन्दी माध्यम के राजकीय विद्यालय अपने विद्यार्थियों में दृढ़ संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के विकास में असफल रहे । ये विद्यार्थी अशान्त, भग्नाशी, दुश्चिन्ता से पीड़ित पाये गये, सामाजिक रीति-रिवाजों के प्रति लापरवाह पाये गये । बालिकाएँ अत्यधिक अशान्त पाई गई । हिन्दी माध्यम के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में कुछ संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का विकास होना पाया गया । इन विद्यालयों की बालिकाओं का संज्ञानात्मक एवं तार्किक विकास केन्द्र अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यार्थियों के समान पाया गया । इनके व्यक्तित्व की संरचना भी उत्तम पाई गई, केन्द्र के अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों एवं निजी हिन्दी माध्यम के विद्यालयों की बालिकाओं में तार्किक योग्यता व प्रत्यक्षनपरक गति के क्षेत्र में कोई भेद नहीं पाया गया । दोनों प्रकार के विद्यालयों के बालकों की प्रारम्भिक तथा अंतिम अवस्था में सीखने की गति एवं क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं एवं व्यक्तित्व के विकास में शिक्षण माध्यम के बजाय उच्च उत्प्रेरित वातावरण पाया गया ।

करुणाशंकर मिश्रा : विज्ञान सृजनात्मकता पर विद्यार्थी के गृह तथा विद्यालय के प्रत्यक्षन का प्रभाव, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय 1979

के वातावरण के ज्ञान के प्रभाव ज्ञात किये और पाया कि छात्र-छात्राओं में विज्ञान सृजनात्मकता में कोई अन्तर नहीं हैं । न्यून व अधिक विज्ञान सृजनात्मकता वाले छात्र-छात्राओं का घरेलू वातावरण के प्रत्यक्षन में कोई अन्तर नहीं है । अधिक विज्ञान सृजनात्मकता वाले छात्र घरेलू वातावरण में कम सामाजिक तथा छात्राएँ अधिक सामाजिकता रखती हैं । विज्ञान सृजनात्मकता तथा पारिवारिक वातावरण में गहरा सहसंबन्ध है । घर पर दी गई प्रेरणा विज्ञान सृजनात्मकता को बढ़ाने में सहायक पाई गई । विद्यालय वातावरण तथा (1) विज्ञान सृजनात्मकता में छात्रों में सृजनात्मक प्रेरणा एवं नम्रनीयता (2) छात्रों में सृजनात्मक प्रेरणा एवं वास्तविक ज्ञान तथा (3) सृजनात्मकता एवं प्रोत्साहन में नकारात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया ।

सुकुमारन, पद्मिनी, मायानाथ : किशोरावस्था के दौरान कतिपय घटक के विकास का अध्ययन पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1982

सुकुमारन (1982) ने 10+ से 14+ आयु-वर्ग के मैसूर के निजी विद्यालयों में पढ़ रहे 100 छात्र एवं 100 छात्राओं पर अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि परिकल्पना निर्माण में कई किशोर बीच की कई परिकल्पनाएं छोड़ गये परन्तु परिकल्पनाएं समस्या समाधान हेतु एक रास्ता बनाती हैं। किशोरों की उम्र व कक्षा बढ़ने के साथ-साथ उनके विभिन्न प्रकार के समूहों में समानता दृष्टिगोचर होती है, उम्र बढ़ने के साथ-साथ समस्या समाधान के नये-नये ढंग अपनाये जाने लगे, नवीं कक्षा के हिसाब अन्य सभी कक्षाओं में छात्राओं की अपेक्षा छात्रों ने अधिक प्रश्न पूछे। अधिकतर किशोर समस्या समाधान की अपेक्षा विषयवस्तु की ओर अधिक आकर्षित हुए। समस्या का सफल समाधान करने वाले, अच्छी परिकल्पना बनाने वाले, अच्छे जांचकर्त्ता, अमूर्त चिन्तक, स्वानुशाषित तथा तनावहीन पाये गये, छात्रों ने मस्तिष्क की यांत्रिक प्रक्रिया प्रदर्शित की जबकि छात्राओं ने भाषा सम्बन्धी। छात्र स्वावलम्बी, मूर्त चिन्तक, दृढ़ तथा साहसी व्यक्तित्व वाले पाये गये जबकि छात्राओं में समूह निर्भरता, अमूर्त चिन्तन, शर्मीलेपन का प्रभुत्व था, आयु का परिकल्पनाओं से सार्थक सह-सम्बन्ध पाया गया ।

प्रताप कौर नरूला : नर्सरी विद्यालयों के बालक व बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक-आर्थिक स्तर, भग्नाशाओं के प्रति प्रतिक्रियाओं तथा सामाजिक व्यवहार के प्रतिमानों के सन्दर्भ में प्राथमिकताएं, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1982 ।

नरूला (1982) ने जयपुर अजमेर मण्डल के 17 शिशु विद्यालयों के बालक व बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक-आर्थिक स्तर, भग्नाशाओं के प्रति प्रतिक्रियाओं तथा सामाजिक व्यवहार के प्रतिमानों के सन्दर्भ में खेल प्राथमिकताएं अध्ययन में पाया कि कमरे के खेलों में लकड़ी के भवन खण्ड, वालफ्रेम्स, रंगीन तस्तरी, फलों के समूह, भवन समूह होल फिक्सिंग, बाक्सेज खिलौने, संगीत यन्त्र व तस्वीर खण्ड को प्राथमिकता दी, जबकि मैदान के खेलों में विद्यालय के सभी खेलों में रुचि स्पष्ट हुई । छात्र एवं छात्राओं की खेल रुचि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, सामाजिक-आर्थिक स्तर का खेल रुचि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया लेकिन उच्च स्तर पर खेल रुचि पर इसका प्रभाव पाया गया। संज्ञानात्मक विकास एवं खेल रुचि के सम्बन्ध में चारों तत्व जानना, प्रत्यय निरूपण, भाषा विकास एवं बुद्धि का कमरे व

मैदान के दोनों प्रकार के खेलों में सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया। कुण्ठाओं के प्रति प्रतिक्रियाओं और खेले रूचियों का भी सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया। सामाजिक व्यवहार के क्षेत्र में छात्रों में दुश्मनी एवं तंग करने का व्यवहार सामने आया जबकि छात्राओं में सहयोग एवं सहानुभूति का। अन्य प्रकार के व्यवहार में दोनों समूहों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अनिल कुमार सक्सेना : विज्ञान विद्यार्थियों के विभिन्न समूहों की भौतिक विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति और संज्ञानात्मक वरीयता शैलियां, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1984 ।

सक्सेना (1984) ने 1076 विज्ञान पढ़ने वाले विद्यार्थियों पर शोध में पाया कि विद्यार्थी भौतिक विज्ञान के लिये सकारात्मक सार्थक अभिवृत्ति रखते हैं, न्यादर्श एवं केन्द्रीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक प्राथमिकताएं , प्रत्यास्मरण सिद्धान्त, ज्ञानोपयोग तथा आलोचनात्मक प्रश्न पूछने की क्षमता पाई गई जबकि राजस्थान के स्कूलों के विद्यार्थियों की प्राथमिकताओं के मध्य दोनों स्थान आपस में बदल गये। राजस्थान तथा केन्द्रीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की भौतिक शास्त्र के प्रति अभिवृत्ति, उसके अध्ययन एवं उसके प्रति सोच-विचार में महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया। दोनों प्रकार के विद्यार्थियों में भौतिक शास्त्र पढ़ने के प्रति उत्साह में किसी प्रकार का अन्तर नहीं पाया गया। दोनों प्रकार के विद्यार्थी, सिद्धान्तों की संप्राप्ति में असमान हैं जबकि प्रत्यास्मरण, ज्ञानोपयोगी तथा प्रश्न पूछने में असमान नहीं हैं ।

उषा रैना : पाठ्यक्रम पर स्वातन्त्र्योन्मुखी एवं स्नातक बालक-पालक के सम्बन्धों के सन्दर्भ में सृजनात्मक प्रत्यक्षन तथा मताग्रहों का अनुस्थापन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1984 ।

रैना (1984) ने पाठ्यक्रम पर स्वातन्त्र्योन्मुखी एवं बालक-पालक के सम्बन्धों के सन्दर्भ में सृजनात्मक प्रत्यक्षन् तथा मताग्रही स्नातकों पर किये गये शोध में पाया कि उच्च सृजनात्मक विषय (स्नातक-स्नातिकाओं) कम मताग्रही तथा अधिक स्वतन्त्र विचार वाले पाये गये। वे पाठ्यक्रम पर भी कम ध्यान देने वाले पाये गये। इनके माता-पिता के साथ सम्बन्धों में भी अधिक संरक्षा की भावना नहीं पाई गई। उनके माता-पिता अधिक मांग वाले पाये गये। इनके माता-पिता अपने पाल्यों के प्रति संकेतों द्वारा अधिक स्नेह रखने वाले पाये गये। सृजनात्मक प्रत्यक्षन के लिये स्नेह एवं पुरस्कार एक ही घटक प्रकाश में आया । सृजनात्मकता पर उपेक्षापूर्ण तथा संरक्षापूर्ण सम्बन्ध प्रतिकूल प्रभाव डालते पाये गये। पालक तथा पाल्यों के बीच पुरस्कारात्मक सम्बन्धों को अधिक भार (महत्व) मिला । कम सृजनशील विषयो वाले बालकों के माता-पिता अपने पाल्यों के साथ सम्बन्धों में अस्वीकृति वाले पाये गये ।

शोध-अनुक्रमणिका

अग्रवाल, अंजना : सुविधा प्राप्त एवं सुविधाहीन बच्चों की बौद्धिक क्षमता, व्यक्तित्व, संरचना एवं भग्नाशाओं के प्रति प्रतिक्रियाओं का अध्ययन। एम.एड.

अरोड़ा, राधा : माध्यमिक स्तर पर छात्रों के मूल्य एवं समायोजन का एक अध्ययन। एम.एड., अजमेर वि.वि., 1988

अलख, एस.पी. सिंह : Students motivation to work. Ph.D., Raj. Uni., 1977.

अली, असगर : A comparative study of achievement motivation personality needs values, creativity, socio-economic states and performance of destitute and non-destitute children of HSS at Ajmer. M.Ed., Raj. Uni., 1984

आमेटा, सुशीला : उच्च माध्यमिक स्तर पर संगीत और गैर संगीत के विद्यार्थियों के जीवन-मूल्यों एवं सौन्दर्य बोध का तुलनात्मक अध्ययन। एम.एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

उपाध्याय, जी.पी. : A study of intellectual developments and its relationship with intelligence and achievement of XI grade science pupils. M.Ed., Raj. Uni. 1978

ओझा, विमला : कला, विज्ञान एवं भाषा संकायों में सृजनशील किशोरों के व्यक्तित्व प्रतिरूपों का तुलनात्मक अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

कच्छावा, प्रेमलता : छात्राओं पर योगाभ्यास के प्रभावों का अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

कश्यप, दीपिका : उच्च व न्यून दुश्चिताओं वाले किशोरों की व्यक्तित्व विशेषताओं का अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

कालरा, हरिविंदर : बालकों के स्वस्फूर्त आरेखन का तुलनात्मक अध्ययन। एम.एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1986

कुमार, अशोक : अनुसूचित जातियों एवं उच्च जातियों के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याएं एवं बुद्धिलब्धि। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

कुमार, अशोक : ग्रामीण और शहरी छात्रों के मूल्यों एवं व्यक्तित्व समायोजन का एक अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

कुमार, प्रमोद : विकलांग छात्रों का समायोजन दुश्चिन्ता एवं आत्म-प्रत्यय सम्बन्धी तुलनात्मक अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

कुमारी, मधु : कार्यशील तथा अकार्यशील महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व का अध्ययन। एम.एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1987

कुमार, राकेश : A comparative study of VIII grade pupils perception of science lesson attitude towards science learning and congnitive preferences with their scholastic achievement. M.Ed., Raj. Uni., 1981

कुमार, विनीत : सुधार-गृहों में निवास करने वाले लड़के-लड़कियों के व्यक्तित्व का प्रारूप (स्ट्रक्चर)। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

कुमार, सन्तोष : माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जनजातियों के छात्रों की एवं उच्च वर्ग जातियों के छात्रों की बुद्धि एवं उपलब्धि अभिलेख (उपलब्धि, उत्प्रेरणा) का तुलनात्मक अध्ययन । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1977

कुमावत, उषा : A psychological study of convicted delinquents. M.Ed., Udai. Uni., 1986

कुलश्रेष्ठ, विनीता : स्वस्फूर्ति चित्रों के माध्यम से उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता एवं आकांक्षा स्तर का अध्ययन। एम.एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

कुलश्रेष्ठ, संजू : स्वस्फूर्त कला में व्यक्तित्व की झलक। एम.एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1987

कोठारी, ज्योत्स्ना : उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं द्वारा उनके कक्षा-कक्ष के अनुभवों का प्रत्यक्षीकरण तथा उनका बुद्धि स्तर। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

कोली, गोपी शहाय : माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत जनजाति के छात्रावासीय एवं गैर छात्रावासीय विद्यार्थियों की समायोजन क्षमताओं एवं शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन । एम.एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

कौर, मनजीत : A comparative study of certain psychogenic variables of handicapped and non-handicapped children, studying in normal school., special school running under integrated education scheme. M.Ed., Raj. Uni., 1985

कौर, मनप्रीत : व्यक्तित्वबोधक शिशु कल्पनाएं। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

कौल, आरती : अनुशासित एवं अनुशासनहीन विद्यार्थियों की महत्वाकांक्षा के स्व-अपेक्षित स्तर का तुलनात्मक अध्ययन। एम.एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1985

कौशिक, पुष्पा : लघु, मध्यम एवं वृहद परिवार में पलने वाली किशोर छात्राओं के समायोजन, सीखने की गति एवं शैक्षिक निष्पत्ति का अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

कौशिक, संतोष : विकलांग किशोर बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय. 1982

खरबंदा, सतविंदर कौर : विद्यार्थियों के मूल्यों का लिंगभेद, विद्यालयी वातावरण तथा अभिभावकीय मूल्यों के सन्दर्भ में अध्ययन। एम.एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1988

खत्री, नीलम : अनुसूचित जाति के किशोर छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

खुलबे, दिगम्बर : Self concept and its relationship with adjustment and scholastic achievement. M.Ed., Raj. Uni., 1979

गर्ग, जगदीशशरण : A study of achievement motivation, self concept values, socio-economic status and performance of H.S. students in relation to socio emotional climate of high and low achieving schools of Rajasthan, Ph.D. Raj. Uni., 1986

गर्ग, नीतारानी : किशोर विद्यार्थियों के मूल्यों को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन। एम.एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1987

गर्ग, मधुबाला : सृजनशील बालकों के व्यक्तित्व संरूपों का अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

गिरी, आभा : कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व, गुणों, आवश्यकताओं एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

गुप्ता, चंचल : गरीबी की रेखा से नीचे वाले परिवारों के अनुसूचित व जनजातियों के विद्यार्थियों एवं सवर्ण हिंदू विद्यार्थियों की दुश्चिंताओं एवं व्यक्तित्व समायोजन समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

गुप्ता, ज्योत्स्ना : प्राथमिक विद्यालय के बालकों की संज्ञानात्मक प्रक्रिया, सीखने की गति व भग्नाशाओं के प्रति प्रतिक्रियाओं का पैतृक व्यवसायों की दृष्टि से अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

गुप्ता, नीरादेवी : उच्च व निम्न विचार वाली छात्राओं के अन्तर्द्वन्द्वों, चिन्ताओं, भयों व सुरक्षा प्रक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976।

गुप्ता, नीलम : सुरक्षित व असुरक्षित छात्रों के स्वभाव, समायोजन तथा उपलब्धि का अध्ययन। एम. एड., वनस्थली विश्वविद्यालय, 1986 ।

गुप्ता, नेत्रपाल : To study the relationship between drawing ability, reading ability and intelligence of school-going children. M. Ed. Raj. University., 1975

गुप्ता, मधुबाला : ज्येष्ठ बालक एवं बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन। एम. एड, राज. विश्वविद्यालय, 1987

गुप्ता, मीनाक्षी : हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत किशोर छात्रों के व्यक्तित्व, समायोजन तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन । एम. एड., वनस्थली विश्वविद्यालय, 1984

गुप्ता, रजनीबाला : नर्सरी स्कूल के व्यवहार सम्बन्धी कठिनाइयों वाले बच्चों के व्यक्तित्व का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

गुप्ता, रंजना : विद्यार्थियों की विज्ञान विषयक उपलब्धि का उनके पर्यावरण अवबोध पर प्रभाव । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

गुप्ता, शीलप्रिया : Personal values of players. M.Ed., Raj. University, 1975

गुरनानी, लीला : सृजनात्मक छात्रों की विद्यालयी परिस्थितियों में कुण्ठा प्रतिक्रियाओं का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

गुलाटी, मंजू : आयु तथा शैक्षिक स्तर परिवर्तन के साथ-साथ बालिकाओं की मानसिक योग्यता, सांवेगिक समायोजन व रुचियों का तुलनात्मक अध्ययन । एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1988

गोयल, आशा : उच्च व निम्न सृजनशील छात्राओं की स्वधारणाओं व सुरक्षा प्रक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

गोयल, कृष्णा : एकल परिवार के सामाजिक परिवेश में पले विद्यालयी किशोरों के व्यक्तित्व के कतिपय तत्वों का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

गोयल, मंजूषा : राजस्थान में माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में सृजनात्मकता के स्तर एवं उसमें सहायक तथा बाधक स्थितियों का अंवेषणात्मक अध्ययन। एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1982

गोलवलकर, शोभा : A study of scientific attitudes of higher secondary school effecting different optionals. M. Ed., Udaipur University, 1978

ग्रोवर, आशा : सेवारहित माताओं के बच्चों का समायोजन – एक सर्वेक्षण। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय 1979

गंगवार, उषा : A study of personality patterns of the congenitally and precidentally blind pupils, M. Ed., Raj. University, 1983

चौधरी, नीलम : सह-शैक्षिक तथा समलिंगीय विद्यालयी छात्र-छात्राओं की सांवेगिक, परिकल्पना तथा सामान्य रुचियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1984

चौधरी, रूपाली : The relationship of reading interest of adolescents and their achievement motivation. M. Ed., Udaipur University, 1982

चौधरी, रेखारानी : A study of the effect of training of integrated science process skills on scholastic achievement, value orientation and attitude towards science learning. M. Ed., Raj. University, 1985

चौधरी, सोहनवीरसिंह : अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी छात्रों की समाजमिति स्तर एवं समायोजन समस्याएं, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

जैन, अमरीशकुमार : अहिन्दी भाषी छात्रों की हिन्दी के अध्ययन में विभिन्न कठिनाइयों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

जैन, नीला : कक्षा 4 में सृजनात्मकता का पोषण, एम.एड., राज. विश्वद्यिालय, 1984

जैन, मोहिता : विविध नेतृत्व शैलियों का समूहों की संचार प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ 1986

जैन, विजय कुमार : Hypothetic deductive thinking among VI, VII and VIII grade students. M. Ed., Raj. University, 1985.

जोशी, कुमकुम : To study the effect of certain thinking tasks on developing logical thinking and as the achievement of students in Mathematics and Science subjects in class VI. M. Ed., Raj. University, 1978.

जोशी, गोपाललाल : Projection of personality in spontaneous drawings, M. Ed., Raj. University, 1978

जोहर, पुष्पा : उदयपुर शहर के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत जनजाति एवं गैर जनजाति (सवर्ण) छात्रों की बुद्धिलब्धि एवं समायोजन के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

टाक, नीलू : असामान्य तथा अपचारी किशोरों का व्यक्तित्व एवं मूल्य लक्षण, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

दानी, डी. एन. : Scientific attitude and cognitive styles of Higher Secondary students. Ph. D., Raj. University, 1984

डोगरा, देवकुमारी : आवासीय चक्षुहीन बालकों का व्यक्तित्व अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

तलेसरा, सुषमा : प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों की समायोजनात्मक समस्याओं का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

ताज़, सकीना : सह शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन समस्याएं, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1984

तिवारी, उमा : सृजनशील लेखकों व चित्रकारों की विचार-शैली तथा व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

तिवारी, पूनम : प्रतिभाशाली किशोरों की विशेषताओं का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

तिवारी, सरस्वती कामिनी : किशोरों एवं किशोरियों की बुद्धि एवं मूल्यों में सम्बन्ध, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

त्यागी, अंजना : A study of creativity intelligence, language ability and academic achivement of artsstudents. M. Ed., Raj. University, 1986.

त्यागी, बी. एस. : Cognitive development of Physically handicapped in an integrated set up. M. Ed., Raj. University, 1986.

त्यागी, मंजू : स्वधारणा के सन्दर्भ में छात्र-छात्राओं की शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1984

त्यागी, वीना : सांवेगिक परिपक्वता के सन्दर्भ में छात्र-छात्राओं की शैक्षिक एवं व्यावसायिक रुचियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1985

दईया, रजनी : माध्यमिक विद्यालयों में मनोनीत, निर्वाचित एवं समाजमितिक नेताओं के व्यक्तित्व का अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1988

दशोरा, अनुसूर्या : सामाजिक-आर्थिक स्तर के संदर्भ में शिशुओं के व्यक्तित्व का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

दास, प्रहलाद : A study of self concept of scheduled caste and other students. M. Ed., Raj. University, 1985

दीक्षित, आशा : A study of educational need patterns of adults in the Urban, Rural and Tribal communities of Rajasthan. Ph. D., Raj. University, 1975.

दीक्षित, रश्मि : गुरुकुल कांगड़ी में पढ़ने वाले छात्रों के व्यक्तित्व संरचना का अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1985

दुबे, ओमबाबू : विद्यालय पूर्व के बच्चों में भाषाई विकास, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

दुबे, विनीता : A comparative study of the effect of thinking games and objective based teaching on the development of creativity and achievement in science at primary level in rural area. M. Ed., Raj. University, 1985

देवी, कमला : A study of learning disabilities of primary children in relation to health and behavioural problems. M. Ed. Raj. University, 1985.

धमीजा, रेखा : शैक्षिक समस्या (प्राथमिक शिक्षा को सार्वजनीन कैसे बनाएं, के सन्दर्भ में निर्दिष्ट समूहों की चिन्तन प्रक्रिया का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

धरेजा, संतोष : उच्च प्राथमिक स्तर पर अकादमिक नेतृत्व देने वाली छात्राओं के व्यक्तित्व का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

धोलिया, हरीराम : ग्रामीण क्षेत्र के अनुसुचित जाति के विद्यार्थियों का शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में समायोजन (कुछ प्रकरण अध्ययन), एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

नरूला, प्रतापकौर : नर्सरी विद्यालयों के बालक व बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास सामाजिक-आर्थिक स्तर की भग्नाशाओं के प्रति प्रतिक्रियाओं तथा सामाजिक व्यवहार के प्रतिमानों के सन्दर्भ में खेल प्राथमिकताएं, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1982

नैय्यर, उषा : उच्च माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों में मताग्रहिता और अधिगमार्थी मूल्य, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

नागर, दिव्या : A study of socio-psychological problems and personality pattern of deprived children living in destitute homes of Rajasthan. Ph. D., Raj. University, 1985

प्रमिला, महीमा : उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पर्यावरण प्रदूषण सम्बन्धी जागरूकता, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

पंवार, लालवानी : मूक, बधिर एवं सामान्य बालकों के व्यक्तित्व संरचना एवं मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1985

पाण्डे, शशि : अहिन्दी भाषी छात्रों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

पाण्डेय, वन्दना : बालिकाओं के स्वस्फूर्ति चित्रों के माध्यम से व्यक्तित्व का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

पारीख, इंदुबाला : एकल और संयुक्त परिवार की किशोर छात्राओं के समायोजन, सीखने की गति व शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

पारीक, गायत्री : विद्यालयी संगठनात्मक पर्यावरण का माध्यमिक स्तर के बालकों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति व समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

पारीक, लक्ष्मीनारायण: छात्रों का आत्म-सम्प्रत्यय (विभिन्न समुदायों और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के साथ सम्बन्ध), एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

फगेरिया, देवकरण : A comparative study of the personality variables of popular isolate, neglected and rejected students. M. Ed., Raj. Uni., 1987

बंगा, शकुन्तला : प्राथमिक विद्यालयों में बालकों की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं एवं व्यक्तित्व विशेषताओं का अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वद्यिालय, 1980

बरवाल, सुकेश : माध्यमिक स्तर पर नागरिक शास्त्र सम्बन्धी सम्प्रत्यों का छात्राओं की बुद्धिलब्धि, शैक्षिक निष्पत्ति और सहशैक्षिक क्रियाओं के सन्दर्भ में अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वद्यिालय, 1983

बानू, रशीदा : नवीं कक्षा के विद्यार्थियों की जीव विज्ञान विषय में अधिगम कठिनाइयों का निदानात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वद्यिालय, 1984

बाबेल, मंजूला : A study of adjustment problems of foreign students studying in the universities of Rajasthan. Ph.D., Raj. University, 1986

बाला, जोया : अग्रधर्षी तथा सहनशील बालिकाओं का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

बुरड़, गणपतलाल : किशोर छात्र-छात्राओं की उपलब्धिप्रेरणा तथा स्वधारणा का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

बेनीवाल, दयावती : अध्ययन के विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर किशोरों की आवश्यकता का अध्ययन तथा उनका संज्ञानात्मक विकास से सम्बन्ध, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

भगवती, मूलचन्द : Level of aspiration and vocational interests of bright and dull adolescents. M. Ed., Raj. University, 1982

भट्ट, राजकुमार : अनिवार्य विज्ञान शिक्षण के परिणामस्वरूप उच्च प्राथमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्र-छात्राओं के वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

भटनागर, अनामिका : कार्यशील महिलाओं के बच्चों की समायोजन की समस्याओं का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

भटनागर, अलका : किशोरावस्था की छात्राओं में नैतिक मूल्य और समायोजन, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

भटनागर, राकेश : स्वस्फूर्त चित्रों के माध्यम से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धि एवं सृजनात्मकता का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

भदोरिया, नवनीतसिंह : Learning disabilities in Primary Education. M. Ed., Raj. University, 1984

मसीह, रीनासिंह : Personality traits, achievement, motivation and problems of low and high achievers. M. Ed., Udaipur University, 1985

माथुर, नूतन : A study of logical thinking among certain groups of adolescent pupils. M. Ed., Rajasthan University, 1983

माथुर, मधु : A study of growth of Exparimental mind during adolescents. M. Ed., Rajasthan University, 1981

माथुर, सुषमा : कार्यशील एवं सेवारहित महिलाओं के बच्चों के समायोजन की समस्याएं एवं उनके आराम सम्प्रत्यय, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

मिश्र, व्यंजना : किशोरों व पूर्व किशोरों में सृजनात्मक चिन्तन एवं उसका सृजनात्मक चित्रकारी से सम्बन्ध, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

मिश्र, सुभाषचन्द्र : किशोरों की यौन के प्रति अभिवृत्तियाँ, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1975

मिश्रा, एस. पी. : A comparative study of high and low achievers in Science, Commerce and Arts on creativity, intelligence and anxiety. Ph. D., Raj. University, 1976.

मिश्रा, करूणाशंकर : Effect of children's perception of home and school environments on their scientific creativity. Ph. D., Raj. University, 1979.

मिश्रा, डी. एन. : Pre-adolescents creative potentiality in Art and its relationship with creative thinking, personality and intelligence. Ph. D., Raj. University, 1979.

मिश्रा, सरला : शिक्षा वय के बालक-बालिकाओं के भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कुछ तत्वों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

मीर, अवतारकृष्ण : A study of the creative talent of Kashmiri adolescents, M. Ed., Raj. University, 1980

मैथ्यूज, अनीता : श्रेष्ठ एवं पिछड़े छात्र-छात्राओं के आत्म-सम्बोध का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986।

मल्होत्रा, राजश्री : A study of socially accepted and rejected adolescent boys of class X (in relation to their intelligence, personality, socio-economic status, general disappointed family relation, achievement and interes.) M. Ed., Jodhpur University, 1987.

मेहता, प्रवीणकुमार : Intelligence, academic achivement, achivement motivation and levels of aspiration of socially deprived children,studying in schools with different environments. M. Ed., Raj. University, 1976

मेहरोत्रा, पुष्पा : लोकप्रिय और खिलाड़ी छात्र-छात्राओं का समायोजन सम्बन्धी अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

मोती, जेहरा : जनजाति तथा गैर जनजाति किशोर छात्र-छात्राओं की बुद्धि एवं आकांक्षा का सम्बन्ध, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1985

मोदी, मीना : लोकप्रिय, एकाकी एवं तिरस्कृत छात्राओं के व्यक्तित्व प्रतिमानों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

यादव, बृजभूषण : A study of learning styles; self concept, socio-economic status and performance of Higher Secondary Commerce students of Ajmer. M. Ed., Raj. University, 1987

राठी, सुमनकुमारी : किशोर छात्राओं का प्राकृतिक वातावरण अवबोध, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

राठौड़, कानसिंह : विकलांग बालकों के व्यक्तित्व संरूपों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

राणा, दिलीपसिंह : A comparative study of the personality traits of high and low achievers science students of class X. M. Ed., Raj. University, 1976.

राधानी, मीरा : A comparative study of achivements, motivation, students moral, personality, needs, socio-economic status, performance and other ecological co-relates, of scheduled castes and non-scheduled castes prospective teachers of Ajmer. M. Ed., Raj. University, 1985.

रानी, मधु : Classified ability of urban and rural children in grade : one to three. M. Ed., Raj. University, 1985.

रायजादा, वंदना : A study of relationship between problem solving and some relative personality traits using piaget type tasks, M. Ed., Raj. University, 1976.

रैना, उषा : Creative perception, dogmatism, syllabus broadness, syllabus freedom orientation and parent-child relationship in graduate science students. Ph, D., Raj. University, 1984.

वर्मा, अरुणा : विकास के विभिन्न चरणों पर छात्रों की परिपक्वता एवं व्यक्तित्व के गुणों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

वर्मा, आशा : किशोरों की दृष्टि में आदर्श व्यक्तियों की विशेषताओं का एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

वर्मा, उमा : व्यक्तित्व आयामों का वैज्ञानिक सम्प्रत्ययों के निर्माण पर प्रभाव तथा उनके परिणामस्वरूप भौतिक वातावरण को समझने में उनकी भूमिका, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

वर्मा, उषा : कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की आकांक्षाओं, अभिवृत्तियों और समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983 ।

वर्मा, नम्रता : खिलाड़ी छात्राओं तथा न खेलने वाली छात्राओं के समायोजन तथा व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1984

वर्मा, निर्मला : उच्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्राथमिक विद्यालयों के बालकों के व्यक्तित्व और बुद्धि का अध्ययन, एम. एड., जोधपुर, विश्वविद्यालय, 1986

वर्मा,राजबहादुर : विज्ञान में अध्ययन आदतें एवं कुशलतायें, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1975

वर्मा,रामपालसिंह : A study of school learning as a functions of socio-emotional climate of the class. Ph. D., Raj. University, 1976.

वर्मा, सन्तोष : Extent of creativity of class VIII students studying general science and science as disciplines. M. Ed., Raj. University, 1979.

व्यास, दुर्गा : किशोरावस्था के प्रारम्भिक चरण में बालिकाओं की मानसिक योग्यताओं तथा विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

व्यास,भंवरलाल : आठवीं श्रेणी के छात्रों का हिन्दी में समस्या समाधान योग्यता का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

व्यास, त्रिलोकीनाथ : माध्यमिक स्तर पर विज्ञान पाठ्यक्रम के द्वारा वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

विग, सरिता : बालकों के स्वस्फूर्त चित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, एम. एड., राज.विश्वविद्यालय,1983

वैद्य, नरेन्द्र : A study of some aspects of thinking among science students of adolescent age. Ph. D., Raj. University, 1974.

शहजहाँ, कुमारी : प्राथमिक शालाओं में कुण्ठा की परिस्थितियाँ, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1983

विष्ट, बच्चनसिंह : विद्यार्थियों की अपने विद्यालयों के प्रति धारणाओं का अध्ययन । एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1987

शुक्ला, शारदा : विभिन्न आयु-वर्ग की बालिकाओं के स्वस्फूर्त चित्रों का अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विश्वविद्यालय, 1985

श्रेष्ठिया, सत्यबहादुर : The acquisition of problem-solving process during

श्रीवास्त, चन्द्रप्रभा : महाविद्यालयों की छात्राओं के मूल्यों, समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

श्रीवास्तव, मंजू : संवेगात्मक रूप से विसामान्य छात्राओं का वृत अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1986

शर्मा, अंजना : सीखने की गति के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता, समायोजन और निष्पत्ति का अध्ययन । एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1985

शर्मा, अनिल बाबू : A study of inter-relationship among attitude towards commerce learning environment and achievement in commerce. M. Ed., Raj. Uni., 1984

शर्मा, अमिताभ : उच्च माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें और उनका शैक्षिक सम्प्राप्ति एवं आर्थिक स्थिति के साथ सम्बन्ध – एक शोध एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

शर्मा, अरुणा : ग्रामीण छात्राओं में समायोजन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

शर्मा, आशा : ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयी छात्रों के कक्षाकक्ष अधिगम, पर्यावरण तथा व्यावसायिक रुचियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

शर्मा, उषा : विद्यालय से छात्राओं तथा उनके अभिभावकों की अपेक्षाएँ, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

शर्मा, उषा : पारिवारिक सम्बन्धों के सन्दर्भ में किशोर विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय व समायोजन का अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1986

शर्मा, एस. एन. : An investigation into the state of anxiety among students belonging to the families of below the poverty line. M. Ed., Raj. Uni., 1975

शर्मा, गिरीशकुमार : माध्यमिक शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों की समायोजनात्मक समस्याओं का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

शर्मा, ओमप्रकाश : Assessment of anxiety among the H.S.S. students of Jodhpur and the relationship of anxiety with achievement and economic status. M.Ed., Raj. Uni., 1980

शर्मा, कुसुम : माध्यमिक स्तर पर हिन्दी विषय के प्रति छात्र-छात्राओं की अभिवृत्तियों एवं रुचियों का एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

शर्मा, कुसुमलता : समस्यात्मक व्यवहार से ग्रसित कुछ बालकों का वृत्त अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

शर्मा, चन्द्रकांता : माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों के विद्यालय समायोजन, बुद्धि व शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1976

शर्मा, प्रदीपकुमार : A comparative study of creative performance and personality traits between SC/ST science students of urban area, among SC/ST science students of rural areas of grade IX. M.Ed., Raj. Uni., 1985

शर्मा, प्रफल्ला : निजी छात्रावास तथा विद्यालयी छात्रावास में रहने वाले छात्रों की भग्नाशाओं के प्रति प्रतिक्रिया, समायोजन तथा सामाजिक व्यवहार के प्रतिमानों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1984

शर्मा, प्रवीणकुमार : छोटे व बड़े आकार के परिवारों की छात्राओं का व्यक्तित्व विषयक तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

शर्मा, पुरुषोत्तमलाल : अच्छे खिलाड़ी तथा न खेलने वाले किशोर छात्रों के व्यक्तित्व का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

शर्मा, पुष्पा : हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की महत्वाकांक्षाओं, स्वकल्पना एवं व्यक्तित्व विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1984

शर्मा, भुवनेशचन्द्र : अच्छे खिलाड़ियों की खिलाड़ी भावना की अभिवृत्ति का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

शर्मा, रविदत्त : किशोर छात्रों की सृजनात्मकता का सामाजिक-आर्थिक स्तर, हिन्दी व गणित निष्पत्तियों से सह-सम्बन्ध, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

शर्मा, वन्दना : औद्योगिक तथा अनौद्योगिक क्षेत्र में अध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व के गुण तथा समायोजन का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

शर्मा, रेखा : छात्राओं में उत्तरदायित्व की भावनाएँ व इन भावनाओं का व्यक्तित्व समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि व आर्थिक स्थिति से सह-सम्बन्ध। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

शर्मा, शशिकला : Values of college students of different socio-economic groups and relationship with their intelligence and adjustment in colleges. Ph. D., Raj. Uni., 1986

शर्मा, रेणु : वाणिज्य वर्ग में अध्ययन करने वाले छात्र तथा छात्राओं की मानसिक योग्यता तथा व्यावसायिक रुचियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

शर्मा, लक्ष्मीकुमारी : उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विकलांग बालकों की समस्याओं एवं समायोजन का एक अध्ययन, एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, डबोक, 1988

शर्मा, शशिबाला : उच्च माध्यमिक विद्यालय में समस्यात्मक बालकों के समायोजन का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

शर्मा, शिवदयाल : 11+ से 13+ किशोर वर्ग के प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण व अनुत्तीर्ण छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

शर्मा, श्रीपाल : Self-concept and occupational prefference and their relationship with intelligence and socio-economic status of delta class students. M. Ed., Raj. Uni., 1980

शर्मा, संजयकुमार : A comparative study of social skills and their adjustment among orthopaetically handicap and normal children. M. Ed., Ajmer, 1988

शर्मा, एम. के. A comparative study of cognitive abilities of sighted and non-sighted. M. Ed., Raj. Uni., 1987

शर्मा, प्रज. के. : Relationship of intelligence and creativity of school-going young students. M. Ed., Raj. Uni., 1976

शर्मा, सरोज : विकलांग एवं सामान्य बालकों की व्यक्तित्व बोधक कल्पनाएँ, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

शर्मा, सत्यप्रकाश : लोकप्रिय, तिरस्कृत एवं एकाकी छात्रों की अध्ययन आदतें एवं व्यक्तित्व समायोजन के घटकों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

शर्मा, सन्ध्या : अजमेर नगर के स्लम क्षेत्रों के दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता, आत्माभिव्यक्ति, सामाजिक-आर्थिक स्तर दुश्चिन्ता एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति का एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

शर्मा, स्नेहलता : विभिन्न आयु स्तर के किशोर विद्यार्थियों पर विज्ञान सम्प्रत्ययों के विकास का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

शर्मा, सूरजपाल : अध्ययन आदतों एवं व्यक्तित्व समायोजन समस्याओं का मूल्यांकन – एक तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

शर्मा, ज्ञानेन्द्रप्रकाश : उच्च व निम्न सृजनात्मक छात्रों का व्यक्तित्व समायोजन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

श्रीवास्तव, ऋषेशप्रकाश : रोजे ज्वाइंग तकनीक पर वामहस्त, विकलांग एवं सामान्य छात्र-छात्राओं के अग्रघर्षण का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

श्रीवास्तव, मंगला : सुरक्षा-असुरक्षा के सन्दर्भ में छात्र-छात्राओं की समस्याओं का अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1985

श्रीवास्तव, मंजू : संवेगात्मक संरूप से विसामान्य छात्राओं का वृत्त अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1986

सक्सेना, कनक : महाविद्यालय की छात्राओं के मूल्यों, प्रगतिशीलता, धार्मिकता एवं उन्माद अवस्था का अध्ययन, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

सक्सेना, रश्मि : इलाहाबाद नगर में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में दुश्चिन्ता एवं उत्तरदायित्व की भावनाएँ, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

सक्सेना, शान्ता : अनाथ व सनाथ बालकों के व्यक्तित्व, बुद्धि एवं समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

सक्सेना, शालिनी : विषमलिंगीय तथा समलिंगीय विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों की व्यक्तित्व संरचना का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

सन्धु, तेजसिंह : A factional study of adolescent through using piaget type tasks. Ph. D., Raj. Uni., 1986

सन्तोष : किशोर अपराधियों की चिन्तन प्रक्रिया का पियाजे के सिद्धान्तों के सन्दर्भ में अन्वेषणात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

साह रामगोपाल : A factional study of some ...

सिनसिनवार, सत्येन्द्र सिंह : उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की खिलाड़ी भावना अभिवृत्ति का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

सिंह, आर. आर : Self concept, aspirations and achievement motivaton of Tribal adolescentat Rajasthan. Ph. d., Raj. Uni., 1985

सिंह, उम्मेद : छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन में सह-सम्बन्ध का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

सिंह, एस. के. : A comparative study of the effectiveness at teaching through integrated and disciplinary approach on the development of science concept and achievement motivation in the students of class VIII. M. Ed., Raj. Uni., 1979

सिंह, कृपाल : कृषि संकाय के उच्च तथा निम्न उपलब्धि वाले छात्रों की पृष्ठभूमि का एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

सिंह, नरेन्द्र : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में दुश्चिन्ता एवं व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1986

सिंह, प्रेम : ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों की प्रचलित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

सिंह, भूपेन्द्र : ग्रामीण किशोरों की शहरी विद्यालय में समायोजन की समस्याएँ, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1986

सिंह, मुकुन्द : माध्यमिक स्तर पर विभिन्न संकाय के एवं खिलाड़ी विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

सिंह, रणवीर : Some personality correlates of creativity–a study of Indian science, arts and commerce students. Ph. D., Raj. Uni., 1977

सिंह, राघवेन्द्र प्रताप सिंह : खिलाड़ी तथा न खेलने वाले विद्यार्थियों की पेशीय योग्यता का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय., 1979

सिंह, सत्यपाल : A study of self concept achievement motivation anxiety and performance of class X scheduled caste students of meerut district. M Ed., Raj. Uni., 1979.

सिंह, हरिओम : अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों में दुश्चिन्ता एवं मनस्ताप, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

सुकुमारन, पद्मिनी मायानाथ : The growth of exclusion of variable during adolescence. Ph. D., Raj. Uni., 1982

सेवा, जुगलकिशोर : आयु 5 से 9 के बच्चों के रेखांकनों का उनकी बुद्धिलब्धि के सन्दर्भ में सापेक्षिक विश्लेषण, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

सैनी, बलवीरसिंह : अच्छे खिलाड़ी तथा न खेलने वाले किशोर छात्रों की शारीरिक योग्यता का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

साहनी, ऋषिकुमार : विज्ञान मेले में सहभागी विद्यार्थियों का सृजनात्मकता सम्बन्धी तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

सोनी, शारदा : A comparative study of Scheduled caste and non-scheduled caste graduate students in relation to personality adjustment and self concept. M. Ed., Jodh. Uni., 1987

सोलोमन, जॉन सलिविया : A study of growth of logical thinking during adolescence by using written tasks. M. Ed., Raj. Uni., 1986

सोलंकी, रजनीश : लोकप्रिय एवं उपेक्षित शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व के घटकों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

त्रिपाठी, बी. के. : A study of relationship between personality pattern and social acceptance, classroom behaviour and academic achievement. Ph. D., Raj. Uni., 1976

✧ ✧ ✧ ✧

शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह-सम्बन्धक

- शेरसिंह बीदावत
- ज्ञान प्रकाश गुप्ता
- हरिश्चन्द्र शर्मा

औपचारिक शिक्षा की प्रभावशीलता के मूल्यांकन का आधार विद्यार्थी की शैक्षिक सम्प्राप्ति है। विद्यार्थी का परिवार, समाज और विद्यालय शैक्षिक प्रक्रिया की त्रिआयामी संरचना के घटक हैं । इन तीनों घटकों की परस्पर अन्तर्क्रिया व अन्तर्सम्बन्धों का सहारा लेकर विद्यार्थी की शैक्षिक सम्प्राप्ति प्रतिफलित होती है। निश्चित ही विद्यालय की भूमिका इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में प्रमुख है, तथापि अन्य दो घटकों की भूमिका भी कम नहीं है। अतः शैक्षिक सम्प्राप्ति के अपेक्षित और वास्तविक स्तर के बीच खाई समाज के लिये चिन्ता और अनुसन्धानकर्ता के लिए शोध का विषय बनती है।

राजस्थान में शिक्षा के क्षेत्र में 1975-88 की अवधि में शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह-सम्बन्धक के क्षेत्र में जो शोध कार्य हुए हैं (जिनमें से 9 शोध पीएच. डी. स्तर तथा शेष 146 शोध एम. एड. स्तर के हैं) उन्हें अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से शैक्षिक सम्प्राप्ति तथा बुद्धि, वातावरण, आत्म-प्रत्यय, अभिवृत्ति, चिन्ता, समाजमिति, अध्ययन आदतें, सामाजिक-आर्थिक स्तर, शैक्षिक अभिप्रेरण, व्यक्तित्व के अन्य घटक, सह-शैक्षिक प्रवृत्तियाँ, अध्ययन-अध्यापन संस्थितियाँ, अन्य विविध घटक आदि वर्गों में बांटा जा सकता है।

बुद्धि एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति

इस वर्ग में 14 शोधकर्ताओं ने बुद्धि का शैक्षिक सम्प्राप्ति के साथ सह-सम्बन्ध ज्ञात किया। इनमें एक पीएच. डी. स्तर का व शेष 13 एम. एड. स्तर के शोध कार्य हैं। श्रीवास्तव (1975), भटनागर (1977), सुश्री शशि (1978), सुश्री कौशिक (1978), सुश्री कटारा (1981), सन्तोष कुमार (1982), यादव (1982) व सिंह (1982) ने बुद्धि तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति में सकारात्मक सार्थक सह-सम्बन्ध ज्ञात किये। बीदावत (1976) ने अपने पीएच. डी. स्तर के शोध में यह भी ज्ञात किया कि कुछ ऐसे भी उच्च बुद्धिलब्धि वाले छात्र थे जिनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति

न्यून पायी गयी। अध्ययन निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि इसका प्रमुख कारण उनके घर का वातावरण दूषित होना था। इनके सम्पूर्ण न्यादर्श में ऐसे छात्रों के संपात की सघनता 14.11 प्रतिशत प्राप्त हुई। नगरीय व ग्रामीण क्षेत्रों में इस संपात की सघनता 15.11 व 13.12 प्रतिशत पाई गई। न्यून शैक्षिक सम्प्राप्ति वाले छात्रों का राजकीय व निजी विद्यालयों में यह प्रतिशत क्रमशः 12.81 तथा 18.33 प्रतिशत पाया गया।

श्रीमती त्यागी (1978) ने निष्कर्ष निकाला कि उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति के विद्यालयों में उच्च बुद्धिलब्धि की व निम्न शैक्षिक सम्प्राप्ति के विद्यालयों में औसत या औसत से न्यून बुद्धिलब्धि की छात्राएं अध्ययनरत पाई गईं। योग्य, अनुभवी, वेतनमानों से सन्तुष्ट व प्रधानाध्यापक से मधुर सम्बन्ध बनाये रखने वाली अध्यापिका/अध्यापक विद्यालय में उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति में अधिक सक्षम पाए गए। सुश्री कटारा (1981) व माथुर (1981) ने अपनी गवेषणा के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि दोनों ही प्रकार के वर्ग, यथा–लड़के व लड़कियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का उनकी बुद्धिलब्धि से सकारात्मक सार्थक सह-सम्बन्ध था। इसी प्रकार सुश्री भार्गव (1979) व खत्री (1984) के अनुसार विद्यार्थियों की अंग्रेजी विषय में सम्प्राप्ति तथा उनकी बुद्धिलब्धि में सकारात्मक सार्थक सह-सम्बन्ध की परिपुष्टि हुई। श्रीमती भारती (1987) ने भी विज्ञान व वाणिज्य वर्ग की छात्राओं की उपलब्धि एवं बुद्धि के मध्य धनात्मक सम्बन्ध ज्ञात किया। लेकिन विज्ञान के छात्रों की उपलब्धि एवं बुद्धि में निम्न स्तरीय सम्बन्ध पाया।

वातावरण तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति

विद्यालय एवं वातावरण इसके छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति को प्रभावित करते हैं। इस क्षेत्र में भी 13 एम.एड. स्तर पर शोध कार्य सम्पन्न हो चुके हैं। स्वामी (1976) के अनुसार समूह भावना और सम्प्रेषण, सरकारी और निजी दोनों प्रकार के विद्यालयों में परीक्षाफलों पर समान रूप से प्रभावी रहे। उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि औसत 40 वर्ष की आयु वाले अध्यापक के विद्यालयों में परीक्षा परिणाम सर्वोत्तम पाया गया। सुश्री खान (1976) ने ज्ञात किया कि छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति कक्षा के सामाजिक शैक्षिक संवेगात्मक वातावरण के निम्नलिखित चरों से सार्थक रूप से प्रभावित होती है – संवेगात्मक ऊष्मा, न्याययुक्त स्वीकृति, अनुकूलन, सम्प्रेषण तथा समग्र वातावरण। सुश्री शर्मा (1977) ने अपने शोध में ज्ञात किया कि विद्यार्थियों का गणित विषय में असफल होने का मुख्य कारण उनके मित्र व घर द्वारा इस विषय में ऋणात्मक उत्प्रेरण है। आवासीय व अनावासीय छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति के तुलनात्मक अध्ययन में सुश्री सारस्वत (1977) ने निष्कर्ष निकाला कि आवासीय छात्राएं अनावासीय छात्राओं की अपेक्षा अधिक ज्ञान रखती हैं। श्रीमती चौहान (1985) ने अपने अध्ययन में ज्ञात किया कि पड़ौस का वातावरण छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति को प्रभावित करता है।

पारीक (1979) के अनुसार उच्चतम शैक्षिक सम्प्राप्ति के माध्यमिक विद्यालय शान्त, स्वच्छ,

मैली-कुचैली गली क्षेत्र के बालकों से अधिक पाई गई। शुक्ला (1978) ने भी ज्ञात किया कि उच्च सम्प्राप्ति वाली शालाओं की भौतिक सुख-सुविधाएं यथा कक्षाकक्ष, पुस्तकालय, खेल का मैदान आदि श्रेष्ठ थे तथा इन विद्यालयों के अध्यापकों की योग्यता गुणात्मक रूप से भी उत्तम थी। सुश्री भार्गव (1979) के अनुसार अंग्रेजी में प्राप्त सम्प्राप्ति, विद्यालय का वातावरण, विद्यालय की प्रतिष्ठा तथा परिवार के सदस्यों का विद्यार्थियों के प्रति सोचने के तरीके पर निर्भर है। शिशुओं के भाषा विकास के अध्ययन में सुश्री मिश्रा (1980) ने निष्कर्ष निकाला कि अच्छे परिवार के बच्चों को समुन्नत वातावरण मिलने के कारण भाषा का गुणात्मक विकास होता है।

सैनिकों के भ्रमणशील और अभ्रमणशील परिवारों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों के अध्ययन में श्रीमती शर्मा (1981) ने पाया कि भ्रमणशील परिवारों की अपेक्षा अभ्रमणशील परिवारों में पढ़ने वाले लड़के-लड़कियाँ 12.12 तथा 24.73 प्रतिशत कम हैं। सुश्री शान्डिल्य (1982) ने हिन्दी भाषा में सम्प्राप्ति एवं सृजनात्मक लेखन पर पारिवारिक वातावरण तथा हिन्दी भाषा में सम्प्राप्ति के मध्य कोई सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं पाया। उन्होंने बालिकाओं की हिन्दी भाषा में सम्प्राप्ति तथा पारिवारिक वातावरण के अनुवर्तन तथा सुविधा-वंचन में सह-सम्बन्ध प्राप्त किया। लेकिन पारिवारिक वातावरण के शेष सात घटकों, यथा—नियन्त्रण, संरक्षणता, सामाजिक पार्थक्य, दण्ड, अस्वीकरण, अनुदेयता व समवेदन के मध्य कोई सह-सम्बन्ध नहीं पाया। सुश्री शर्मा (1984) ने ज्ञात किया कि विभिन्न विद्यालयों में वैयक्तिक भिन्नताएं विद्यमान हैं।

उदयपुर शहर के एक उच्च माध्यमिक विद्यालय का उच्च अकादमिक उपलब्धि के सन्दर्भ वाले अध्ययन में सुश्री करनावट (1984) ने ज्ञात किया कि इस विद्यालय के उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति के कारण थे— अधिकांश छात्राओं का प्रारम्भ से इस विद्यालय में अध्ययन, अनुभवी अध्यापकों का कुशल अध्यापन, सैद्धान्तिक व प्रायोगिक कार्यों पर समान बल व प्री-बोर्ड परीक्षा का आयोजन। भाटिया (1984) ने निष्कर्ष निकाला कि गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के बालक सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की अपेक्षा अधिक शैक्षिक व सह-शैक्षिक सम्प्राप्ति वाले थे तथा गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापक सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों की अपेक्षा अधिक निष्ठावान थे। गर्ग (1985) ने राजकीय व निजी विद्यालयों के भौतिक संसाधनों का शैक्षिक सम्प्राप्ति पर प्रभाव के अध्ययन में ज्ञात किया कि सामाजिक वातावरण का शैक्षिक सम्प्राप्ति से घनिष्ठ सम्बन्ध था। उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति वाला कोई भी गैर सरकारी विद्यालय बाजार या फैक्ट्री के समीप स्थित नहीं था। जिन विद्यालयों में कक्षा, फर्नीचर, शौचालय व मूत्रालय की समुचित व्यवस्था थी, उन विद्यालयों की शैक्षिक सम्प्राप्ति भी उच्च थी। सुश्री टाक (1986) ने भी ज्ञात किया कि निजी विद्यालयों की शैक्षिक सम्प्राप्ति सरकारी विद्यालयों की तुलना में उत्तम पायी गयी। उन्होंने वहां के भौतिक संसाधनों के अपेक्षाकृत श्रेष्ठ होने को इसका मुख्य कारण माना। सत्यवीर सिंह (1987) ने ज्ञात किया कि ग्रामीण कक्षाओं में किशोर छात्र वैयक्तिक-मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सामान्यतः अधिगम की समूह क्रियाओं के दौरान सक्रिय साझीदार के रूप में महसूस करते हैं लेकिन वे अपनी व्यक्तिगत कार्य भूमिका एवं समूह प्रेरित सोद्देश्य कार्य-सम्प्राप्ति के प्रति पूर्णतः उदासीन हैं।

आत्म-प्रत्यय तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति

इस वर्ग में केवल पांच ही शोध-कार्य उपलब्ध हैं और वे भी एम. एड. स्तर के । चिश्ती (1978) ने तीव्र व मन्द गति से सीखने वाले छात्रों की स्वधारणा का अध्ययन किया तथा पाया कि इन दोनों वर्गों के छात्रों की स्वधारणा और सम्प्राप्ति में कोई सहसम्बन्ध नहीं था। इस शोध के अनुसार विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय तथा उनकी सम्प्राप्ति में कोई समरूपता नहीं थी। जयप्रकाश (1980) ने गांवों के तथा दिल्ली के विद्यालयों के छात्रों के आत्म-प्रत्यय का अध्ययन किया तथा ज्ञात किया कि यद्यपि इन दोनों प्रकार के बालकों की वैयक्तिक प्राथमिकताएं भिन्न-भिन्न हैं परन्तु आत्म-प्रत्यय के सन्दर्भ में दोनों प्रकार के बालकों में कोई भिन्नता नहीं पाई गई।

जैन (1976) व श्रीमती चौबे (1982) ने आत्म-प्रत्यय व निष्पत्ति अभिप्रेरण में सकारात्मक सार्थक सह-सम्बन्ध पाया। श्रीमती सक्सेना (1986) ने ज्ञात किया कि सिक्ख, मुस्लिम, सिन्धी तथा क्रिश्चियन छात्र आत्म-प्रत्यय के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर रखते हैं।

अभिवृत्ति तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति

इस वर्ग में श्रीमती चौहान (1981) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति तथा उसका शैक्षिक सम्प्राप्ति पर प्रभाव के सम्बन्ध में अध्ययन किया तथा ज्ञात किया कि विद्यार्थियों की शिक्षक के प्रति अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। शहरी व ग्रामीण छात्राओं की शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। विद्यार्थियों की भौतिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन में सक्सेना (1984) ने अपने पीएच. डी. शोध में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान तथा केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड दोनों ही प्रकार के छात्रों में इस विषय के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति पाई तथा उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि छात्र एवं छात्राओं की इस विषय में अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। जगदीश प्रसाद (1985) ने अपने पीएच. डी. शोध में ज्ञात किया कि राजकीय व गैर राजकीय दोनों ही प्रकार के विद्यालयों के छात्रों व अध्यापकों की गणित विषय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई, लेकिन गैर राजकीय विद्यालयों के छात्रों में यह अभिवृत्ति ज्यादा पाई गई। उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि इन छात्रों की गणित विषय में सम्प्राप्ति तथा इनकी इस विषय के प्रति अभिवृत्ति में सकारात्मक व सार्थक सम्बन्ध था। राजस्थान के जनजाति के विद्यार्थियों की सम्प्राप्ति, सृजनात्मक क्षमता व वैज्ञानिक अभिवृत्ति के अपने पीएच. डी. अध्ययन में श्रीमती गोलवलकर (1986) ने देखा कि खुला दिमागीपन, बौद्धिक जिज्ञासा, सृजनात्मकता एवं पर्याप्त संमकों के आधार पर सामान्यीकरण इन चारों पक्षों की दृष्टि से गैर जनजाति विद्यार्थी, जनजाति विद्यार्थियों की तुलना में श्रेष्ठ पाये गये। दोनों प्रकार के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति समान रूप से उच्च पाई गई।

जिसका कारण उन्होंने उस विषय की अनिवार्यता व उपादेयता बतलाया तथा ज्ञात किया कि धनात्मक अभिवृत्ति के कारण विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति भी ज्यादा रही। इसी प्रकार वाजपेयी (1988) ने भी निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक स्तर पर छात्र-छात्राओं की वैज्ञानिक अभिरुचि एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति में सकारात्मक सार्थक सम्बन्ध था।

चिन्ता तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति

इस क्षेत्र में सभी शोध कार्य एम. एड. स्तर के हुए हैं। जो शोध कार्य सम्पन्न हुए हैं उनमें से एक अध्ययन में रीटा सेठी (1975) ने ज्ञात किया कि कक्षा 5 व 9 के छात्र-छात्राओं की सामान्य चिन्ता तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्य ऋणात्मक सह-सम्बन्ध था । उन्होंने यह भी तथ्य उजागर किया कि जिस प्रकार परीक्षा सम्बन्धी चिन्ता एवं सामान्य चिन्ता में सार्थक सह-सम्बन्ध है, उसी प्रकार परीक्षा सम्बन्धी चिन्ता एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर में भी सार्थक सह सम्बन्ध उल्लेखनीय है।

विमला शर्मा (1978) ने निष्कर्ष निकाले कि सरकारी विद्यालयों की कक्षा 9 व 10 की छात्राएं निजी विद्यालयों की इन्हीं कक्षाओं की छात्राओं से अधिक चिन्ताग्रस्त पाई गईं। उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि निजी व सरकारी विद्यालयों की कक्षा 9 की छात्राएं उन्हीं विद्यालयों की कक्षा 10 की छात्राओं से अधिक चिन्ताग्रस्त थीं। एक अन्य अध्ययन में सुश्री शर्मा (1979) ने मालूम किया कि गन्दी बस्ती क्षेत्रों के बालकों में साधारण क्षेत्रों के बालकों की अपेक्षा अधिक चिन्ता थी। सुश्री अनी चन्दानी (1985) ने इस क्षेत्र में किए गए शोध कार्य में महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत किये। उन्होंने दुश्चिन्ताओं की दृष्टि से विभिन्न वर्ग के छात्रों में अन्तर को पुष्ट किया। कला वर्ग के छात्र "उच्च श्रेणी" की दुश्चिन्ताओं से ग्रस्त, विज्ञानवर्ग के छात्र "सामान्य से कम" तथा वाणिज्य वर्ग के छात्र विज्ञान वर्ग के छात्रों से अधिक चिन्ताग्रस्त पाये गए। छात्रों की दुश्चिन्ताओं तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति में नकारात्मक सह-सम्बन्ध, छात्राओं की दुश्चिन्ताओं व शैक्षिक सम्प्राप्ति में नकारात्मक व असार्थक सह-सम्बन्ध पाया गया । लेकिन समग्र रूप से विद्यार्थियों की दुश्चिन्ताओं व शैक्षिक सम्प्राप्ति में नकारात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया। इन अनुसन्धानकर्ताओं ने चिन्ता के मापन के लिये भटनागर व डी. सिन्हा द्वारा निर्मित चिन्तामानों को काम में लिया। सिंह (1979) ने परिणाम निकाला कि सम्प्राप्ति, अभिप्रेरण चिन्ता से प्रभावित होता है लेकिन सुश्री मलिक (1988) ने इन दोनों के मध्य कोई सम्बन्ध ज्ञात नहीं किया। सनाढ्य (1988) ने निष्कर्ष निकाले कि निम्न उपलब्धि वाले किशोरों परीक्षा की चिन्ता, व्यक्तिगत कापियां व विषय विशेष में अरुचि से है । लेकिन उच्च उपलब्धि प्राप्त किशोरों की अपेक्षा छात्राएं अधिक चिन्तित पाई गईं ।

समाजमिती स्तर तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति

इस क्षेत्र में एम. एड. स्तर के केवल तीन शोध कार्य उपलब्ध हैं। रामेश्वर दयाल (1975) ने समाजमितिक स्तर तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्य सकारात्मक सार्थक सह-सम्बन्ध पाया । उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि समाज स्वीकृत छात्रों की बुद्धिलब्धि व समाज स्तर, समाज अस्वीकृत छात्रों से अधिक था। इसी प्रकार समाज स्वीकृत छात्रों का समायोजन, समाज

अस्वीकृत छात्रों की तुलना में बहुत अच्छा था। प्राथमिक विद्यालय की सामाजिक दृष्टि से अध्ययन में सुश्री अनिल कौर (1975) ने निष्कर्ष निकाले कि समाज स्वीकृत तथा समाज अस्वीकृत छात्राओं के स्व-सम्मान, शैक्षिक सम्प्राप्ति व मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर था और यह अन्तर क्रमशः सार्थकता स्तर 0.05, 0.01 व .01 स्तर पर सार्थक था । श्रीमती मंजू (1987) ने अपने शोध में उच्च उपलब्धि वाली छात्राओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उच्च पाई ।

इन शोधकर्ताओं ने समाजमिति स्तर तथा सामाजिक स्वीकृति ज्ञात करने के लिए आत्मानन्द शर्मा समाजमिती परीक्षण, बुद्धिलब्धि मापने के लिये जालौटा समूह परीक्षण काम में लिये।

अध्ययन आदतें तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति

इस क्षेत्र में शोधकर्ताओं ने छात्र-छात्राओं की अध्ययन आदतों व उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति में सम्बन्ध ज्ञात करने का प्रयास किया है। इनके मध्य सम्बन्ध ज्ञात करने हेतु पीएच. डी. स्तर पर एक व एम. एड. स्तर पर भी शोध कार्य सम्पन्न हुए।

बीदावत (1976) ने अपने पीएच. डी. स्तरीय अध्ययन में यह ज्ञात किया कि न्यून शैक्षिक सम्प्राप्ति के 88 प्रतिशत छात्रों में अध्ययन आदतें औसत स्तर की 7 प्रतिशत में औसत से कम तथा 5 प्रतिशत में औसत से उच्च रहीं। कुमावत (1977) ने अपने एम. एड. स्तरीय शोध में छात्रों की अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया। छात्राएं अध्ययन आदतों की दृष्टि से छात्रों से आंशिक रूप से अग्रणी पाई गईं। उनके अनुसार ग्रामीण विद्यार्थी शहरी विद्यार्थियों की तुलना में अध्ययन आदतों में अग्रणी थे। सुश्री जैन (1978) ने छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति व अध्ययन आदतों में सकारात्मक सह-सम्बन्ध देखा, लेकिन सरकारी व निजी शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाली छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सुनन्दा बिश्नोई (1982) ने सेवा पूर्व प्रशिक्षण विद्यालयों के भावी अध्यापकों की अध्ययन आदतों एवं उनकी उपलब्धि के सम्बन्ध में की गई शोध में यह ज्ञात किया कि छात्राध्यापिकाओं की अध्ययन आदतें व सम्प्राप्ति में सकारात्मक सम्बन्ध है। उनका यह भी निष्कर्ष था कि अधिकांश भावी अध्यापिकाओं को पढ़ने का शौक था। परन्तु सरोजबाला (1983) को अपने शोध में उच्च स्तर की अध्ययन आदतें व मनोवृत्ति का छात्र-छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से कोई सार्थक सह-सम्बन्ध की अवगति नहीं हुई। उनका एक अन्य निष्कर्ष था कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को प्रभावित करने वाले कुछ कारक यथा अध्यापकों द्वारा बहुत अधिक गृहकार्य दिया जाना, घर पर विविध कार्यों की अधिकता व छात्र-छात्राओं की दयनीय आर्थिक स्थिति आदि थे।

कमलेश कुमारी (1984) ने समूह गृह विज्ञान एवं कला गृह विज्ञान स्नातक छात्राओं की अध्ययन आदतों में तुलनात्मक अध्ययन में उच्च एवं निम्न उपलब्धि के सार्थक अन्तर की पुष्टि की। इनके अनुसार रात्रि में अध्ययन की आदत गृह विज्ञान के समूह की छात्राओं में अधिक थी, किन्तु अध्यापिकाओं की सलाह और आदेशों को ध्यान में रखकर अध्ययन करने की आदत कलागृह विज्ञान छात्राओं में अधिक पाई गई। इसी प्रकार सभी विषयों को नियमित रूप से पढ़ने की आदत में गृह विज्ञान एवं कला गृह विज्ञान के छात्रों के समूह में सार्थक अंतर पाया गया।

सुश्री रेणु (1986) ने विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों का उनकी अध्ययन आदतों व शैक्षिक सम्प्राप्ति पर प्रभाव के अध्ययन में निष्कर्ष दिया कि शिक्षित अभिभावकों के बच्चों की अध्ययन आदतें व शैक्षिक उपलब्धि अनपढ़ अभिभावकों के बच्चों से अधिक थी। उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि स्वीकृति प्राप्त बालक-बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि व अध्ययन आदतें, निम्न स्वीकृति प्राप्त बालक बालिकाओं से अच्छी थीं। विभिन्न संकायों के छात्रों में अध्ययन आदतों के तुलनात्मक अध्ययन में दुबे (1986) ने अपने शोध में अध्ययन आदतों की दृष्टि से विज्ञान वर्ग के छात्र व छात्राओं को वाणिज्य वर्ग के छात्र व छात्राओं से श्रेष्ठ तथा वाणिज्य वर्ग के छात्र व छात्राओं को कला वर्ग के छात्र व छात्राओं से श्रेष्ठ पाया । इसी प्रकार उन्होंने ज्ञात किया कि विज्ञान व वाणिज्य वर्ग के छात्रों की अध्ययन आदतें छात्राओं से श्रेष्ठ थीं, लेकिन कला वर्ग की छात्राओं की अध्ययन आदतें छात्रों से श्रेष्ठ पाई गईं।

सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति

शैक्षिक सम्प्राप्ति का सामाजिक आर्थिक स्तर से सह-सम्बन्ध ज्ञात करने के लिये एम.एड. स्तर पर ही अनुसन्धान कार्य हुए। सुश्री उषा (1976), सुश्री शशि (1978), श्रीमती त्यागी (1978), शुक्ला (1978), चतुर्वेदी (1979), अग्निहोत्री (1979), सुश्री भार्गव (1979), सुश्री मिश्रा (1980), श्रीमती चौबे (1982), सिंह (1982), श्रीमती शर्मा (1983), सुश्री उषा (1984), सुश्री माथुर (1985), श्रीमती चौहान (1985) के अनुसार सामाजिक-आर्थिक स्तर का शैक्षिक सम्प्राप्ति से घनिष्ठ सह-सम्बन्ध पाया गया।

सुश्री उषा (1976) ने उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति वाले कुछ छात्रों के अध्ययन प्रकरण में ज्ञात किया कि इन बालकों के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर, उनका सामाजिक व संवेगात्मक समायोजन, स्वास्थ्य व पढ़ने की विशिष्ट शैली, उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति के महत्वपूर्ण कारक थे। सुश्री कौशिक (1978) व सुश्री भार्गव (1979) के अनुसार क्रमशः विज्ञान व अंग्रेजी में उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति का उनके विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर से सकारात्मक सार्थक सम्बन्ध है। इसी प्रकार शुक्ला (1978) ने अपने पीएच. डी. स्तर के शोध व श्रीमती त्यागी (1978) ने मालूम किया कि उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति के विद्यालयों में उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवारों के छात्र एवं छात्राएं अध्ययन करते हैं। छात्रों में अंग्रेजी विषय में निम्न सम्प्राप्ति के कारणों के अध्ययन में चतुर्वेदी (1979) व सुश्री खत्री (1984) ने निष्कर्ष निकाला कि छात्रों के परिवार की पृष्ठभूमि का शैक्षिक सम्प्राप्ति पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में शिशुओं के भाषा विकास के अध्ययन हेतु तीन शोध कार्य अग्निहोत्री (1979), सुश्री मिश्रा (1980) व श्रीमती शर्मा (1983) द्वारा सम्पन्न हुए हैं। अग्निहोत्री (1979) ने विभिन्न सामाजिक वर्गों से आने वाले शिशुओं के भाषिक विकास में सार्थक अन्तर ज्ञात किया। उच्च व उच्च मध्यम वर्गीय परिवारों के शिशु मध्यवर्गीय परिवारों के शिशुओं की तुलना में भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति में विशिष्टता रखते हैं तथा इन्हीं परिवारों के शिशु अधिक शब्द, लम्बे वाक्य व अधिक संज्ञा, क्रिया, विशेषण व क्रियाविशेषणों का प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि बालिकाएं, बालकों की अपेक्षा संज्ञा व विशेषणों का अधिक प्रयोग करती हैं। सुश्री मिश्रा (1980) व श्रीमती शर्मा (1983) की गवेषणाओं से ज्ञात हुआ कि सामाजिक-आर्थिक वर्गभेद शिशुओं की भाषा सम्पन्नता को प्रभावित करते हैं। उच्च वर्ग व निम्न वर्ग के मध्य भाषा सम्पन्नता का अन्तर सार्थक तथा मध्य वर्ग व उच्च वर्ग के शिशुओं के मध्य यह अन्तर असार्थक है।

श्रीमती चौहान (1985) के न्यादर्श की छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति एवं उनके माता-पिता की शैक्षिक योग्यता के मध्य काई-स्क्वायर का मान .01 स्तर पर सार्थक पाया गया। अतः स्पष्ट है कि माता-पिता की शैक्षिक योग्यता उनके बच्चों की शैक्षिक सम्प्राप्ति को प्रभावित करती हैं। लेकिन दूसरी ओर उन्होंने यह निष्कर्ष भी दिया कि परिवार की आय, पिता का व्यवसाय छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति को प्रभावित नहीं करते। ऐसे ही निष्कर्ष श्रीमती चौबे (1982) व कृपाल सिंह (1982) ने दिये हैं। सुश्री माथुर (1985) ने घर के परिवेश का छात्र-छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर प्रभाव के अध्ययन में ज्ञात किया कि माता-पिता की स्वीकारोक्ति व एकाग्रता का छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

शैक्षिक अभिप्रेरण तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति

इस क्षेत्र में पीएच. डी. स्तर पर एक तथा एम. एड. स्तर पर 8 शोध-कार्य सम्पन्न हुए हैं। श्रीमती सक्सैना (1975) व लाल (1985) के अनुसार छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का शैक्षिक सम्प्राप्ति पर सार्थक प्रभाव पड़ता है, जबकि छात्राओं के सन्दर्भ में इन दोनों घटकों में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है। यादव (1976) के अनुसार अनुसूचित जाति/जनजाति के छात्रों के शैक्षिक अभिप्रेरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

बीदावत (1976) के पीएच. डी. शोध के अनुसार कला वर्ग के छात्रों में विज्ञान व वाणिज्य वर्ग की तुलना में अभिप्रेरण कम था। उन्होंने विज्ञान वर्ग के छात्रों में सबसे अधिक अभिप्रेरण पाया। उनके सम्पूर्ण न्यादर्श में 64 प्रतिशत औसत स्तर का 23 प्रतिशत औसत से न्यून व 13 प्रतिशत औसत से अधिक अभिप्रेरण पाया गया।

सिंह (1979) ने अनुसूचित जाति के छात्रों में देखा कि उनमें सम्प्राप्ति अभिप्रेरण अधिक

अभिप्रेरण व शैक्षिक सम्प्राप्ति में धनात्मक सार्थक सह-सम्बन्ध ज्ञात किया । श्रीमती मंजू (1987) ने उच्च उपलब्धि वाली छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा अधिक पाई । सिंह (1987) ने ज्ञात किया कि विद्यार्थी भौतिक विज्ञान पढ़ाने वाले अध्यापकों की कक्षा में जीव विज्ञान पढ़ाने वाले अध्यापकों की तुलना में अधिक सक्रिय होते हैं।

व्यक्ति के घटक तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति

व्यक्ति के विभिन्न घटकों तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करने की दृष्टि से 23 एम. एड. व एक पीएच. डी. स्तर के अध्ययन उपलब्ध हैं। माथुर (1975) ने छात्र व छात्राओं (ग्रामीण व शहरी) की गणित विषय में सम्प्राप्ति व सृजनात्मकता के सम्बन्ध में शोध किया। इसी प्रकार सन्धु (1975) ने भी छात्र-छात्राओं की विज्ञान विषय में सम्प्राप्ति व सृजनात्मकता में सह-सम्बन्ध पाया। दास गुप्ता (1977) के अनुसार भावी विज्ञान अध्यापकों के सम्प्राप्ति के स्थल-प्रक्रियात्मक चिन्तन व स्थानान्तर प्रक्रियात्मक चिन्तन में कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया, जबकि विज्ञान में ज्ञानात्मक अभिव्यक्ति का स्थल प्रक्रियात्मक चिन्तन जीव विज्ञान के भावी अध्यापकों में ज्यादा पाया गया ।

हस्त लेखन व हस्तस्थिरता के संबंध में हुए अध्ययन में सुश्री स्वर्श (1978) ने हस्तलेखन व हस्त-स्थिरता में धनात्मक व सार्थक सम्बन्ध की पुष्टि के साथ यह ज्ञात किया कि जिन छात्राओं का हस्त लेखन सुवाच्य है उनकी हस्त-स्थिरता अधिक तथा जिनका हस्त लेखन खराब है उनकी हस्त-स्थिरता कम होती है। सिंह (1978) ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व व्यक्तित्व के समायोजन के मध्य सार्थक व धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया व ज्ञात किया कि खिलाड़ी व न खेलने वाले छात्र शैक्षिक सम्प्राप्ति की दृष्टि से समान स्तर के थे। इसी प्रकार स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक, विद्यालयी समायोजन की दृष्टि से दोनों समूहों का समायोजन समान पाया गया। व्यक्तित्व के विभिन्न घटकों और शैक्षिक उपलब्धि (अनुसूचित जनजाति के छात्रों) से सम्बन्धित अध्ययन में शर्मा (1979) ने देखा कि इनमें कोई सम्बन्ध नहीं है। सुश्री अग्रवाल (1979) ने निम्न उपलब्धि वाली छात्राओं को विलग व एकल, औसत उपलब्धि वाली छात्राओं को अधिक मानसिक क्षमता व स्वस्थ चिन्तन वाली तथा उच्च उपलब्धि वाली छात्रओं को संवेगात्मक रूप से स्थिर, परिपक्व, शान्त व वास्तविकता का आसानी से सामना करने वाली पाया। उन्होंने यह भी देखा कि उच्च उपलब्धि वाली छात्राएं भय के प्रति सवेदनशील, नेतृत्व करने वाली व सामाजिक रूप से जिम्मेवार होती हैं। सुश्री जैन (1980) के अनुसार अंग्रेजी की पठन क्षमता का उनकी सृजनात्मकता से सार्थक सम्बन्ध था। इसी प्रकार पाण्डे (1981) ने गणित विषय में उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति व सृजनात्मकता में सार्थक सम्बन्ध पाया। सुश्री चुग (1984) ने माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की वैज्ञानिक सम्प्राप्ति व सृजनात्मकता में सार्थक सह-सम्बन्ध की पुष्टि की।

सुश्री मेहन्दीरत्ता (1980) ने उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति वाली छात्राओं की तुलना में निम्न शैक्षिक सम्प्राप्ति वाली छात्राओं में शाब्दिक, संख्यात्मक, तार्किक, बौद्धिक सीखने की गति तथा अध्यापकों एवं स्वयं से समायोजन अधिक पाया लेकिन निम्न शैक्षिक सम्प्राप्ति वाली छात्राओं में

उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति वाली छात्राओं की अपेक्षा समर्पण, प्रभुत्व तथा प्रतिरक्षण की आवश्यकताएं अधिक पाई गईं। उन्होंने दोनों समूहों की छात्राओं में आक्रामकता, सम्बन्धन, विनय, पोषण, काम, स्वायत्तता, पराश्रय, विद्यालय में सहपाठियों से समायोजन लगभग समान पाया। इसी प्रकार सुश्री व्यास (1980) ने उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति व निम्न शैक्षिक सम्प्राप्ति वाले किशोरों में स्व-सम्मान तथा व्यक्तित्व के न्यूराटिसिज्म पर सार्थक अन्तर पाया, लेकिन इन दोनों समूहों के किशोरों के व्यक्तित्व में बहिर्मुखता के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया। कुमार (1983) ने ज्ञात किया कि उत्तरदायित्व की भावना तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति में धनात्मक व सार्थक सह-सम्बन्ध है।

सुश्री तोमर (1984) ने निष्कर्ष निकाला कि विज्ञान प्रक्रियाओं में बालकों की क्षमता कक्षा तीन से चार तक घटती है व कक्षा चार से आठ तक बढ़ती है। वर्गीकरण व भविष्यता की क्षमता बालक व बालिकाओं में समान रूप से कक्षा तीन से आठ तक बढ़ती है। शर्मा (1984) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की ललितकला, साहित्यिक व चिकित्सा क्षेत्र में रुचि व शैक्षिक सम्प्राप्ति के मध्य सकारात्मक व सार्थक सम्बन्ध ज्ञात किया। अली (1984) ने पाया कि उपेक्षित व सामान्य बालकों की अभिव्यक्ति, व्यक्तित्व, आवश्यकता, स्नातकोत्तर औपचारिक शिक्षा ही छात्र-छात्राओं में वास्तविक स्वास्थ्य व संवेगात्मक समायोजन करने में सफल रही है। जबकि गृह समायोजन से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। यादव (1984) ने ज्ञात किया कि अनुसूचित जातियों व अनुसूचित जनजातियों के छात्रों में उत्तरदायित्व की भावना की दृष्टि से .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। इसी प्रकार उन्होंने ज्ञात किया कि अनुसूचित जातियों व उच्च जातियों के छात्रों में उत्तरदायित्व भावना की दृष्टि से सार्थक अन्तर है। लेकिन अनुसूचित जातियों व उच्च जातियों के छात्र समूह उत्तरदायित्व की भावना की दृष्टि से किसी भी स्तर पर भिन्न नहीं हैं।

श्रीमती चौहान (1985) ने देखा कि स्वस्फूर्त चित्रण में गति प्रदर्शन उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति वाले विद्यार्थियों में अधिक है तथा इन विद्यार्थियों के चित्र सुस्पष्ट व सौन्दर्ययुक्त पाये गये। उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति के लड़के व लड़कियों की दृश्य स्मृति, निम्न शैक्षिक सम्प्राप्ति के लड़के व लड़कियों से ज्यादा पाई गई। श्रीमती चांदवानी (1985) ने छात्राओं की व्यावसायिक रुचि तथा अभिभावकों की आकांक्षाओं के मध्य पाया कि छात्राएं वैज्ञानिक, खेलकूद तथा उद्योग से जुड़े व्यवसाय सबसे अधिक पसन्द करती हैं। जबकि उनके अभिभावकों द्वारा सर्वाधिक पसन्द का व्यवसाय चिकित्सा, अध्यापन तथा इंजीनियरिंग था। जगदीश प्रसाद (1985) ने अपने पीएच. डी. शोध द्वारा ज्ञात किया कि राजकीय व गैर राजकीय दोनों ही प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के घटक आज्ञाकारिता में कोई अन्तर नहीं था तथा व्यक्तित्व के घटक विद्यार्थियों की गणित विषय में सम्प्राप्ति को प्रभावित करते थे । सोढ़ी (1986) ने कला वर्ग के लोकप्रिय विद्यार्थियों में नेतृत्व के गुण व शैक्षिक सम्प्राप्ति एवं सामान्य विज्ञान व शैक्षिक सम्प्राप्ति

जोशी (1986) के अनुसार उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति के बालक अपनी आवश्यकता का अधिक प्रदर्शन करते हैं तथा उनमें आत्म-नियन्त्रण भी अधिक होता है । इसी प्रकार सुश्री जोशी (1987) ने ज्ञात किया कि उच्च उपलब्धि वाले छात्रों की आकांक्षा और अधिक सीखने की होती है । श्रीमती मिश्रा (1988) ने छात्र-छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति तथा व्यक्तित्व कारकों में सह-सम्बन्ध ज्ञात किया । राठौड़ (1988) के अनुसार छात्र विशिष्ट परिस्थिति में अपने समय काल को देखते हुए समस्या का समाधान खोज सकते हैं जबकि छात्राओं में यह योग्यता न्यून होती है ।

अध्ययन-अध्यापन संस्थितियां तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति

इस वर्ग में एक पीएच. डी. और शेष सभी शोध कार्य एम. एड. स्तर पर सम्पन्न हुए हैं । शिशुओं में सम्प्रत्ययों के संरक्षण में विकासात्मक अध्ययन में बृजबाला (1981) ने ज्ञात किया कि 7 या 8 वर्ष की आयु के ग्रामीण बालकों में मात्रा (ठोस व द्रव्य) का पूर्ण संरक्षण हो जाता हैं जबकि 9 वर्ष की आयु के नगरीय बालकों में मात्रा का पूर्ण संरक्षण नहीं हो पाता । 7 व 8 वर्ष के ग्रामीण व नगरीय बालकों में मात्रा को छोड़ कर शेष में (आयतन, संख्या, भार) संरक्षण सम्बन्धी सम्प्रत्ययों में कोई अन्तर नहीं होता । 7 वर्षीय बालकों की अपेक्षा 8 वर्षीय ग्रामीण बालकों में अनुमान तथा व्याख्या करने का विकास अधिक होता है लेकिन निर्णय नामक प्रक्रिया में कोई अन्तर नहीं पाया जाता । इसी प्रकार 7 वर्षीय नगरीय बालकों की तुलना में 8 वर्षीय नगरीय बालकों में अनुमान, निर्णय व व्याख्यान, नामक चिन्तन प्रक्रियाओं का अधिक विकास होता है । संगीता सिंह (1981) के अनुसार कक्षा 3 के बालक व कक्षा 4 की बालिकाओं में मात्रा (तरल) 3 कक्षा के बालक व बालिकाओं में भार 4 कक्षा के बालिकाओं व कक्षा 5 के बालकों में "मात्रा" (ठोस) तथा कक्षा 5 के बालक व बालिकाओं में "आयतन" सम्प्रत्ययों का पूर्ण संरक्षण हो जाता है । उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि कक्षा 3 व 4 के बालकों के बीच सम्प्रत्ययों के संरक्षण से सम्बन्धित (अनुमान, निर्णय, व्याख्या) प्रक्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता जबकि इसी कक्षा वर्ग की बालिकाओं के बीच इन सम्प्रत्ययों के संरक्षण से सम्बन्धित प्रक्रियाओं में सार्थक अन्तर होता है।

मिश्रा (1975) ने जीव-विज्ञान शिक्षण में परम्परागत विधि को अभिक्रमित अधिगम विधि से अधिक प्रभावशाली बतलाया, लेकिन अभिक्रमित अधिगम विधि, सम्प्रत्ययों के ठहराव के लिए ज्यादा उपयुक्त बताई । मसीह (1976) ने अपने पीएच. डी. शोध में निष्कर्ष निकाले कि शिक्षकों द्वारा कक्षाओं में उच्च सम्प्राप्ति के लिए प्रयुक्त शिक्षण विधियाँ विशेषतः शिक्षार्थी केन्द्रित विधियां, यथा–प्रयोगशाला व प्रयोग प्रदर्शन विधि सर्वश्रेष्ठ शिक्षण विधियाँ थीं । उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि जब विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण की योजना बनाई गई तो अधिक लाभ हुआ । विशेष रूप से ज्ञान व अवबोध उद्देश्यों की प्राप्ति में । रस्तोगी (1982) ने बतलाया कि मेंढ़क के विच्छेदन में छात्रों द्वारा किया गया विच्छेदन छात्राओं की तुलना में कमजोर रहा तथा विच्छेदन हेतु प्रयुक्त उपकरणों की जानकारी छात्राओं में अधिक पाई गई । हुम्मड (1980) ने रसायन विज्ञान शिक्षण में निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण का कार्यक्रम औसत या औसत से न्यून सम्प्राप्ति के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त बतलाया ।

सुश्री शर्मा (1980) के शोध, सामान्य विज्ञान शिक्षण में विद्यार्थियों की अधिगम कठिनाइयों में छात्र व छात्राओं एवं राजकीय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अन्तर की पुष्टि नहीं हुई । ज्ञान, अवबोध उद्देश्यों से सम्बन्धित विषय-वस्तु के सभी प्राप्तांकों में भी छात्र व छात्राओं में अन्तर की अवगति हुई । लेकिन विद्यार्थियों की अधिगम कठिनाइयों का मूल कारण उन्होंने विद्यालय को बतलाया । सुश्री रस्तोगी (1983) ने उच्च प्राथमिक कक्षाओं के विभिन्न स्तरों पर कुछ विज्ञान प्रत्ययों के अध्ययन में ज्ञात किया कि "परजीवी", "ताप", "फोकस" तथा "अम्ल" व "स्पेक्ट्रम" प्रत्ययों का विकास-स्तर तीनों कक्षाओं, कक्षा–6, 7 व 8 में 40 प्रतिशत से भी कम रहा जबकि दर्पण, उभयचर, ग्रह तथा तापमापी प्रत्ययों का विकास स्तर 50 प्रतिशत से अधिक पाया गया । दो प्रत्ययों "अणु" तथा "ज्ञानेन्द्रियों" पर प्रेक्षित विकास स्तर 70 प्रतिशत से अधिक पाया गया ।

मधु शर्मा (1975) ने अभिक्रमित व पारम्परिक शिक्षण विधियों के माध्यम से अंग्रेजी अधिगम में प्रभावशीलता के तुलनात्मक अध्ययन में देखा कि दोनों विधियों की प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । सुश्री चौधरी (1986) ने ज्ञात किया कि अंग्रेजी भाषा के शिक्षण में गहन अध्यापन कार्यक्रम बालक की तार्किक शक्ति को बढ़ाते हुए चिन्तन पर जोर देता है । अर्चना कुमारी सांखला (1986) ने कक्षा नवम् के छात्र-छात्राओं के अंग्रेजी विषय में असफलताओं के कारणों के अध्ययन मे निष्कर्ष दिए कि 73 प्रतिशत छात्र-छात्राओं ने अंग्रेजी विषय को अनिवार्य होने के कारण पढ़ने की मजबूरी बतलाई । मात्र 17 प्रतिशत ने ही अंग्रेजी विषय को रुचिकर माना है ।

माध्यमिक शाला स्तर पर भूगोल शिक्षण में मानचित्र-कार्य में होने वाली त्रुटियों के लिए शर्मा (1979) ने कक्षा में मानचित्र अंकन का अभ्यास न कराया जाना, मानचित्र प्रयोग का शिक्षण में नियमित प्रयोग न होना तथा भूगोल के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अरुचि होना बतलाया।

हिन्दी विषय की अध्ययन-अध्यापन संस्थितियों के अध्ययन में पारीक (1976) ने ज्ञात किया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं के हिन्दी में वर्तनी की अशुद्धियां कम और लेखन शैली अच्छी रही। श्रीमती बालादेवी (1979) ने संरचनात्मक त्रुटियों के निदान हेतु उपचारात्मक शिक्षण को प्रभावशाली होना आवश्यक बतलाया । भारद्वाज (1979) ने नवीं कक्षा के विद्यार्थी तथा बी. एड. की छात्राध्यापिकाओं की हिन्दी में अर्थबोध सम्बन्धी सम्प्राप्ति में अन्तर पाया, लेकिन उन्होंने इन दोनों समूहों की हिन्दी में अर्थबोध सम्बन्धी सम्प्राप्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं ज्ञात किया । सुश्री खरे (1980) ने ज्ञात किया कि छात्राओं की हिन्दी व्यंजन सम्बन्धी त्रुटियों को कम करने में उपचारात्मक शिक्षण प्रभावशाली रहा । सुश्री तनेजा (1983) ने हिन्दी की वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के बी. एड. स्तर पर अध्ययन में इसकी दयनीय दशा ज्ञात की । मारवाड़ी-भाषी

सम्बन्धी त्रुटियों की बारम्बारता अधिक पाई गई । कक्षा नवम् के छात्रों की संस्कृत भाषा की वर्तनी तथा व्याकरण की त्रुटियों के अध्ययन में नागदा (1983) ने अपने शोध कार्य द्वारा निष्कर्ष निकाले कि इसका कारण लेखन-कार्य व संशोधन-कार्य की अपर्याप्तता, छात्रों को अभिव्यक्ति का पूर्ण अवसर न मिलना, व्याकरण ज्ञान की पूर्ण उपेक्षा, अध्यापन की दोषपूर्ण विधियाँ व इसके अध्ययन के लिए उचित वातावरण का नहीं मिलना है । सुश्री पूर्णिमा दास अग्रवाल (1986) के अध्ययन में संस्कृत की विभिन्न विधाओं में बालिकाओं का स्तर बालकों की अपेक्षा उन्नत परिलक्षित हुआ ।

मेनारिया (1984) ने नवीं कक्षा के विद्यार्थियों की बहीखाता विषय में की जाने वाली त्रुटियों के अध्ययन में निष्कर्ष दिए कि जर्नल से सम्बन्धित अशुद्धियों में विद्यार्थी जर्नल का प्रारूप बनाने में, गलत जर्नल प्रविष्टि करने में, जर्नल का योग गलत लगाने में, योग को आगे ले जाने आदि की त्रुटियां करते हैं । छात्र जर्नल प्रविष्टियां करने के पश्चात उनकी बहीखाता में खतौनी करते समय भी अशुद्धियां करते हैं । इसके अलावा विद्यार्थी सहायक बहियों में सम्बन्धित अशुद्धियां, रोकड़ बही से सम्बन्धित अशुद्धियाँ व तलपट की अशुद्धियां भी करते हैं । सुश्री मिश्रा (1984) ने ज्ञात किया कि बहीखाता शिक्षण में अनुभवी अध्यापक अच्छी शैक्षिक सम्प्राप्ति में अधिक सहायक होते हैं । इसके अलावा इस विषय में कक्षागत कार्य, शिक्षण प्रविधियां आदि भी ऐसे कारक हैं जो उत्तम शैक्षिक सम्प्राप्ति करवाते हैं । माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में चयनित व्यापारिक सम्प्रत्ययों की समझ के अध्ययन में सिंह (1984) ने ज्ञात किया कि कक्षा 10वीं के छात्रों में कक्षा 9वीं के छात्रों से, सामान्य जाति के छात्रों में अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के छात्रों से, उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्रों में न्यून सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्रों से चयनित व्यापारिक सम्प्रत्ययों की समझ ज्यादा पाई गई । लेकिन छात्र व छात्राओं में इस क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया ।

अध्ययन-अध्यापन संस्थितियां

विज्ञान में उपलब्धि पर स्मृति की भूमिका के सन्दर्भ में कु. अणिमा पुरोहित (1987) ने निष्कर्ष दिया कि सभी विज्ञान विषयों (जीव, रसायन, भौतिक और गणित) की उपलब्धि को दृश्य स्मृति, आंकिक स्मृति तथा शब्दावली की स्मृति प्रभावित करती है । अपने प्रयोगात्मक अध्ययन में कुमारी चित्रा अग्रवाल (1987) के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि प्रदर्शन पाठों के अन्त में परिचर्चा की जाए अथवा प्रत्येक आयाम के पश्चात परिचर्चा की जाए--दोनों ही समान रूप से प्रभावी होते हैं । छात्राध्यापिकाओं की अभिरूपित तथा वास्तविक परिस्थितियों की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर ज्ञात नहीं हुआ । दोनों परिस्थितियों में पाठ का प्रदर्शन अच्छा हुआ । तुलनात्मक मूल्यांकन से वास्तविक परिस्थितियों में शिक्षण के उपरान्त छात्राध्यापिकाओं का मॉडल अधिक प्रभावी प्रतीत हुआ । विभिन्न शिक्षण माध्यमों का छात्राओं की उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का एक प्रयोगात्मक अध्ययन कुमारी पूर्णिमा गौड़ (1987) ने किया और निष्कर्ष दिए कि इकाई दो व तीन के लिए प्रत्यक्ष शिक्षण, टी. वी. शिक्षण तथा टेप शिक्षण करने से छात्राओं की अर्जित उपलब्धियों में 0.05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं आता है, जबकि इकाई एक

के लिए तीनों माध्यमों में 0.05 स्तर पर सार्थक भिन्नता होती है । उन्होंने उच्च, सामान्य व निम्न बुद्धिलब्धि वाली छात्राओं के शिक्षण के विविध आयामों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण पाया। इसी प्रकार टी. वी. अध्ययन की रोचकता तथा टेलीविजन प्रभावशीलता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पाया । अध्ययन के निष्कर्षों में प्रत्यक्ष शिक्षण, टी.वी. शिक्षण तथा टेप शिक्षण में सभी माध्यम प्रभावशीलता की दृष्टि से भिन्न पाये गए और प्रत्यक्ष अध्ययन व टी. वी. शिक्षण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । इसी प्रकार दृश्य-श्रव्य साधनों के निर्माण एवं उनकी शैक्षणिक प्रभावशीलता के एक प्रयोगात्मक अध्ययन में आभा फर्सवान (1988) ने परिणाम प्रस्तुत किए कि कौशल सम्बन्धी व्यवहार-परिवर्तनों के लिए टेप स्लाइड द्वारा शिक्षण प्रत्यक्ष शिक्षण की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली होता है । इनके अन्वेषण में अर्जित ज्ञान सम्बन्धी व्यवहार परिवर्तनों के सन्दर्भ में भी स्लाइड द्वारा शिक्षण प्रत्यक्ष शिक्षण की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली पाया गया।

नीरा सक्सेना (1988) के अध्ययन में प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की अध्यापन प्रक्रिया में सकारात्मक अन्तर पाया गया । उन्होंने यह भी निष्कर्ष दिया कि प्रशिक्षित अध्यापक की अध्यापन योग्यता बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालती है । यह प्रभाव बालकों की शैक्षिक उपलब्धि को उच्च बनाता है ।

अन्य विविध घटक व शैक्षिक सम्प्राप्ति

कुछ अन्य विविध घटक जो उपरोक्त वर्गों के अन्तर्गत नहीं आते उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति से सम्बन्ध दर्शाने वाले एम. एड. स्तर पर 27 तथा एक पीएच. डी. यानी कुल 28 शोधकार्य सम्पन्न हुए हैं। सभरवाल (1975) ने विभिन्न सामाजिक वर्गों की छात्राओं द्वारा लिखित भाषिक प्रयोग के तुलनात्मक अध्ययन में ज्ञात किया कि क्रियाशील व अक्रियाशील वर्ग के निम्न भाषिक योग्यता वाले समूहों के सदस्य लगभग समान वाक्य संख्या का प्रयोग करते हैं, जबकि अक्रियाशील वर्ग के उच्च भाषिक योग्यता वाले सदस्यों के लिए विचाराभिव्यक्ति मुख्य लक्ष्य है । श्रीमती चौधरी (1976) व अग्रवाल (1982) ने बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अकादमिक उपलब्धि तथा प्रशैक्षिक सैद्धान्तिक व प्रशैक्षिक प्रायोगिक उपलब्धि के मध्य 0.01 स्तर पर धनात्मक सार्थक सम्बन्ध पाया । उन्होंने यह भी निष्कर्ष दिया कि स्नातक महिला प्रशिक्षणार्थियों की अकादमिक, प्रशैक्षिक सैद्धान्तिक व प्रायोगिक उपलब्धि पुरुष स्नातक समूह से उच्च थीं । शास्त्री (1978) ने ज्ञात किया कि कक्षा दशम् के शहरी छात्रों का संस्कृत विषय का ज्ञान ग्रामीण छात्रों से अच्छा है एवं बालिकाओं का संस्कृत विषय का स्तर बालकों से उन्नत है । ऐसे ही एक अध्ययन में पाण्डेय (1981) ने ज्ञात किया कि छात्र-छात्राओं का संस्कृत विषय में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययन स्तर औसत है । ठाकुर (1978) ने न्यून उपलब्धि वाले किशोर छात्रों को परामर्श की प्रभावोत्पादकता का अध्ययन करके पता लगाने पर समस्या का समाधान किया तो सभी का शैक्षिक स्तर उन्नत हुआ । केसकर (1979) ने ज्ञात किया कि कक्षा के बढ़ने के साथ-साथ छात्रों में समस्या-समाधान की योग्यता भी बढ़ती जाती है । इसी प्रकार के एक अध्ययन में

जोशी (1979) ने प्रतिभाशाली छात्रों को प्रदत्त छात्रवृत्ति सुविधायें तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति के अध्ययन में देखा कि इन दोनों में सकारात्मक सार्थक सम्बन्ध है । सुश्री गुप्ता (1981) ने कक्षा तीन से चार के छात्रों में संरक्षण तर्क योग्यता में अन्तर पाया किन्तु कक्षा चार से पांच, पांच से छह, छह से आठ व सात से आठ में इस क्षेत्र में कोई अन्तर नहीं पाया । मेहरा (1983) ने स्नातक उपाधि प्राप्त अनुसूचित व गैर अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति के तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति का स्तर समान नहीं है । रसायन शास्त्र विषय में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यमों द्वारा पढ़ाए गए उच्च माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति के तुलनात्मक अध्ययन में श्रीवास्तव (1983) मे मालूम किया कि शिक्षण में भाषा माध्यम से शैक्षिक सम्प्राप्ति पर कोई अन्तर नहीं पड़ता । दसवीं कक्षा के छात्रों की जीव विज्ञान में सम्प्राप्ति के सन्दर्भ में उनकी कक्षागत सामूहिक सह-संजकता के अध्ययन में सुश्री पंजाबी (1984) ने अपने न्यादर्श में 40 छात्राएँ-छात्रा विद्यालयों से, 49 छात्र-छात्र विद्यालयों से व 20 छात्र-छात्राएँ सामान्य विद्यालयों (सह शिक्षा देने वाली संस्था) से लिए और निष्कर्ष निकाला कि सामान्य विद्यालय का समूह सर्वाधिक सहसंजक था तथा छात्रों का समूह छात्राओं के समूहों की तुलना में अधिक सहसंजक था । गौड़ (1985) ने सामाजिक मूल्यों के विकास के लिए समाज सेवा के कार्यक्रम, महापुरुषों के जीवन के प्रसंग, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल व शैक्षणिक भ्रमण आदि श्रेष्ठ माध्यम पाए। सुश्री शौकत (1986) ने छात्राओं की चित्रकला के प्रायोगिक क्षेत्र में सैद्धान्तिक क्षेत्र की अपेक्षा अच्छी उपलब्धि ज्ञात की । सुश्री भण्डारी (1986) ने ज्ञात किया कि सामान्य विज्ञान में विद्यार्थियों की अधिगम-कठिनाइयों में छात्र व छात्राओं एवं राजकीय विज्ञान व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

उत्तर माध्यमिक स्तर के छात्रों में फलित वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास का अध्ययन कर प्रभा वाजपेयी (1983) ने ज्ञात किया कि विज्ञान वर्ग की छात्राओं का अवबोधन वाणिज्य वर्ग की छात्राओं से कहीं अधिक है । उन्होंने यह भी ज्ञात किया कि विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग की छात्राओं में सामान्य विज्ञान के शिक्षण से विकसित सामान्यीकरण अभिवृत्ति तथा अवबोधन में ऋणात्मक सह-सम्बन्ध है । उन्होंने कलावर्ग की तुलना में भी विज्ञान वर्ग का वैज्ञानिक अभिवृत्ति विकास अधिक पाया । नारनोलिया (1985) ने अपने सर्वेक्षण में वाणिज्य के छात्रों में ज्ञानार्जन और अभिवृत्तियों का सूक्ष्म सह-सम्बन्ध ज्ञात किया । उन्होंने इन छात्रों के ज्ञानार्जन और रुचियों में तथा रुचियों और अभिरुचियों में कोई सह-सम्बन्ध नहीं पाया । चटर्जी (1987) ने उच्च प्राथमिक स्तर पर अपने पीएच. डी. अध्ययन में संज्ञानात्मक विकास एवं भाषा विकास की अन्योन्याश्रितता ज्ञात करने के लिए तीन उपकरणों (1) कॉगनिटिव मेच्योरिटी टेस्ट (2) लैन्वेज एचीवमेंट टेस्ट (3) लर्निंग इन्वायरनमेन्ट रेटिंग स्केल का निर्माण किया । ग्रामीण विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन एवं उनकी उपलब्धि में सम्बन्ध ज्ञात करने के उद्देश्य से सर्वेश कुशवाहा (1987) ने अपने अध्ययन में ज्ञात किया कि ग्रामीण छात्रों की गणित विषय में उपलब्धि और ग्रामीण छात्राओ की अंग्रेजी विषय में उपलब्धि का क्रमशः उनके जीवन लक्ष्य एवं मानसिक स्वास्थ्य से घनिष्ठ सम्बन्ध है । इसी प्रकार नगरीय छात्र-छात्राओं की गणित विषय में उपलब्धि उनकी व्यक्तिगत क्षमता पर निर्भर करती है, जबकि अंग्रेजी में इनकी उपलब्धि का उनके

मानसिक स्वास्थ्य से घनिष्ठ सम्बन्ध है । यह भी ज्ञात किया गया कि नगरीय छात्राओं की अंग्रेजी विषय में उपलब्धि उनके जीवन लक्ष्यों, व्यक्तिगत क्षमता एवं अध्ययन आदतों से प्रभावित होती है । विद्यार्थियों की भाषा सम्पन्नता के अध्ययन में ऋतु भारद्वाज (1987) ने ज्ञात किया कि शहरी छात्राओं की भाषा सम्पन्नता ग्रामीण छात्राओं से अधिक है । लिंग भेद के आधार पर ग्रामीण विद्यार्थियों में कुल शब्द, वाक्य, संज्ञा, विशेषण, शब्द युग्म तुलना और समध्वन्यात्मकता की दृष्टि से अन्तर पाया गया तथा शेष सभी व्याकरणिक कोटियों में दोनों लिंग भाषा सम्पन्नता की दृष्टि से समान पाए गए । इसी प्रकार शहरी विद्यार्थियों में लिंग भेद के आधार पर शहरी छात्राएँ भाषिक प्रयोग की दृष्टि से छात्रों की अपेक्षा अधिक पटु पाई गई । केवल विशेषण प्रयोग की दृष्टि से शहरी छात्र श्रेष्ठ पाए गए । अधिगम अशक्तता और समायोजन समस्याओं के अध्ययन में अर्चना भदौरिया (1987) ने ज्ञात किया कि निम्न उपलब्धि वाले छात्रों का सामाजिक समायोजन अधिक है । संवेगात्मक दृष्टि से भी उच्च उपलब्धि वाले छात्र अधिक समायोजित पाए गए । शैक्षिक उपलब्धि पर महाविद्यालयी समायोजन का अध्ययन कर शकुन्तला वर्मा (1988) ने निष्कर्ष दिए कि चार-वर्षीय बी. एससी., बी. एड. के छात्रों में द्वितीय वर्ष के छात्र असन्तुष्ट, तृतीय वर्ष के छात्र सामान्य और चतुर्थ वर्ष के छात्र पूर्ण रूप से असन्तुष्ट पाए गए । इस अध्ययन में शिक्षकों एवं प्रशासकों की छात्रों के प्रति अभिवृत्ति सन्तोषजनक पाई गई । शैक्षिक उपलब्धि पर असन्तोष का कोई प्रभाव नहीं हुआ ।

विषय की प्रकृति तथा सम्प्राप्ति में भिन्नता का स्वस्फूर्त कला पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के उपरान्त मन्जूषा सक्सेना (1988) ने निष्कर्ष दिया कि स्वस्फूर्त कला का सम्प्राप्ति पर प्रभाव पड़ता है । उच्च सम्प्राप्ति वाली छात्राओं में गहरे व प्रवाहयुक्त भाव प्रदर्शित करने की क्षमता होती है ।

यशपालसिंह चौहान (1988) ने अपने वर्गीकरण योग्यता वाले अध्ययन में ज्ञात किया कि वर्गीकरण की प्रक्रिया में स्तर एवं आयु वृद्धि के साथ योग्यता भी बढ़ती है । वर्गीकरण कौशल एवं बौद्धिक परीक्षण वाले सभी छात्रों की अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण सम्बन्ध पाया गया । उन्होंने यह निष्कर्ष भी निकाला कि बौद्धिक परीक्षण में छात्र एवं छात्राओं की अभिव्यक्ति स्तरानुसार बढ़ती है । क्रमबद्धता सम्बन्धी अध्ययन में प्रीतमसिंह (1988) ने ज्ञात किया कि क्रमबद्ध करने की योग्यता परिपक्वता के साथ विकसित होती है । उन्होंने यह भी निष्कर्ष दिया कि जितनी अधिक क्रमबद्ध करने की योग्यता होगी उतनी ही शैक्षिक उपलब्धि अधिक होगी । उनके निष्कर्षों में लैंगिक भिन्नता का क्रमबद्ध करने की योग्यता से कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया ।

रामप्रसाद बांगड़ (1988) ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष दिया कि शिक्षक प्रशिक्षण पूर्व-प्रवेश परीक्षा (PTET) में वाणिज्य एवं विज्ञान के छात्र, कला वर्ग के छात्रों से अधिक अंक प्राप्त करते हैं । उनके निष्कर्षों में एक निष्कर्ष यह भी था कि यदि शिक्षक प्रशिक्षण हेतु प्रवेशार्थी का चयन केवल उसकी पूर्व शैक्षिक योग्यता के आधार पर किया जाए तो भी योग्य

मदनलाल मौर्य (1988) ने अपने सर्वेक्षण में निष्कर्ष दिए कि अशिक्षित अनुसूचित जाति की महिलाएँ अपने शिक्षित न होने के प्रमुख बाधक क्षेत्र आर्थिक, पारिवारिक और सामाजिक मानती हैं । इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत, व्यावसायिक एवं शैक्षिक क्षेत्र भी इनकी शिक्षा प्राप्ति में बाधक हैं । इसके विपरीत अनुसूचित जाति की शिक्षित महिलाएँ आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत, व्यावसायिक एवं अन्य क्षेत्रों को बाधक नहीं मानतीं । प्रमुख रूप से अनुसूचित जाति की महिलाओं के लिए शिक्षा प्राप्ति में आर्थिक क्षेत्र बाधक पाया गया ।

सम्भावनाएं एवं सुझाव

शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह-सम्बन्धक का क्षेत्र औपचारिक विद्यालयी शिक्षा से जुड़े सभी वर्गों की रुचि का विषय होने के कारण अत्यन्त व्यापक एवं महत्वपूर्ण है । राजस्थान में 1974 तक सह-सम्बन्धकों पर 63 शोध कार्य हुए हैं, जिनमें से 59 एम. एड. स्तर तथा 4 पीएच. डी. स्तर के थे । इनकी जानकारी शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित पुस्तिका "राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान 1976" में दी गई है ।

1975-88 की अवधि में शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह-सम्बन्धकों पर 155 शोध-कार्य हुए जिनमें से 9 पीएच. डी. स्तर के हैं । इन शोध कार्यों में बुद्धि, आत्म-प्रत्यय, अभिवृत्ति, दुश्चिन्ता, शैक्षिक अभिप्रेरणा, समाजमिति, सामाजिक-आर्थिक स्तर, ग्रामीण-शहरी पर्यावरण, छात्र/छात्रा विद्यालयों का अन्तर, विद्यालयी संस्थितियाँ, अध्यापक अधिगम संस्थितियों आदि के साथ शैक्षिक सम्प्राप्ति के सह-सम्बन्धक भाव खोजे गए हैं । 1974 की तुलना में सन्दर्भित अवधि में किए गए शोध कार्यों का दायरा अधिक व्यापक हुआ है व शोधकर्त्ताओं की दृष्टि नवीन प्रभावी सह सम्बन्धकों पर पड़ी है । सहशैक्षिक क्षेत्र यथा शारीरिक शिक्षा को भी अध्ययन के अन्तर्गत लाया गया है । शोधकर्त्ताओं द्वारा निकाले गये निष्कर्षों को यदि शिक्षक प्रशिक्षण और शिक्षा प्रशासक शिक्षा के सुधार में प्रयुक्त करना चाहें तो निश्चय ही सुखद परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं । शोधगत निष्कर्षों को क्रियान्वयन की कसौटी पर परखे जाने की आवश्यकता है । 155 शोध कार्यों में से 4, 5 शोध कार्यों में ही प्रयोगात्मक साक्ष्य देखने को मिला । मगर अन्य शोधकर्त्ताओं में भी जो तथ्य खोजे हैं, वे एक सजग शिक्षक के लिये चिन्तन का क्षेत्र प्रस्तुत करते हैं । यह परम आवश्यक है कि भविष्य का अनुसंधान कार्य योजनाबद्ध रूप से अधिक विस्तार एवं गहराई से किया जाए ।

क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुसार इस क्षेत्र की अनुसंधान विधि में प्रयोगात्मक विधि का उपयोग अधिकाधिक किया जाना चाहिए और कुछ उपक्षेत्रों में ऐसा किया भी गया है जो कि अनुसंधान प्रकियाओं में आ रही परिपक्वता की ओर शुभ संकेत है । परन्तु यह भी विचारणीय है कि अधिकांश एम. एड. स्तर की अन्वेषणाओं में अभी भी नार्मेटिव सर्वे विधि का ही उपयोग किया गया है और सांख्यिकी में माध्य, माध्यिका के उपयोग से ही सन्तोष कर निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है। निष्कर्षों की वैधता एवं विश्वसनीयता की दृष्टि से अधिक उच्च-स्तरीय सांख्यिकी का उपयोग अधिक सार्थक रहता है । उपकरणों के उपयोग की दृष्टि से स्वनिर्मित एवं मानकीकृत दोनों ही प्रकार के उपकरणों का उपयोग किया गया है ।

शोध की दृष्टि से प्रतिनिधि न्यादर्श का चुनाव सही निष्कर्ष प्राप्त करने में सहायक एवं उपयोगी है । अधिकांश अनुसंधाता नगरीय परिवेश से बाहर नहीं आ पाए हैं और नगरीय परिवेश का न्यादर्श पूरे राज्य के लिए सामान्यीकृत निष्कर्ष देने की दृष्टि से उपयुक्त नहीं माना जा सकता । अतः निष्कर्षों को व्यापक एवं सुपुष्ट आधार देने के लिए ग्रामीण परिवेश में से भी न्यादर्श लिए जाएं और नगरीय एवं ग्रामीण परिवेश में से भी न्यादर्श लिए जाएं और नगरीय एवं ग्रामीण परिवेश के सम्मिलित प्रतिनिधि न्यादर्श के निष्कर्षों का सामान्यीकरण पूरे राज्य का प्रतिनिधित्व सूचक हो । इन अन्वेषणओं में से कुछ अन्वेषणाओं में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के प्रतिनिधि न्यादर्श लिए गए हैं, यह सराहनीय पक्ष है । परन्तु पिछड़ी जातियों का प्रतिनिधित्व अभी भी न्यादर्श में नहीं आ पाया है। यह विचारणीय है । इसी प्रकार राजकीय एवं निजी विद्यालय भी न्यादर्श रूप में गवेषणाओं में आ रहे हैं । यह भी व्यापकता एवं परिपक्वता का परिचायक है ।

इस क्षेत्र में हुए अनुसंधानों में सह-शैक्षिक प्रवृत्तियां एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति वाला उपक्षेत्र अत्यन्त उपेक्षित रह गया है । इसी प्रकार आत्म-प्रत्यय, अभिप्रेरण, चिन्ता एवं समाजमिति से सम्बन्धित उपक्षेत्र भी दुर्बल रह गए हैं परन्तु वातावरण के उपक्षेत्र में प्रथम बार किया गया शोधकार्य उत्साहवर्धक है । इसके अलावा अध्ययन-अध्यापन संस्थितियों के उपक्षेत्र में भी मात्र एक पीएच. डी. स्तर का शोधकार्य सम्पन्न हुआ है । इस उपक्षेत्र के निष्कर्ष अध्यापक के अपने दैनन्दिन कार्य में पर्याप्त मार्गदर्शक एवं सहायक सिद्ध हो सकते हैं ।

स्तर की दृष्टि से समीक्षाधीन शोधकार्यों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, उच्च प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्रों को समाविष्ट किया गया है परन्तु नॉनफॉरमल शिक्षा का क्षेत्र अछूता रह गया है । अधिकांश शोधकार्य औपचारिक शिक्षण के माध्यमिक स्तर से सम्बन्धित हैं । अतः शोधकर्त्ताओं को नानफॉरमल शिक्षा की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है ।

निश्चित रूप से राजस्थान में अनुसंधान का यह क्षेत्र आरम्भिक अवस्था के दौर से मात्रा एवं गुण दोनों ही दृष्टियों से कुछ आगे ही बढ़ा है फिर भी और अधिक अनुसंधान कार्य जाने की आवश्यकता है । राज्य शिक्षा संस्थान एवं शिक्षा निदेशालय के शोध प्रकोष्ठ की सक्रियता से राज्य में शिक्षा क्षेत्र का शोधकार्य गतिमय है । शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहयोग एवं शोधकर्त्ताओं को पर्याप्त प्रोत्साहन देकर वर्तमान स्थिति से और आगे प्रगति की आशाजनक सम्भावनाएँ हैं ।

सजग शिक्षक सदैव अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर प्रभाव डालने वाले सह-सम्बन्धकों को ध्यान में रखकर अपनी अध्यापन प्रक्रिया को व्यवस्थित एवं नियोजित [illegible]

शैक्षिक सम्प्राप्ति में अध्ययन-अध्यापन संस्थितियों व विद्यालयी वातावरण, छात्र की उपस्थिति और शिक्षक की तैयारी व निष्ठा अत्यन्त महत्वपूर्ण घटक हैं, किन्तु बहुत अधिक शोधकर्त्ताओं की दृष्टि इस ओर नहीं गई है । अतः भविष्य में अनुसंधानकर्त्ताओं के लिए इस क्षेत्र को अपनी शोध पूर्ण जिज्ञासु दृष्टि से परखना उचित होगा । इसके अतिरिक्त शिक्षा विभाग को भी यह देखना होगा कि अधिकाधिक शिक्षकों से क्रियानुसंधान करवाए जाएं ।

वाचस्पति शोध सार

अनिल कुमार सक्सेना : विज्ञान विद्यार्थियों के विभिन्न समूहों की भौतिक विज्ञान और संज्ञानोन्मुख शैलियों के प्रति अभिवृत्ति, पीएच. डी., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1984

मुख्य निष्कर्ष

1. राजस्थान और केन्द्रीय बोर्ड के विद्यार्थियों की भौतिक विज्ञान के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई । 2. संज्ञानोन्मुख शैलियों के क्रम में यह पाया गया कि विद्यार्थियों का चयन क्रम निम्नांकित है– (क) प्रत्यास्मरण आधारित विषय-वस्तु । (ख) सिद्धान्त पक्ष । (ग) ज्ञानोपयोगी विषय-वस्तु । (घ) चरम जिज्ञासात्मक पक्ष । कक्षा 10 व 11 के विद्यार्थियों की संज्ञानोन्मुख शैलियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। 3. लिंग भेद की दृष्टि से विद्यार्थियों की भौतिक विज्ञान की अभिवृत्तियों में कोई अन्तर नहीं पाया गया। 4. अन्योन्य-क्रिया के प्रभाव की दृष्टि से, उदाहरणार्थ विद्यालय और कक्षा का प्रकार, विद्यालय का प्रकार और लिंग भेद एवं कक्षा और लिंग भेद–ये सभी प्रभाव सार्थक पाये गये । 5. संज्ञानोन्मुख शैलियों के घटक–प्रत्यास्मरण और ज्ञानोपयोग का भौतिक विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति के बीच सार्थक सह-सम्बन्ध पाया गया ।

सावित्री मसीह : जीव विज्ञान में अधिगम परिणामों से सम्बद्ध कपितय शिक्षकचरों एवं शिक्षण विधियों का अध्ययन । पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, जयपुर, 1976

मुख्य निष्कर्ष

1. प्रत्येक अधिगम परिणामों से कतिपय शिक्षक कारक सार्थक रूप से सम्बन्धित पाये गये । 2. विद्यार्थियों में विज्ञान का अवबोध उनके शिक्षकों के विज्ञान अवबोध के साथ-साथ विकसित होना पाया गया । 3. जब विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये शिक्षण की योजना बनाई गई तो अधिक लाभ हुआ, विशेष रूप से ज्ञान व अवबोध उद्देश्यों के शिक्षण में ज्यादा प्रभावी हुई। 4. बहुत से शिक्षकों की कक्षाओं में उच्च्य सम्प्राप्ति के लिये प्रयुक्त शिक्षण विधियों, विशेषतः शिक्षार्थी केन्द्रित विधियों यथा प्रयोगशाला व प्रयोग प्रदर्शन विधियाँ जिनमें शिक्षार्थी को क्रियाओं में व्यस्त रहना पड़ता था, सर्वश्रेष्ठ शिक्षण विधियाँ पाई गई । 5. बहुत से शिक्षकों में शिक्षण उद्देश्यों की स्पष्ट जानकारी नहीं पाई गई । 6. ज्ञान का परिणाम सरलतापूर्वक अनुभव किया गया ।

रविन्द्र अग्निहोत्री : सामाजिक स्तर के सन्दर्भ में शिशुओं का भाषा विकास, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 1978

मुख्य निष्कर्ष

1. संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण तथा क्रिया–इन चार व्याकरणीय कोटियों का प्रयोग करने की दृष्टि से उच्च मध्यम वर्ग के शिशु प्रथम स्थान पर रहे । 2. विशिष्ट अभिव्यक्ति का प्रयोग उच्च मध्यम वर्ग के शिशु अधिक करते हैं । 3. सन्दर्भमुक्त अभिव्यक्ति तथा भविष्य काल का प्रयोग मध्यम वर्ग एवं उच्च वर्ग के शिशुओं में अधिक मिलता है । 4. अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग सभी वर्गों के शिशु करते हैं किन्तु अप्रचलित अथवा कम प्रचलित शब्दों का प्रयोग उच्च मध्यम वर्ग एवम् उच्च वर्ग के शिशु ही करते हैं । 5. विभिन्न मनोकृतियों के सम्बन्ध सूचक शब्दों से अभिहित करने की प्रवृत्ति उच्च मध्यम वर्ग तथा उच्च वर्ग के शिशुओं में अधिक है । 6. संख्या की दृष्टि से अधिक शब्दों का तथा व्याकरणिक कोटियों की दृष्टि से संज्ञा विशेषणों तथा क्रिया विशेषणों का प्रयोग लड़कों की अपेक्षा लड़कियां अधिक करती हैं ।

के. सी. शुक्ला : राजस्थान के माध्यमिक विद्यालयों में उच्च एवं निम्न शैक्षिक निष्पादन की विभिन्नता दर्शाने वाले घटक । पीएच. डी., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1978

मुख्य निष्कर्ष

1. उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यालयों में तुलनात्मक रूप से श्रेष्ठ सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले वर्ग का छात्र समुदाय पाया गया । 2. इन छात्रों के माता-पिता की शिक्षा, व्यावसायिक स्तर एवं आय न्यून उपलब्धि वाले विद्यालयी छात्रों से अधिक पाई गई । 3. उच्च एवं न्यून शैक्षिक निष्पादन वाले विद्यालयों के शिक्षकों की योग्यता में बहुत अन्तर पाया गया । संख्यात्मक एवं गुणात्मक रूप से उच्च उपलब्धि वाले विद्यालयों के शिक्षक अधिक शिक्षित पाये गये । 4. उच्च व न्यून शैक्षिक सम्प्राप्ति वाले विद्यालयों के शिक्षकों के वेतन भत्तों एवं उनके विद्यालय प्रधानों के साथ सम्बन्धों में कोई प्रभावी अन्तर नहीं पाया गया । 5. न्यून उपलब्धि वाले विद्यालयों के शिक्षक अधिक अनुभवी पाये गये एवं वे अपनी सेवा शर्तों से भी तुलनात्मक रूप से अधिक सन्तुष्ट पाये गये । 6. अस्थायित्व का भय दोनों प्रकार के विद्यालयों के शिक्षकों में समान रूप से पाया गया । 7. उच्च उपलब्धि वाले विद्यालयों के शिक्षकों पर शैक्षिक कार्य भार अधिक प्रकट हुआ । 8. उच्च उपलब्धि वाले विद्यालय तुलनात्मक रूप से न्यून उपलब्धि वाले विद्यालयों से सभी भौतिक सुविधाओं, यथा–कक्षा-कक्ष, खेल के मैदान, खुला स्थान, पुस्तकालय, स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधा आदि की दृष्टि से श्रेष्ठ पाये गये । 9. उच्च उपलब्धि वाले विद्यालय सामान्यतया स्वस्थ परिवेश में कस्बे से बाहर स्थित पाये गये जबकि न्यून उपलब्धि वाले विद्यालय शहर के मध्य सिनेमाघरों के पास स्थित पाये गये थे ।10. उच्च उपलब्धि वाले

श्रीमती शोभा गोलवलकर : राजस्थान के जनजाति विद्यार्थियों की सम्प्राप्ति, सृजनात्मक क्षमता एवं वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन । पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1986

मुख्य निष्कर्ष

1. वैज्ञानिक अभिवृत्ति के सन्दर्भ में खुला दिमागीपन, बौद्धिक जिज्ञासा एवं पर्याप्त समंकों के आधार पर सामान्यीकरण करने से गैर जनजाति विद्यार्थी, जनजाति विद्यार्थियों की तुलना में श्रेष्ठ पाये गये । 2. जनजाति विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का स्तर पर्याप्त रूप से उच्च पाया गया। 3. जनजाति विद्यार्थियों की अपेक्षा गैर जनजाति विद्यार्थियों का सृजनात्मक स्तर ऊँचा पाया गया । गैर जनजाति छात्रों के 21.48% में उच्च सृजनात्मक चिन्तन क्षमता तथा शेष में औसत क्षमता पाई गई, जबकि 7.41% जनजाति छात्रों में उच्च, 62.22% में औसत तथा शेष में निम्न स्तरीय सृजनात्मक क्षमता पाई गई । 4. जनजाति छात्रों के 26.66% में उच्च लिखित सृजनात्मक चिंतन क्षमता, 55.92% में औसत तथा 17.41% में निम्न क्षमता प्रकट हुई, जबकि 62.29% गैर जनजाति छात्रों में उच्च, 29.26% में औसत एवं शेष में निम्न क्षमता पाई गई । 5. मौखिक सृजनात्मक चिन्तन क्षमता में भी सिवाय लचीलापन घटक को छोड़कर सभी घटकों में गैर जनजाति के छात्र अधिक उच्च स्थिति में पाये गये । 6. विज्ञान विषय में गैर जनजाति के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का स्तर उच्च पाया गया ।

शेरसिंह बीदावत : विद्यार्थियों में न्यून शैक्षिक सम्प्राप्ति – एक अध्ययन । पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1976

मुख्य निष्कर्ष

1. शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में न्यून शैक्षिक उपलब्धि सम्पात की सघनता 14.8% प्राप्त हुई । 2. इस सघनता का लिंग की विभिन्नता से कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया। 3. न्यून शैक्षिक उपलब्धि का सम्पात कला व वाणिज्य संकायों की तुलना में विज्ञान संकाय में अधिक पाया गया। 4. निजी प्रबन्ध की शिक्षण संस्थाओं की तुलना में राजकीय शिक्षण संस्थाओं के शैक्षिक उपलब्धि के सम्पात की सघनता सार्थक रूप से न्यून पाई गई । 5. न्यून शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों में से बहुत कम छात्र स्पष्ट भावी, जोशीले और बेफिक्र पाये गये, हालाँकि कुछ ऐसे भी छात्र थे जो संयमी, गंभीर और अनासक्त प्रकृति के थे । 6. यह देखा गया कि न्यून उपलब्धि वाले छात्रों में 75 प्रतिशत से भी अधिक छात्र औसत संवेगात्मक स्थिरता के गुण से परिपूर्ण थे । 7. न्यून शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्र न तो अति संरक्षण प्राप्त थे और ना ही पराधीन थे और ना ही पूर्णतया आत्म-निर्भर और वस्तुवादी थे । 8. कला संकाय के न्यून शैक्षिक सम्प्राप्ति वाले छात्रों का एक बड़ा वर्ग अनुशासनहीन और लापरवाह प्रकृति का पाया गया और उनके व्यक्तित्व का समाकलन काफी न्यून प्रकट हुआ । 9. व्यक्तित्व समायोजन के विश्लेषण से यह तथ्य उद्घाटित हुआ कि उनमें से केवल एक प्रतिशत ही श्रेष्ठ, 34% औसत से उच्च, 46% औसत व 19% औसत से न्यून समायोजन के क्षेत्र के अन्तर्गत पाये गये । 10. अभिप्रेरण की पारस्परिक तुलना के परिणामस्वरूप विज्ञान के छात्र प्रथम, वाणिज्य के द्वितीय, कला के तृतीय स्थान पर पाये गये । 11. निष्कर्षों में यह भी पाया गया कि न्यून शैक्षिक उपलब्धि के लिये त्रुटिपूर्ण अध्ययन शैली पूर्णतया उत्तरदायी नहीं है । 12. विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की न्यून उपलब्धि उच्च रही ।

बसन्ती चटर्जी : उच्च प्राथमिक विद्यालय के बालकों के संज्ञानात्मक तथा भाषाई विकास की परस्पर निर्भरता का अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1987

चटर्जी (1987) ने प्रयोगात्मक विधि से अनुसंधान में पाया कि अन्तःदलीय उपचार से एच.एल.डी.टी. तथा एल.एल.डी.टी. दलों की संज्ञानात्मक परिपक्वता में तथा भाषायी सम्प्राप्ति में टी मान सकारात्मक पाया गया । एच.एल.डी.टी तथा एल.एल.डी.टी दलों की भाषायी सम्प्राप्ति पर भाषायी परिपक्वता का सार्थक प्रभाव पड़ता है । जहां तक स्वजन्य चरों के विभिन्न घटकों पर प्रभाव का प्रश्न है–संज्ञानात्मक उपचार से समुच्चय बोधक तथा वर्गीकरण की सम्प्राप्ति में सुधार हुआ है, भाषायी उपचार से वाक्य रचना तथा व्याकरण की सम्प्राप्ति में सुधार परिलक्षित होता है । एच.एल.डी.टी. दल का समायोजन मध्यमान एच.सी.एफ.एल. दल की अपेक्षा निम्न पाया गया एल.एल.एफ.टी. दल का समायोजन मध्यमान तुलनात्मक रूप से उच्च पाया गया । एल.सी.एफ.एल. तथा एच.एल.एफ.सी दलों के मध्यमानों में कोई सांख्यकीय सार्थक अन्तर नहीं पाया गया एच.एल.डी.टी. दल की पूर्व तथा उत्तर भाषायी सम्प्राप्ति पर उपचार के रूप में अधिगम पर्यावरण का कोई प्रभाव नहीं देखा गया । भाषायी उत्तर परीक्षा में सम्प्राप्ति की तुलना करने पर सांख्यकीय धनात्मक अन्तर पाया गया ।

जी. पी. शर्मा : विद्यार्थियों की गणित की सम्प्राप्ति पर उनकी अभिवृत्ति तथा व्यक्तित्व घटकों के प्रभाव का अध्ययन । पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1985

शर्मा (1985) के अनुसार दोनों प्रकार के विद्यालयों में शिक्षक शिक्षार्थी सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं । निजी तथा राजकीय की तुलना में अधिक विद्यालयों के विद्यार्थी व्यक्तित्व के घटकों में अन्तर रखते हैं । शिक्षक आज्ञापालन अनुग्रह, बोध तथा व्यावहारिकता में अन्तर रखते हैं । विद्यार्थियों की अभिवृत्ति प्रत्यक्षतः उनकी सम्प्राप्ति से सम्बन्धित सही है, तथा व्यक्तित्व के घटक ही सम्प्राप्ति पर अधिक प्रभाव डालते हैं, गणित के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति के समान नहीं है । इससे अप्रत्यक्षतः विद्यार्थी अपनी मौलिकता बनाये रखते हैं । दोनों प्रकार के विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति उन्हें विद्यार्थियों की सम्प्राप्ति से सम्बन्धित नहीं पाई गई ।

शोध अनुक्रमणिका

अग्निहोत्री, रवीन्द्र : सामाजिक स्तर के सन्दर्भ में शिशुओं का भाषा विकास, पीएच. डी. (शिक्षा), राज. विश्वविद्यालय, 1979

अग्रवाल, पूर्णकला : माध्यमिक स्तर पर गृह विज्ञान में शैक्षिक उपलब्धि के साथ व्यक्तित्व के कारक । एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

अग्रवाल, पूर्णिमा दास : कक्षा अष्टम् के छात्रों का संस्कृत में लिखित स्तर का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

अग्रवाल, रजनी : उच्च माध्यमिक विद्यालयों के उच्च तथा निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की जीव विज्ञान के प्रति अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1988

अग्रवाल, रामलखन : छात्राध्यापकों की शैक्षिक एवं प्रशैक्षिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

अनिल, कौर : प्राथमिक विद्यालय की सामाजिक दृष्टिकोण से स्वीकृत तथा अस्वीकृत छात्राओं के स्वसम्मान तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन, राज. विश्वविद्यालय, 1975

अनीचन्दानी, हनी : उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की दुश्चिन्ताओं का मापन एवं उनका शैक्षिक निष्पत्ति के साथ सम्बन्ध । एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1985

असगर अली : A comparative study of achievement, motivation, personality needs, creativity, socio-economic status and performance of destitute and non-destitute childrens of Higher Secondary Schools of Ajmer. (Age group 14-18). M. Ed., Raj. Uni., 1984

उम्मेद सिंह : छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन में सह-सम्बन्ध का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

कंसकर, लीला : A study on exclusion of variable during adolescence. M. Ed., Raj. Uni., 1979

कमलेश, कुमारी : समूह गृह विज्ञान एवं कला गृह विज्ञान स्नातक छात्राओं की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

करनावट, विजयकुमारी : उदयपुर शहर के एक उच्च माध्यमिक विद्यालय का माध्यमिक स्तर पर उच्च अकादमिक उपलब्धि, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

कालरा, किरन : A study of relationship among achievement intelligence and visual memory of Biology students. M. Ed, Rajasthan University, 1981

कुमावत, जगदीश : अष्टम् कक्षा के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का मूल्यांकन एवं अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सम्बन्ध । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

कुशवाह, सर्वेश : उदयपुर शहर में अध्ययनरत 10वीं कक्षा के ग्रामीण विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन एवं उनकी उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन, एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, 1987

कृपाल सिंह : कृषि संकाय के उच्च उपलब्धि तथा निम्न उपलब्धि वाले छात्रों की पृष्ठभूमि का एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

कौशिक, शशि : Some factors associated wiith academic achievement in science. M. Ed., Raj. Uni., 1978

खत्री, उषा : A study of psycho-socio factors effecting English language teaching. M. Ed., Raj. Uni., 1984

खरे, इन्द्रा : हिन्दी व्यंजन सम्बन्धी उपचारात्मक अभ्यास की प्रभावोत्पादकता का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

खान, खालिदा : कक्षा 10 में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर कक्षा के सामाजिक, शैक्षिक, संवेगात्मक, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

गर्ग, अजय कुमार : राजकीय एवं निजी विद्यालयों के भौतिक संसाधनों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

गुप्ता, अनिता : A study of conservation reasoning ability and its relationship with science processes of III to VIII grades students. M. Ed., Raj. Uni., 1981

गोलवलकर, शोभा : A study of scientific attitude, creativity and achievement of trible students of Rajasthan. Ph. D., Raj. Uni., 1986

गौड़, पूर्णिमा : विभिन्न शिक्षण माध्यमों का छात्राओं की उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विश्वविद्यालय, 1987

गौड़, राजेन्द्रकुमार : सामाजिक विकास हेतु माध्यमों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

गौड़, सुमेरसिंह : उच्च प्राथमिक विद्यालय की कक्षा सप्तम के छात्रों की संख्या का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1986

चटर्जी, बसन्ती : An investigation into the interdependence of cognitive development and language development in the middle school children. Ph. D., Raj. Uni., 1987

चन्द्रशेखर सिंह : A comparison of classroom climate of teacher teaching in physical and biological component of the science curriculum in Ajmer city at secondary level. M. Ed., Ajmer University, 1988

चाँदवानी, शोभा : उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियों तथा शैक्षिक उपलब्धियों का उनके अभिभावकों की आकांक्षाओं के सन्दर्भ में एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

चिश्ती, सैयद अब्दुल हसन : A study of self concepts of bright and slow learners in English of class X students of Ajmer city. M. Ed., Rajasthan University, 1987

चुग, सुमनलता : माध्यमिक स्तर (छात्र-छात्राएं) की वैज्ञानिक निष्पत्ति का चिन्तन से तुलनात्मक सह-सम्बन्ध, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

चौधरी, प्रमिला : The effect of intensive language teaching programme and scholastic achievement at primary level. M. Ed., Raj. Uni., 1986

चौधरी, रामादेवी : स्नातक अथवा स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त बी. एड., प्रशिक्षणार्थियों की अकादमिक एवं प्रशैक्षिक उपलब्धि में पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

चौधरी, रामकुमारी : राजनैतिक नेताओं (विधायकों) के नेतृत्व गुणों के विकास में औपचारिक शिक्षा के स्तर की भूमिका का अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विश्वविद्यालय, 1984

चौबे, कमलेश : A study of interrelationship amongst achievement motivation, self concept, socio-economic status and academic achievement of B. Ed. trainees. M. Ed., Raj. Uni., 1982

चौहान, इला : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति तथा उसका शैक्षिक उपलब्धियों से सम्बन्ध। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

चौहान, यशपाल सिंह : वर्ग 4, 5, 6 एवं 7 के छात्रों के उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले समूहों में वर्गीकरण योग्यता का अध्ययन, एम. एड., क्षेत्रीय महाविद्यालय, अजमेर, 1988

चौहान, यशोदा : माध्यमिक स्तर के जीव विज्ञान के विद्यार्थियों के स्वस्फूर्ति, चित्रण कला, दृश्य स्मृति व शैक्षिक उपलब्धि में सह-सम्बन्ध, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

चौहान, सुनीता : उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक, सामाजिक एवं विद्यालयी घटकों का प्रभाव—एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

जयप्रकाश : A comparative study of personal preferences self concept and performance of SOS children of villages of India and other children of Delhi schools of age group 13-18. M. Ed., Raj. Uni., 1980

जैन, मंजू : A comparative study of scholastic achievement in disciplinary and integrated science curriculum among the grade VI pupils. M. Ed., Raj. Uni., 1978

जैन, राजकुमारी : A study of relationship between reading ability in English and creative thinking among Higher Secondary students of Ajmer and Jaipur. M .Ed., Raj. Uni., 1980

जैन, शारदा : छात्राओं की अध्ययन आदतें व इन आदतों का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति से सम्बन्ध-निर्देशन हेतु एक शोध कार्य, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1978

जैन, सुभाषचन्द्र : An investigation into the Interrelationship among achievement motivation self concept, anxiety and academic achievement of school students of class XI. M. Ed., Raj. Uni., 1976

जोशी, ओमप्रकाश : Academic achievement and adjustment of rural talented students of Bikaner District. M. Ed., Raj. Uni., 1979

जोशी, रचना : A comparative study of need patterns of high and low achievement studying in Higher Secondary schools. M. Ed., Raj. Uni., 1985

टॉक, मंजू : राजकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के भौतिक संसाधनों का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1986

ठाकुर, जगदीश : Effectiveness of counselling for the low achieving adolescent students. M. Ed., Udai. Uni., 1978

तनेजा, किरण : हिन्दी की वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों का बी. एड. स्तर पर अध्ययन, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1983

तोमर, हेमलता : A study of conversation reading ability its relationship with science processes of III to VIII grade students in Uttar Pradesh. M. Ed., Raj. Uni., 1984

त्यागी, कमला : उदयपुर नगर की माध्यमिक कन्या शालाओं में शैक्षिक निष्पत्ति के व्यक्तिरेकीय मानवी घटक, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1978

थदानी, बीना : A study of the effect of certain personality and environment factors on the problem solving ability of

prospective secondary school teachers. M. Ed., Raj. Uni., 1977

दुबे, सन्तोष : उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को मापने एवं उनका सामाजिक स्तर के साथ सम्बन्ध । एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1986

नागदा, पन्नालाल : कक्षा अष्टम् के छात्रों की संस्कृत वर्तनी तथा व्याकरण की त्रुटियों का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

नारनोलिया : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आंकिक योग्यता, लिपिकीय गति एवं शुद्धता, रुचि तथा वाणिज्य के ज्ञानार्जन के पारस्परिक सम्बन्ध का एक अध्ययन, एम. एड., क्षेत्रीय महाविद्यालय, अजमेर, 1985

पंजाबी, रजनी : दसवीं कक्षा के छात्रों की जीव-विज्ञान में सम्प्राप्ति के सन्दर्भ में उनकी कक्षागत सामूहिक सहसंजकता, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

परनामी, सरोज : नवीं कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनकी अध्ययन सम्बन्धी आदतों का एवं मनोवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

पाण्डेय, के. एस. : Creativity among the high and low achievement in mathematics. M. Ed., Udai. Uni., 1981

पाण्डेय, सोहनलाल : उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों का संस्कृत विषय में अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

पारीक, छिगनलाल : नवीं कक्षागत छात्र-छात्राओं के लिखित हिन्दी स्तर का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

पारीक, शंकरलाल : उदयपुर नगर के राजकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के उच्चतम एवं निम्नतम शैक्षिक निष्पत्ति के व्यक्तिरेकीय घटक, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

पुरोहित, अणिमा : विज्ञान में उपलब्धि पर स्मृति की भूमिका, एम. एड., वनस्थली विश्वविद्यालय, 1987

प्रीतमसिंह : प्राथमिक विद्यालयों के बालकों में क्रमबद्धता, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

फर्सवान, आभा : दृश्य-श्रव्य साधनों का निर्माण एवं उनकी शैक्षणिक प्रभावशीलता का अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1988

बंसल, आशा : मारवाड़ी भाषी (अजमेर क्षेत्र) छात्र-छात्राओं की हिन्दी वर्तनी एवं व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियों का अध्ययन, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1983

बांगड़, रामप्रसाद : शिक्षक प्रशिक्षण पूर्व प्रवेश परीक्षा के पूर्व मापन मूल्य का अध्ययन, एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, 1988

बालादेवी : हिन्दी में उपचारात्मक शिक्षण का वाक्य रचना सम्बन्धी सम्प्राप्ति पर प्रभाव का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

विश्नोई, सुनन्दा : Academic achievement and study process of prospective teachers. M. Ed., Udai. Uni., 1982

बिहारी, सिंह : Commercial concepts among secondary school students. M. Ed., Raj. Uni., 1984

बीदावत, शेरसिंह : A study of academic under achievement among students, Ph. D., Raj. Uni., 1976

बृजबाला : सात से नौ वर्ष के बालकों में सम्प्रत्ययों के संरक्षण का विकासात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

भंडारी, प्रेमलता : माध्यमिक विद्यालय स्तर पर समूह गृह विज्ञान और कला गृह विज्ञान के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

भंडारी, हेमलता : नवीं कक्षा के विद्यार्थियों की सामान्य विज्ञान विषयक कठिनाइयों का निदानात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

भटनागर, रमेश : Relationship of mathematics achievement of creativity and intelligence of 10th grade pupils of urban and rural background. M. Ed., Raj. Uni., 1977

भट्ट, उषा : जैसलमेर शहर के सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

भट्ट, रेखा : उच्च उपलब्धि वाली छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा तथा आर्थिक परिस्थिति का एक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर डीम्ड विश्वविद्यालय, 1987

भदौरिया, अर्चना : A study of learning disabilities of upper primary students in relation to age socio-economic status and adjustment problems. M. Ed., Raj. Uni., 1987

भाटिया, रामचन्द्र : Over achievers (Some case studies). M. Ed., Rajasthan University, 1976

भारद्वाज, ऋतु : ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की भाषा सम्पन्नता का अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विश्वविद्यालय, 1987

भार्गव, रजनी : Some factors associated with academic achievement in English. M. Ed., Raj. Uni., 1978

मलिक, संगीता : A study of learning style, achievement motivation, anxiety, socio-economic status and performance of Higher Secondary science students of Ajmer., M. Ed., Ajmer. Uni., 1988

मसीह, सावित्री : जीव-विज्ञान में अधिगम परिणामों से सम्बन्ध कतिपय शिक्षकचरों एवं शिक्षण विधियों का अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1976

माथुर, अनिता : घर-परिवेश का छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

माथुर, जे. एन. : A study of linguistic competency of delinquent children, M. Ed., Udai. Uni., 1975

माथुर, नीरजकुमार : A psycho-ecological study of factors influencing creative performance of elementary school students, M. Ed., Raj. Uni., 1981

मिश्रा, रमेशश्री : A comparative study of programmed and convential instructional approach in the teaching of Biology to X class students. M. Ed., Raj. Uni., 1975

मिश्रा, राजेश्वरी : उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व की आधारभूत विशेषताओं, बुद्धि एवं शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1988

मिश्रा, सरला : पुनः शिक्षा वर्ग के बालक-बालिकाओं के भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कुछ तत्वों का अध्ययन, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1980

मिश्रा, सुमन : बुककीपिंग में उत्तम शैक्षिक सम्प्राप्ति हेतु सहायक कारकों का एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

मुनीर, बद्दे : Relationship of pupils attitude towards English with socio-economic status and achievement. M. Ed., Udai. University, 1988

मेनारिया, सुभाष चन्द्र : उदयपुर शहर के माध्यमिक विद्यालयों की नवीं कक्षा के विद्यार्थियों की बहीखाता विषय में की जाने वाली त्रुटियों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

मेहरा, भगवानाराम : स्नातक उपाधि प्राप्त अनुसूचित व गैर अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय1983

मेहंदीरत्ता, सुनीला : उच्च तथा निम्न शैक्षिक सम्प्राप्ति वाली छात्रों के बौद्धिक एवं गैर बौद्धिक तत्वों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

मौर्य, मदनलाल : अनुसूचित जाति की महिलाओं के सन्दर्भ में शिक्षा प्राप्ति के बाधक तत्वों का अध्ययन, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

यादव, अतरसिंह : अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों एवं उच्च जातियों के विद्यार्थियों की उत्तरदायित्व भावनाओं एवं व्यक्तित्व समायोजन समस्याओं का अंकन–एक तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

यादव, विजय बहादुरसिंह : अजमेर जिले के दसवीं कक्षा के कृषि संकाय के छात्रों की निष्पत्ति, प्रेरणा, मानसिक योग्यता, शैक्षणिक सम्प्राप्ति एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर का एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

यादव, सतीशकुमार : A comparative study of the intelligence level and the motivational tendencies of the scheduled caste and non-scheduled caste students. M. Ed., Raj. Uni., 1976

रस्तोगी, नमिता : Diagnosis of the difficulties in Biology practical at secondarys level. M. Ed., Udai. Uni., 1982

रस्तोगी, रेणु : मिडिल कक्षाओं के विभिन्न स्तरों पर कुछ प्रत्ययों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

राठौड़, गिर्राजसिंह : गणित के विद्यार्थियों का स्वभाव, बुद्धिलब्धि एवं शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन, एम. एड., सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, 1988

रामेश्वरदयाल : A sociometric study of relations of academic achievement with social acceptance and rejections of air force personnel, airman. M. Ed., Raj. Uni., 1975

लाल, बी. एन. : An investigation to the interrelationship among creativity achievement motivation and academic achievement of science students of class XI. M. Ed., Raj. Uni., 1975

वर्मा, शकुन्तला : A study of the college adjustment of four year B. Sc., B. Ed., students and its effect on their academic achievement. M. Ed., Ajmer Uni., 1988

वाजपेयी, अनिलकुमार: A study of scientific aptitude, aptitude towards science and scientists and their relationship with scholastic achievement in science subjects. M. Ed., Ajmer University, 1988

वाजपेयी, प्रभा : अनिवार्य विज्ञान शिक्षा के परिणामस्वरूप उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों

व्यास, भँवरलाल : आठवीं श्रेणी के छात्रों का हिन्दी में समस्या समाधान योग्यता का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

व्यास, हर्षा : उच्च तथा निम्न शैक्षिक सम्प्राप्ति वाले किशोरों के स्वसम्मान तथा व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

शर्मा, अलका : उत्तर प्रदेश के जिला मेरठ के विद्यालयों की अष्टम् श्रेणी के विद्यार्थियों के गणित विषय में अनुत्तीर्ण होने के कारणों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

शर्मा, जे. पी. : A study of attitudes and personality traits in relation to its effect on achievement of the students in mathematics. Ph. D., Raj. Uni., 1985

शर्मा, बंशीधर : Case studies of public school students failing at the Secondary School Exam. M. Ed., Raj. Uni., 1979

शर्मा, भारती : जोधपुर के विद्यालयों में कक्षा नवम के छात्र-छात्राओं की हिन्दी विषय में उपलब्धि एवं बुद्धि का सह-सम्बन्ध । एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1987

शर्मा, मधु : अभिक्रमित शिक्षण एवं पारम्परिक कक्षा शिक्षण के माध्यम से अंग्रेजी अधिगम में प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

शर्मा, मुनीश्वर कुमार : Certain non-cognitive correlates of academic achievement of trible students of Banswara District. M. Ed., Raj. Uni., 1979

शर्मा, रमेशचन्द्र : माध्यमिक शाला स्तर पर भूगोल में मानचित्र कार्य में सामान्य त्रुटियाँ – एक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

शर्मा, लक्ष्मीनारायण : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियाँ, आकांक्षाओं तथा शैक्षिक उपलब्धि में सह-सम्बन्ध, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

शर्मा, विमला : छात्राओं में दुश्चिंताएँ और उनका शैक्षिक निष्पत्ति से सम्बन्ध, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

शर्मा, वीणा : A study of learning environment among certain types of schools. M. Ed., Raj. Uni., 1984

शर्मा, शकुन्तला : सैनिकों के भ्रमणशील और अभ्रमणशील परिवारों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

शर्मा, शशिकला : नवीं कक्षा के विद्यार्थियों की सामान्य विज्ञान विषय सीखने की कठिनाइयों का निदानात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

शर्मा, सत्या : अजमेर नगर के स्लम क्षेत्रों के दशम् कक्षा के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता, आत्माभिव्यक्ति, सामाजिक-आर्थिक स्तर, दुश्चिंता एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति का एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

शर्मा, सरोज : विभिन्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग के सन्दर्भ में बालकों की भाषा सम्पन्नता का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

श्रवण कुमार : माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित एवं उच्च जातियों के विद्यार्थियों की उत्तरदायित्व भावना एवं शैक्षिक निष्पत्तियाँ—एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

श्रीवास्तव, अशोक कुमार : रसायन शास्त्र विषय में हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यमों द्वारा पढ़ाये गये उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन (प्रायोगिक अध्ययन), एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

श्रीवास्तव, विनोद : पब्लिक स्कूल के दसवीं कक्षा में छात्रों के अनुत्तीर्ण होने के कारणों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

शाण्डिल्य, प्रभा : हिन्दी भाषा में निष्पत्ति एवं सर्जनात्मक लेखन पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

शास्त्री, चतुर्थीलाल : दशम् कक्षा के छात्र-छात्राओं के लिखित संस्कृत स्तर का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

शुक्ला, के. सी. : Factors differentiating high and low academic performance of secondary shcools in Rajasthan. Ph. D., Udai. Uni., 1978

शैतान, सिंह : उदयपुर नगर के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में आन्तरिक मूल्यांकन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1974

शौकत, नसीम : सौन्दर्य बोध का चित्रकला विषय में उपलब्धि से सह-सम्बन्ध, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

सन्धू, तेजसिंह : Relationship of creativity with over under achievement in science (High School boys), M. Ed., Raj. Uni., 1975

सक्सेना, अनिलकुमार : Attitude towards physics and cognitive preference styles among different groups of science students. Ph. d. Raj. Uni., 1984

सक्सेना, कमद : कक्षा दस के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा व्यक्तिगत मूल्यों का

सक्सेना, नीरा : निजी उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित अध्यापकों की अध्यापन योग्यता का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1988

सक्सेना, पुष्पलता : अजमेर नगर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के ग्यारहवीं कक्षा के अल्पसंख्यक एवं बहुल संख्यक समुदाय के छात्र-छात्राओं की निष्पत्ति प्रेरणा, स्वधारणा, चिन्ता, शैक्षिक सम्प्राप्ति एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर का एक तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

सक्सेना, मंजूषा : विषय की प्रकृति तथा सम्प्राप्ति में भिन्नता का स्वस्फूर्त कला पर प्रभाव, एम. एड., वनस्थली विश्वविद्यालय, 1988

सत्यपाल सिंह : A study of self concept achievement motivation anxiety and performance of X class scheduled caste students of Meerut District. M. Ed., Raj. Uni., 1979

सत्यवीर सिंह : ग्रामीण किशोर छात्रों के कक्षा समूहाचार एवं शैक्षिक निष्पत्ति का गवेषणात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

सन्तोष कुमार : A study of relationship of intellectual development with creativity and achievement of XI grade science student. M. Ed., Raj. Uni., 1982

सनाढ्य, महेन्द्र : वर्तमानकालीन विद्यालयी संस्थितियों में उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले किशोर छात्रों की शैक्षिक चिन्ताओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., डबोक डीम्ड विश्वविद्यालय, 1988

सभरवाल, वीनाकुमारी: विभिन्न सामाजिक वर्गों की छात्राओं द्वारा लिखित भाषाई प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

स्पर्श, कुमारी : हस्तलेखन व हस्त स्थिरता के सम्बन्ध का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

स्वामी, शिवरतन : विद्यालयी संगठनात्मक पर्यावरण का बालकों की शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

सांखला, अर्चनाकुमारी: जोधपुर शहर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों की नवम् कक्षा के छात्र-छात्राओं के अंग्रेजी विषय में असफल होने के कारणों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1986

सारस्वत, उर्मिला : प्राथमिक स्तर पर आवासीय एवं अनावासीय छात्राओं की स्वतः संज्ञानात्मक विकास एवं शैक्षिक सम्प्राप्तियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

सिन्हा, रेणु : उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों का उनकी अध्ययन सम्बन्धी आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

सिंह, निर्मला : विद्यार्थियों में निष्पत्ति, अभिप्रेरणा और उनके मूल्यों के सह-सम्बन्ध का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

सिंह, संगीता : प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बालक और बालिकाओं में सम्प्रत्ययों के संरक्षण का विकासात्मक अध्ययन, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1981

सेठी, रीटा : कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामान्य चिन्ता, परीक्षा सम्बन्धी चिन्ता, बुद्धिलब्धि तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति पर पड़े प्रभावों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

सोढ़ी, गुरमीत : सामाजिक स्वीकृति के सन्दर्भ में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, सामान्य ज्ञान और नेतृत्व के कारकों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

हुम्मड, लक्ष्मीलाल : रसायन विज्ञान शिक्षण में निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक कार्यक्रम द्वारा छात्रों की सम्प्राप्ति में आने वाले अन्तर का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

★ ★ ★

मापन एवं मूल्यांकन

❑ रामनारायण आटोलिया
❑ कृष्ण मुरारी गोयल
❑ सतीश कुमार

मापन एवं मूल्यांकन शिक्षा का अभिन्न अंग है। मापन परिमाणात्मक है जबकि मूल्यांकन गुणात्मक है। वैसे सभ्यता के निरन्तर विकास एवं विज्ञान की उन्नति के फलस्वरूप अब प्रत्येक वस्तु का मापन सम्भव हो गया हैं। यदि किसी भी वस्तु, जिसकी सत्ता है तो उसकी सत्ता किसी न किसी परिमाण में है तथा कोई भी वस्तु जिसकी सत्ता परिमाण में है, मापन के योग्य है। फिर भी जहाँ भौतिक वस्तुओं का मापन परिमाणात्मक रूप में सरलता के साथ किया जा सकता है, वहाँ शिक्षा में परिमाणात्मकता मापन भौतिक विज्ञानों की अपेक्षा अधिक कठिन एवं जटिल है। इसका कारण यह है कि शैक्षिक मापन की विषय सामग्री का सम्बन्ध मानव व्यवहार से है और मानव व्यवहार जटिल एवं गत्यात्मक है। फिर भी अनुसन्धाताओं ने "मापन एवं मूल्यांकन" क्षेत्र में अनुसन्धान करने का बीड़ा उठाया है।

भारत में 1956 के लगभग "मापन एवं मूल्यांकन" के क्षेत्र में अनुसन्धान कार्य प्रारम्भ हुआ तथा अनुसन्धाताओं ने बुद्धि परीक्षण, अभिवृत्ति, व्यक्तित्व, रुचि व सृजनात्मकता क्षेत्र में अपनी-अपनी रुचि प्रदर्शित की। 1953 से 1975 तक राजस्थान में एम. एड. स्तर पर 57, पीएच. डी. स्तर पर 2 व प्रायोजना स्तर पर 8 अनुसन्धान कार्य हुए हैं, जबकि 1976 से 1988 तक एम. एड. स्तर पर 60, पीएच डी. स्तर पर 4 अनुसन्धान कार्य हुए हैं। अतः मापन एवं मूल्यांकन के क्षेत्र में शोध कार्यों में विशेष प्रगति नहीं हुई है। साथ ही "निदानात्मक परीक्षण", "व्यक्तित्व" व "विद्यालय व्यवस्था" उपक्षेत्र पूर्ण रूप से उपेक्षित रहे हैं। परन्तु दूसरी ओर "योग्यता" व "चिन्तन" के नवीन उपक्षेत्र उभरकर हमारे सम्मुख आए है।

1975 से 1988 तक सम्पन्न शोध-कार्यों का विवरण मापन एवं मूल्यांकन के विभिन्न आयामों को पृथक-पृथक करके दर्शाया गया है जिससे मापन एवं मूल्यांकन की स्थिति को समझने में सरलता होगी।

निष्पत्ति परीक्षण

शर्मा (1975) व कौशिक (1980) ने कक्षा 6, 7 व 8 के क्रमशः सामान्य विज्ञान व गणित, सामाजिक ज्ञान, शर्मा (1975), शर्मा (1983), शर्मा (1983) एवं अवस्थी (1984) ने कक्षा-8 के लिए क्रमशः सामान्य विज्ञान व गणित, गृह-विज्ञान, गृह-विज्ञान व भूगोल, सोनी (1980) खाती (1981), रिपुजीत सिंह (1981) व गिल (1983) ने कक्षा 9 व 10 के लिए क्रमशः अर्थशास्त्र, बैंकिंग, इतिहास व व्यापारिक भूगोल एवं बाली (1982), शर्मा (1982), जैन (1983), भोजक (1984), सावित्री सिंह (1984) व सैनी (1984) ने कक्षा 11वीं के लिए, चिकारा (1987) ने हिन्दी अध्यापकों एवं बी. एड. छात्राध्यापकों पर हिन्दी शिक्षण मापनी की विश्वसनीयता एवं वैधता मापनी एवं शर्मा (1987) ने उच्च माध्यमिक स्तर पर भौतिक विज्ञान में वस्तुनिष्ठ निष्पत्ति परीक्षण की रचना की । क्रमशः संस्कृत, व्याकरण, इतिहास, चित्रकला, व्यापारिक पद्धति, अर्थशास्त्र एवं इतिहास विषयों पर एक-एक वस्तुनिष्ठ निष्पत्ति परीक्षण तैयार किए जो सभी डा. ब्लूम की मूल्यांकन तकनीक पर आधारित थे । प्रायः सभी परीक्षणों की विश्वसनीयता व वैधता प्रमाणित की गई । साथ ही सभी अनुसन्धाताओं ने छात्र-छात्राओं की विषय से सम्बन्धित ज्ञानोपलब्धि का भी पता लगाया ।

निदानात्मक परीक्षण

शशि (1975) ने कक्षा चार व पाँच के छात्रों की लिखित हिन्दी में होने वाली अशुद्धियों का पता लगाकर एक निदानात्मक परीक्षण निर्मित किया जिसकी विश्वसनीयता 0.877 व वैधता 0.611 प्रमाणित की गई । प्रतिशत की वरीयतानुसार छात्रों में दस प्रकार की अशुद्धियाँ पाई गईं। अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग, रैफ का स्थान विपर्यय, "श" के स्थान पर "स" का प्रयोग, सर्वनाम का अनुचित प्रयोग, "ऊ" के स्थान पर "उ" का प्रयोग, "औ" के स्थान पर "ओ" को प्रयोग, प्रश्नवाचक के स्थान पर पूर्ण विराम का प्रयोग, "ई" के स्थान पर "इ" का प्रयोग, "ए" के स्थान पर "ऐ" का प्रयोग एवं विविध । वर्मा (1988) ने माध्यमिक स्तर पर सामान्य विज्ञान विषय के निदानात्मक परीक्षण का निर्माण किया, जिसकी विश्वसनीयता 0.904 व वैधता 0.758 प्रमाणित की गई । विभिन्न संकायों में से वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी चारों उद्देश्यों के सभी उपक्षेत्रों में सर्वाधिक दुर्बल हैं । कौशल के क्षेत्र में विज्ञान संकाय के छात्र सबसे कम दुर्बल रहे परन्तु तीनों उद्देश्यों के क्षेत्र में कला संकाय के दुर्बल विद्यार्थियों की संख्या सबसे कम पाई गई ।

अभिरुचि

तिवारी (1982) ने ज्ञान किया कि माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राएँ पढ़ाई के साथ-साथ सामाजिक उत्सवों में भाग लेते हैं । सामाजिक कुरीतियों को यथासम्भव दूर करने का प्रयास करते हैं, सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करते हैं, अपने अधिकारों के प्रति सजग रहते हैं, राष्ट्रीय गान के प्रति आदर भाव रखते हैं, धर्म की रूढ़ियों को कोई महत्व नहीं देते हैं, विदेशों में

योग्यता

गेरा (1977) ने पाँचवीं कक्षा के छात्रों में पाया कि छात्र प्रयोगों द्वारा सामान्य विज्ञान विषय का ज्ञान अधिक ग्रहण करते हैं । अतः अनुसन्धाता का कहना है कि कक्षा का अधिगम वातावरण बाल-केन्द्रित होना चाहिए न कि शिक्षक केन्द्रित । सोनी (1978) ने पता लगाया कि 11वीं कक्षा के व्यापारिक व गैर व्यापारिक वर्ग के छात्रों की स्वधारणा व मानसिक योग्यता समान होती है तथा उनकी स्वधारणा, मानसिक योग्यता व शैक्षिक सम्प्राप्ति में कोई परस्पर सम्बन्ध नहीं होता है । पाण्डे (1979) ने 11वीं विज्ञान कक्षा के छात्रों की समस्या समाधान योग्यता का उनके बौद्धिक विकास से सम्बन्ध ज्ञात किया । निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि ज्यों-ज्यों बौद्धिक विकास होता जाता है त्यों-त्यों उनमें समस्या-समाधान की योग्यता भी बढ़ती जाती है । साथ ही इस योग्यता के बढ़ने के साथ-साथ उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति भी बढ़ती है ।

जोशी (1980) ने छठी से नवीं कक्षा तक के छात्रों की संरक्षण तार्किक योग्यता की उनकी बुद्धि के साथ सम्बन्धों की जाँच की । परन्तु इनमें आपस में किसी प्रकार का सम्बन्ध सिद्ध नहीं हो सका । रासना (1981) ने दृष्टिहीन व दृष्टिवान बालकों की सृजनात्मक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन किया । छठी से आठवीं कक्षा के बालकों में सृजनात्मक योग्यता समान पाई गई जबकि नवम् व दशम् कक्षा के दृष्टिवान बालकों में दृष्टिहीन बालकों से सृजनात्मक योग्यता अधिक पाई गई । उदयवीर (1982) ने दशम् कक्षा के छात्र-छात्राओं का हिन्दी में लिखित स्तर का अध्ययन किया । अलीगढ़ जिले के छात्र-छात्राओं का लिखित स्तर बुलन्दशहर जिले के छात्र-छात्राओं के स्तर से उन्नत पाया गया । साथ ही अलीगढ़ जिले के अनुसूचित जाति के छात्र-छात्राओं का हिन्दी भाषा ज्ञान बुलन्दशहर जिले के छात्र-छात्राओं के स्तर से उन्नत पाया गया ।

बायती (1984) ने नवमी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी का एक तर्क योग्यता परीक्षण का विकास किया जिसकी उच्च विश्वसनीयता व वैधता भी प्रमाणित की गई । अनुसन्धाता का कहना है कि एल. एन. दुबे की तर्क योग्यता परीक्षण के बाद प्रस्तुत परीक्षण को एक अग्रणी कार्य माना जाना चाहिए । ऐरन (1985) ने नवमी कक्षा के छात्र-छात्राओं हेतु हिन्दी भाषा के एक वाचन-अंकन जाँच-पत्र की रचना की जिसकी उच्च विश्वसनीयता व वैधता भी ज्ञात की गई। शोधकर्ता ने अपने सर्वेक्षण के आधार पर दावा किया है कि यह हिन्दी वाचन-अंकन क्षेत्र का प्रथम जाँच-पत्र है । वर्मा (1986) ने माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए शाब्दिक एवं अशाब्दिक तार्किक योग्यता मापनी का विकास किया । जिसकी उच्च विश्वसनीयता व वैधता प्रमाणित की गई । तर्क व शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक उच्च कोटि का सह-सम्बन्ध पाया । सोनार (1987) ने बी. एड. में प्रवेश हेतु विज्ञान अध्यापन अभियोग्यता मापनी का निर्माण किया । विज्ञान के छात्रों में विज्ञान अध्यापन एवं अभियोग्यता छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाई गई । मापनी की वैधता 75 प्रतिशत रही । बेनीवाल (1987) ने माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की तर्क योग्यता परीक्षण का विकास किया, जिसकी विश्वसनीयता अधिक पाई गई । शोध निष्कर्षों के अनुसार शाब्दिक और अशाब्दिक दोनों ही

प्रकार की योग्यताओं के विकास का प्रभाव धनात्मक होता है । दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं । कुलश्रेष्ठ (1987) ने किशोर छात्रों पर वर्गीकरण कौशल एवं बुद्धिमत्ता परख के सम्बनधों की विभिन्न उपकरणों से जाँच की । छात्राओं की उपलब्धि छात्रों की तुलना में कक्षा 6 से 8 में सी. पी. एम. उपकरण में अच्छी रही । शर्मा (1987) ने विद्यालय परिस्थितियों में कुण्ठा की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया । परीक्षण की अंकन विश्वसनीयता एवं वैधता अच्छी पाई गई। भटनागर (1987) ने उच्च प्राथमिक विद्यालय के छात्रों की उच्च तार्किक योग्यता एवं अधिक सृजनशीलता का अध्ययन किया । शोध निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि अधिक मौलिकता वाले विद्यार्थी पूर्ण चित्र अधिक बनाते हैं, न्यून मौलिकता वाले सपाट चित्र बनाते हैं । न्यून तार्किक योग्यता वाले सपाट चित्र अधिक, अधिक तार्किक योग्यता वाले पूर्ण अनुपातिक चित्र बनाते हैं ।

चिन्तन

भटनागर (1977) के अनुसार कक्षा दसवीं के छात्रों की गणित विषय की उपलब्धि व उनके चिन्तन में सार्थक सह-सम्बन्ध होता है ।

जैन (1984) ने अपने पीएच. डी. शोध के अन्तर्गत किशोर छात्र-छात्राओं के तार्किक चिन्तन का अध्ययन किया । शोधकर्ता ने बताया कि किशोर छात्र-छात्राओं में स्थूल चिन्तन आयु वृद्धि के साथ-साथ कम होता जाता है । जबकि कार्य योजनाओं व चिन्तन द्वारा उनकी अभिव्यक्ति आयु-वृद्धि के साथ-साथ बढ़ती जाती है । यह वृद्धि निजी संस्थाओं की छात्राओं में अधिक पाई गई । इसके अलावा किशोर छात्र-छात्राओं की बुद्धिमत्ता, भाषिक योग्यता व व्यक्तित्व विशेषताएँ (उग्रता व तनाव स्थिति के अलावा) उनके चिन्तन से सह-सम्बन्धित पाई गईं ।

जोशी (1984) के अनुसार किशोर छात्राओं के तार्किक चिन्तन में आयु व स्तर के अनुसार वृद्धि पाई गई तथा वृद्धि के दौरान "हम्प इफेक्ट्स" भी पाया गया । केवल 19 प्रतिशत छात्राओं में तार्किक क्षमता दृष्टिगोचर हुई तथा 50 प्रतिशत छात्राओं का मस्तिष्क प्रायोगिक नहीं पाया गया । नयनगुआ (1987) ने भी अपने पीएच. डी. अनुसन्धान के अन्तर्गत किशोर छात्र-छात्राओं के तार्किक चिन्तन का अध्ययन किया । अनुसन्धानकर्त्ता के अनुसार 13, 14 वर्ष के छात्रों की अभिव्यक्ति श्रेष्ठ पाई गई । किशोर छात्र-छात्राओं की आयु व स्तर के बढ़ने के साथ-साथ उनकी बुद्धिमत्ता, आंकिक योग्यता, व अभिव्यक्ति भी बढ़ती हुई मिली । भाटी (1985) ने किशोर छात्र-छात्राओं में "हम्प इफेक्ट" का अध्ययन किया । अनुसंधाता ने ज्ञात किया कि "हम्प इफेक्ट" कई कारकों के बावजूद भी किशोरों में विद्यमान रहता है तथा उनकी त्रुटियाँ उनकी उम्र बढ़ने के साथ अचानक बढ़ जाती हैं । अर्थात् उनका एक अवस्था से दूसरी अवस्था में पदार्पण करते समय उनकी त्रुटियाँ अचानक बढ़ जाती हैं ।

बुद्धि

सम्बन्ध नहीं होता है । नकरा (1984) के अनुसार नवम् विज्ञान के छात्रों के बौद्धिक विकास का उनके अधिगम वातावरण से धनात्मक सहसम्बन्ध है ।

अभिवृत्ति

मुद्गल (1982) ने किशोर छात्रों की हिन्दी के प्रति उनकी अभिवृत्ति मापने हेतु एक "अभिवृत्ति मापनी" का निर्माण किया । पुरोहित (1985) ने माध्यमिक कक्षा के छात्र-छात्राओं की अध्ययन के प्रति उनकी अभिवृत्ति का अध्ययन किया । अध्ययन के पश्चात् निष्कर्ष यह निकला कि छात्र-छात्राएँ अध्ययन के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं । भल्ला (1988) ने खुली किताब परीक्षा की गुणवत्ता एवं उसके प्रति छात्राओं की प्रतिक्रियाओं को मापने हेतु अध्ययन किया। यू. पी. बोर्ड द्वारा निर्मित्त प्रश्न-पत्र तथा शोधकर्त्री द्वारा निर्मित प्रश्न-पत्र का उद्देश्य आधारित विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ कि यू. पी. बोर्ड द्वारा निर्मित प्रश्न-पत्र केवल ज्ञानात्मक एवं कौशलात्मक उद्देश्यों का मापन करने वाला था । जबकि शोधकर्त्री द्वारा बनाया प्रश्न-पत्र उच्च-स्तरीय उद्देश्यों पर (ज्ञानात्मक, अवबोधात्मक व संश्लेषणात्मक पर आधारित था) प्रश्न-पत्र की विश्वसनीयता पूर्ण थी ।

परीक्षा

जोशी (1976) ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों में सैकेण्डरी परीक्षा के परिणामों का अध्ययन किया । अनुसन्धाता के अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों में सैकेण्डरी परीक्षा के परिणाम निरन्तर गिरते हुए पाए गए । हाडा (1976) के अनुसार विधि स्नातक स्तर पर कला व वाणिज्य वर्ग के विषयों के आन्तरिक, बाह्य व मौखिक परीक्षा के प्राप्तांकों में सह-सम्बन्ध था परन्तु विज्ञान वर्ग के विषयों में नहीं । नियमित विद्यार्थियों को स्वयंपाठी विद्यार्थियों की तुलना में मौखिक परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त हुए ।

शर्मा (1979) ने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा अपनाए गये परीक्षा सुधार कार्यक्रमों का अध्ययन कर पाया कि सुधार कार्यक्रम उपयोगी व व्यावहारिक सिद्ध हुए तथा शिक्षण पर उनका धनात्मक प्रभाव देखा गया । मोदी (1980) ने राजस्थान विश्वविद्यालय की बी. एड. परीक्षा के आन्तरिक एवं बाह्य मूल्यांकन का तुलनात्मक अध्ययन किया । निष्कर्ष के अनुसार सैद्धान्तिक पक्ष में अन्तरांकन, बाह्यांकन से ऊँची दर पर रहे तथा अध्यापनाभ्यास में अन्तरांकन व बाह्यांकन के न्यूनतम अंक समान देखे गए जबकि अधिकतम अंकों में अन्तरांकन अधिक व बाह्यांकन कम रहे ।

साहनी (1982) ने कक्षा 11 के अर्थशास्त्र प्रश्न-पत्रों के मूल्यांकन की भिन्न-भिन्न पद्धतियों की विश्वसनीयता का अध्ययन किया । अनुसन्धानानुसार अंक पद्धति, ग्रेड पद्धति व रूपान्तरित पद्धति पाई गई । व्यास (1982) ने विभिन्न विद्यालयों के परीक्षा परिणामों की जाँच की । जाँच करने पर योग व पूरक सम्बन्धी अंक देने की त्रुटियाँ पाई गईं । शुद्ध परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों का प्रतिशत कम पाया गया।

असफलताएँ

नयनगुआ (1977) ने माध्यमिक स्तर के छात्रों के गणित में असफल होने के कारण ज्ञात किए । इससे कक्षा में अनियमित उपस्थिति, गृह-कार्य न करना, गणित की ओर कम ध्यान देना, बुद्धिमत्ता की कमी, पिछली कक्षा में गणित की नींव कमजोर, सूत्र याद करने में असमर्थ, अध्यापकों द्वारा कक्षा छोड़ देना, अध्यापकों का स्थानान्तरण हो जाना आदि कारणों का पता लगा ।

प्रश्न-पत्र

हाडा एवं वैष्णव (1981) ने कक्षा 3 से 8 तक के हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक एवं वाणिज्य, तिवारी (1975) ने कक्षा 6 से 8 के हिन्दी, सामाजिक ज्ञान एवं सामान्य विज्ञान, ठाकुर (1986) ने कक्षा 10 के प्रारम्भिक गणित एवं शर्मा (1982) ने कक्षा 10 व 11 के नागरिक शास्त्र प्रश्न-पत्रों का विश्लेषण किया । अधिकांश प्रश्न-पत्रों में ज्ञानात्मक एवं अवबोध प्रश्नों की अधिकता पाई गई जबकि ज्ञानोपयोगी एवं कौशल प्रश्नों की कमी थी । इकाई प्रकरण एवं अंक विभाजन सम्बन्धी निर्देश के महत्व को ध्यान में नहीं रखा गया ।

तिवारी (1976) ने एम. एड. स्तर पर राजस्थान, दिल्ली व अखिल भारतीय शिक्षा बोर्डों एवं पीएच. डी. स्तर पर 1982 में राजस्थान, दिल्ली, मध्य प्रदेश, हरियाणा एवं केन्द्रीय शिक्षा बोर्डों के उच्च माध्यमिक कक्षा के नागरिक शास्त्र के प्रश्न-पत्रों का तुलनात्मक अध्ययन किया । विभिन्न प्रश्न-पत्रों में पाठ्यक्रम व शिक्षण उद्देश्य समाहीकरण के साथ-साथ योग्यता व कठिनाई के स्तरों में अन्तर पाया गया जिसका मूल कारण नील पत्र तैयार न किया जाना था । शर्मा (1988) ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के तार्किक चिन्तन एवं हिन्दी, अंग्रेजी विज्ञान, सामाजिक ज्ञान की उपलब्धि के बीच सह-सम्बन्ध ज्ञात किया ।

समायोजन समझ में आयु के सभी स्तर पर छात्रों की अभिव्यक्ति श्रेष्ठ रही । संयुक्त करने की योग्यता छात्रों में अधिक है ।

विविध

सक्सेना (1975) के अनुसार समवयस्क समूह की किशोर छात्राओं में गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन सम्बन्धी समस्याएँ पाई गईं । यशोदा (1977) ने नर्सरी विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली विधियों एवं अनुदेशन सामग्री का मूल्यांकन किया। शोधकर्त्री ने पाया कि उच्चारण में सामूहिक व वैयक्तिक दोनों विधियाँ प्रयुक्त की गईं तथा पूर्व ज्ञान शब्दों के आधार पर रचना कार्य करवाया गया ।

शर्मा (1978) ने राजस्थान के स्वायत्तशासी तथा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की

अग्रवाल (1980) ने राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा आयोजित सेवारत शिक्षकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मूल्यांकन किया। अधिकांश प्रशिक्षण नवाचार से सम्बन्धित थे। अनावर्तक कार्यक्रम की तुलना में आवर्तक कार्यक्रमों का प्रतिशत अधिक पाया गया। शेखावत (1981) ने विज्ञान के निर्धारित प्रायोगिक कार्यों एवं उनकी उपयोगिता का अध्ययन किया। विद्यालय छात्रोपयोगी प्रयोगों की सुविधा जुटाते नहीं पाए गए। प्रारूप उपलब्ध कराने में तो विद्यालय असमर्थ रहे।

प्रतिमा (1982) ने खोजा कि प्रजेन्ट पर्फेक्ट पढ़ाने के लिए अभिक्रमित अनुदेशन सामग्री विश्वसनीय होती है। कौर (1984) ने अध्ययन कर पाया कि विद्यालय की पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों में भाग लेने वाले माध्यमिक कक्षा स्तर के छात्र-छात्राओं में से असफल परीक्षार्थियों में अत्यधिक अवांछनीय प्रभाव ज्यादा देखे गए। आयजक (1987) ने विद्यार्थियों के विभिन्न समूहों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया। कक्षा–7 के बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में वायु प्रदूषण सम्बन्धी जागरूकता का स्तर अधिक पाया गया। कक्षा–9 में बालिकाओं की अपेक्षा बालकों में वायु प्रदूषण सम्बन्धी जागरूकता का स्तर ऊँचा पाया गया। कक्षा–7 में बालिकाओं का बालकों की अपेक्षा जल प्रदूषण सम्बन्धी जागरूकता का स्तर उन्नत रहा।

सम्भावनाएँ एवं सुझाव

अधिकांश शोध-कार्य माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक छात्र-छात्राओं पर आधारित हैं, जबकि प्राथमिक स्तर के छात्र-छात्राओं पर भी शोध कार्य करना चाहिए। क्योंकि बालक का विकास इसी अवस्था में द्रुत गति से होने के कारण शोध के निष्कर्षों के आधार पर उनके विकास को वांछित दिशा में परिवर्तित किया जा सकता है। साथ ही अधिकांश शोध-कार्य राजकीय विद्यालयों के सामान्य छात्र-छात्राओं पर आधारित है। जबकि अराजकीय विद्यालयों के छात्र-छात्राओं एवं विशेष वर्गों के छात्र एवं छात्राओं पर भी शोध कार्य करना चाहिए। ताकि उनका उचित दिशा में विकास करने हेतु मदद मिल सके।

इन अनुसन्धानों में सर्वेक्षण विधि को अधिक स्थान दिया गया है, जबकि निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए प्रायोगिक विधि अधिक वैध एवं विश्वसनीय होती है। यहां शोध के अन्तर्गत प्रायोगिक विधि को भी उचित स्थान दिया जाना चाहिए। छात्रों एवं अध्यापकों की अभिरुचि, योग्यता, चिन्तन, बुद्धि, अभिवृत्ति एवं व्यक्तित्व का मापन शैक्षिक विकास में सहायता देता है। अतः इन क्षेत्रों में भी अनुसन्धाताओं को अधिक से अधिक अनुसन्धान कार्य करना चाहिए।

अधिकांश अनुसन्धाताओं ने स्वनिर्मित उपकरण काम में लिए हैं। यह अच्छा प्रयास है। वैसे भी भारतीय स्थितियों में निर्मित उपकरण ही सही निष्कर्ष दे पाते हैं। अतः विदेशी वातावरण में निर्मित उपकरणों को काम में लेने से पहले भारतीयकरण तो किया ही जाना चाहिए।

मापन एवं मूल्यांकन क्षेत्र में निष्पत्ति परीक्षण निर्मित करने पर विशेष जोर दिया गया। वस्तुतः इस क्षेत्र में शिक्षक को स्व-निर्मित परीक्षणों का ही उपयोग करना चाहिए, क्योंकि

पाठ्यक्रम परिवर्तन के साथ ही बनाए गए निष्पत्ति परीक्षण अनुपयोगी हो जाते हैं । निष्पत्ति परीक्षण के स्थान पर निदानात्मक परीक्षणों की रचनाएँ अधिक करनी चाहिए । जिससे छात्रों की कमजोरियों का पता लगाकर उनका निदान किया जा सके । जबकि इस ओर शोधकर्ताओं ने कोई ध्यान नहीं दिया ।

छात्र-छात्राओं के सामाजिक एवं शारीरिक विकास से सम्बन्धित शोध कार्य बिलकुल नहीं किए गए हैं जबकि हम एक ओर बालक के सर्वांगीण विकास करने का दम भरते हैं । अतः इन क्षेत्रों में भी मूल्यांकन कार्य अपेक्षित है ।

कुछ अनुसंधानकर्त्ताओं ने किशोर बालकों के तार्किक चिन्तन का अध्ययन किया, जो कि इस क्षेत्र में एक नवीन प्रयास है । इस क्षेत्र में छोटे बालकों पर अधिक कार्य किया जाना चाहिए ।

अभिरुचि एवं विद्यालय व्यवस्था पर नहीं के बराबर शोध-कार्य किया गया है । इन क्षेत्रों में भी अधिक से अधिक शोध-कार्य किया जाना चाहिए ।

पिछले कई वर्षों से यह देखने में आ रहा है कि अराजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षण संस्थाओं के परीक्षा परिणाम राजकीय विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की तुलना में अच्छे रहते हैं । अतः इससे सम्बन्धित कारणों का पता लगाया जाना चाहिए ताकि राजकीय विद्यालयों के परीक्षा परिणाम उन्नत किए जा सकें ।

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर व राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के परीक्षा परिणाम, पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र, छात्र असफलताओं के कारणों एवं शिक्षक की व्यावसायिक योग्यता आदि क्षेत्रों में अधिक से अधिक राज्य-स्तरीय प्रायोजनाएँ लेकर शोध-कार्य करवाने चाहिए ।

वाचस्पति शोध सार

मंजू जैन : किशोरों के विशिष्ट समूह द्वारा प्रयुक्त, समूह जाँच में, प्याजे के तार्किक चिन्तन का अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1984

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्न थे :

1. प्याजे प्रकार के कार्यों में कागज-पैन्सिल परीक्षण द्वारा कार्यों, विभिन्न वैचारिक तरीके व कुल किशोर चिन्तन द्वारा अभिव्यक्ति ज्ञात करना तथा इस पर आयु, लिंग तथा विद्यालयों के प्रकार का प्रभाव ज्ञात करना । 2. बुद्धिमत्ता (अशाब्दिक), भाषाई योग्यता व व्यक्तित्व कारकों तथा किशोर चिन्तन का अभिव्यक्ति पर प्रभाव का सह-सम्बन्ध ज्ञात करना ।

कुल किशोर चिन्तन द्वारा अभिव्यक्ति आयु वृद्धि के साथ बढ़ती हुई पाई गई। यह वृद्धि निजी संस्थाओं में पढ़ने वाली छात्राओं में अधिक देखी गई। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि छात्राएँ जीव विज्ञान तथा रसायन विज्ञान के अन्तर्गत वर्गीकरण के विषयों की तरफ व छात्र समस्या सार व आनुपातिक समस्याओं के ग्रहण की तरफ अधिक ध्यान देते थे। बुद्धिमत्ता व भाषाई योग्यताएँ किशोर चिन्तन से सह-सम्बन्धित पाई गई। उग्रता व तनाव स्थिति के अतिरिक्त व्यक्तित्व विशेषताएँ सभी किशोर चिन्तन के कई कारकों से सह-सम्बन्धित थीं।

तिवारी चन्दा : विभिन्न माध्यमिक शिक्षा मण्डलों की उच्च माध्यमिक कक्षा की नागरिक शास्त्रीय सम्प्राप्ति के मापन की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन। पीएच. डी., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1982

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्न थे :

1. विभिन्न उच्च माध्यमिक शिक्षा मण्डलों द्वारा निर्धारित नागरिक शास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों के परीक्षण की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन। 2. विभिन्न माध्यमिक शिक्षा मण्डलों द्वारा नागरिक शास्त्र पाठ्यक्रम के परीक्षण द्वारा समाहित करने की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करना। 3. विभिन्न उच्च माध्यमिक शिक्षा मण्डलों द्वारा नागरिक शास्त्र के प्रश्न-पत्रों की विभिन्न उपलब्धियों वाले छात्रों के बीच प्रभेद क्षमता उनके कठिनाई स्तर पर तुलनात्मक अध्ययन करना। 4. विभिन्न उच्च माध्यमिक शिक्षा मण्डलों द्वारा प्रयुक्त नागरिक शास्त्र के प्रश्न-पत्रों की विश्वसनीयता व वैधता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

रेण्डम सेम्पल के आधार पर राजस्थान, दिल्ली, मध्यप्रदेश, हरियाणा एवं केन्द्रीय शिक्षा मण्डल, देहली पाँच मण्डलों के 1973 से 1977 तक उ. माध्य. कक्षा के नागरिक शास्त्र के दोनों प्रश्न-पत्रों का चयन कर अध्ययन किया। पाँच मण्डलों के कुल 75904 परीक्षार्थियों में से प्रत्येक मण्डल के प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं अनुत्तीर्ण के 10 प्रतिशत की दर से 300 छात्र प्रत्येक मण्डल के आधार पर 1500 छात्रों को अध्ययन में सम्मिलित किया। अध्ययन में सह सम्बन्ध गुणक, औसत, प्रतिशत तथा प्रमाण विचलन सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया।

शोध से प्राप्त निष्कर्षों का विवरण निम्न प्रकार है :

1. प्रश्न-पत्रों में पाठ्यक्रम समाहीकरण में जो अन्तर पाया गया है, उसका कारण यह है कि निर्धारित इकाइयों का उनकी प्रवृत्ति के आधार पर उपयुक्त वर्गीकरण नहीं किया गया। 2. प्रश्न-पत्र में अधिकतम पाठ्यक्रम का समाहीकरण नहीं होने का दूसरा कारण यह है कि अधिकतम निबंधात्मक प्रश्नों को प्रश्न-पत्र में रखा गया है। 3. विभिन्न उच्च माध्यमिक शिक्षा मण्डलों के द्वारा निर्मित प्रश्नपत्रों में शिक्षण उद्देश्यों की जाँच की प्रवृत्ति व गुण में अन्तर है। 4. प्रत्येक मण्डल के पाँचों वर्षों में प्रश्न-पत्रों द्वारा परीक्षित शिक्षण उद्देश्यों की मात्रा व प्रवृत्ति में अन्तर पाया गया है। कारण सम्भवतः यह है कि विषय विशेषज्ञों द्वारा जो नील पत्र तैयार किया जाना चाहिये, नहीं किया गया है। 5. विभिन्न उच्च माध्यमिक शिक्षा मण्डलों की समवर्ती वैधता में अन्तर है। 6. विभिन्न उच्च माध्यमिक शिक्षा मण्डलों द्वारा निर्मित प्रश्न-पत्रों में दिये

गये प्रश्नपत्रों में विभिन्न योग्यता स्तरों के मध्य प्रभेद करने की क्षमता में अन्तर है। 7. प्रश्न-पत्रों के प्रश्न पदों के कठिनाई मान में अन्तर पाया गया है । 8. विभिन्न उच्च माध्यमिक शिक्षा मण्डलों की विश्वसनीयता में अन्तर है ।

ई. के. नयनगुआ : यूगेण्डा के किशोरों के विशिष्ट समूह का संख्यात्मक ज्ञान के तार्किक चिन्तन के संयोजन का अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1987

1. इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य लिंग-भेद, आयु स्तर के अनुसार चार मनोवैज्ञानिक परीक्षण व 12 चिन्तन समस्याओं के तरीकों से छात्र-छात्राओं की अभिव्यक्ति पर प्रभाव ज्ञात करना । 2. माता-पिता के व्यवसाय के सम्बन्ध में युगांडा के छात्रों की अभिव्यक्ति ज्ञात करना । 3. चिन्तन समस्याओं के तरीकों का तथ्यात्मक विश्लेषण करना था ।

अध्ययन में 13-14 आयुवर्ग के 312, 14-15 आयुवर्ग के 176 तथा 15-16 आयु-वर्ग के 128 छात्र-छात्राएँ सम्मिलित की गईं । अध्ययन सर्वेक्षण विधि पर आधारित था ।

अध्यन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए :

1. 13-14 वर्ष के छात्रों की अभिव्यक्ति श्रेष्ठ पाई गई । 2. उच्च कक्षा के छात्र चार मनोवैज्ञानिक परीक्षणों में सर्वश्रेष्ठ रहे । 3. आयु व स्तर के बढ़ने के साथ बुद्धिमत्ता, आंकिक योग्यता पर अभिवय बढ़ती हुई पाई गई । 4. चिन्तन समस्याओं के बारह तरीकों में अधिक आयु वाले छात्र सर्वश्रेष्ठ परिलाभित हुए । 5. अधिक आयु वाले व बेरोजगार माता-पिता के बच्चे विचार युक्त, तार्किक गणितीय चिन्तन व आगमन तार्किकी तरीकों में सर्वश्रेष्ठ पाये गये । 6. विचारों के बारह तरीकों से अभिव्यक्ति का कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया । 7. सबसे अच्छे चिन्तन प्रकार तार्किक व वैज्ञानिक चिन्तन रहे ।

बी. एस. शर्मा : डेल्टा क्लास के लिए गणित एवं सामान्य विज्ञान विषय के परीक्षणों का विकास, वैधता एवं मानवीकरण, पीएच. डी., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1975

इस अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान के विभिन्न भागों में अध्ययन करने वाले डेल्टा क्लास के छात्रों के लिए गणित एवं सामान्य विज्ञान विषय में जाँच परीक्षण श्रंखला तैयार करना था। नेगेटिव सर्विस पद्धति तथा मूल कौशल की 10 डब्ल्यू. ए. परीक्षण श्रंखला का प्रयोग किया गया।

अनुसंधाता ने राजस्थान में पढ़ने वाले डेल्टा क्लास के छात्रों के लिए गणित एवं सामान्य विज्ञान पाठ्यक्रम दोषपूर्ण पाया गया । जिसका पाठ्यक्रम सामग्री से कोई सम्बन्ध नहीं था । सामान्य विज्ञान में परीक्षण की विश्वसनीयता .91 से .93 एवं गणित में .96 से .99 रही। सामान्य विज्ञान में वैधता गुणांक .45 से .58 तथा गणित में .44 से .57 रहा ।

शोध अनुक्रमणिका

अग्रवाल, शकुन्तला : राजस्थान राज्य शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित सेवारत शिक्षकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मूल्यांकन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

अवस्थी, प्रियाशरण : भूगोल में कक्षा अष्टम् के लिये निष्पत्ति परीक्षण की रचना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

आयजक, शालिनी : विद्यार्थियों के विभिन्न समूहों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन, एम. एड., सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, 1987

उदयवीर, सिंह : दशम् कक्षा के छात्र-छात्राओं का हिन्दी में लिखित स्तर का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

एरन, मुनींद्र कुमार : माध्यमिक कक्षा के छात्र-छात्राओं हेतु वाचन-अंकन जाँच पत्र की रचना एवं प्रमावीकरण (हिन्दी-भाषा), एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

कुलश्रेष्ठ, अरुणकुमार: To study the classification ability among the adolescent pupils. M. Ed., Raj. Uni., 1987

कौर, कमलिन्दर : विद्यालयी प्रतियोगिताओं के माध्यमिक विद्यार्थियों पर पड़े प्रभावों का उनके द्वारा प्रत्यक्षीकरण, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

कौशिक, सरोज : उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिये सामाजिक ज्ञान में निष्पत्ति परीक्षा की रचना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

खाती,ओमप्रकाश : माध्यमिक स्तर पर अधिकोषण (बैंकिंग) में एक निष्पत्ति परीक्षा, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

गिल, मेजरसिंह : व्यापार पद्धति में निष्पत्ति परीक्षण की रचना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

गेरा, जे. किरण : The effects of experimental tasks in general science carried out by individual and groups of primary children on development of their mental processes. M. Ed., Raj. Uni., 1977

चिकारा, सुनीतबाला : हिन्दी शिक्षण दक्षता मापनी की विश्वसनीयता एवं वैधता की जाँच–एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

जालान, राधा : Relation of children drawings with their intelligence, M. Ed., Raj. Uni., 1981

जैन, मन्जू : A study of piagetion logical thinking among certain groups of adolescent pupils using a group test. Ph. D., Raj. Uni., 1984

जैन, सन्तोष : चित्रकला में उच्च माध्यमिक कक्षाओं के लिये क्रियात्मक एवं सैद्धान्तिक परीक्षण का निर्माण, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

जोशी, विभा : A study of the conservation of the reasoning ability and its relationship with intelligence of VI to IX grades students. M. Ed., Raj. Uni., 1980

जोशी, साधना : Some aspects of logical thinking within piagetion concept among certain groups of average adolescent girls. M. Ed., Raj. Uni., 1984

जोशी, हीरालाल : उदयपुर शहर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में माध्यमिक कक्षा के परीक्षा परिणाम का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

ठाकुर, पुष्पलता : The question papers set by the Board of Secondary Education in elementary mathematics during the last five years. M. Ed., Raj. Uni., 1986

तिवारी, चन्दा : विभिन्न बोर्डों की उच्च माध्यमिक कक्षा के नागरिक शास्त्र के प्रश्न-पत्रों की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

तिवारी, चन्दा : विभिन्न माध्यमिक शिक्षा मण्डलों की उच्च माध्यमिक कक्षा की नागरिक शास्त्रीय सम्प्राप्ति के मापन की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन, पीएच. डी. (शिक्षा), राज. विश्वविद्यालय, 1982

तिवारी, लक्ष्मी : कक्षा नवम् एवं दशम् के नागरिक शास्त्र के सम्बोध और उसके सन्दर्भ में उपलब्धियों का मापन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

नकरा, वीना : Relationship between intellectual development and learning environment of XI grade students. M. Ed., Raj. Uni., 1984

नयनगुआ, ई. के. : A study of the causes of failures in mathematics at the secondary school stages. M. Ed., Raj. Uni., 1977

नयनगुआ, ई. के. : A study of schemes of logical thought among certain groups of Ugandan adolescent pupils with special reference to quantitative knowledge. Ph. D., Raj. Uni., 1987

पाण्डे, के. सी. : A study of problems solving ability in science and its relationship with intellectual development in science of XI grade science students. M. Ed.., Raj. Uni., 1979

पुरोहित, पुष्पाकँवर : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिये अध्ययन आदतों की मापनी तैयार करना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय. 1985

बाली, सुनीता : उच्च माध्यमिक स्तर पर संस्कृत व्याकरण में निष्पत्ति परीक्षण की रचना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

बायती, कृष्णा : माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए तर्क योग्यता परीक्षण का विकास (हिन्दी), एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1984.

बेनीवाल, शारदा : माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की तर्क योग्यता परीक्षण का विकास (शाब्दिक, अशाब्दिक), एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

भटनागर, नीना : स्वस्फूर्ति चित्रण कला के माध्यम से उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता एवं सृजनात्मकता –एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

भटनागर, रमेश : Relationship of mathematics achievement to creativity and intelligence of the X grade pupils of uraban and rural background. M. Ed., Raj. Uni., 1977

भल्ला, पूनम : खुली किताब परीक्षा की गुणवत्ता एवं उसके प्रति छात्राओं की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1988

भाटी, मो. सलीम : Hump effect on exploratory study. M. Ed., Rajasthan University, 1985

भोजक, रतनलाल : व्यापार पद्धति में उच्च माध्यमिक स्तर के लिये निष्पत्ति परीक्षण की रचना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

माथुर, एम. बी. एल. : Relationship between visual memory and achievement in biological science. M. Ed., Raj. Uni., 1976

मुद्गल, अनीता : किशोर छात्रों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

मोदी, शंकरलाल : राजस्थान विश्वविद्यालय की बी. एड., परीक्षा के आंतरिक तथा बाह्य मूल्यांकन का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

यशोदा, सिंह : नर्सरी विद्यालयों में प्रयुक्त हिन्दी शिक्षण की प्रविधियों एवं अनुदेशीय सामग्री का मूल्यांकनपरक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

रासना, ईस्टरसिंह : Creative ability of the blind and the sighted -A cross-sectional study. M. Ed., Raj. Uni., 1981

रिपुजीत सिंह : माध्यमिक कक्षाओं के लिये इतिहास में निष्पत्ति परीक्षा की रचना। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

वर्मा, रेणुका : माध्यमिक स्तर पर सामान्य विज्ञान विषय के लिये निदानात्मक परीक्षण का विकास, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

वर्मा, शशि : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिये तार्किक योग्यता मापनी ज्ञात करना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

शर्मा, अवधेश : उच्च माध्यमिक कक्षा के लिये भौतिक विज्ञान में निष्पत्ति परीक्षण की रचना करना, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

शर्मा, आभा : A study of combinational reasoning using sixteen binary operation, during adolescence. M. Ed., Ajmer Uni., 1988

शर्मा, बीना : विद्यालय परिस्थितियों में कुण्ठा के प्रति अध्यापकों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन की वैधता तथा विश्वसनीयता की जाँच, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

शर्मा, धन्नी : गृह-विज्ञान की छात्राओं का उपलब्धि परीक्षण, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

शर्मा, महिमा : राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा किये गये परीक्षा सुधारों का शिक्षण पर प्रभाव, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

शर्मा, लतारानी : राजस्थान के स्वायत्तशाषी तथा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की हिन्दी पाठ्यचर्या का मूल्यांकनपरक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

शर्मा, वी. एस. : Bettery tests for the delta class in general science and mathematics analysis validation and standardisation. Ph. D., Udai. Uni., 1975

शर्मा, सत्यनारायण : उच्च प्राथमिक कक्षा आठवीं में निष्पत्ति परीक्षण की रचना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

शर्मा, सरोज : उच्च माध्यमिक कक्षाओं के लिये इतिहास में निष्पत्ति परीक्षण एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

शर्मा, सुधा : माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर के पिछले पाँच वर्षों के नागरिक शास्त्र के प्रश्नपत्रों की उद्देश्यनिष्ठता के साँचों की खोज, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

शशि, बाला : कक्षा तीन तथा चार के विद्यार्थियों की लिखित हिन्दी में होने वाली अशुद्धियों का पता लगाने के लिये निदानात्मक परीक्षण पत्र का निर्माण, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

शेखावत, विजेन्द्रसिंह : An appraisal study of prescribed practical works in science subjects and their accomplishment in schools

under Secondary Board of Education, Rajasthan, Ajmer. M. Ed., Raj. Uni., 1981

साहनी, शोभा : मूल्यांकन की विभिन्न पद्धतियों की विश्वसनीयता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

सक्सेना, शशिबाला : समवयस्क समूह की किशोर छात्राओं की आवश्यकताओं एवं समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

सावित्रीसिंह : उच्च माध्यमिक स्तर के लिये अर्थशास्त्र में निष्पत्ति परीक्षा की रचना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

सैनी, राजा सिंह : उच्च माध्यमिक स्तर के लिये इतिहास में निष्पत्ति परीक्षा की रचना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

सोनी, पुष्पा : माध्यमिक कक्षाओं के लिये अर्थशास्त्र में निष्पत्ति परीक्षण की रचना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

सोनी, सुरेशचन्द्र : 11वीं कक्षा के व्यापारिक व गैर व्यापारिक वर्ग से सम्बन्धित वाणिज्यिक छात्रों की स्वधारणा, मानसिक योग्यता एवं शैक्षणिक सम्प्राप्ति का एक अध्ययन , एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

सौनार, शंकरलाल : बी. एड. में प्रवेश हेतु विज्ञान अध्यापन अभियोग्यता मापनी विकसित करना , एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

हाण्डा, डी. के. : An investigation into the internal and external marks of master's level. M. Ed., Raj. Uni., 1976

☆ ☆ ☆

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन

❑ दिनेशचन्द्र शर्मा
❑ मोहम्मद सलीम खां
❑ महेन्द्रकुमार गोयल

प्रस्तुत अवधि से पूर्व राष्ट्रीय स्तर पर निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं पर अनुसन्धानों की स्थिति इस प्रकार रही –

सम्पन्न निर्देशन व परामर्श सेवाओं पर शोध-कार्यों को निम्नलिखित उपशीर्षकों में बाँटा जा सकता है :

(1) विशिष्ट बालक, (2) बालकों की आवश्यकताएं एवं समस्याएं, (3) व्यावसायिक प्राथमिकताएं और व्यावसायिक परिपक्वता, (4) छात्र मूल्यांकन । (5) अध्ययन आदतें । (6) परामर्श, अनुवर्तन तथा विद्यालय वातावरण का मूल्यांकन ।

पीएच. डी. स्तर पर विशिष्ट बालक शीर्षक के अन्तर्गत आडवानी (1965) ने अन्य बालकों की शैक्षिक तथा मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अध्ययन किया जबकि भट्ट (1966) ने प्रतिभाशाली बालकों की पहचान कर उनके व्यक्तित्व के गुणों का अध्ययन किया । इसी प्रकार वालिया (1973) ने प्रतिभाशाली किशोरों की स्व-अवधारणा का अध्ययन किया तथा वर्मा (1968) ने मानसिक रूप से पिछड़े हुए किशोरों की कुण्ठाओं तथा कुसमायोजन का पता लगाया ।

बालकों की आवश्यकताओं एवं समस्याओं पर मुरली धरन (1961) ने विद्यालय-पूर्व बालकों में उपलब्ध व्यवहारगत कमियों का पता लगाया जबकि मुले (1971) ने किशोरों की आवश्यकताओं व समस्याओं का अध्ययन किया । सेठ (1970) ने किशोरियों की समायोजन समस्याओं का

व्यावसायिक प्राथमिकताएं व व्यावसायिक परिपक्वता के क्षेत्र में ग्रेवाल (1971) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षिक चयन तथा व्यावसायिक प्राथमिकताओं पर शोध किया । गौड़ (1973) ने उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के उन कारकों का अध्ययन किया जो उनकी व्यावसायिक आकांक्षाओं को प्रभावित करते हैं । पारलीकर (1973) तथा कथूरिया (1974) ने व्यावसायिक परिपक्वता के क्षेत्रों में शोध किया ।

विद्यार्थी मूल्यांकन के क्षेत्र में पर्याप्त संख्या में शोध कार्य हुए हैं । जिनमें से प्रमुख हैं– पाण्डे (1960) जिन्होंने हाई स्कूल के बालकों की अध्ययन अभिरुचियों पर शोध किया जबकि नायक (1967) ने किशोरों और प्रौढ़ों की अभिरुचियों और आदतों का अध्ययन किया । पटेल (1967) ने कक्षा 9 से 11 तक की कक्षाओं के छात्रों की विभिन्न अभिरुचियों का पता लगाया । शर्मा (1975) ने ग्रामीण व शहरी किशोरों की व्यक्तिगत तथा यौन अभिरुचियों का अध्ययन किया । माथुर (1966) ने एक बुद्धि मापनी को मानकीकृत किया । एक अन्य अध्ययन में राय (1969) ने न्यून निष्पत्ति एवं उच्च निष्पत्ति वाले बालकों के समायोजन पर शोध कार्य किया ।

अध्ययन आदतों के क्षेत्र में सीमित कार्य हुआ है । जिसमें से प्रमुख हैं : जमुआर (1961) का जिन्होंने अध्ययन आदत अनुसूची का निर्माण किया । पलसाने (1963) ने भी ऐसी ही अनुसूची बनाई जबकि कुण्डू (1970) ने पठन-दक्षता पर अध्ययन किया ।

परामर्श, अनुवर्तन तथा विद्यालय वातावरण के मूल्यांकन क्षेत्र के प्रमुख शोध कार्यों में भटनागर (1973) ने वैयक्तिक परामर्श के प्रभाव का अध्ययन किया तो सरस्वती (1973) ने गृह विज्ञान वेत्ताओं के व्यवसायों की पहचान कर उन व्यवसायों से सम्बन्धित क्षमताओं को सुनिश्चित करने का प्रयास किया । गज्जर (1974) ने एम. एस. विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त विद्यार्थी कार्मिक सेवाओं का सर्वेक्षण किया और रस्तोगी (1967) ने यह जानने का प्रयास किया कि किस सीमा तक विद्यालय वातावरण छात्रों को बौद्धिक रूप से उत्प्रेरित करता है ।

राजस्थान में शोध स्थिति

छात्र सेवाओं के अन्तर्गत ही निर्देशन तथा परामर्श सेवाओं को शुद्ध, सुदृढ़ किया जाना आवश्यक है क्योंकि स्तर को बनाए रखने की समस्या मुख्यतः उन्हीं पर आधारित है ।

प्राथमिक विद्यालय-स्तर पर दैनिक जाँच तथा वैयक्तिक अन्तर समस्याओं की जाँच एवं आगे की शिक्षा के चयन में छात्रों व अभिभावकों की सहायता का उतना ही महत्व है जितना कि माध्यमिक स्तर पर किशोर छात्रों की योग्यता तथा उनकी क्षमताओं एवं रुचियों को विकसित करने में सहायता का । विश्वविद्यालय स्तर पर तो प्रत्येक छात्र का किसी शैक्षिक सलाहकार से सम्बद्ध किया जाना अपेक्षित है जो छात्र को अपना अध्ययन कार्यक्रम संगठित करने तथा तत्सम्बन्धी योजना बनाने में सम्मति दे ।

ऐसे महत्वपूर्ण विषय पर राजस्थान में आरम्भ से अभी तक एक भी पीएच. डी. स्तर का अनुसन्धान न होना आश्चर्यजनक है । इतना ही नहीं प्रत्युत् एम. एड. स्तर पर संख्या की दृष्टि से भी कमी होना इस क्षेत्र के महत्व को कम आंकना ही माना जाएगा ।

समीक्षाधीन अवधि में मात्र 46 एम. एड. लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किये गए । राजस्थान विश्वविद्यालय में 17, जोधपुर विश्वविद्यालय में 7, उदयपुर विश्वविद्यालय में 16, अजमेर विश्वविद्यालय में 1, वनस्थली मान्य (डीम्ड) विश्वविद्यालय में 3 तथा राजस्थान विद्यापीठ डबोक मान्य विश्वविद्यालय में 2 लघु शोध-प्रबन्ध स्वीकृत हुए ।

यद्यपि अनुसन्धान की प्रचुरता न होने के कारण इस क्षेत्र को एक ही अध्याय के अन्तर्गत समाविष्ट किया गया है। पुनरपि प्रवृत्ति निरूपण हेतु इस क्षेत्र के अनुसन्धान कार्यों को दो भागों में ही विभाजित करना समीचीन प्रतीत होता है : (1) शैक्षिक निर्देशन तथा (2) व्यावसायिक निर्देशन । शैक्षिक निर्देशन के क्षेत्र में 13 एम. एड. स्तरीय शोध कार्य हुए जबकि व्यावसायिक निर्देशन के क्षेत्र में 33 शोध-कार्य सम्पन्न हुए ।

शैक्षिक निर्देशन

शैक्षिक निर्देशन के अन्तर्गत सम्पन्न अनुसन्धानों का वर्गीकरण करने पर यह निष्कर्ष आया कि इन्हें निर्देशन आवश्यकताएँ, निर्देशन कार्यकर्ताओं की भूमिका, निर्देशन कार्यक्रम, विषय चयन में निर्देशन तथा चयन मापदण्ड की पूर्वानुमानिक प्रभावोत्पादकता के उपशीर्षकों में बांटा जा सकता है ।

अनुसन्धाताओं मे निर्देशन आवश्यकताओं पर सर्वाधिक बल दिया है जबकि विषय चयन तथा चयन मापदण्ड शीर्षकों पर मात्र एक-एक अनुसन्धान ही हुआ है । इस अवधि में छात्रों की समंजन समस्याओं, उनकी अभिरुचियों, अध्ययन-आदतों आदि विषयों की अपेक्षित महत्व नहीं दिया गया है । वर्ष 1975, 1976, 1977 तथा 1981 एवं 1986 में तो शैक्षिक निर्देशन के क्षेत्र में कोई भी अनुसन्धान कार्य नहीं हुआ और 1987 तथा 1988 में भी एक-एक शोध कार्य पूर्ण हुआ ।

(अ) निर्देशन आवश्यकताएँ

नागर (1979) तथा सिंह (1982) ने शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं का पता लगाया । नागर ने जहां एक ओर छात्राध्यापिकाओं के कुसमायोजन के कारणों का पता लगाते हुए उन्हें समस्याग्रस्त पाया और निर्देशन की आवश्यकता प्रतिपादित की, वहीं दूसरी ओर सिंह ने राजकीय एवं निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकताओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया । यहां तक कि लैंगिक प्रभाव की दृष्टि से भी सार्थक भिन्नता नहीं थी । गुप्ता (1978) को भी बी. एड. छात्राओं में समस्याओं का आधिक्य मिला तथा अधिकांश छात्राएं पाठ्यक्रम/विषय आदि के चयन में अपने माता-पिता के मार्गदर्शन पर निर्भर पाई गईं ।

शर्मा (1980) के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता अनुभव करने वाले किशोरों का सामाजिक-आर्थिक स्तर निम्न था तथा शैक्षिक रूप से पिछड़े किशोरों और

(आ) निर्देशन कार्यकर्ताओं की भूमिका

निर्देशन कार्यकर्ताओं की भूमिका पर तीन अध्ययन हुए, जिनमें उनकी अपेक्षित भूमिका और वास्तविक भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन किया गया । शर्मा (1980) ने माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों के निर्देशन कार्यकर्ताओं की अपेक्षित और वास्तविक भूमिका में विशाल अन्तर पाया । कार्यकर्ताओं में न तो अनुरूप गुण है और ना ही उन्हें उचित प्रशिक्षण प्राप्त है । वे प्रायः औपचारिकता का ही निर्वाह करते हैं । मिश्र (1985) ने उच्च प्राथमिक विद्यालयों में निर्देशन कार्यकर्ताओं को अपनी भूमिका के प्रति न्याय करने का प्रयास करते हुए पाया । जयपुर और जोधपुर शहर के कार्यकर्ताओं की तुलना करने पर जोधपुर शहर के कार्यकर्ता अपेक्षाकृत अधिक समर्थ पाए गए । छात्राओं के निर्देशन कार्यकर्ता छात्रों के कार्यकर्ताओं की तुलना में अधिक कर्तव्यपरायण थे । मेहता (1984) के अनुसार छात्राध्यापकों की अपेक्षा थी कि कार्यकर्ता प्रजातान्त्रिक, सुविज्ञ व अनुभवी होना चाहिए ।

शर्मा (1988) ने निष्कर्ष निकाला कि बालकों के विकास में अभिभावक अपनी भूमिका का निर्वाह अध्यापकों की अपेक्षानुसार नहीं कर पाते हैं । खेलने के लिए छूट, सामाजिक उत्सवों में भाग लेने, आगन्तुकों से बातचीत करने देने, ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें क्रय करने, गृह-कार्य पूर्ण करवाने, उचित आहार उपलब्ध कराने आदि में अभिभावकों की भूमिका से अध्यापक पूर्णतः सन्तुष्ट नहीं हैं ।

(इ) निर्देशन कार्यक्रम का संगठन

दिल्ली के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रम में संगठन का सर्वेक्षण कर शर्मा (1983) ने पता लगाया कि लगभग 22% विद्यालयों में यह कार्यक्रम 15 से 22 वर्ष पूर्व से चल रहा है और 1 से 9 वर्ष की अवधि वाले 31% विद्यालय हैं । व्यक्तिगत निर्देशन सेवाओं की व्यवस्था अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है । यद्यपि कार्यक्रम से 100% छात्र-विद्यालयों के और 31% छात्रा-विद्यालयों के कार्मिकों को ही सन्तोष है । मेहता (1984) ने "अध्यापन-अभ्यास" में छात्राध्यापकों को दिए जाने वाले निर्देशन कार्यक्रम का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि निर्देशन निर्दिष्ट स्थान पर सायंकाल के समय दिया जाना उपयुक्त है तथा निर्देशन व पर्यवेक्षण कार्य एक ही प्राध्यापक द्वारा किया जाना चाहिए ।

(ई) विषय चयन में निर्देशन/चयन मापदण्ड में पूर्वानुमानिक प्रभावोत्पादकता

जोशी (1982) में वाणिज्य वर्ग के कक्षा 9 में छात्रों के चयन के लिए एक परीक्षण माला का निर्माण किया जिसमें सर्वाधिक भार रुचियों को और सबसे कम भार गणितीय सम्प्राप्ति का रखा । इसमें संख्यात्मक, अभिरुचि, लिपिकीय अभिरुचि तथा बुद्धि परीक्षण का भार सम्मिलित करने पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पाया । पाराशर (1983) ने विषय चयन में निर्देशन का अनुवर्ती अध्ययन कर पता लगाया कि शैक्षिक निर्देशन की सहायता से विषय चयन का लाभ राजकीय विद्यालयों में 50% एवं 54% छात्राएं उठाती हैं जबकि निजी विद्यालयों में यह क्रमशः

72.7% तथा 78% है । विषय चयन में आदर्श पुरुषों के विचारों से प्रेरणा की मात्रा सर्वाधिक रही जबकि मित्रों की सलाह को सबसे कम महत्व प्रदान किया गया ।

(उ) विविध

बाल-पत्रिकाओं के प्रति किशोरों की अभिवृत्ति का अध्ययन करते हुए जोशी (1987) ने पाया कि सभी प्रकार के विद्यालयों के किशोर छात्र-छात्राओं की बाल-पत्रिकाओं के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक थी । छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में पठन अभिरुचि अधिक थी और उन्हें अभिभावकों का प्रोत्साहन भी अधिक प्राप्त होता है । जहाँ सरकारी विद्यालयों में ऐसी पत्रिकाएं पढ़ने के अधिक अवसर हैं, वहीं निजी विद्यालयों के छात्र इनसे अधिक प्रेरणा प्राप्त करते हैं । विद्यालयों में बाल-पत्रिकाओं के पढ़ने की व्यवस्था अच्छी नहीं पाई गई ।

सम्भावनाएं एवं सुझाव

शैक्षिक निर्देशन के क्षेत्र में सम्पन्न उपर्युक्त शोध, शिक्षा नियोजकों को विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उनके अनुरूप भावी योजना निर्माण करने का मार्ग प्रशस्त करेंगी । निर्देशन कार्यकर्ताओं की अपेक्षित और वास्तविक भूमिका में व्याप्त विशाल अन्तर को कम करने के लिये योजनाओं पर पुनर्विचार हेतु भी शिक्षा नियोजकों को प्रेरणा प्राप्त हो सकेगी । साथ ही शिक्षा नियोजक व्यक्तिगत निर्देशन सेवाओं को अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए व्यापक कार्यक्रम का योजना में समावेश कर पाएंगे तथा इस प्रकार की योजना का निर्माण करेंगे जिससे राजकीय तथा निजी दोनों ही प्रकार के विद्यालयों के छात्र समान रूप से शैक्षिक निर्देशन का लाभ उठा सकें ।

विद्यार्थियों की शैक्षिक निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ये शोध कार्य शिक्षा प्रशासकों को अभिप्रेरित करेंगे तथा निर्देशन की कमी वाले क्षेत्रों की पहचान हो जाने के कारण उन्हें दूर करने का अधिक अवसर प्राप्त हो सकेगा । शैक्षिक निर्देशन के एकांगी स्वरूप को तोड़कर स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास जैसी समस्याओं को दूर करने के लिए भी शैक्षिक निर्देशन की भूमिका को विस्तृत आयाम दे पाएंगे । प्रशासक व पर्यवेक्षक निर्देशन कार्यकर्ताओं की अपेक्षित और वास्तविक भूमिका के अन्तराल को पाटने के लिये आवश्यक कदम उठा सकेंगे साथ ही उनके चयन और प्रशिक्षण को पुनर्गठित किया जा सकेगा ।

शिक्षा प्रशासक यह भी सुनिश्चित कर सकेंगे कि शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्तिगत निर्देशन भी छात्रों को उपलब्ध हो और निर्देशन सेवा वांछित समय व स्थान पर उन्हें प्रदान की जाए । राजकीय विद्यालयों में अधिकांश छात्र शैक्षिक निर्देशन की सहायता से विषय चयन का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं । अतः इस ओर भी शिक्षा प्रशासक प्रभावी कदम उठा पाएंगे ताकि छात्र अपनी अभिरुचियों, अभिवृत्तियों व क्षमताओं के अनुरूप विषय चयन कर भावी जीवन में राष्ट्र के विकास में सार्थक योगदान दे सकें ।

माता-पिता पर ही आश्रित हैं अतः शैक्षिक निर्देशन कार्यकर्ता अपने क्षेत्र में और अधिक रुचि व निष्ठा से कार्य कर पाएंगे । विशेष रूप से व्यक्तिगत निर्देशन पर अधिक कार्य कर सकेंगे । शैक्षिक निर्देशन को मात्र विषय चयन तक ही सीमित न रख कर सतत एवं व्यापक निर्देशन दिया जा सकेगा । अपेक्षित और वास्तविक भूमिका के अन्तर को दूर करने से ही शैक्षिक निर्देशन का लाभ छात्रों को मिल पाएगा । अतः अपनी सजगता, सतर्कता, सक्रियता व सततता के द्वारा विद्यार्थियों को लाभान्वित करने का गुरुत्तर भार निर्देशन कार्यकर्ता वहन कर पाएगा ।

राजस्थान में शैक्षिक निर्देशन को वांछित महत्व प्रदान नहीं किया है । यह इस क्षेत्र में अनुसन्धान की न्यून संख्या से ही सिद्ध होता है । केवल सर्वेक्षण विधि का ही प्रयोग सम्भावनाओं को और भी सीमित बनाता है ।

परन्तु निर्देशन आवश्यकताओं पर सम्पन्न सर्वाधिक अनुसन्धान तथा उनके निष्कर्षों में शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता का प्रतिपादन इस ओर इंगित करता है कि अभी इस क्षेत्र में कार्य करने की प्रचुर सम्भावनाएं हैं । आवश्यकता अनुभव करना इस बात का द्योतक है कि अभी निर्देशन के क्षेत्र में बहुत कार्य करना शेष है ।

शैक्षिक निर्देशन के क्षेत्र में अभी प्रयोगात्मक अनुसन्धान कार्य की बहुत सम्भावनाएं हैं । विशेषतः ऐसे उपकरणों के निर्माण की जो भारतीय परिस्थितियों में शैक्षिक निर्देशन को अधिक प्रभावी, वैध तथा विश्वसनीय बना सकें । विदेशी उपकरणों का मोह त्यागने और नये उपकरण विकसित करने का सर्वथा उचित अवसर आ पहुँचा है । उपकरणों के साथ-साथ निर्देशन की नई-नई तकनीकें तथा प्रविधियां भी खोजनी होंगी ।

निर्देशन कार्यकर्ताओं की अपेक्षित एवं सम्पादित भूमिका में अन्तर तो पाया गया है, परन्तु अभी तक कोई ऐसी सर्वमान्य अपेक्षित भूमिका परिभाषित नहीं हुई है जिसकी अत्यन्त आवश्यकता है । साथ ही निर्देशन कार्यकर्ता बनाने से पूर्व ऐसे व्यक्तियों की अभिरुचि जाँच किया जाना भी अपेक्षित है ताकि वे अपनी भूमिका का न्याय-संगत विधि से सम्पादन कर सकें। निर्देशन-कार्य को अध्यापक तक ही परिसीमित न रखकर अभिभावकों को भी इस दायरे में लाना होगा।

शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए एवं प्रतिभाशाली छात्रों के लिए शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता के क्षेत्रों पर तो एक अध्ययन किया गया है, परन्तु सृजनशील, मन्द बुद्धि, अपराधमूलक तथा विकलांग छात्र-छात्राओं की निर्देशन आवश्यकताओं, निर्देशन विधियों आदि पर कार्य करने का क्षेत्र अछूता ही रहा है । किसी भी अनुसन्धानकर्ता ने प्रायोगिक रूप से इन बच्चों के विकास के लिए तथा उनकी क्षमताओं को उद्घाटित करने के लिये कोई कार्यक्रम चलाकर अध्ययन नहीं किया।

राज्य में 10+2 शिक्षा पद्धति लागू करने से अब विषय चयन +2 स्तर पर किया जाना है । इस स्तर पर छात्र-छात्राएं पूर्वापेक्षा अधिक परिपक्व होते हैं । अतः उनकी अभिरुचियों और अभिवृत्तियों के आधार पर विषय चयन में सहयोग प्रदान करना वांछित है । इस हेतु शिक्षाकर्मियों को अनुसन्धान का एक नया आयाम प्राप्त हुआ है जिसका दोहन किया जाना

चाहिए । छात्रों की अध्ययन आदतों पर भी पर्याप्त अनुसन्धान की आवश्यकता है । वस्तुतः अधिकांश छात्रों में पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों के अध्ययन की आदत नगण्य है । स्तर की गिरावट को रोकने तथा सर्वतोन्मुखी विकास के लिये इस ओर प्रयास करना चाहिये । साथ ही स्तरानुसार पत्रिकाओं के अध्ययन की आदत विकसित करना भी अभीष्ट है।

शैक्षिक निर्देशन की प्रभावशीलता जैसे विषय पर दीर्घावधि अध्ययन भी किया जाना चाहिये । इसके अतिरिक्त राज्य शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन ब्यूरो को अधिक सक्रिय होकर कुछ प्रायोगिक कार्य अपने स्तर पर भी कराने चाहिए । अच्छा हो कि ब्यूरो विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों से तालमेल रखकर वहां के एम. एड. के छात्रों को निर्देशन के क्षेत्र में अधिक कार्य करने हेतु प्रेरित करें । शैक्षिक निर्देशन कार्यकर्ताओं के सुचारु प्रशिक्षण की भी आज अत्यन्त आवश्यकता है तथा उन्हें केवल विद्यालय की चारदीवारी तक ही सीमित न रहकर अभिभावकों से भी सम्पर्क कर शिक्षा में सामुदायिक सहभागिता के लिए प्रयास करना होगा ।

व्यावसायिक निर्देशन

शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य बालकों को ऐसे सुयोग्य भावी नागरिक के रूप में तैयार करना है जो आर्थिक रूप से तो अपने पैरों पर खड़े हों ही, साथ में देश की आर्थिक प्रगति में भी योगदान दे सकें । इस दृष्टि से छात्रों के व्यावसायिक निर्देशन का अपना महत्व है । यद्यपि निर्देशन में शैक्षिक, व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक तीनों प्रकार निहित हैं परन्तु व्यावसायिक निर्देशन पर जितना बल दिया जाता है, उतना अन्य दोनों प्रकारों पर नहीं । यही कारण है कि व्यावसायिक निर्देशन के क्षेत्र में 33 अनुसन्धान हुए जबकि शैक्षिक निर्देशन में 13 और वैयक्तिक निर्देशन में कोई अनुसन्धान नहीं हुआ ।

आलोच्य अवधि में व्यावसायिक निर्देशन क्षेत्र में अनुसन्धान की तीन विधियाँ प्रयुक्त की गईं –प्रायोगिक, वृत्त अध्ययन एवं आदर्श मूलक सर्वेक्षण । प्रायोगिक विधि केवल एक अध्ययन में, सर्वेक्षण 29 में तथा वृत्त अध्ययन तीन में प्रयुक्त की गई । व्यावसायिक निर्देशन में सर्वाधिक छः अध्ययन 1988 में किये गये जबकि चार-चार अध्ययन 1978, 1980 तथा 1981 में किए गए ।

पूर्ववत् सर्वाधिक अध्ययन व्यावसायिक रुचि तथा व्यावसायिक वरीयताएं/चयन पर किए गए । अभिवृत्ति ज्ञात करने के लिए भी चार अध्ययन हुए परन्तु व्यावसायिक सन्तुष्टि, व्यावसायिक आकांक्षा पर क्रमशः एक तथा दो ही अनुसन्धान कार्य किए गए ।

(अ) व्यावसायिक रुचियाँ

कुलश्रेष्ठ (1981) ने उदयपुर के 10+2 पद्धति के अन्तर्गत 10वीं कक्षा के विद्यार्थियों की रुचि विज्ञान सम्बन्धी व्यवसायों में अधिक पाई तथा सर्वाधिक प्रभावकारी कारण [illegible]

स्तर पर गणित विषय के छात्र-छात्राओं की रुचियों का अध्ययन कर नागपाल (1978) ने पाया कि इस अवस्था में बालकों की रुचियाँ परिवर्तनशील होती हैं । न्यादर्श में से केवल 40% छात्र ही विज्ञान विषय में रुचि रखते हैं । व्यवसाय के रूप में अभियान्त्रिकी में अधिक रुचि प्रदर्शित की गई । इन्होंने यह भी पाया कि व्यावसायिक रुचि और बुद्धि में कोई सम्बन्ध नहीं होता । वर्मा (1980) ने भी अपने अध्ययन में पुष्टि की कि किशोर अवस्था में छात्राओं की रुचियाँ स्थिर नहीं हैं । गृह-विज्ञान तथा सामाजिक क्षेत्र में उच्च रुचि वाली छात्राएं अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक संख्या में थीं । शर्मा (1977) के अध्ययन के अनुसार साहित्यिक क्षेत्र में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की रुचि साहित्यिक क्षेत्र से सम्बन्धित व्यवसायों में तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में पढ़ने वाले छात्रों की रुचि वैज्ञानिक क्षेत्र से सम्बन्धित व्यवसायों में अपेक्षाकृत अधिक पाई गई परन्तु वाणिज्य वर्ग के छात्रों व साहित्यिक वर्ग के छात्रों में व्यावसायिक रुचि लगभग समान पाई गई ।

चौहान (1985) ने जोधपुर शहर की नवीं कक्षा के बालक-बालिकाओं की व्यावसायिक रुचि के तुलनात्मक अध्ययन में कोई विशेष अन्तर नहीं पाया, वरन् विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि एवं विषय में निकट का सम्बन्ध पाया । गहलोत (1988) ने अपने अध्ययन में छात्रों की व्यावसायिक रुचि तथा उनके माता-पिता की व्यावसायिक आकांक्षा में कोई सम्बन्ध नहीं पाया परन्तु छात्राओं के विषय में ऐसा नहीं था । विभिन्न समुदायों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियों का रोचक अध्ययन वर्मा (1986) ने किया । उन्होंने पता लगाया कि व्यवसाय-चयन में परिस्थितियां और अवसर प्रभावकारी रहते हैं, बनिस्बत जाति या धर्म के ।

संतोष शर्मा (1978) के अध्ययन के अनुसार महिलाओं का अध्यापन व्यवसाय में अधिक रुचि रखने के व्यक्तिगत, पारिवारिक, शैक्षणिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारण हैं । महिला शिक्षा की राष्ट्रीय समिति द्वारा प्रदत्त सुझावों का भी क्रियान्वयन करने की राज्य सरकार से अपेक्षा की गई है ।

केन्द्रीय विद्यालयों के छात्रों की व्यावसायिक अभिरुचि का अध्ययन कर शर्मा (1987) ने निष्कर्ष निकाला कि विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूहों के छात्रों की व्यावसायिक अभिरुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है और सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा बुद्धि का व्यावसायिक अभिरुचि के मध्य सार्थक सम्बन्ध भी नहीं है । उच्च कक्षा एवं निम्न कक्षा के विद्यार्थियों में सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा बुद्धि के मध्य धनात्मक सार्थक सह-सम्बन्ध (0.5 स्तर पर) पाया गया । शोधकर्ता के अनुसार विद्यार्थी उच्च वेतन वाले, सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित, आत्माभिव्यक्ति के अवसर वाले तथा समाज सेवा से जुड़े हुए व्यावसायिक क्षेत्रों के प्रति रुचि प्रदर्शित करते हैं ।

बौद्धिक परिपक्वता, सांवेगिक तथा सामाजिक परिपक्वता के सन्दर्भ में ठाकुर (1988) ने विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियों का अध्ययन कर पाया कि अधिकांश क्षेत्रों में सांवेगिक परिपक्व छात्रों की रुचियां बौद्धिक परिपक्व छात्रों तथा सामाजिक परिपक्व छात्रों की तुलना में अधिक थीं। इसी प्रकार कृषि क्षेत्र के अतिरिक्त अन्य सभी रुचि क्षेत्रों में सांवेगिक परिपक्व छात्राओं की भी

रुचियाँ अधिक पाई गईं। इस अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि साहित्यिक, सामाजिक व गृह क्षेत्र में छात्राओं की रुचियाँ अधिक थीं तथा वैज्ञानिक, रचनात्मक और कृषि क्षेत्र में छात्रों की रुचियां तुलनात्मक रूप से अधिक रहीं।

विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियों का एक अन्य अध्ययन शर्मा (1987) ने बौद्धिक योग्यता के सन्दर्भ में किया। तदनुसार भौतिकी, साहित्यिक और मानवीय क्षेत्रों में प्रतिभाशाली छात्रों की रुचि छात्राओं की तुलना में अधिक है तथा उच्च सृजनशील छात्रों की रुचियाँ भौतिकी, कला और संगीत के क्षेत्रों में छात्राओं की तुलना में अधिक हैं। यह भी ज्ञात हुआ कि प्रशासकीय क्षेत्र में छात्रों की तथा संगीत क्षेत्र में छात्राओं की रुचि अपेक्षाकृत अधिक पाई गई।

(आ) व्यावसायिक चयन, वरीयताएं एवं आवश्यकताएं

इस क्षेत्र में दूसरा महत्वपूर्ण विषय व्यावसायिक चयन का है जो न्यूनाधिक रूप में व्यावसायिक रुचियों से सम्बद्ध है। तोमर (1975) ने उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के कक्षा–9 के छात्र-छात्राओं पर अध्ययन कर पाया कि छात्रों की रुचि गणितीय व्यवसाय में और छात्राओं की संगीत व्यवसाय में अधिक है। यह स्थिति शहरी तथा ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में समान रूप से पाई गई है। ऐसा ही एक अन्य अध्ययन शर्मा (1988) ने शहरी एवं ग्रामीण किशोरों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं पर किया और निष्कर्ष निकाला कि शहरी उच्च बुद्धिलब्धि वाली छात्राओं की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताएं भिन्न-भिन्न हैं और ग्रामीण स्तर पर भी ये आवश्यकताएं भिन्न हैं। इसी प्रकार छात्रों की निर्देशन आवश्यकताएं भी शहरी/ग्रामीण, उच्च/निम्न बुद्धिलब्धि, उच्च/निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर पर सर्वत्र भिन्नता लिए हुए हैं। निर्देशन के भी तीनों ही आयामों – शैक्षिक, व्यावसायिक व वैयक्तिक, में सार्थक अन्तर पाया गया। अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के छात्रों की आवश्यकताओं तथा व्यावसायिक चयन का शर्मा (1980) ने तुलनात्मक अध्ययन किया। दोनों ही जाति के छात्रों में समर्पण, विनय, काम तथा सम्बन्ध की आवश्यकता समान रूप से पाई गई। अनुसूचित जाति के छात्रों में प्रशासन, कृषि व साहित्य के क्षेत्र में अधिक रुचि है परन्तु सवर्ण जाति के छात्र वैज्ञानिक क्षेत्र में अधिक रुचि रखते हैं। विभिन्न पारिवारिक पृष्ठभूमियों और व्यावसायिक चयन के बीच सम्बन्ध की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास प्रकाशलता (1988) के अध्ययन में किया गया और यह पाया गया कि निम्न पारिवारिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी कुछ सीमा तक अपने परिवार की आर्थिक स्थिति एवं आकार को दृष्टि में रखते हुए व्यवसाय का चयन करते हैं जबकि उच्च पारिवारिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के सम्बन्ध में यह स्थिति प्रतिकूल रही। मध्यम पारिवारिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों द्वारा व्यवसाय का चयन अपनी योग्यता, रुचि एवं क्षमता के अनुसार किया जाता है। व्यवसाय चयन में पारिवारिक कारणों की अपेक्षा व्यक्तिगत कारणों को सर्वोपरि महत्त्व दिया जाता है।

चयन का तुलनात्मक अध्ययन किया । केवल परिवहन तथा विनिमय सम्बन्धी व्यवसाय चयन में बहिर्मुखी छात्रों ने अन्तर्मुखी छात्रों की अपेक्षा अधिक उत्साह प्रदर्शित किया । अन्य सभी व्यवसायों के चयन में दोनों प्रकार के छात्रों में रुचियाँ समस्तरीय रहीं । व्यवसाय चयन में विज्ञान, परिवहन एवं विनिमय, तकनीकी, कृषि तथा सुरक्षा के क्षेत्रों में लिंग भेद के आधार पर अन्तर पाया गया ।

(इ) व्यावसायिक अभिवृत्ति

अभिवृत्ति सम्बन्धी केवल तीन अध्ययन समीक्षा अवधि में किए गए । इनमें से एक अध्यापन व्यवसाय से सम्बन्धित है, दूसरा उद्योग शिक्षा से और तीसरा व्यावसायिक भविष्य से । अध्यापन व्यवसाय के प्रति महाविद्यालयीय छात्रों की धनात्मक अभिवृत्ति का निष्कर्ष शर्मा (1982) के अध्ययन से निकलता है । परन्तु इस व्यवसाय का चयन अधिकतर विज्ञान विषय के छात्र करते हुए पाए गए । सामाजिक कारण इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । उद्योग शिक्षा के प्रति दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति भटनागर (1979) ने सकारात्मक पाई । इस अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि कार्यानुभव की विभिन्न प्रवृत्तियां बालक एव बालिकाओं की उद्योग शिक्षा के प्रति अभिरुचि की सन्तुष्टि में सहायक सिद्ध होती है । पन्त (1981) ने कक्षा–10 की छात्राओं के व्यावसायिक भविष्य के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि विद्यालय का पाठ्यक्रम छात्राओं में व्यावसायिक अभिवृत्ति विकसित करने में सहायक नहीं है । साथ ही उन्होंने विद्यालय में प्रदत्त व्यावसायिक निर्देशन को भी अपर्याप्त पाया । विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा उपलब्ध न होना भी अभिवृत्ति में एक बाधक तत्व है । जोशी (1988) ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं छात्रों की, व्यावसायिक शिक्षा के प्रति, अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया ।

(ई) व्यावसायिक स्थिरता

इस उप-शीर्षक के अन्तर्गत अध्ययनाधीन अवधि में तीन अनुसन्धान किए गए हैं और तीनों ही वैयक्तिक अध्ययन विधि द्वारा सम्पन्न हुए हैं । इनमें से दो अध्ययन तो एक ही शीर्षक से उदयपुर और जोधपुर जिलों के न्यादर्श पर किए गए तथा तीसरा अध्ययन लिंग भेद आधार पर तुलना के द्वारा किया गया। मेहता (1978) ने व्यावसायिक रूप से अस्थिर व्यक्तियों के प्रतिरूप का अध्ययन कर पता लगाया कि आर्थिक, बौद्धिक एवं गृहपक्ष व्यक्ति को व्यवसाय परिवर्तन हेतु प्रेरित करते हैं जबकि शर्मा (1985) के अध्ययन द्वारा निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि व्यावसायिक स्थिरता में अभिरुचि का लगभग 80% योगदान रहा है और यही मुख्य तत्व है जो अधिक प्रभावकारी भी है । व्यवसाय स्थिरता को प्रभावित करने वाले अन्य तत्व सामाजिक और पारिवारिक पक्ष निकले ।

विजया जैन (1986) ने व्यावसायिक रूप से अस्थिर महिलाओं व पुरुषों का तुलनात्मक अध्ययन किया । महिलाओं और पुरुषों की व्यावसायिक स्थिरता पर व्यावसायिक सन्तुष्टि, व्यावसायिक रुचि तथा उत्पन्न बाधाओं का अलग-अलग प्रभाव पाया गया । महिलाओं को

व्यावसायिक सन्तुष्टि का आर्थिक पक्ष और पुरुषों को सामाजिक तथा व्यक्तिगत पक्ष अधिक प्रभावित करता है ।

(उ) व्यावसायिक समस्याएं

वैसे तो प्रत्येक व्यवसाय की अपनी-अपनी समस्याएं हैं परन्तु इस वृहद क्षेत्र में केवल दो ही अध्ययन हुए और दोनों ही शिक्षण व्यवसाय से सम्बन्धित हैं । सिंघवी (1980) ने शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राध्यापकों की व्यावसायिक समस्याओं का अध्ययन किया जिसके अनुसार वे अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट हैं । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अभिस्वीकृत वेतनमान न मिलना, छात्र-अध्यापक अनुपात अधिक होना, समाज में प्रतिष्ठा कम होना, पुस्तकालय में हिन्दी माध्यम की पुस्तकें कम होना तथा पृथक से बैठने का कक्ष न होना आदि समस्याएं विद्यमान पाई गईं । प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के नये अध्यापकों को शर्मा (1978) के अनुसार विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है यथा विद्यालय वातावरण पुस्तकालय, अभिभावक, कक्षा संचालन तथा अनुशासन सम्बन्धी समस्याएं । इन समस्याओं का समाधान प्रधानाध्यापक तथा विभिन्न शिक्षा अभिकरण कर सकते हैं ।

(उ) विविध

व्यावसायिक निर्देशन क्षेत्र में उक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर 8 अध्ययन और किए गए हैं । सुमन कुमारी (1981) ने मूर्तिकला व्यवसाय का वृत्त विश्लेषण कर ज्ञात किया कि इस व्यवसाय में रत व्यक्तियों में आकार समझने की क्षमता, निरीक्षणात्मक गुण, अंगुली व हथेलियों में शक्ति, हाथ और दृष्टि में समन्वय अधिक मात्रा में पाया जाता है । इनके अतिरिक्त मूर्तिकार में सतर्कता, एकाग्रता, स्फूर्ति, रुचिपूर्णता तथा पूर्वानुभव का गुण भी अधिक मात्रा में पाया जाता है परन्तु इनकी शैक्षिक योग्यता सामान्य से न्यून पाई गई । शर्मा (1981) ने उदयपुर विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों को विश्वविद्यालय प्रशासन से असन्तुष्ट पाया । प्राध्यापकों की मान्यता है कि आज अध्यापन न तो आदर्श ही रहा और न ही शुद्ध व्यवसाय । यादव (1984) ने ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत माध्यमिक एवं प्राथमिक अध्यापकों के मनोबल को औसत श्रेणी का पाया परन्तु समग्र रूप से माध्यमिक अध्यापकों का मनोबल प्राथमिक अध्यापकों की अपेक्षा ऊँचा रहा । 10 वर्ष से अधिक अनुभव प्राप्त अध्यापकों का मनोबल अपेक्षाकृत निम्न पाया गया । जिससे निष्कर्ष निकला कि आयु एवं अनुभव वृद्धि के अनुसर मनोबल में ह्रास होता है ।

सिंह (1986) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में दुश्चिन्ता एवं व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन कर ज्ञात किया कि निजी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की दुश्चिन्ता राजकीय विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की अपेक्षा अधिक है । और उनमें भी सर्वाधिक दुश्चिन्ता विज्ञान वर्ग के निजी विद्यालयों के छात्रों में विद्यमान पाई गई । वाणिज्य वर्ष में राजकीय विद्यालयों के छात्र-छात्राओं में अधिक दुश्चिन्ता है । परन्तु आकांक्षा इससे ठीक विपरीत है । अर्थात राजकीय

(1988) ने वाणिज्य वर्ग के सामान्य और अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं तथा व्यक्तित्व गुणों पर तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि सामान्य छात्रों की आकांक्षाएं उच्च सामाजिक व आर्थिक स्थितियुक्त व्यवसायों की ओर तथा अनुसूचित जाति के छात्रों की मध्यम सामाजिक व आर्थिक स्थितियुक्त व्यवसायों की ओर थी । सामान्य छात्र व्यावसायिक परिवर्तन की ओर जागरूक थे जबकि अनुसूचित जाति छात्र प्रशिक्षण प्राप्त करने और अपना धन्धा शुरू करने के इच्छुक । सामान्य छात्रों में कल्पनात्मक व यथार्थवादी दोनों प्रकार की व्यावसायिक आकांक्षाएं उच्च स्तर की थीं तथा वे अधिक आत्मविश्वासी भी थे । अध्यापक के व्यवसाय को सर्वाधिक नापसंद किए जाने वाले व्यवसायों की श्रेणी में रखा गया जो शायद उसकी निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के कारण ही रहा होगा ।

पाण्डेय (1975) ने सांगानेर के छीपों का कार्य विश्लेषण कर उनके कार्य का अभिज्ञान, उनके कर्तव्य, उनकी संख्या, कार्य का समय, वेतन, प्रशिक्षण विधि, प्रयुक्त सामग्री तथा उनके विशेष गुणों का पता लगाया ।

संभावनाएं एवं सुझाव

व्यावसायिक निर्देशन के क्षेत्र में हुए शोध कार्यों का शिक्षा नियोजकों के लिये विशेष फलितार्थ है । व्यावसायिक क्षेत्रों में खपत की क्षमताओं के साथ-साथ विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियों से तालमेल बिठाते हुए उन्हें योजनाएं बनानी होंगी । उदाहरणार्थ जब बालक अभियान्त्रिकी विषयों में अधिक रुचि दिखा रहे हैं तो ऐसे विषयों को सम्बद्ध क्षेत्र में अधिक महत्व दिया जा सकेगा । व्यावसायिक आकांक्षा वाले क्षेत्रों को उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा सकेगा । इसी प्रकार महिलाओं के अध्यापन व्यवसाय में अधिक रुचि का भी महिला शिक्षा को प्रोन्नत करने में उपयोग किया जा सकेगा ।

महाविद्यालयी छात्रों द्वारा अध्यापन व्यवसाय के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति के द्वारा श्रेष्ठ प्रतिभाशाली छात्रों को इस व्यवसाय के लिए प्रेरित किया जा सकेगा और इस प्रकार शिक्षा के गिरते हुए स्तर को उन्नत किया जा सकेगा । चूंकि विद्यालय का पाठ्यक्रम छात्राओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति के पोषण में सक्षम नहीं पाया गया है, अतः शिक्षा नियोजक छात्राओं के पाठ्यक्रम में वांछित परिवर्तन, संशोधन कर पाएंगे ।

व्यवसाय परिवर्तन के घटकों की जानकारी के माध्यम से शिक्षा नियोजक व्यवसाय में स्थिरता लाने का प्रयास कर पाएंगे । इसके साथ ही वर्तमान शिक्षा योजना को नया स्वरूप प्रदान कर व्यवसायिक सन्तुष्टि में वृद्धि की जा सकेगी ।

शिक्षा प्रशासक इन शोधकार्यों के माध्यम से छात्रों को उनकी रुचि के अनुसार पाठ्यक्रम/ विषय उपलब्ध कराने का प्रयास कर पाएंगे । तथा उनकी उद्योग व कार्यानुभव के क्षेत्र में अभिरुचि का उचित दोहन कर सकेंगे । विद्यालयों में दिये जाने वाले अपर्याप्त व्यावसायिक निर्देशन में पर्याप्त वृद्धि की जा सकेगी तथा व्यावसायिक निर्देशन के मध्य आने वाली बाधाओं को दूर किया जा सकेगा । इन शोध-कार्यों से यह भी अपेक्षा है कि शिक्षा प्रशासक शिक्षकों

की व्यावसायिक सन्तुष्टि के लिए उचित वेतनमान, उचित छात्र-शिक्षक अनुपात व उचित अन्य भौतिक सुविधाएं उपलब्ध करा पाएंगे । निजी क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षकों में व्याप्त दुश्चिन्ता भी उनके प्रयासों से दूर हो पाएगी ।

बालकों की रुचियाँ परिवर्तनशील होती हैं और नित नवीन रुचियों के अनुरूप शिक्षक बालकों को उत्प्रेरित कर उन्हें अपने इच्छित कार्य-क्षेत्र में प्रगति का अवसर प्रदान कर उनके सर्वांगीण विकास में सहायक हो पाएगा । इस प्रकार उद्योग, कार्यानुभव विषयों में धनात्मक अभिवृत्ति वाले छात्रों को शिक्षक उचित अवसर प्रदान कर उन्हें व्यावसायिक शिक्षा में प्रवृत्त कर पाएगा । विद्यालय में नव नियुक्त अध्यापकों को भी विद्यालय सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं की जानकारी हो जाएगी और तदनुसार वे अपने आपको उन समस्याओं से जूझने को तैयार कर पाएंगे ।

अतः ये शोध-कार्य शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने वाले सभी जन के लिए न केवल लाभप्रद ही सिद्ध होंगे अपितु उन्हें मार्ग बनाने व मार्ग चुनने में भी सहायता कर पाएंगे ।

यद्यपि व्यावसायिक निर्देशन क्षेत्र में विभिन्न आयामों को छूने का प्रयास किया गया है परन्तु अभी भी ऐसे कई क्षेत्र हैं जिन्हें या तो छुआ नहीं गया है अथवा उन पर पर्याप्त शोध कार्य नहीं किया गया है । यह उल्लेखनीय है कि अधिक मात्रा में शिक्षण व्यवसाय पर अध्ययन हुए हैं तथा अन्य बहुत से उपयोगी व्यवसायों पर नगण्य-सा कार्य हुआ है । इस प्रकार अन्य व्यवसायों पर शोध-कार्य की विपुल सम्भावनाएं हैं ।

समीक्षाधीन अवधि में व्यवसाय मानकर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है और न ही जन बल के परिप्रेक्ष्य में व्यवसाय चयन पर । व्यावसायिक निर्देशन की प्रभावशीलता पर भी अभी पर्याप्त अध्ययन किया जाना शेष है । इस अवधि में व्यावसायिक रुचि, अभिवृत्ति, प्रभावशीलता आदि के मापन के लिए कोई । मानकीकृत उपकरण विकसित नहीं हो पाए हैं ।

व्यावसायिक आकांक्षा, मनोबल निर्देशन, व्यावसायिक सन्तुष्टि पर भी अधिक अध्ययन अपेक्षित है । व्यावसायिक निर्देशन में शिक्षक के अतिरिक्त अन्य अभिकरणों की भूमिका पर भी अध्ययन किया जाना उचित होगा । व्यावसायिक निर्देशन कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण, अभिरुचि, अभिवृत्ति आदि क्षेत्रों में भी सम्भावनाएं तलाशनी होंगी । नियोजन के साथ-साथ व्यावसायिक निर्देशन को जोड़ना अत्यन्त आवश्यक है जिसके बिना यह कार्य अधूरा ही माना जाएगा ।

शोध अनुक्रमणिका

अग्रवाल, शशि : न्यून एवं उच्च निष्पत्ति वालों का व्यवसाय चयन एवं तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

कुलश्रेष्ठ, प्रदीप : उदयपुर के 10+2 पद्धति के अन्तर्गत 10वीं कक्षा के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियां तथा उनको प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

गहलोत, राजेश : जोधपुर शहर के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियों एवं अभिभावकों की उनके सम्बन्ध में व्यावसायिक आकांक्षाओं का सम्बन्ध । एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1988

गुप्ता, सुषमा : वनस्थली विद्यापीठ में पढ़ने वाली छात्रों की समस्याओं का अध्ययन। तथा निर्देशन की आवश्यकताओं का सर्वेक्षण, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

चन्देल, नरेन्द्रपाल सिंह : उच्च माध्यमिक स्तर के वाणिज्य वर्ग के सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं तथा व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

चौहान, लीला : जोधपुर शहर की नवीं कक्षा के बालक-बालिकाओं की व्यावसायिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनकी रुचि का लिये गये विषयों के साथ सम्बन्धों का अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1985

जैन, विजया : व्यावसायिक रूप से अस्थिर महिलाओं व पुरुषों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1986

जोशी, पूनमचन्द : A study of predictive efficiency of selection criteria for new-entrants in commerce education. M. Ed., Raj. Uni., 1982

जोशी, रमाकान्त : उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं छात्रों की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन, एम. एड.., राज. विद्यापीठ, डबोक 1988

जोशी, शान्तिनाथ : बाल-पत्रिकाओं के प्रति किशोरों की अभिवृत्ति का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

ठाकुर, कमल : विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियों का परिपक्वता तथा अभिभावकीय व्यवसाय के सन्दर्भ में अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1988

नागपाल, गुलशनकुमार: माध्यमिक स्तर पर गणित विषय के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक रुचियों का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1978

नागर, दिव्यप्रभा : अध्यापक, महाविद्यालयों में छात्राध्यापिकाओं की निर्देश आवश्यकताएं, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

तोमर, जगतपालसिंह : An investigation into the vocational preferences of IX class students. M. Ed., Raj. Uni., 1975

पंत, नीलकमल : Attitude of High School girls towards vocational career. M. Ed., Udai. Uni., 1981

पाण्डेय, जया : परम्परागत दस्तकारों के व्यवसाय का कार्य-विश्लेषण (सांगानेर के छींपों का एक अध्ययन), एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

पाराशर, शशि : उदयपुर नगर के विद्यालयों में विषय चयन में निर्देशन का अनुवर्ती अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

प्रकाशलता : पारिवारिक पृष्ठभूमि और व्यावसायिक चयन के बीच सम्बन्ध, एम. एड., राज. विद्यापीठ, डबोक, 1988

भटनागर, आनन्द : क्राफ्ट शिक्षा के प्रति 10वीं कक्षा के छात्रों की अभिवृत्ति, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

मिश्र, लोकमान्य : जयपुर व जोधपुर शहर के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के निर्देशन कार्यकर्ताओं की अपेक्षित भूमिका एवं सम्पादित वास्तविक भूमिका, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1985

मेहता, कृष्णकुमार : व्यावसायिक रूप से अस्थिर व्यक्तियों के प्रतिरूप (कपितय वैयक्तिक अध्ययन), एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1978

मेहता, पुष्पा : अध्यापन-अभ्यास में छात्राध्यापकों को दिये जाने वाले निर्देशन कार्यक्रम का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

यादव, रामसेवक : ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत माध्यमिक एवं प्राथमिक अध्यापकों के मनोबल निर्देशन हेतु एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

राव, उषाकुँवर : विद्याभवन कला संस्थान के छात्राध्यापकों की व्यावसायिक रुचि, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

वर्मा, जुमना : 10वीं कक्षा के छात्राओं की व्यावसायिक रुचियां तथा शालीय पाठ्यचर्या में उनकी पूर्ति हेतु प्रावधान, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

वर्मा, रश्मि : विभिन्न समुदायों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियों का अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1986

शर्मा, ओमप्रकाश : महाविद्यालयी छात्रों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

शर्मा, कल्पना : बालकों के विकास में अभिभावकों की भूमिका एवं अध्यापकों की उनसे अपेक्षाएं, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1988

शर्मा, किरणलता : अनुसूचित तथा सवर्ण जाति के छात्रों की आवश्यकताओं तथा व्यावसायिक चयन का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

शर्मा, जितेन्द्र : Relevance of socio-economic status and intelligence with vocational interests of 10th class boy students of central schools. M .Ed., Jodh. Uni., 1987

शर्मा, निशा : बौद्धिक योग्यता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियों का अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1987

शर्मा, पद्मा : व्यावसायिक रूप से अस्थिर व्यक्तियों के प्रतिरूप, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1985

शर्मा, प्रभारानी : प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के नये अध्यापकों की व्यावसायिक समस्याओं का एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

शर्मा, मधुबाला : शहरी एवं ग्रामीण किशोरों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1988

शर्मा, मीना : उदयपुर विश्वविद्यालय के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि – एक समालोचनात्मक विश्लेषण, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

शर्मा, रामेश्वरी : उदयपुर शहर के माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों के निर्देशन कार्यकर्ताओं की अपेक्षित भूमिका एवं सम्पादित वास्तविक भूमिका का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

शर्मा, शशिकान्त : दसवीं कक्षा के स्तर पर विभिन्न विशिष्ट अध्ययन के क्षेत्रों में पढ़ने वाले शिक्षार्थियों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

शर्मा, सन्तोष : अध्यापन व्यवसाय में महिलाओं की रुचि के कारण, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1978

शर्मा, सुनीता : दिल्ली के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रम के संगठन का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

शर्मा, सुधा : शैक्षिक रूप से प्रतिभाशाली व पिछड़े किशोरों की शैक्षिक निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकताओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

सक्सैना, गीता : अनुसूचित जाति के छात्रों की समस्याओं का अध्ययन व निर्देशन की आवश्यकताओं का सर्वेक्षण, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

सुराणा, सुनील : अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्र-छात्राओं के व्यावसायिक चयन का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड. राज. विश्वविद्यालय, 1983

सिंघवी, सुशीला : शिक्षक महाविद्यालयों के प्राध्यापकों की व्यावसायिक व अन्य समस्याएँ, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

सिंह, नरेन्द्र : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में दुश्चिन्ता एवं व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1986

सिंह, विजेन्द्रप्रताप : शिक्षा स्नातक (बी. एड.) स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की निर्देश आवश्यकताएं । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

☆ ☆ ☆ ☆

शैक्षिक प्रशासन एवं व्यवस्था

❑ पन्नालाल वर्मा
❑ सूरजनारायण कौशिक
❑ शिवचरण मन्त्री

आज तक शिक्षा प्रशासन अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका के कारण शोध एवं अध्ययन का रोचक विषय रहा है। सामान्य तौर पर एम.एड. स्तर पर वैकल्पिक विषयों में से एक विषय रहने के कारण शिक्षा प्रशासन के विभिन्न आयामों का अध्ययन और शोध करना रुचिकर रहा है। 1974 के पश्चात् विद्यालय व्यवस्था के अतिरिक्त शिक्षा प्रशासन के क्षेत्र में हुए अध्ययन व शोध-कार्यों को जिन वर्गों में बांटा जा सकता है, वे हैं–शिक्षा प्रशासन एवं विद्यालयी संगठनात्मक वातावरण, शिक्षा प्रशासन में विकेन्द्रीकरण, शिक्षा प्रशासन एवं विद्यालयी योजना, शिक्षा प्रशासन में प्रधानाध्यापक की भूमिका, शिक्षा प्रशासन एवं विद्यालयी योजना, शिक्षा प्रशासन में परिवीक्षण की व्यवस्था, शिक्षा प्रशासन की वित्तीय स्थिति एवं शिक्षा प्रशासन की समस्याएं। इन क्षेत्रों में किये गये शोध-कार्यों की स्थिति निम्नांकित है :

शिक्षा प्रशासन एवं विद्यालयीय संगठनात्मक वातावरण

शिक्षा प्रशासन के संगठनात्मक वातावरण में उन सब विषयों को सम्मिलित किया गया है जिनसे प्रशासन चलता है। इस सन्दर्भ में विद्यालयों में विगत वर्षों से प्रारम्भ किये गये समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों के विषय में श्रीमती उषा भटनागर (1985) ने अध्ययन किया एवं यह बताया कि केन्द्रीय विद्यालयों में समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों का बहुत महत्त्व है एवं इनको सुचारु रूप से चलाने के लिये वर्कशॉप आवश्यक है। समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों की व्यवस्था के विषय में निरुपमा भारद्वाज (1986) ने अपने अध्ययन में बताया कि गैर सरकारी व छात्रा विद्यालयों में यह कार्यक्रम अपेक्षाकृत अच्छा चल रहा है। प्रधानाध्यापकों के मतानुसार इन कार्यों का अध्यापन पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता परन्तु वित्तीय समस्या के कारण इसकी व्यवस्था

में कठिनाई आती है। शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा भी किसी-न-किसी रूप में शिक्षा में सम्मिलित किये गये हैं। स्वास्थ्य शिक्षा के संगठनात्मक रूप एवं संचालन के विषय में धर्मदत्त शर्मा (1977) का मानना है कि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में शहरी विद्यालयों की अपेक्षा स्वास्थ्य परीक्षण की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है एवं गांवों में यह नियमित रूप से होता है। श्रीमती शाहिन ए. खान ने विद्यालय की स्वास्थ्य सेवाओं के (1987) बारे में स्पष्ट किया कि निजी शिक्षण संस्थाओं में इन सेवाओं की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है।

कानसिंह सोनगरा (1979) ने इसी क्रम में संगठन व क्रियान्वयन का अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला कि बड़े खेल का संचालन सामान्यतया विद्यालयों में नहीं होता हैं। शारीरिक शिक्षा के प्रमुख क्रियाकलापों का अध्ययन भगवतीलाल दवे (1980) ने किया और पाया कि आंचलिक खेलों को अधिकाधिक महत्त्व दिया गया है। फतेहचन्द्र जैन (1985) का मत है कि खेल सामग्री अपर्याप्त है तथा खेल मैदानों का रखरखाव ठीक नहीं है। 10+2 की शिक्षा में कार्यानुभव की स्थिति का अध्ययन सुरेश चन्द जैन (1976) ने किया और पाया कि अधिकांश विद्यालयों में पुराने घिसे-पिटे उद्योगों को ही कार्यानुभव के रूप में चलाया जाता है। जिससे इसमें छात्रों की कोई रुचि नहीं रह पाई है। राजेन्द्र शर्मा (1977) ने अपने ऐसे ही अध्ययन में पाया कि कार्यानुभव आंशिक रूप से ही विद्यालयों में चल रहा है। विजेन्द्र सिंह राघव (1977) ने अलवर जिले के विद्यालयों में कार्यानुभव की स्थिति का अध्ययन करके बताया कि छात्र साबुन, तेल, रंग आदि बनाने में अधिक रुचि लेते हैं एवं कार्यानुभव में एकरूपता का अभाव है। जगदीश चन्द्र शर्मा (1977) के मतानुसार छात्रों को विशेषताओं का मार्ग-दर्शन मिलने पर भी यह कार्यक्रम छात्रों को रुचिकर लग सकेगा। कार्यानुभव के अपने अध्ययन में हरिसिंह अघाना (1978) ने यह पाया कि ग्रामीण छात्रों, साक्षर एवं निम्न मध्यम आय वर्ग के अभिभावकों के पुत्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों, तिरस्कृत एवं उच्च वर्ग के अभिभावकों के पुत्रों में कार्यानुभव में भाग लेने की प्रवृत्ति कम पाई गई है। गत वर्षों में बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में लगाए गए नवीन विषय समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा के विषय में जो शोध कार्य किये गये हैं उनके विषय में श्री रूपलाल (1986) का मत है कि ये कार्य शिक्षा के अभिन्न अंग हैं । इससे शिक्षा कार्य केन्द्रित होगा। जोधपुर शहर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की समाजोपयोगी उत्पादक कार्य व समाज सेवा की अभिव्यक्ति का अध्ययन संगीता कपूर (1988) ने किया और पाया है कि यह कार्य राजकीय विद्यालयों की अपेक्षा अनुदान व सहायता प्राप्त विद्यालयों में अधिक पसन्द किया जाता है। अतुल नागर (1988) ने अपने अध्ययन में यह देखा कि विषय का अध्यापन सैद्धान्तिक दृष्टि से ही करवाया जाता है। कौशल व सीखने की प्रक्रिया पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया जाता है। शिक्षकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता है। प्रदेश के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के प्रशासन के विषय में राजेन्द्र प्रसाद सनाढ्य (1975) ने उदयपुर जिले के विषय में पाया कि राजकीय विद्यालयों में खेल के मैदान, भवन आदि की सुविधाएं निजी विद्यालयों की अपेक्षा कम हैं। इसी क्रम में श्रीमती कृष्णा (1980) ने

बीकानेर जिले की सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों की प्रशासनिक व्यवस्था के क्रम में बताया कि गत दस वर्षों में गैर सरकारी विद्यालयों की संख्या में बहुत बढ़ोतरी हुई है । गैर सरकारी विद्यालयों में अप्रशिक्षित अध्यापकों का बाहुल्य है तथा इन विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी अधिक किया जाता है । जोधपुर जिले के विषय में सीता कछवार (1980) का मत है कि राजकीय विद्यालयों में प्रजातान्त्रिक व्यवस्था, निजी विद्यालयों की अपेक्षा अधिक है । राजकीय विद्यालयों में राजनेता, छात्र, अध्यापक अभिभावक संघ का विद्यालयी विकास हेतु अधिक योगदान लिया जाता है । शिरीष वालिया (1980) ने केन्द्रीय, राजकीय व निजी विद्यालयों में संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन करके यह बताया कि केन्द्रीय विद्यालयों में राजकीय विद्यालयों की अपेक्षा अध्यापकों में अपनी संस्था के प्रति आत्मीयता की भावना अधिक है ।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाचार्य, अध्यापक व छात्रों के अन्तर्सम्बन्ध के विषय में मूलचन्द्र (1978) ने ज्ञात किया कि प्रधानाचार्य व अध्यापकों के मध्य अन्तर्सम्बन्ध अच्छे पाए गए । व्यवस्था और पर्यावरण के विषय के अध्ययनों में मिथिलेश वर्मा (1980) ने स्पष्ट किया कि छात्राओं के विद्यालयों में अध्यापिकाएँ विद्यालय कार्यों में छात्र विद्यालयों की अपेक्षा अधिक बाधा उत्पन्न करती हैं । विद्या ठाकुर (1985) ने स्पष्ट किया कि उच्च स्तर की शैक्षिक उपलब्धि के लिये अच्छा प्रशासन आवश्यक है । श्रीमती सीता शर्मा (1986) का मानना है कि विद्यालयों में मुक्त पर्यावरण का होना जरूरी है । रमेश कुमार मेनारिया (1985) ने उदयपुर शहर के उच्च माध्यमिक विद्यालय में रसायन प्रयोगशाला के विषय में स्पष्ट किया कि राजकीय विद्यालयों में अपेक्षाकृत अधिक संख्या में उपकरण एवं सामग्री उपलब्ध हैं । भागचन्द कुमावत (1986) ने पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियाँ विद्यालयों में नहीं चलती हैं । निजी विद्यालयों में इनकी संख्या और भी कम होती है । जनजाति माध्यमिक विद्यालयों के पुस्तकालयों के विषय में कमल किशोर खोर (1977) ने बताया कि इन पुस्तकालयों की स्थिति अच्छी नहीं है । विद्यालय आयोजन के सम्बन्ध में पुष्पा सिन्धी (1978) ने बताया कि स्वायत्तशासी विद्यालय पाठ्यक्रम भी पूरा नहीं बना पाए जबकि अन्य विद्यालयों में बोर्ड का पाठ्यक्रम चलाया जाता है । एन. सी. वार्ष्णेय (1979) ने अपने पीएच. डी. शोध ग्रन्थ में बताया कि संगठनात्मक वातावरण में छात्र निराश करने वाले कारणों एवं कुण्ठाओं का समायोजन कर लेते हैं । प्राथमिक स्तर पर शैक्षिक व प्रशासनिक व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन (1983) शोभा जोशी ने किया और बताया कि पंचायत समिति बड़गाँव में एकल अध्यापक शालाएं अधिक हैं एवं इस व्यवस्था के प्रति अध्यापकों में असन्तोष है । पंचायत समिति के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों की कार्य-व्यवस्था के बारे में हेमलता माथुर (1987) ने बताया कि पंचायत समितियों में अध्यापकों की संख्या बढ़ाई जाए । एकल अध्यापक शाला के विषय में श्रीमती अन्नपूर्णा भदोरिया ने बताया कि एकल अध्यापकीय विद्यालयों में उपकरणों की बहुत ही कमी रहती है ।शैक्षिक क्षेत्र में उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले विद्यालयों के विषय में सरोज शुक्ला (1979) ने बताया कि बोर्ड के अच्छे और उच्च परीक्षा परिणाम, कुशल प्रधानाध्यापक व अध्यापकों के प्रयास से प्राप्त होते हैं । इसी प्रकार के निष्कर्ष चन्द्रप्रकाश सिंह (1980) ने प्राप्त किए । डालेश्वर सिंघल (1986) ने उदयपुर के चार उच्च उपलब्धि वाले विद्यालयों का अध्ययन करके बताया कि बोर्ड परीक्षा में उच्च

उपलब्धि अध्यापकों द्वारा उपलब्ध शिक्षण सामग्री के उपयोग पर निर्भर करता है । इसी क्रम में श्रीमती प्रवीण लता ने अपने अध्ययन (1987) में बताया कि प्रधानाध्यापक का प्रभावी परिवीक्षण ही बोर्ड की अच्छी उपलब्धि का कारण है । अविभक्त प्रणाली के विषय में उमा पाठक (1980) ने स्पष्ट किया कि अविभक्त इकाई के उद्देश्य अस्पष्ट हैं और यह व्यवस्था उच्च प्राथमिक स्तर पर भी नहीं चलाई जानी चाहिये । उदयपुर में अनिवार्य शिक्षा के विषय में अध्ययन करके करूणा श्रीवास्तव (1979) ने बताया कि शहर में सभी छात्रों के लिये अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की सुविधा उपलब्ध नहीं है । सरकारी विद्यालयों में विचारों का आदान-प्रदान पर जगदीश शर्मा (1976) ने अध्ययन करने पर पाया कि सामान्यतः प्रथम सहायक के लिखित सूचना पर ही विचारों का आदान-प्रदान होता है । संगीत शिक्षण के संगठन एवं प्रबन्ध के विषय में बीना भट्ट (1979) का कथन है कि संगीत कक्ष अपूर्ण है और इसका साहित्य भी उपलब्ध नहीं है । शिक्षा अधिकारी के कार्यालय का संगठनात्मक रूप का अध्ययन कालूलाल शर्मा (1980) ने किया एवं पाया कि प्रधानाध्यापक जिला शिक्षाधिकारियों को अपनी समस्याएं बतलाने में भय खाते हैं । समस्याएं बतलाने पर उनका निवारण न होना सामान्य बात है । जिला शिक्षा अधिकरी और विकास अधिकारियों की शैक्षिक व प्रशासनिक भूमिका का अध्ययन रज़ाक मोहम्मद (1986) ने किया और पाया कि दोनों अधिकारियों के लिए स्थानान्तरण समस्या समान हैं । अध्ययन हेतु सुविधाओं का अभाव व तात्कालिक अधिकारियों की परेशानियाँ दोनों के लिये समान पाई गईं ।

शिक्षा प्रशासन में संघों की भूमिका

नरेन्द्र सिंह (1977) ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया है कि अध्यापक-अभिभावक संघ से पाठ्यक्रम के विषय में कोई राय नहीं ली जाती है । जबकि ऐसे संघ विद्यालय के भौतिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं । जयकिशन रेबारी (1983) ने अपने शोध द्वारा उक्त मत की पुष्टि करते हुए यह स्पष्ट किया है कि अध्यापक अपने उत्तरदायित्व को पूरा नहीं कर पा रहे हैं । अध्यापक-अभिभावक संघ सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में सामान्य तौर पर एक-सा ही कार्य करते हैं । सुमित्रा अग्रवाल (1981) ने अपने शोध में पाया कि शिक्षक संघ राजनीति से प्रेरित होते हैं और इनमें कुप्रभावों के निवारण की शक्ति कम होती है। शिक्षक संघों की माध्यमिक स्तर की शिक्षा में उन्नयन के योगदान के बारे में प्रेमनारायण (1988) ने एक शोध में बताया कि शिक्षकों के हितों के लिए ये संघ सार्थक हैं किन्तु ये प्रशासकों को अनुचित कार्य करने को बाध्य करते हैं । मंजुलता वाकेल (1978) के अनुसार शिक्षक संघ एक प्रकार से ट्रेड यूनियन से ही हैं । इन संघों को वित्तीय संकट सामान्यतया घेरे रहते हैं । रमेशचन्द्र पारीक (1978) ने यह पाया कि जिला-स्तरीय शिक्षानुसन्धान वाक्पीठ जिला स्तर पर शोध कार्य बहुत कम ही कर पाए हैं और प्रकाशन कार्य तो और भी कम हुआ है । प्रधानाध्यापक वाक्पीठ के विषय में हरिश्चन्द्र व वी. एस. शर्मा (1983) का कथन

परन्तु 1975 में नरेन्द्र कुमार ने इसका अध्ययन किया और पाया कि छात्र संघ शैक्षिक गतिविधियों में सहयोग न देकर हड़ताल, तोड-फोड़, अव्यवस्था को ही प्रोत्साहित करते हैं ।

शिक्षा प्रशासन एवं विकेन्द्रीकरण

विश्वविद्यालयों के विभागाध्यक्षों के शैक्षिक कार्यों की भूमिका के विषय में अश्विनी कुमार गौड़ (1979) ने यह पाया कि विश्वविद्यालय विभागाध्यक्ष प्राध्यापकीय व्यवस्था में रुचि नहीं लेते हैं । राजस्थान विश्वविद्याल में घुमावदार व्यवस्था (रोटेशनल सिस्टम) के लिए उषा श्रीमाली (1979) का मत रहा कि इस प्रकार की व्यवस्था में प्रधान कार्य प्रशासकीय होता है और शैक्षिक कम तथा बजट का आवण्टन प्राथमिकता के आधार पर ही किया जाता है । विश्वविद्यालय एवं शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में छात्र-संघों का तुलनात्मक अध्ययन सावित्री मेंहदीरता (1982) ने किया और पाया कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्र-संघ विश्वविद्यालय के छात्र-संघों की अपेक्षा अपने कर्त्तव्य के प्रति अधिक सजग हैं और अपने दायित्व को पूरा करने का अधिक प्रयास करते हैं । अश्विनी कुमार गौड़ (1984) ने राजस्थान विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्षों के अपने पीएच. डी. स्तर के शोध ग्रन्थ में बताया कि विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष विश्वविद्यालय प्राध्यापकों की अपेक्षा पुस्तकालय व प्रयोगशाला को अधिक सुसज्जित करने के पक्ष में हैं । विश्वविद्यालय विभागाध्यक्ष, प्राध्यापकों की तुलना में शैक्षिक कार्यों के प्रति अपना ध्यान कम दे पाते हैं । मोहन प्रकाश शर्मा (1985) ने प्रदेश के विश्वविद्यालय के संगठनात्मक स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन करने पर स्पष्ट किया कि राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर पर ही उच्च शिक्षा का दबाव सर्वाधिक है। पश्चिमी रेलवे, उदयपुर के विषय में सुधा भण्डारी (1986) ने यह जानकारी दी कि यह स्कूल रेलवे कर्मचारियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण देने हेतु पूर्ण रूप से सुसज्जित है । भारतीय लोक कला मण्डल उदयपुर के संगठन एवं कार्य-प्रणाली के विषय में नफ़ीसा बानू (1983) का मत है कि इस मण्डल में कार्यरत उच्च अधिकारियों में परस्पर समन्वय का अभाव है और व्यवस्था में सुधार की अत्यावश्यकता है । गोविन्द सिंह ने अपने ओपन स्कूल के संगठन (1984) के विषय में पाया कि इस प्रकार के विद्यालय में प्रश्न-पत्रों का निर्माण उनके आदर्श अनुरूप नहीं हो सका है तथा आन्तरिक कार्य जो कि 75 प्रतिशत है वह भी पूरा नहीं हो पाता है । एमलिन वीणा ने माणिक्य लाल शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान के संगठन एवं भूमिका (1983) का अध्ययन करके बताया कि इस संस्थान द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रम प्रभावशाली व उपयोगी रहे हैं । शिक्षण संस्थान, उदयपुर के सेवारत अध्यापकों के कार्यों के विषय में कुसुम सरीन (1977) ने बताया कि प्रशिक्षण में बनाई गई शिक्षण की नवीन विधियों से अध्यापन में सहायता मिली है । इसी प्रकार के एक अध्ययन में अनिता कुशवार (1981) ने यह निष्कर्ष निकाला कि ऐसे प्रशिक्षणों में प्रायोगिक कार्यों पर अधिक बल दिया जाना चाहिए । लाल प्रकाश हर्ष ने (1981) में राज्य शैक्षिक संस्थान के विषय में अध्ययन करके पाया कि संस्थान में प्रशिक्षित अध्यापकों को अध्यापन कार्य में सहयोग मिला है। विद्याभवन सोसायटी के विगत 30 वर्षों के अध्ययन से शंकरलाल मूंदडा ने पाया कि यह संस्था दिनों-दिन सभी क्षेत्रों में प्रगति कर रही है । हंसा संचेती (1979) ने राज्य विज्ञान शिक्षण

संस्थान, उदयपुर के विषय में बताया कि यह संस्थान विज्ञान प्रशिक्षण हेतु वरदान सिद्ध हुआ है। सेवा प्रसार कार्यक्रमों का विद्यालयी गतिविधियों के प्रभाव का अध्ययन निर्मला ठाकुर (1980) ने किया और पाया कि ऐसे कार्यक्रमों से छात्रों को लाभ हुआ है। अध्यापकों को अपनी समस्याओं के समाधान में सहयोग मिला है। पंचायत समितियों में शालेतर कार्यों के विषय में राजेश सक्सैना (1983) ने अपने अध्ययन में बताया कि पंचायत समितियों के अध्यापक विद्यालयों में पढ़ाने के साथ-साथ परिवार नियोजन, रात्रि पाठशालाएँ आदि-आदि कार्य भी करते हैं, जिससे छात्रों के अध्यापन पर कुप्रभाव पड़ता है। प्रदीप कुमार (1985) एवं आभा अग्रवाल ने राजस्थान के स्वायत्तशासी विद्यालयों का अध्ययन कर स्पष्ट किया कि ऐसे विद्यालयों में आज तक भी पाठ्यक्रम निर्मित नहीं हो सका है। प्रशासनिक अधिकारियों के अधिकारों के विकेन्द्रीकरण के विषय में शर्मा, हस्तक एवं मालवीय ने बताया कि अधिकारियों का विकेन्द्रीकरण आवश्यक है। हरिसिंह कठ्ठापिया (1985) ने शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में पर्यवेक्षकों द्वारा दी जाने वाली टिप्पणियों के विषय में स्पष्ट किया कि ये टिप्पणियां सामान्यतः व्यावहारिक नहीं होतीं। टिप्पणियां संख्यात्मक अधिक होती हैं, परन्तु गुणात्मक कम। इसी प्रकार का एक अध्ययन मधुबाला प्रभाकर ने (1988) किया और पाया कि पर्यवेक्षण के दौरान प्राध्यापक निर्देशन व पर्यवेक्षण एक साथ करते हैं जो उचित नहीं है। निर्देशन सामान्यतया कम ही दिया जाता है। श्रीमती रेखा शर्मा ने आदिवासी आश्रम विद्यालयों के सन्दर्भ में बताया कि ऐसे विद्यालय अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक, सह-शैक्षिक, आर्थिक व सामाजिक विकास में अतीव सहायक सिद्ध हुए हैं। ऐसे ही एक अध्ययन में सुश्री पुष्पा रामपुरिया (1988) ने बताया कि आश्रम विद्यालयों का सारा व्यय सरकार उठाती है अतः इनकी छात्र संख्या बहुत है। हरिश्चन्द्र माथुर राज्य लोक प्रशिक्षण संस्थान के संगठन और कार्य-प्रणाली के बारे में लक्ष्मी नरूका (1987) ने अध्ययन करके बताया कि संस्थान में प्रशासन अधिकारी एवं कर्मचारियों के मध्य अच्छे सम्बन्ध हैं। नरोत्तम शर्मा ने नवोदय विद्यालय के प्रशासनिक स्वरूप का अध्ययन (1988) में करने पर स्पष्ट किया कि ये विद्यालय अपनी शैशावस्था में हैं। इसलिए इनकी व्यवस्था ठीक नहीं है। सरदार सिंह देवड़ा ने कृषि अभियान्त्रिकी एवं प्रायोगिकी महाविद्यालय, उदयपुर (1987) की कार्यप्रणाली का अध्ययन किया और बताया कि यह संस्थान कृषि विकास कार्यक्रम को उन्नति के पथ पर बढ़ा रहा है। राजकीय महाराणा आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, उदयपुर के संगठन के बारे में श्री सुरेन्द्र कुमार द्विवेदी (1988) ने पाया कि यह संस्थान संस्कृत स्वावलम्बन व स्वाध्याय में सहायक सिद्ध हुआ है। इससे संस्कृत के संवर्द्धन में सहयोग मिला है। नागौर जिले में समाजोपयोगी कार्य व समाज सेवा के विषय में श्री मोहनलाल वर्मा (1988) ने शोध पश्चात यह पाया कि अधिकांश छात्र इसे उपयोगी मानते हैं जबकि अध्यापकों की शिकायत है कि इससे अध्ययन में बाधा उत्पन्न होती है।

शिक्षा-प्रशासन एवं विद्यालय योजना

समझ कर उसे उसका दायित्व सौंपा जाता है। इस क्रम में भगवान प्रसाद गोयल (1976) ने स्पष्ट किया है कि विद्यालयों द्वारा विद्यालय योजनान्तर्गत विभाग द्वारा निर्धारित अनिवार्य कार्यक्रमों को ही सम्मिलित किया जाता है। जगदीश पाण्डेय (1979), शकुन्तला साईबाल (1981), आमेटा (1984) ने उदयपुर शहर के माध्यमिक विद्यालयों की विद्यालय योजनाओं का अध्ययन करके यह पाया कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में विद्यालयी योजना समरूप पाई जाती है। यह कार्य अधिकारियों के आदेशानुसार किया जाता हैं जिसका पालन विद्यालय की क्षमताओं को दृष्टिगत रखते हुए अधिकाधिक रूप में किया जाता है। उन्होंने यह भी पाया कि अच्छी विद्याालय योजना के निर्माण में अच्छे अध्यापक व अच्छे प्रधानाध्यपक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। सत्य नारायण शर्मा (1984) के मतानुसार विद्यालयी योजना का मूल्यांकन पक्ष कमजोर रहता है। बी. एस. शर्मा व जगदीश व्यास (1976) ने प्रदेश के पिछड़े क्षेत्र के विद्यालयों में शिक्षकों का अभाव बताया। जेठमल सोनी (1975) ने राजस्थान की जिला शिक्षा योजना का अध्ययन करके स्पष्ट किया कि इन योजनाओं में विद्यालय संगम आदि कार्यक्रमों की स्थिति संतोषप्रद है परन्तु प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की स्थिति अच्छी नहीं है।

शिक्षा प्रशासन में प्रधानाध्यापक

शिक्षा प्रशासन में प्रधानाध्यापक का विशेष महत्त्व है। प्रधानाध्यापक संस्था का प्रधान होता है और शिक्षा प्रशासन की वह अन्तिम क्रियान्विति कड़ी होता है। गोस्वामी (1975) ने अपने अध्ययन में प्रधानाध्यापक के प्रतिनिधि पुनर्गठन, सहनशीलता, उत्प्रेरित करना, पहल करना, भूमिका निर्वाह, ध्यान देना तथा उत्पादकता गुणों को क्रमानुसार श्रेणीबद्ध किया है। लक्ष्मीकान्त (1979) ने अपने अध्ययन द्वारा स्पष्ट किया कि दो पारी विद्यालयों में सभी निर्णय पारी प्रभारी पर ही निर्भर होते हैं। इन प्रभारियों द्वारा जो निर्णय लिए जाते हैं वे सृजनात्मक नहीं होते हैं। कु. वीणा भास्कर ने (1981) में प्रधानाचार्यों की निर्णय प्रक्रिया के विषय में शोध से ज्ञात किया कि राजकीय छात्रा विद्यालयों में वह विकेन्द्रित होती है। यशवन्तसिंह (1982) ने प्रधानाध्यापक की निर्णय प्रक्रिया का मूल्यांकन करके यह बताया कि सामान्यतया प्रधानाध्यापक निर्णय प्रक्रिया में विकेन्द्रित निर्णय शैली को ही अपनाते हैं एवं छात्रा विद्यालयों में छात्र विद्यालयों की अपेक्षा निर्णय हेतु समस्याएं अपेक्षाकृत कम हो जाती हैं। चाँदसिंह मुरडिया (1983) ने उदयपुर नगर के राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों की निर्णय प्रक्रिया के अध्ययन से पाया कि निजी संस्थाओं में निर्णय प्रक्रिया में जनतान्त्रिक शैली अधिक अपनाई जाती है। उदयपुर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में प्रधानाध्यापक की भूमिका का अध्ययन करके सुन्दरलाल सुवालका (1977) ने यह बताया कि राजकीय विद्यालयों के प्रधानाध्यापक निजी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की अपेक्षा पाठ्येतर प्रवृत्तियों में अधिक रुचि लेते हैं। बाबूलाल सिलावट (1979) ने प्रधानाध्यापक की नेतृत्व भूमिका के विषय में पाया कि राजकीय विद्यालयों में प्रधानाध्यापक नियमों का पालन कठोरता से करते हैं जबकि गैर सरकारी विद्यालयों में प्रधानाध्यापक दबाव से अधिक कार्य करवाते हैं। निजी क्षेत्र के प्रधानाध्यापक राजकीय विद्यालयों की अपेक्षा अधिक उत्साही होते हैं ऐसा मत पुष्पा रंगवानी (1980) ने अपने अध्ययन से स्पष्ट

किया है । उदयपुर शहर के प्रधानाध्यापक के गुणों के विषय में मांगीलाल नागदा (1983) ने यह पाया कि निजी संस्थाओं के प्रधानाध्यापक अपने उद्देश्यों के प्रति सजग हैं । वे अपने कार्य को छोटे-छोटे टुकड़ों में बॉंट कर पूरा करते है और मानवीय सम्बन्धों का ध्यान रखते हैं । प्रधानाचार्यों के व्यवहार के विषय में मूलचन्द (1983) ने अपनी पीएच. डी. के निष्कर्षों में स्पष्ट किया है कि प्रधानाचार्यों व अध्यापकों के मध्य तनाव की स्थिति नहीं होती । प्रधानाचार्य अपना कार्य स्वतन्त्रता से करते हैं और अध्यापक सामान्यतया उनके कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करते हैं । सोहनलाल छींपा (1984) ने प्रधानाध्यापक के नेतृत्व के गुणों के विषय में अध्ययन करके बताया कि प्रधानाध्यापक में आत्मबल और विचारशीलता के गुण अति आवश्यक हैं । ये गुण उसमें उच्च श्रेणी के होने चाहिए । भगवतीलाल मंडोवरा ने इस सम्बन्ध में (1987) अध्ययन करने पर पाया कि उदयपुर शहर के दो-तिहाई प्र. अ. अपने नेतृत्व विषयक भूमिका निर्वाह करते हैं । अम्बा कश्यप (1984) ने अपने इस प्रकार के अध्ययन द्वारा यह स्पष्ट किया जो औपचारिक संस्थिति में महिला विद्यालयों की अपेक्षा पुरुष विद्यालयों में अधिक सहयोग प्राप्त होता हैं । कौमुदी तेलंग (1988) ने शोध कर के पाया कि सामान्यतया अध्यापक प्र. अ. के प्रशासनिक कार्यों से सन्तुष्ट पाए गए । मालती माहेश्वरी ने मा. वि. के प्र. अ. को नेतृत्व व्यवहार के विषय (1988) में अध्ययन करके पाया कि निजी शिक्षण संस्थाओं में नेतृत्व का व्यवहार अन्य विद्यालयों की अपेक्षा अच्छा होता है । के. एन. विजयान (1985) ने अपने शोध द्वारा यह स्पष्ट किया कि प्रधानाध्यापक सामान्यतया एक तन्त्रीय होते हैं । रमेशचन्द्र ओझा (1987) ने ज्ञात किया कि पंचायत समिति की प्रधानाध्यापिका शिक्षा विभाग की प्रधानाध्यापिका की अपेक्षा सहगामी प्रवृत्तियों को सम्पादित करवाने में कमजोर होती है । अभिभावकों के प्रधानाध्यापकों के विषय में दृष्टिकोण का अध्ययन करके आनन्दी लाल शर्मा (1980) ने बताया कि सामान्यतया प्रधानाध्यापक अभिभावकों के साथ उदारता व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते हैं । अपने अध्ययन में रीता सक्सेना (1981) ने यह बताया कि आधे के लगभग प्रधानाध्यापक आने-जाने की समस्याओं से परेशान हैं और उनकी बहुत शक्ति, समय इसी कार्य में नष्ट हो जाती है । प्रधानाध्यापकों की दूसरी समस्या के विषय में रीता का निष्कर्ष था कि वर्तमान में थोड़ा-सा शारीरिक दण्ड देने पर अभिभावक प्रधानाध्यापकों से लड़ने-झगड़ने आ जाते हैं । प्रधानाध्यापक की शैक्षिक निष्पत्ति के विषय में रेखा गौड़ (1985) ने बताया कि केन्द्रीय, राजकीय, गैर राजकीय व महिला विद्यालयों में शैक्षिक निष्पत्ति समान ही होती है । इनके प्रधानों का व्यवहार भी समान ही होता है ।

शिक्षा प्रशासन एवं परिवीक्षण

विद्यालयों में प्रमुख कार्य परिवीक्षण व निरीक्षण का होता है । समयानुसार प्रभावी परिवीक्षण अध्यापक की कुशलता को एक ओर जहां बढ़ाता है दूसरी ओर वहीं अच्छा निरीक्षण प्रशासन को गति प्रदान करता है । प्रशासन की छवि को उज्ज्वल व धूमिल बनाने में निरीक्षण की

कार्याधिक्य के कारण परिवीक्षण नहीं कर पाते हैं । जिला शिक्षा अधिकारियों के परिवीक्षण की जाँच भी उच्च अधिकारियों द्वारा की जानी आवश्यक है । इसी प्रकार एक अध्ययन रमेशचन्द्र (1985) ने किया और बताया कि छात्रा जिला शिक्षा अधिकारी छात्र जिला शिक्षा अधिकारी की अपेक्षा कम ही निरीक्षण कर पाते हैं । छत्रालाल मेनारिया ने इसी प्रकार का अध्ययन किया और पाया कि जिला शिक्षा अधिकारी अपना (1988) अधिक समय नियुक्ति, स्थानान्तरण व स्थायीकरण में लगा देते हैं । बाबूलाल ओझा (1977) के अनुसार प्रधानाध्यापक उच्च प्राथमिक विद्यालय के परिवीक्षण को महत्त्वपूर्ण मानते हैं और उसे अनुशासन का अंग समझते हैं । परिवीक्षण अधिकारियों के नेतृत्व के विषय में श्रीमती शशिबाला जैन (1978) ने अपने शोध से बताया कि प्रधानाध्यापक व अध्यापकों का परिवीक्षण के बारे में स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं है । श्रीमती अहिल्या जोशी (1985) ने स्पष्ट किया कि गैर सरकारी संस्थाओं के प्रधानाध्यापक सरकारी संस्थाओं की अपेक्षा अच्छा परामर्श देते हैं । नरेन्द्रसिंह हरबाबत (1979) ने अपने अध्ययन से यह स्पष्ट किया कि प्रधानाध्यापक परीक्षा के समीप परिवीक्षण कार्य अधिक करते हैं । लूणकरणसर (बीकानेर) पंचायत समिति के शिक्षा प्रसार अधिकारियों के परिवीक्षण के सम्बन्ध में एक अध्ययन कर रावतराम सहारण (1977) ने यह पाया कि पंचायत समिति के शिक्षा प्रसार अधिकारी परिवीक्षण कार्य दूसरे कार्यों में लगे रहने के कारण कम ही कर पाते हैं । बी. एस. शर्मा (1982) ने जिला शिक्षा अधिकारियों के विषय में बताया कि जिला शिक्षा अधिकारी प्रतिदिन 35 मिनट का समय ही शैक्षिक कार्यों तथा परिवीक्षण, निरीक्षण को दे पाते हैं । निरुपमा शर्मा (1982) ने अपने शोध से निष्कर्ष निकाला है कि निर्देशित पर्यवेक्षण व्यवस्थित एवं योजनाबद्ध तरीके से होने पर शैक्षिक सम्प्राप्ति अग्रसर होगी ।

शिक्षा प्रशासन की वित्तीय स्थिति

माध्यमिक स्तरीय संस्थाओं में समाज सेवी संस्थाओं द्वारा वित्तीय नियोजन एवं नियन्त्रण का अध्ययन रोशनलाल महात्मा (1978) ने किया और पाया कि समाज सेवी संस्थाएँ अब कम वित्तीय सहयोग दे रही हैं । शिक्षा की इकाई लागत के विषय में श्रीमती सुषमा भटनागर (1985) ने अपने अध्ययन द्वारा स्पष्ट किया कि राजकीय संस्थाओं में गैर सरकारी संस्थाओं की अपेक्षा प्रति छात्र इकाई लागत अधिक है । वित्त सम्बन्धी सूचनाएँ उपलब्ध न करवाने से इस क्षेत्र में शोध अध्ययन प्रकाश में नहीं आए हैं । अमरसिंह सेठ (1988) ने अपने अध्ययन द्वारा यह स्पष्ट किया कि दो पारी वाले विद्यालयों की लागत कीमत कम है अतः एक पारी वाले विद्यालयों को भी दो पारी वाले विद्यालय बनाने चाहिए ।

शिक्षा प्रशासन एवं समस्याएं

नरेन्द्र कुमार शर्मा (1975) ने अपने शोध द्वारा व्यक्त किया है कि सरकारी विद्यालयों में नियुक्ति एक निश्चित प्रक्रिया के अनुसार ही होती है जबकि गैर सरकारी विद्यालयों में यह कार्य जातीय, धर्म एवं प्रभाव के आधार पर होता है । छात्र शक्ति का प्रशासन में योगदान विषय पर वीणा सोमानी (1975) ने एक अध्ययन किया और पाया कि छात्र पलायनवृत्ति, समय की पाबंदी, परस्पर लडाई-झगड़े आदि समस्याओं में छात्रों का योगदान लिया जा सकता है । शहर

व कस्बों में दो पारी में चलने वाले विद्यालयों में श्री हरिकृष्ण उपाध्याय (1975) ने मालूम किया कि फर्नीचर की तोड़फोड़ अधिक होने के सिवाय एक पारी के छात्र अध्यापकों का दूसरी पारी के छात्रों से सम्पर्क कम ही हो पाता है । दो पारी विद्यालयों में छात्रों में पलायन की प्रवृत्ति अधिक पाई गई । प्रजातान्त्रिक मूल्यों के विषय में जानकारी देते हुए बसंत बाला लवानिया (1975) ने स्पष्ट किया कि गांवों में विज्ञान व गणित के अध्यापकों के सिवाय भी सामान्य अध्यापकों की कमी बनी रहती है । सुर्यनारायण शर्मा (1977) ने केन्द्रीय विद्यालयों की समस्याओं का अध्ययन करके स्पष्ट किया है कि ऐसे विद्यालयों में समय पर अध्यापकों की नियुक्ति न होना, बजट का आवण्टन न होना प्रमुख समस्याएं हैं । अध्यापक अभ्यास आयोजन सहयोगी विद्यालयों की समस्याओं का अध्ययन बी. एस. दाधीच (1978) ने किया और पाया कि इन समस्याओं में पाठ्यक्रम की समस्या सबसे प्रमुख समस्या होती है । छात्रों में विद्यालय से पलायन की प्रवृत्ति के कारणों का पता लगाते हुए पूर्णिमा कोजी (1979) में बताया कि अध्यापकों के मतानुसार छात्र व्यक्तिगत विशेषताओं के कारण भी विद्यालय से भागता है जबकि छात्र विद्यालय से भागने के कारण विद्यालयी वातावरण, गृहकार्य की कठिनाइयां आदि बताते हैं । सामान्यतया निम्न बुद्धि स्तर के छात्र ही विद्यालय से पलायन ज्यादा करते हैं । बंशीलाल चौहान (1979) ने स्पष्ट किया कि विद्यालय संगम संचालन में वित्तीय ही सर्वप्रथम कठिनाई है । अभिनव कार्यक्रमों के विषय में सुशीला तोमर (1980) का मत है कि ऐसे कार्यक्रम का कोई निश्चित प्रकार से मूल्यांकन न होने के कारण महत्त्वहीन माने जाते हैं । अध्यापकों के मतानुसार ऐसे कार्यक्रम थोथे ही होते हैं । उमा अग्रवाल (1982) ने शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की समस्याओं का अध्ययन करके पाया कि इन विद्यालयों में समय विभाग-चक्र का बनाना वास्तव में सबसे बड़ी कठिनाई होती है । मो. शमीम दुर्रानी ने अपने शोध छात्राध्यापकों से सम्बन्धित शैक्षिक एवं प्रशासनिक बाधाओं के अध्ययन (1987) में यह बताया कि उ. प्रा. वि. में मा. विद्यालयों की अपेक्षा अधिक अनुशासनात्मक समस्याएं होती हैं । नीरजा लोढ़ा ने (1987) में अपने अध्ययन से यह बताया कि वर्तमान में अपनाई जाने वाली बी. एड. चयन प्रक्रिया से छात्रों व प्राध्यापकों दोनों में ही असन्तोष व्याप्त है । उदयपुर में अपनाए जाने वाले अनुशासनात्मक अभ्यासों के बारे में श्रीमती जागृति पारिख (1988) ने अध्ययन किया और पाया कि विद्यालयों में भाग जाने वाले, झगडने वाले, कक्षा में व्यवधान डालने वाले छात्रों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाती है । जिला शिक्षा अधिकारियों के स्थानान्तरण आदि की समस्याओं का अध्ययन करके श्री उमेशचन्द्र (1983) ने स्पष्ट किया कि जिला शिक्षा अधिकारी के पद पर व्यक्ति अपनी सेवानिवृत्ति आयु के आसपास पदोन्नत होता है और इस कारण से उसका इस पद पर ठहराव बहुत ही कम होता है । किशोर पुरोहित ने प्राथमिक शिक्षकों की कुण्ठा के प्रमुख कारणों (1987) में अध्यापक की हीन भावना, अध्यापक समुदाय में परस्पर मन-मुटाव, यातायात के साधनों का अभाव आदि बताए है । माध्यमिक विद्यालयों में

शिक्षा प्रशासन की अन्य समस्याएं

विविध विभागों में बढ़ते न्यायालय प्रकरणों का अध्ययन शकुन्तला शर्मा (1980) ने किया और पाया कि शिक्षा विभाग में न्यायालय प्रकरणों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इससे यह स्पष्ट है कि प्रशासन प्रक्रिया में कमजोरियां आई हैं। राजस्थान के एकीकरण पश्चात उत्पन्न समस्या का अध्ययन विजय लक्ष्मी माथुर (1984) ने किया और बतलाया कि जैसे जयपुर को दो भागों में बाँटा गया है उसी प्रकार अजमेर को भी दो भागों में बाँटा जाए एवं जिला स्तर के परिवीक्षण के भार को कम किया जाए। शैक्षिक उपाधि का कर्मचारी के सेवा कार्य से सम्बन्ध का पता सुरेन्द्र सिह शेखावत (1986) ने लगाकर पाया कि सेवारत कर्मचारियों के कार्य में शैक्षिक उपाधि उपयोगिता शून्य नहीं तो कम अवश्य है। शिक्षा विभागीय न्यायिक प्रकरणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके श्री पुरुषोत्तमदास व्यास (1988) ने स्पष्ट किया है कि उच्च न्यायालयों की अपेक्षा सिविल न्यायालयों में प्रकरण अधिक हैं। अधिकारियों के अस्पष्ट आदेश ही प्रमुख रूप से न्यायालय के प्रकरणों के आधिवक्ता का कारण है।

सुनील कुमार शर्मा ने विद्यालय स्तर पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को दी जाने वाली सुविधाओं के बारे में एक अध्ययन (1988) करके यह जानकारी दी कि ऐसी सुविधाएं शहरी बालक ग्रामीण बालक की अपेक्षा अधिक प्राप्त कर रहा है। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के विषय में सन्तोषकुमार नागदा (1987) ने अध्ययन करके यह पाया कि जनमत एवं प्रेस को इसकी सफलता में सन्देह है।

सम्भावनाएं और सुझाव

शोधकर्ताओं ने सर्वेक्षण प्रणाली से ही सामान्यतया अपना अध्ययन किया है। प्रामाणिक व परीक्षण विधि से कोई भी अध्ययन नहीं किया गया। इसी प्रकार विशेष प्रकार के विद्यालय यथा– मूक-बधिर विद्यालय, अन्ध विद्यालय, कम बुद्धि वाले छात्र-छात्राओं के विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय, पब्लिक स्कूल्स के विषय में कोई अध्ययन नहीं दिया गया है।

स्वनिर्मित उपकरण यथा प्रश्नावली या साक्षात्कार उपकरणों का ही उपयोग किया गया। मानवीकृत उपकरणों को तैयार नहीं किया गया किन्तु कतिपय मानवीकृत उपकरण यथा जालोटा बुद्धि परिमापक सूची आदि का प्रयोग अल्प मात्रा में किया गया है।

निष्कर्ष प्राप्त करने हेतु सामान्य आंकड़ों का ही प्रयोग किया गया है। प्रावैधिक सांख्यिकी विधाओं का उपयोग न्यून-सा किया गया है।

शिक्षा में नियन्त्रण एवं प्रशासन की नई समस्याओं का अध्ययन तो किया गया किन्तु जिला शिक्षाधिकारी के कार्यों व समस्याओं का अध्ययन बहुत कम किया गया है। जिला शिक्षा अधिकारियों की कतिपय प्रमुख समस्याएं यथा–विभिन्न प्रकार के संघों (कर्मचारी-संघ) के दबाव व कार्य-प्रणाली को प्रभावित करने की समस्या का अध्ययन नहीं किया गया। इसी प्रकार जनतान्त्रिक व्यवस्था के रूप में राजनेताओं का प्रशासन में हस्तक्षेप, जिला शिक्षाधिकारी एवं

उनके अंग के रूप में कार्य करने वाले अधिकारी यथा अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी, उप जिला शिक्षाधिकारी के विषय में उनके कर्मचारियों के अन्तर्सम्बन्ध, अध्यापकों के पारिवारिक व सामाजिक पृष्ठ-भूमि के अध्ययनों का अभाव रहा है । अध्यापक-अभिभावक संघ शिक्षण उन्नयन संघों पर कतिपय अध्ययन हुए हैं किन्तु अध्ययनकर्ताओं ने सीमित क्षेत्र लिया है और वे गहराई से इन विषयों तक नहीं पहुँच सके हैं ।

पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों के अध्ययन में खेल प्रवृत्तियों को ही लिया गया है जबकि विद्यालयों में एन. सी. सी., बालचर, गाइड, निर्देशन आदि कई प्रवृत्तियाँ चलती है । किसी भी शोधकर्ता ने उन विषयों पर कोई शोध नहीं किया है । शिक्षा के विकेन्द्रीकरण से उत्पन्न समस्याओं की ओर शोधकर्ताओं ने शोध किये हैं किन्तु पंचायत समिति के अध्यापकों, शिक्षा प्रसार अधिकारियों की समस्याओं की ओर किसी भी शोधकर्ता ने शोध करना आवश्यक नहीं समझा । एकल अध्यापकीय विद्यालय, अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण विषयों पर एक-दो शोध उपलब्ध हुए हैं किन्तु पंचायत समितियों के अध्यापकों, जो बहुत संख्या में हैं, उनके शिक्षा उन्नयन, शिक्षण स्तर आदि के विषय में बहुत न्यून शोध कार्य हुआ है ।

परिवीक्षण पर अनुसन्धान तो किए गए हैं किन्तु उसके प्रभाव के मूल्यांकन के विषय में अध्ययन शून्य ही है । परिवीक्षण में आधुनिक तकनीक व उपकरणों का उपयोग, उनकी उपादेयता, स्वमूल्यांकन आदि विषयों पर और अध्ययन किये जाने की आवश्यकता है ।

शिक्षावित्त विषय में अनुसनधान भी कम हुए हैं । शिक्षा लागत के विषय में और अध्ययन किये जाने अपेक्षित हैं ।

सारे प्रबन्धों में एम. एड. स्तर के प्रबन्धों की ही बहुलता है । सात पीएच. डी. स्तर के शोध ग्रन्थ ही इन अध्ययनों में हैं । अतः प्रशासन पर और पीएच. डी. के ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं ।

प्रयोगात्मक अध्ययनों का भी अभाव रहा है । यह सत्य है कि प्रयोगात्मक अध्ययन कठिन होते हैं । शोधकर्ताओं को कठिनाई होती है फिर भी ऐसे अध्ययन अधिक होने चाहिए ।

शिक्षित बेरोजगारी दिनोंदिन बढ़ती जा रही है । आज का शिक्षित किशोर/नवयुवक व्हाइट कॉलर जॉब ही चाहता है । श्रम के प्रति उसकी निष्ठा घटती जा रही है । अतः वर्तमान समय में बदलते हुए सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व धार्मिक पर्यावरण में नये आयामों के अध्ययन की आवश्यकता है । उन कारणों को जानने की आवश्यकता है जिनके कारण हमारे नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है । बालक में आज शिक्षा के प्रति जो रोष है उसके कारणों को जानना आवश्यक हैं । जनसंख्या व पर्यावरण का प्रशासन पर प्रभाव विषय भी शोध से अछूते रहे हैं ।

किसी भी संस्थान में विभिन्न घटक होते हैं। इन घटकों के मध्य अन्तःक्रिया होती रहती है । इस अन्तःक्रिया का परिणाम उस संस्थान के संगठनात्मक वातावरण को व्यक्त करता

है। विद्यालय के सन्दर्भ में प्रधानाध्यापक अन्य घटकों से जैसे —अध्यापक, छात्र, अभिभावक आदि से अन्तःक्रिया करता है और उसी क्रिया के फलस्वरूप विद्यालय में एक वातावरण का सृजन होता है। विद्यालय की समस्त उपलब्धियाँ इस सृजित वातावरण पर निर्भर करती है। यदि विद्यालय का वातावरण मुक्त एवं उत्साहवर्धक होगा तो उपलब्धियाँ निश्चित रूप से सकारात्मक होंगी । दूसरी ओर उपरोक्त तथ्यों का ज्ञान, शैक्षिक प्रशासकों, अध्यापकों, छात्रों, अभिभावकों एवं अन्य घटकों को ध्यान में रखना आवश्यक है ।

वाचस्पति शोध सार

मूलचन्द : उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य की भूमिका निर्वाहन का स्वयं तथा अपने साथी अध्यापकों द्वारा प्रत्यक्षण, पीएच. डी., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

शोध का मुख्य उद्देश्य प्रधानाचार्य एवं उसके साथी शिक्षकों द्वारा प्रधानाचार्य की व्यवहारगत अपेक्षाओं की संकल्पित प्रशासनिक कार्य-प्रणाली का मापन ज्ञात करना है । शिक्षक और प्रधानाचार्य के मध्य स्वधारणा एवं अध्यापकों की संकल्पनाओं और अवधारणाओं के मध्य अन्तर ज्ञात करके शाला प्रशासन में सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना है ।

शोध अध्ययन पश्चात् निम्न निष्कर्ष प्रमुख रहे :

1. पुरुष प्रधानाचार्यों की अपेक्षा महिला प्रधानाचार्यों की उच्च अपेक्षाएं हैं । 2. पुरुष प्रधानाचार्यों की अपेक्षा महिला प्रधानाचार्यों की प्रशासनिक परफॉरमेन्स श्रेष्ठ है । 3. संगठन एवं विकास की दृष्टि में कस्बाई प्रधानाचार्यों की अपेक्षा शहरी प्रधानाचार्य श्रेष्ठ हैं । 4. छात्र गतिविधियों के लिए कस्बाई शिक्षकों की अपेक्षा शहरी शिक्षकों द्वारा प्रधानाचार्य से अधिक अपेक्षाएँ। 5. प्रधानाचार्य को अपनी प्रशासनिक परफॉरमेंस में सन्तुष्ट पाया गया । 6. शिक्षकों एवं प्रधानाचार्य के मध्य तनाव की स्थिति बहुत कम पाई गई । 7. शिक्षकों में कुण्ठाएं भी बहुत कम पाई गईं जिससे उनका प्रशासनिक परफारमेंस के प्रति सन्तोष प्रकट होता है ।

अश्विनी कुमार : राजस्थान के विश्वविद्यालयों के विभागाध्यक्षों की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन, पीएच. डी., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1984

शोध का मुख्य उद्देश्य राजस्थान के विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्षों की उनकी स्वयं की, विश्वविद्यालय प्राध्यापकों की तथा उनके तहत कार्य करने वाले अध्यापकों की दृष्टि में उनकी यथार्थ एवं अपेक्षित भूमिका की जाँच करना तथा विभागाध्यक्षों की स्वयं उनकी एवं उनके अन्तर्गत कार्य करने वाले प्राध्यापकों की दृष्टि में विभागाध्यक्षों की अपेक्षित एवं यथार्थ भूमिका के मध्य सम्बन्ध को ज्ञात करते हुए विभाग से सम्बद्ध विभागाध्यक्षों की भूमिका में सुधार हेतु समाधान खोजना है ।

शोध से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं :

1. पाठ्यक्रम निर्माण के सन्दर्भ में विभागाध्यक्ष की अपेक्षा सहकर्मियों को पाठ्यक्रम निर्माण में लगाया जाना चाहिये । उदयपुर को छोड़कर शेष की गुणवता कमजोर है । 2. शैक्षिक क्रियाकलापों के संचालन में विभागाध्यक्षों की गुणवत्ता के सन्दर्भ में जोधपुर के विभागाध्यक्षों की तथा समस्त प्राध्यापकों की अपेक्षा उच्च-कोटि की है जबकि उदयपुर एवं जयपुर के विभागाध्यक्षों की अपेक्षा औसत स्तर की है । अनुसन्धाताओं को प्रदत्त सुविधाओं के सन्दर्भ में उदयपुर एवं जोधपुर की गुणवत्ता उच्च तथा राजस्थान की अपेक्षा औसत स्तर की है सभी प्राध्यापकों की है। इनका प्रत्यक्षन अवश्य ही सन्तोष जनक नहीं है । 3. कार्य निर्धारण की गुणवत्ता में विभागाध्यक्षों की भूमिका सभी प्राध्यापकों एवं विभागाध्यक्षों की अपेक्षा औसत स्तर की है । 4. बजट उपयोग में विभागाध्यक्षों की गुणवत्ता सभी विभागाध्यक्षों तथा राजस्थान के प्राध्यापकों की अपेक्षा औसत स्तर की है जबकि उदयपुर एवं जोधपुर के प्राध्यापकों की अपेक्षा उच्च-कोटि की है । 5. कर्मचारी चयन एवं उनकी नियुक्ति में विभागाध्यक्षों की सत्यनिष्ठाता राजस्थान और उदयपुर में औसत तथा जोधपुर की अपेक्षा उच्च-कोटि की है । 6. स्टाफ के साथ सम्बन्ध स्थापित करने में सभी विभागाध्यक्षों की भूमिका की औसत स्तर की है । 7. नेतृत्व सम्बन्धी गुणवत्ता में सभी विभागाध्याक्षों की भूमिका उच्च स्तर की है । जोधपुर एवं राजस्थान के प्राध्यापकों में निराशा का भाव है ।

एन. सी. वार्ष्णेय : विभिन्न प्रकार के विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण तथा उन विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की स्कूली नैराश्य परिस्थितियों के प्रति छात्रों की प्रतिक्रिया का अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1979

शोध का मुख्य उद्देश्य विभिन्न प्रकार के विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण ज्ञात कर विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों को निराश करने वाली स्थितियों के प्रति छात्रों की प्रतिक्रिया जानना रहा है । साथ ही यह भी जानने का प्रयास है कि संगठनात्मक वातावरण के आयामों से तथा निराशा से होने वाली प्रतिक्रियाओं में क्या सम्बन्ध है ।

शोध से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं :

1. दिल्ली प्रशासन में 29.87 प्रतिशत विद्यालयों में खुला, 14.91 प्रतिशत विद्यालयों का स्वचालित, 14.91 प्रतिशत नियन्त्रित, 8.52 प्रतिशत परिचित, 6.39 प्रतिशत पितृत्व एवं 25.43 प्रतिशत बन्द, वातावरण के विद्यालय पाये गये । 2. विद्यालयों में कुण्ठा, प्रतिक्रिया के कारण निम्न रहे– (1.) छात्रों के रास्तों में आने वाली कई बाधाएँ कुण्ठा का कारण बनीं । (2.) छात्रों में डिफेन्स एगी एवं सुपर एगी कम पाई गई। (3.) सामान्यतया बालक उत्पन्न कुण्ठाओं से समायोजन कर लेते हैं । (4.) कुण्ठा प्रतिक्रियाएँ : (अ) आब्सटेकल -डोमिनेन्स (ब) एक्स्ट्रेग्रेशन -इण्ट्रोग्रेशन (स) इन्ट्रोपेडिटिव (द) ईम्पिडिटिव (ई) सुपर ईगो ।

ये कुण्ठा प्रतिक्रियाएँ निम्नानुसार पाई गईं । (अ) आब्सटेकल - ओपन क्लाइमेट में अधिक (ब) एक्साट्रोग्रेशन : परिचित वातावरण में व इण्ट्रग्रेशन बन्द वातावरण में (स) इन्ट्रोपेडिटिव

वातावरण में, ईम्पिडिटिव खुले वातावरण में एवं सुपर ईगो भी परिचित वातावरण में अधिक पाई गई ।

मोहन प्रकाश शर्मा : राजस्थान के विश्वविद्यालयों के संगठनात्मक एवं वातावरण का अध्ययन, पीएच. डी., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1985

शोध का उद्देश्य राजस्थान के तीनों विश्वविद्यालयों की संगठनात्मक संरचना का विकासात्मक व्यक्तित्व, विश्वविद्यालयों के अधिकारीगण, विश्वविद्यालय में सम्प्रेषण एवं कार्य-संचालन में शैक्षिक स्वातन्त्र्य एवं स्वायत्तता की दृष्टि से अध्ययन करना है ।

शोध से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं :

1. राज्य के क्षेत्रफल एवं अन्य राज्यों से तुलना करने पर तीन विश्वविद्यालय अपेक्षाकृत कम हैं । 2. जोधपुर एवं उदयपुर विश्वविद्यालय वास्तव में प्रवृत्ति में स्थानीय एवं सीमित क्षेत्र के लिये हैं । 3. दक्षिण-पूर्व क्षेत्र में (राज्य के सन्दर्भ में) कोई विश्वविद्यालय स्थित नहीं है । 4. राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर पर ही राज्य की उच्च शिक्षा के लिये सर्वाधिक दबाव पड़ता है । 5. राजस्थान में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में राजकीय महाविद्यालय अजमेर ही प्रथम संस्था के रूप में अस्तित्व में आई । 6. राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में बाकी विश्वविद्यालयों के लिये अगुवाई का कार्य किया ।

पन्नालाल वर्मा : प्रधानाध्यापक की द्वन्द्वात्मक भूमिका तथा उसकी भूमिका निर्वहन, पीएच. डी., राज.विश्वविद्यालय, 1975

शोध से प्राप्त मुख्य उद्देश्य निम्न हैं :

उन परिस्थितियों का पता लगाना था जिन्हें प्रधानाध्यापक अपने कार्य निष्पादन के प्रसंग में द्वन्द्वात्मक स्थितियाँ मानता है या जिनमें प्रधानाध्यापक बहुत अधिक, सामान्य तथा बहुत कम द्वन्द्व का अनुभव करता है । साथ ही द्वन्द्वात्मक स्थितियों में प्रधानाध्यापक के कार्य-निष्पादन के स्वरूपों का पता लगाना तथा उनका द्वन्द्वात्मक स्थितियों के साथ सम्बन्ध ज्ञात करना है।

शोध से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं :

1. अधिकतम द्वन्द्व अनुभव करने वाले प्रधानाध्यापक इन स्थितियों में अपेक्षाओं को अनदेखी करने अथवा एक के विपरीत दूसरी के अनुरूप कार्य करने के बजाय विपरीत अपेक्षाओं के मध्य का मार्ग अपनाकर कार्य-निष्पादन करते हैं । 2. न्यूनतम द्वन्द्व अनुभव करने वाले प्रधानाध्यापक एक अपेक्षा के विपरीत दूसरी अपेक्षा के अनुरूप कार्य करते हैं । 3. औसत स्तर का द्वन्द्व अनुभव करने वाले प्रधानाध्यापक भी एक अपेक्षा के विपरीत दूसरी अपेक्षा के अनुरूप कार्य करते हैं ।

इससे शोधकर्त्ता का यह निष्कर्ष निकला है कि जो प्रधानाध्यापक अधिकतम द्वन्द्व अनुभव करते हैं वे तनाव की अनुभूति करते हैं और फलतः दो विपरीत अपेक्षाओं की स्थिति में वे

रचनात्मक कार्य व्यवहारों यथा नियमों की अपने निर्णय के अनुरूप व्याख्या करना, समस्याओं पर व्यक्ति व समूह में चर्चाकर समाधान खोजना, विपरित अपेक्षाओं वाली स्थितियाँ ही न बने तदर्थ उपाय करना तथा कभी-कभी अंशत: विरोधी अपेक्षाओं को पूरी करना जैसे कार्य व्यवहारों का परिचय देते हैं ।

सत्यदेव सिंह : राजस्थान राज्य के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों का निर्णय प्रक्रिया शैली तथा नेतृत्व गुणों के सन्दर्भ में कक्षा-कक्ष वातावरण छात्र अभिप्रेरणा तथा निष्पादितों का अध्ययन, पीएच. डी., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1988

शोध का मुख्य उद्देश्य प्रधानाध्यापकों, अध्यापकों व उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों से सम्बन्धित विभिन्न भूमिगत कारणों, जो निर्णय प्रक्रिया शैली, नेतृत्व, व्यवहार-गुणों व परीक्षाफल को घटाते/बढ़ाते हैं, को ज्ञात करना तथा राजकीय/प्राइवेट/ग्रामीण-नगरीय तथा बालक-बालिकाओं के माध्यमिक विद्यालयों में सेवारत प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व गुणों के साथ-साथ मुख्य निष्कर्ष प्रक्रिया शैली का अध्ययन करता था ।

शोध से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न हैं :

1. प्रधानाध्यापक अपना कार्य सही रूप से करते हैं और बहुत मान-सम्मान मिलता है। जनता व समाज के हित के कार्य प्रधानाध्यापक करते हैं । 2. निर्णयकर्त्ता के रूप में प्रधानाध्यापक के उत्तम क्रियात्मक व उपयोगी विचार दूसरों के द्वारा ग्रहण किये सकते हैं। 3. प्रधानाध्यापक अपने निर्णयों को अध्यापकों को मनवाने का प्रयास कर सकता है। 4. प्रधानाध्यापक-निर्णय-प्रक्रिया-व्यवहार की विभिन्न प्रकार की आठ प्रश्नावलियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। 5. छात्र निष्पति में बालक-बालिकाओं में राजकीय-प्राइवेट विद्यालयों के बालकों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया ।

गिरीश कुमार शर्मा : राजस्थान के शिक्षक संघों की भूमिका तथा कार्यों का अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1987

शोध के मुख्य उद्देश्य निम्न थे :

1. राजस्थान में शिक्षक संघों का उद्‌भव एवं विकास का अध्ययन करना। 2. सन् 1970 से 1985 के मध्य शिक्षक संघों के कार्य व इनकी भूमिका का अध्ययन करना। 3. संघों के कार्य करवाने के विभिन्न तरीकों का अध्ययन करके इनके कार्यों का मूल्याकंन करना। 4. इन संघों पर राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध से प्राप्त मुख्य निष्कर्ष निम्न है :

1. विभिन्न प्रकार के संघों के उद्‌भव का कारण प्रभुख रूप से जनतान्त्रिक प्रणाली से संघों के पदाधिकारियों का चुनाव न होना ही है । 2. संघों ने शिक्षकों के आर्थिक व

शैक्षणिक स्तर को उन्नत करने मे महत्त्वपूर्ण कार्य किया है । 3. असंगत स्थानान्तरणों व प्राथमिक शिक्षा को पंचायतराज को सौपने का संघों ने विरोध किया है । माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों के रिक्त पदों को भरने के लिए भी संघों ने कार्य किया है । 4. सभी संघों को संगठित होकर अध्यापकों के हित के लिए कार्य करना चाहिये । 5. आज के शिक्षक संघों पर राजनैतिक नेताओं का बहुत प्रभाव है । संघ के पदाधिकारी राजनेताओं से स्थानान्तरण आदेश करवाते हैं । 6. संघों के कारण ही अध्यापकों को 15 दिन के उपार्जित अवकाश का लाभ मिला है ।

शोध-अनुक्रमणिका

अग्रवाल, आभा : स्वायत्तशाषी माध्यमिक विद्यालयों की संरचना (एक कार्यात्मक प्रारूप), एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1975

अग्रवाल, उमा : शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों में कार्य एवं समस्याएँ, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

अग्रवाल, सुमित्रा : उदयपुर नगर के माध्यमिक शाला स्तरीय अध्यापकों के विचारानुसार शिक्षक संघों की भूमिका, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

अघाना, हरिसिंह : बीकानेर जिले के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यानुभव के प्रति दृष्टिकोण एवं क्रियान्वयन की स्थिति–अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

वार्ष्णेय, एन. सी. : The organizational climate of different types of schools and reactions to frustrating school situations among adolescent boys, students in these schools. Ph.D.,Raj. University, 1979

आमेटा, तुलजा शंकर : माध्यमिक विद्यालयों में नियोजित कक्षेत्तर क्रियाएँ एवं छात्रों की प्रतिक्रियाएँ, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

आचार्य, प्रेमनारायण : शिक्षक संघों का माध्यमिक स्तर की शिक्षा में शैक्षिक उन्नयन हेतु योगदान का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

आमेटा, विमला : उदयपुर जिले के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक विद्यालयी योजनाओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1984

आरा, शमीम : पंचायत राज की शैक्षिक-प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन, बड़गाव पंचायत समिति, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1978

उपाध्याय, हरिकृष्ण : पारी व्यवस्थान्तर्गत समस्याओं का अध्ययन । (उच्च माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर), एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1975

उपाध्याय, ब्रजकिशोर : विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण और छात्रों का व्यवहार, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1975

एम. लिन, वीणा : माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान का संगठन एवं भूमिका, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

ओझा, बाबूलाल : उदयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों एवं प्रधानाध्यापिकाओं के पर्यवेक्षण कार्य के बोध का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1977

ओझा, रमेशचन्द्र : प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक की भूमिका को सफल बनाने के उपाय, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

कच्छावा, कु. सीता : जोधपुर की राजकीय एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

कपूर, संगीता : जोधपुर शहर के उ. माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की समाजपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा के प्रति अभिव्यक्ति का अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1988

कश्यप, अम्बा : उदयपुर नगर के माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की नेतृत्व शैलियों का मानवीय सम्बन्धों पर प्रभाव, एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, 1988

कुमावत, भागचन्द्र : उच्च माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियों की व्यवस्था एवं विद्यार्थियों की अपेक्षाएँ –एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

कुमावत, श्यामलाल : विद्यालय प्रशासन में प्रधानाध्यापकों द्वारा लिये गये निर्णयों के प्रभावक कारक, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

कुशवार, अनीता : In-service orientation in Agriculture Extension, M. Ed., Udaipur University, 1981

कौली, पूर्णिमा : विद्यालय पलायन सम्बधित कारकों का अध्ययन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

मठालिया, हरिसिंह : शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में पर्यवेक्षकों द्वारा दी जाने वाली टिप्पणियों तथा उनके प्रति छात्राध्यापकों की अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

खौर, कमलकिशोर : जनजातीय क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के पुस्तकालयों की कार्य व्यवस्था का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1977

गोयल, भगवती प्रसाद : विद्यालय योजना की निर्माण प्रक्रिया एवं क्रियान्वयन एक अध्ययन, एम.एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1976

गोविन्द, सिंह : ओपन स्कूल का संगठन एवं कार्यप्रणाली, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

गौड़, अश्विनी कुमार : विश्वविद्यालय, के विभागाध्यक्षों की भूमिका का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

गौड़, अश्विनी कुमार : A comparative study of role of Head of Dept. in universities of Rajasthan, Ph. D., Udaipur University, 1984

गौड़, रेखा : केन्द्रीय, राजकीय तथा निजी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व व्यवहार तथा उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1985

चौहान, बंशीलाल : उदयपुर शहर के विद्यालय संगमों के कार्यक्रम एवं उनकी प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन , एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

छींपा, सोहनलाल : उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व व्यवहार का एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

जैन, फतहलाल : मावली तहसील के माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में आयोजित शारीरिक शिक्षा के प्रमुख क्रियाकलापों एवं साधन-सुविधाओं का अध्ययन। एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

जैन, शशिबाला : परिवीक्षण अधिकारियों का अपने कृतृत्व के प्रति दृष्टिकोण एवं क्रियान्विति, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

जोशी, आहिल्या : राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में परिवीक्षण, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

जोशी, शोभा : बड़गांव एवं बेतला में प्राथमिक शालाओं के शैक्षिक प्रशासन का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

ठाकुर, निर्मला : सेवा प्रसार अधिकारियों का शालीय गतिविधियों पर प्रभाव, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1977

ठाकुर, विद्या : चार उच्च माध्यमिक विद्यालयों का पर्यवेक्षण एवं वित्तीय दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन करना एवं उसका शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, एम. एड.. जोधपर विश्वविद्यालय, 1985

तैलंग, कौमुदी : राजसमंद क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के भूमिकागत व्यवहार का उनके अधीनस्थ अध्यापकों द्वारा प्रत्यक्षीकरण का एक अध्ययन, एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, 1988

तोमर, सुशीलादेवी : माध्यमिक विद्यालयों में अभिनव उपक्रमों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

दक, भगवतीलाल : उदयपुर शहर के माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में आयोजित शारीरिक शिक्षा के प्रमुख कलापों का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

दशोरा, महेन्द्र कुमार : उदयपुर शहर के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापक-अभिभावक संघ का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

दशोरा, सुषमा : उदयपुर शहर के माध्यमिक विद्यालयों के इकाई लागत व्यय का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

दाधीच, बी. एम. : अध्यापन अभ्यास के आयोजन में सहयोगी विद्यालयों की समस्याओं का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1978

द्विवेदी, सुरेन्द्र कुमार : राजकीय महाराणा आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, उदयपुर के उद्भव एवं विकास का अध्ययन, एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, 1988

दुर्रानी, शमीम : छात्राध्यापकों के अध्यापन समायोजन से सम्बन्धित शैक्षिक एवं प्रशासनिक बाधाओं का अध्ययन, एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, 1987

देवड़ा, सरदार : कृषि अभियान्त्रिकी एवं प्रौद्योगिक महाविद्यालय, उदयपुर का संगठन एवं कार्यप्रणाली, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

नागदा, मांगीलाल : Leadership behaviour of Higher Secondary Schools Head Masters of Udaipur city, M. Ed., Udaipur, University, 1983

नागदा, सन्तोष कुमार : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के सम्बन्ध में प्रेस एवं प्रबुद्ध वर्ग के अभिमत का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

नागर, अतुल : समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा –एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

नागर, लक्ष्मीचन्द : उदयपुर नगर के एक पारी एवं दो पारी माध्यमिक विद्यालयों में निर्णय प्रक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

नरूका, लक्ष्मी : हरीश्चन्द्र माथुर राजस्थान राज्य लोक प्रशासन संस्थान, जयपुर का संगठन एवं कार्य प्रणाली, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

नरेन्द्र कुमार : छात्र संघ की अपेक्षित एवं वास्तविक भूमिका, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1975

नरेन्द्र सिंह : शिक्षक अभिभावक संघ का उदयपुर नगर के माध्यमिक विद्यालयों में योगदान, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1977

पाठक, उमा : An-appraisal of working of ungraded unit system in Primary Schools of Bikaner, M. Ed., Raj. University, 1980

पाण्डे, जगदीश : उदयपुर शहर के माध्यमिक विद्यालय-योजनाओं का तुलनात्मक अध्ययन, उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

पालीवाल, रूपलाल : उदयपुर नगर क्षेत्र राजकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालय स्तर पर समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा के प्रति छात्रों एवं अध्यापकों की अभिवृत्ति की तुलना, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1987

पारीख, जागृति : उदयपुर नगर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अपनाए जाने वाले अनुशासनात्मक अभ्यासों का अध्ययन, एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, 1988

पारीक,रमेशचन्द्र : Role of District Educational Research forum in Education Research, M. Ed., Udaipur University, 1978

पुरोहित, किशोर : प्राथमिक अध्यापकों में कुण्ठा के कारणों का उनके अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व के सन्दर्भ में एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

प्रभाकर, मधुबाला : अभ्यास के दौरान शिक्षक महाविद्यालय तथा सहयोगी विद्यालयों की समस्याओं का अध्ययन, एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, 1988

बानू, नफीसा : भारतीय लोक कला मण्डल उदयपुर का संगठन एवं कार्य-प्रणाली, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

बाबेल, मंजूला : उदयपुर नगर के व्यावसायिक संगठनों का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1978

बालिया, शिरीश : केन्द्रीय, राजकीय व निजी विद्यालयों के संगठनात्मक व उनके विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1980

भट्ट, वीणा : उदयपुर नगर के उच्चतर व उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संगीत शिक्षण का संगठन एवं प्रशासन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

भटनागर, उषा : समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के सम्बन्ध में केन्द्रीय विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की अभिवृत्ति का अध्ययन, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1985

भण्डारी, सुधा : क्षेत्रीय प्रशिक्षण स्कूल पश्चिमी रेलवे उदयपुर का संगठन व कार्य प्रणाली, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

भदौरिया, अन्नपूर्णा : Single Teacher School (some case studies) M. Ed., Rajasthan University, 1977

भारद्वाज, निरुपमा : माध्यमिक स्तर पर समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की व्यवस्था व क्रियान्विति, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

भास्कर, वीणा : निर्णय प्रक्रिया सम्बन्धी प्रधानाध्यापकों की शैली, अध्यापकों का दृष्टिकोण तथा किशोरों की समस्याओं का व्यवस्था सिद्धान्त के आधार पर एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

मंडोवरा,भगवतीलाल : उदयपुर नगर के माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापकों की अपेक्षित एवं वास्तविक भूमिका के बीच संघर्ष का अध्ययन, एम. एड., डिम्ड विश्वविद्यालय, 1987

महात्मा, रोशनलाल : माध्यमिक स्तरीय स्वयंसेवी शिक्षण संस्थाओं का वित्तिय नियोजन एवं नियन्त्रण, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1978

महेंद्रास्ता, सावित्री : उदयपुर विश्वविद्यालय सम्बन्धित शिक्षक तथा शैक्षिक महाविद्यालय में छात्र संघों की कार्य-प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1982

माथुर, हेमलता : पंचायत समिति के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों की कार्यक्षमता, एम. एड.

माहेश्वरी, मालती : माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों का नेतृत्व व्यवहार व उनका विद्यालयी संगठन, स्वास्थ्य का सह-सम्बन्ध व अध्ययन । एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1988

मुउडिया, चांदसिंह : उदयपुर शहर के निजी एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विसालयों में निर्णय प्रक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1983

मूलचन्द्र : Self-perception and perception by the teachers of H. S. Schools of Principal role behaviour, Ph. D., Udaipur University, 1983

मेनारिया, धनलाल : उदयपुर परिक्षेत्र के जिला शिक्षा अधिकारियों की अपेक्षित एवं वास्तविक भूमिकाओं का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1988

मेनारिया, रमेशकुमार : उदयपुर शहर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में रसायन विज्ञान प्रयोगशाला सम्बन्धी सुविधाओं का सर्वेक्षण, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

मेहरोत्रा, पद्मनाथ : बीकानेर के गैर सहायता प्राप्त प्राथमिक विद्यालयों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

मो. रज़ाक : जिला अधिकारियों व विकास अधिकारियों की शैक्षिक एवं प्रशासनिक भूमिका का अध्ययन । (जिला शिक्षा अधिकारी, उदयपुर,/विकास अधिकारी, बड़गांव पंचायत समिति, उदयपुर) एम. एड., राज. विश्वविद्यालय,1982

यशवन्त, सिंह : प्रधानाध्यापकों की निर्णय प्रक्रिया का मूल्याकंन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

राघव, विजेन्द्र : अलवर जिले के माध्यमिक विरालयों में कार्यानुभव कार्यक्रम का संगठन, संचालन व क्रियान्वयन -एक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

रेवारी, जयकिशन : ग्रामीण क्षेत्र में स्थित विद्यालय अभिभावकों की अपेक्षाएं एवं विद्यालय कार्यक्रम, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

रंगवानी,पुष्पा : A Headmaster's role as perceived by in-service Head masters and their role behaviour as perceived by their subordinate teachers, M. Ed. Udaipur University, 1981

राजवीरसिंह : आदिवासी जनजाति बालकों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

लवानिया, बंसतबाला : Decision making progress and emergence of democratic values, secular values (A study of Hr. Sec. Schools), M. Ed., Udaipur University, 1975

लोढ़ा, नीरजा : वर्तमान बी. एड., चयन प्रक्रिया के प्रति छात्राध्यापकों एवं प्राध्यापकों की प्रतिक्रियाएं, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

वर्मा, पी. एल. : Role conflct and corresponding role performance among Headmasters. Ph. D., Raj. University, 1975

वर्मा, मिथिलेश कुमारी : उदयपुर नगर के माध्यमिक विद्यालयों के व्यवस्थात्मक पर्यावरण एवं इसका शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय,1981

वर्मा, मोहनलाल : नागौर जिले में माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा की उपयोगिता एवं रुचि पर प्रभाव का अध्ययन, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

व्यास, पुरूषोत्तम : शिक्षा विभागीय न्यायिक प्रकरणों के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

विजयान, के. एन. : A study of leadership style of the Headmasters of Sec. and Hr. Secondary Schools of Udaipur city. M. Ed., Raj. University, 1985

शर्मा, आनन्दीलाल : उदयपुर नगर के चयनित माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों, छात्रों एवं अभिभावकों की प्रधानाध्यापकों से तथा अध्यापकों द्वारा स्वभूमिका लिखने विषयक एक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1986

शर्मा, कृष्णा : उदयपुर के सरकारी, गैरसरकारी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालयों की प्रशासनिक पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

शर्मा, कालूराम : जिला शिक्षा अधिकारी के कार्यालय का संगठनात्मक स्वरूप, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

शर्मा, गिरीश कुमार : A study into the role and functions of teachers organization in Rajasthan, Ph. D., Raj. University, 1987

शर्मा, जगदीशचन्द्र : Job analysis of activities in context of work experience programme, M. Ed., Udaipur University, 1977

शर्मा, जगदीशप्रसाद : Channels of communication in Govt. and Private Hr. Sec. Schools of Udaipur, M. Ed., Udaipur University, 1976

शर्मा, नरोत्तम : नवोदय विद्यालय का प्रशासनिक स्वरूप एवं क्रियान्वयन, एम. एड., सुखाड़िया विश्वविद्यालय, 1988

शर्मा, मोहनप्रकाश : Organizational structure and climate of University of Rajasthan, Ph. D., Udaipur University, 1985

शर्मा, प्रदीप कुमार : राजस्थान में स्वायत्तशाषी विद्यालयों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1985

शर्मा, धर्मदत्त : जोधपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में स्वास्थ्य सेवा के संगठन एवं संचालन का विश्लेषणात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

शर्मा, रमेशकुमार : भर्ती और स्थापन व्यवस्था–सरकारी और गैर सरकारी स्कूलों के अध्यापकों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

शर्मा, राजेन्द्र प्रकाश : 10+2 शिक्षा प्रणाली में माध्यमिक कक्षाओं के लिये कार्यानुभव का प्रस्तावित कार्यक्रम, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1977

शर्मा, रेखा : आदिवासी छात्रों के विकास में आश्रम विद्यालयों का योगदान, एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, 1977

शर्मा, सत्यनारायण : बीकानेर नगर के माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों की योजना एवं उनकी क्रियान्विति का अध्ययन, एम. एड., विश्वविद्यालय, 1982

शर्मा, सीता : उदयपुर नगर के माध्यमिक विद्यालयों के व्यवस्थात्मक पर्यावरण का शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता के साथ का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

शर्मा, सुनील : विद्यालय स्तर पर अनुसुचित जाति के विद्यार्थियों को दी जाने वाली शैक्षिक सुविधाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन, अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

शर्मा,सूर्यनारायण : Administrative problems of central schools (Kandriya Vidyalays of Rajasthan, M. Ed. Udaipur University, 1977

शास्त्री, मोहनलाल भाटी : विद्यालय के विभिन्न पक्षों के प्रति विद्यार्थियों की अपेक्षएं, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

शाहिन ए. खान : A study of schools Health services in Higher Secondary Schools of Jodhpur, M. Ed., Jodhpur University, 1987

शुक्ला, सरोज : उदयपुर नगर की श्रेष्ठतम शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त माध्यमिक शाला का प्रशासन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

शेखावत, किशनसिंह : बीकानेर जिला शिक्षा अधिकारियों (पुरुष/महिलाओं) द्वारा किये गये परिवीक्षण का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

शेखावत, सुरेन्द्रसिंह : शैक्षिक उपलब्धि का कर्मचारी के सेवा से सम्बन्ध, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

सक्सेना, राजेश : पंचायत समिति के शिक्षकों द्वारा संपादित शालेतर क्रियाकलाप, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1976

सक्सेना, रीता : बीकानेर नगर के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक कन्या विद्यालयों की प्रथानाध्यापिकाओं की विद्यालयी समस्याओं का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

सरुपिया, पुष्पा : आश्रम विद्यालय–एक अध्ययन, एम. एड., सुखाड़िया विश्वविद्यालय, 1988

संचेती, हंसा : राज्य विज्ञान शिक्षण संस्थान, उदयपुर का संगठन कार्यक्रम एवं सेवारत विज्ञान शिक्षण पर प्रभाव, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

सरीन, कुसुम : राज्य शिक्षा संस्थान, उदयपुर का सेवारत प्रशिक्षण में योगदान एवं प्राथमिक शाला के अध्यापकों पर इसका प्रभाव, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1977

सहारण, रावतराम : पंचायत समिति लूणकरणसर के शिक्षा प्रसार अधिकारियों द्वारा किये गये परिवीक्षण का विश्लेषणात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

साईवाल, शकुंतला : उदयपुर नगर के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों की विद्यालय समन्वय योजना का सृजनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

सिंघल, ज्ञानेश्वरप्रसाद : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की हायर सैकण्डरी कक्षा में उच्च एवं निम्न परीक्षा प्राप्त करने वाली दो उच्च माध्यमिक शालाओं की प्रशासनिक व्यवस्था, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1986

सिन्धी, पुष्पा : स्वायत्त प्रशासित रूढ़िगत विद्यालयों की विद्यालयी आयोजना का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1978

सिलावट, बाबूलाल : उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की नेतृत्व सम्बन्धी भूमिकाओं का तुलनात्मक अध्ययन (राजकीय एवं स्वायत्तशाषी), एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

सिंह, चन्द्रप्रकाश : A study of administrative factors responsible for lower and higher achievements, M. Ed., Raj. University, 1981

सुमरा, प्रवीणलता : बोर्ड की परीक्षाओं में उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले उच्च माध्यमिक विद्यालयों की विशेषताओं का अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1987

सुवलका, सुन्दरलाल : उदयपुर के राजकीय एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के नेतृत्व सम्बन्धी भूमिकाओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1977

सिंह, सत्यदेव : राजस्थान राज्य के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की निर्णय प्रक्रिया शैली तथा नेतृत्व गुणों के संदर्भ में कक्षा-कक्ष वातावरण छात्र अभिप्रेरणा तथा निष्पादितों का अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1988

सेठ, अमरसिंह : उदयपुर शहर में दो पारी तथा एक पारी वाले माध्यमिक विद्यालयों के इकाई लागत व्यय का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., डीम्ड विश्वविद्यालय, 1988

सेठ, सुरेशचन्द्र : 10+2 शिक्षाप्रणाली के सन्दर्भ में वर्तमान कार्यानुभव योजना–एक शोध एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

सोनगिरा, कानसिंह : उदयपुर नगर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम के संगठन का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

श्रीवास्तव, करुणा : उदयपुर नगर की अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की स्थिति, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

श्रीमाली, उषा : राजस्थान विश्वविद्यालय में घुमावदार (Rotational) प्रधानता का अध्ययन,एम.एड.,उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

सोनी, जेठमल : राजस्थान की जिला शिक्षा योजनाओं की निर्मिति का मूल्यांकनों की दृष्टि से अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

सोमानी,वीणा : छात्र शक्ति का शैक्षिक प्रशासन में सम्भावित योगदान, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय,1975

हरकावत, नरेन्द्रसिंह : उदयपुर नगर के माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाध्यापक की पर्यवेक्षीय भूमिका का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

हर्षशील, प्रकाश : राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर का संगठन, कार्यक्रम एवं शिक्षा के गुणात्मक विकास में इसकी भूमिका, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

☆ ☆ ☆

शैक्षिक तकनीकी

❑ मुरली मनोहर शर्मा
❑ शक्तिपूर्णा गुप्ता

शिक्षा को यदि विज्ञान मान लिया जाय तो अधिगम को स्थाई एवं प्रभावी बनाने की दृष्टि से शैक्षिक तकनीकी का महत्वपूर्ण स्थान स्वीकार किया जाना चाहिये। शिक्षा के क्षेत्र में या कक्षाओं में ग्रामोफोन, रेडियो, टेपरेकार्डर, प्रोजेक्टर, टेलीविजन, कम्प्यूटर, शिक्षण मशीन आदि का प्रवेश भी वैज्ञानिक एवं तकनीकी आविष्कारों का स्वाभाविक परिणाम है। इन उपकरणों के उपयोग और शिक्षा एवं मनोविज्ञान के सम्मिलित प्रभाव ने ही "शैक्षिक-तकनीकी" को जन्म दिया है।

शिक्षा के क्षेत्र में अभिक्रमित अध्ययन एवं तकनीकी के प्रयोग के फलस्वरूप 1965 में इस क्षेत्र में रुचि रखने वाले शिक्षाशास्त्रियों ने इण्डियन एसोसियेशन ऑफ प्रोग्राम्ड लर्निंग नामक संस्था का गठन किया । शैक्षिक तकनीकी एक वृहद क्षेत्र है । शिक्षण एवं अधिगम की आधुनिक पद्धतियों तथा प्रौद्योगिकी का क्रमबद्ध प्रयोग है । सुविधा की दृष्टि से इसे तीन भागों में बांटा गया है :

1. मशीनी शिल्प प्रौद्योगिकी
2. गैर मशीनी शिल्प प्रौद्योगिकी
3. प्रणाली प्रौद्योगिकी

मशीनी शिल्प प्रौद्योगिकी में वे सभी उपागम सम्मिलित हैं, जो विषय-वस्तु को प्रस्तुत करने एवं समझने में सहायता प्रदान करते हैं । इसमें विषय-वस्तु को छात्र के समक्ष प्रस्तुत करने के विभिन्न उपागम, यथा– चार्ट, मॉडल, स्लाइड, प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर आदि काम में लिए जाते हैं । सामान्यतः विद्यार्थी देखने, सुनने, स्पर्श करने आदि से सीखता है ।

गैर मशीनी शिल्प प्रौद्योगिकी विषयवस्तु को समुचित, व्यवस्थित करने में सहायक है । इसका सम्बन्ध अधिगतकर्त्ता के व्यवहार परिवर्तन से है न कि शिक्षण उपकरणों के निर्माण से ।

प्रणाली प्रौद्योगिकी परस्पर सम्बन्ध और स्व-नियन्त्रण एवं संचालन का द्योतक है । प्रणाली को एक गत्यात्मक, समन्वित, समग्र प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसके परस्पर सम्बन्धित अंगों, उपकरणों को एक स्वचालित संरचना द्वारा पूर्व निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये संगठित किया जाता है ।

आलोच्य अवधि (1975-1988) में राजस्थान में 35 अनुसंधान कार्य सम्पन्न हुए हैं, जिनमें 3 पीएच. डी. स्तरीय एवं 32 लघु शोध-प्रबन्ध हैं । शोधकार्य में प्रयुक्त अध्ययन प्रविधियों की दृष्टि से सात अनुसंधान कार्यों में सर्वेक्षण विधि तथा एक अनुसंधान कार्य में विकासात्मक विधि उपयोग में ली गई । शेष सभी अनुसंधान कार्यों में प्रयोगात्मक विधि को अपनाया गया है । उपकरणों में प्रत्यक्षण प्रश्नावली, साक्षात्कार अनुसूची स्वनिर्मित परीक्षण का सर्वाधिक उपयोग हुआ है। सांख्यिकी विधियों में प्रतिशत, मध्यमान, एनेलिसिस ऑफ वेरियन्स, जालोटा विधि, प्रमाणिक विचलन, गोर्डन का मूल्य परीक्षण, क्राईटेरियन टेस्ट एवं जी. एम. ए. टेस्ट का प्रयोग हुआ है। 1975 से 88 तक सम्पन्न हुए शोध कार्यों का विवरण शैक्षिक तकनीकी के विभिन्न आयामों द्वारा दर्शाया गया हैं ।

अभिक्रमित अधिगम

मूल रूप से दो प्रकार के अभिक्रमित अधिगम अर्थात रेखीय अधिगम तथा शाखीय अधिगम पर तुलनात्मक अध्ययन किए गए हैं। इन तुलनात्मक अध्ययनों में राष्ट्रीय-स्तर पर पाण्डे (1981), त्रिवेदी (1980) तथा सुथार (1981) उल्लेखनीय हैं । पाण्डे और त्रिवेदी ने विभिन्न प्रकार के अभिक्रमित अध्ययन सामग्री का उपयोग कक्षा 5 से 7 तक के विद्यार्थियों के लिए किया । शाखीय अधिगम को कक्षा 8 के विद्यार्थियों के लिए अधिक प्रभावी पाया । राजस्थान में तुलनात्मक अध्ययन मोदी (1984) ने किया । शोध परिणाम किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाए हैं । अधिकांश शोध परिणाम, रेखीय अभिक्रमित अधिगम तथा शाखीय अभिक्रमित अधिगम द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों में कोई विशेष अन्तर नहीं दर्शाते । गुलजार सलीम (1988) ने पाया कि निम्न बुद्धि की छात्राएं रेखीय अभिक्रमित अधिगम से स्व-अध्ययन करके अधिक लाभान्वित होती हैं । अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं के लिए रेखीय अभिक्रमित अधिगम विधि अधिक सार्थक है जबकि बहिर्मुखी व्यक्तित्व तथा उच्च बुद्धि वाली छात्राओं के लिए परम्परागत शिक्षण-विधि अधिक प्रभावी है ।

शोध कार्यों द्वारा अनुसंधानकर्त्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अभिक्रमित अधिगम एक प्रभावी अध्ययन पद्धति है । राष्ट्रीय स्तर पर हुए शोध कार्यों में शाह (1964), शर्मा (1966), शर्मा एम. एम. (1966), देसाई (1966), शाह (1969) ने अभिक्रमित अधिगम को अधिक प्रभावशाली अधिगम पद्धति पाया । अधिगम के क्षेत्र में विषय-वस्तु को प्रभावी रूप ग्रहण करने हेतु उसे दोहराना भी महत्वपूर्ण है । पढ़ी हुई सामग्री को दोहराने के लिए अनेक तरीकों में से अभिक्रमित अधिगम भी एक है । कुलकर्णी (1969), जोशी (1972), शाह एवं कापड़िया (1972) ने विषय-वस्तु को याद करने के लिए किये गये प्रयोगों में इस विधि को अन्य की तुलना में श्रेष्ठ पाया तथा इस पद्धति को अन्य अधिगम पद्धतियों से अधिक प्रभावी पाया ।

राजस्थान राज्य में भाटी (1976), गुप्ता (1976), ओझा (1980), शर्मा (1981), प्रतिभा (1986), प्रेमप्रकाश (1986), शर्मा (1986), माथुर (1986), भटनागर (1988), ललिता (1988) ने इसकी अन्य विद्यार्थियों से तुलना करते हुए अध्ययन प्रस्तुत किये हैं । अभिक्रमित अधिगम भारत में 1960 के दशक में इतना लोकप्रिय हुआ कि विभिन्न विषयों में अधिगम पद्धति पर आधारित पठन सामग्री तैयार की गई । उदाहरण के लिए गणित में शाह (1964), शाह (1974), कुलकर्णी (1969), शर्मा (1966), अंग्रेजी में शाह (1964), देवल (1974), गुप्ता (1973), जीव विज्ञान में कापड़िया (1972), भूगोल में शर्मा (1966), भौतिक विज्ञान में हुसैन (1977) । इनके निष्कर्षों के आलोक में यह कहा जा सकता है कि वाणिज्य एवं कला वर्गों में अभी भी अभिक्रमित अधिगम आधारित अध्ययन-सामग्री बनाना तथा प्रभावशीलता ज्ञात करने पर किया गया कार्य नगण्य है ।

अभिक्रमित अध्ययन सामग्री उपागम

गुप्ता (1976) ने बताया कि कक्षा 8 के छात्रों को व्याकरणानुवाद विधि के स्थान पर अभिक्रमित उपागम द्वारा पढ़ाने पर संस्कृत व्याकरण की सम्प्राप्ति अधिक पाई गई । प्रथम भाषा सम्प्राप्ति का प्रभाव अभिक्रमित अध्ययन द्वारा पठित छात्रों के संस्कृत व्याकरण सम्प्राप्ति पर अधिक पाया गया । संभरवाल (1978) के अनुसार अध्यापकों द्वारा शिक्षित विद्यार्थी अभिक्रमित एवं शिक्षण-सामग्री से प्राप्त अधिगम की अपेक्षा निरन्तर श्रेष्ठ सम्प्राप्ति प्रदर्शित करते हैं । दुभाषिया पद्धति एवं अभिक्रमित अध्यापक पद्धति से छात्रों को अच्छी अंग्रेजी पढ़ाई जा सकती है। ओझा (1980) ने बताया कि निम्न उपलब्धि वाले छात्रों के लिए परम्परागत अध्यापन-विधि के बजाय अभिक्रमित उपागम अधिक प्रभावशाली रहा । उच्च उपलब्धि वाले छात्रों के लिए दोनों विधियाँ बराबर रूप से प्रभावशाली रहीं । भगवानसिंह (1981) के अनुसार कक्षा आठ के छात्रों में अभिक्रमित उपागम द्वारा सामाजिक ज्ञान विषय का अधिगम परम्परागत विधि से कराये जाने वाले शिक्षण की अपेक्षा अधिक सार्थक पाया गया । निम्न औसत बुद्धि वाले छात्रों ने औसत एवं औसत से ऊपर बुद्धि वाले छात्रों की अपेक्षा अभिक्रमित विधि से अधिक लाभ उठाया। छात्रों ने अभिक्रमित विधि से सीखने में तत्परता दिखाई । शर्मा (1981) ने कक्षा 9 के वाणिज्य छात्रों के लिए बहीखाता विषय की एक इकाई "विनिमय-बिल" पर अभिक्रमित अध्ययन सामग्री तैयार की एवं ज्ञात किया कि उक्त इकाई को परम्परागत ढंग से पढ़ाए जाने वाले छात्रों की निष्पत्ति तथा अभिक्रमित उपागम से पढ़ाये जाने वाले छात्रों की निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । गौड़ (1983) के अनुसार माध्यमिक कक्षा के छात्र-छात्राओं को विज्ञान शिक्षण हेतु परम्परागत विधि की तुलना में अभिक्रमित विधि अधिक प्रभावशाली थी । इससे छात्र निष्पत्ति अधिक प्रभावित होती है । पुरोहित (1983) के अनुसार कक्षा 9 की छात्राओं के अर्थशास्त्र विषय में अभिक्रमित उपागम द्वारा सीखना परम्परागत विधि द्वारा सीखने की अपेक्षा अधिक सार्थक

निरन्तर प्रशासन की तुलना में सम्पूर्ण अभिक्रमित पाठ को तीन इकाइयों में विभाजित कर तीनों दिनों में प्रशासन पूर्ण करने पर छात्रों में त्रुटि दर कम पाई गई ।

कछारा (1984) के अनुसार माध्यमिक कक्षाओं की छात्राओं के लिए समुच्चय सिद्धान्त इकाई के अध्यापन के लिए परम्परागत विधि के स्थान पर अभिक्रमित उपागम अधिक प्रभावशाली रहा । अभिक्रमित विधि से अधिगम कराए जाने पर छात्राओं की उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया । भारत सिंह (1984) ने बी.एड. कक्षा हेतु अधिगम का अर्थ एवं सिद्धान्त पर एक अभिक्रमित पाठ तैयार किया । इससे औसत बुद्धि स्तर के छात्राध्यापक अधिक लाभान्वित हुए । मोदी (1984) ने बी. एड. कक्षा हेतु सांख्यिकी में एक अभिक्रमित पाठ का निर्माण किया जो कि परम्परागत विधि से अधिक प्रभावशाली पाया गया । शर्मा (1984) ने भी माध्यमिक कक्षा के जीव विज्ञान विषय की एक इकाई पृष्ठवंशीय "वर्गीकरण" पर पाठ तैयार किया जो कि परम्परागत विधि से अधिक सार्थक पाया गया । अरोड़ा (1985) ने कक्षा 11 के लिए रसायन विज्ञान की इकाइयां "आक्सीजन एवं अपचयन" तथा "संयोजकता" पर अभिक्रमित अध्ययन सामग्री का निर्माण किया तथा निष्कर्ष निकाला कि अभिक्रमित विधि शिक्षा की एक प्रभावी तकनीक है जिसका छात्रों की बुद्धिमता तथा चिन्ता से कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं था । शर्मा (1985) ने पता लगाया कि अभिक्रमित उपागम द्वारा बुद्धिमान व बहिर्मुखी विद्यार्थियों की तुलना में बुद्धिमान तथा अन्तर्मुखी विद्यार्थी अधिक अंक अर्जित करते हैं । अभिक्रमित उपागम की प्रक्रिया में पुनर्बलन तथा बुद्धिमता द्वारा शिक्षा-ग्रहण में सार्थक प्रभाव देखा गया ।

भाटी (1986) ने जीव विज्ञान शिक्षण में अभिक्रमित अध्ययन को परम्परागत अध्ययन से अधिक प्रभावशाली पाया है । प्रतिभा (1986) ने "पूर्ण वर्तमान बल" पर अभिक्रमित अध्ययन सामग्री का निर्माण किया जो कि छात्रों के लिए अधिक उपयोगी पाई गई । अभिक्रमित अधिगम सामग्री से सीखना भी सार्थक रहा । प्रेम प्रकाश (1986) ने अंग्रेजी, व्याकरण पढ़ाने के लिए अभिक्रमित विधि व परम्परागत विधि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया । शर्मा (1986) के अनुसार एसटीसी की छात्राध्यापिकाओं के लिए अभिक्रमित अध्ययन व्याख्यान विधि से अधिक प्रभावी रहा । परन्तु कठिन सम्प्रत्ययों को समझने में व्याख्यान विधि अधिक प्रभावी रही। अभिक्रमित अध्ययन तथा व्याख्यान विधि की उपलब्धियों पर अवरोधित परीक्षण की अपेक्षा तात्कालिक परीक्षण अधिक प्रभावी पाया गया । शर्मा गोस्वामी (1988) ने पाया कि इतिहास की इकाई पढ़ाने में परम्परागत शिक्षण विधि की अपेक्षा बहु-माध्यमी शिक्षण विधि अधिक प्रभावी है ।

व्यक्तिगत अध्ययन

शर्मा (1979) ने ज्ञात किया कि कक्षा-9 स्तर पर भौतिक विज्ञान विषय में परम्परागत विधि की तुलना में व्यक्तिगत अध्ययन कराने पर छात्रों की उपलब्धि अधिक रही । छीतरसिंह (1980) के अनुसार कक्षा 10 तथा बी.एड. स्तर पर भौतिक विषय में परम्परागत विधि की तुलना में व्यक्तिगत अध्ययन कराने पर छात्रों की उपलब्धि अधिक रही । व्यक्तिगत विधि द्वारा सीखने से अनभव बहुत समय तक स्थायी पाया गया । कौर (1984) ने ज्ञात किया कि कक्षा 10 स्तर

पर रसायन विज्ञान विषय में परम्परागत विधि की तुलना में व्यक्तिगत अधिगम से छात्रों की उपलब्धि अधिक रही । यह विधि विशेषकर कमजोर छात्रों के लिए अधिक उपयोगी रही ।

अनुकरण अध्ययन

गुप्ता (1981) के अनुसार बी. एड. के छात्राध्यापकों के लिए शिक्षण अभ्यास हेतु परम्परागत विधि के स्थान पर अनुकरण अध्ययन अधिक प्रभावी रहा ।

दृश्य-श्रव्य सामग्री

अग्रवाल (1976) ने ज्ञात किया कि कक्षा 9 के छात्रों को सामाजिक विषय में व्याख्यान तथा प्रश्नोत्तर विधि की अपेक्षा दृश्य-श्रव्य सामग्री से शिक्षण कराने पर अधिगम उच्च स्तर का रहा । नाथावत (1977) के अनुसार जिन विद्यार्थियों ने टेलीविजन से विज्ञान की शिक्षा पाई उनकी इस विषय में शैक्षिक उपलब्धियाँ अपेक्षाकृत अध्यापकीय माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों से उच्च रहीं । शर्मा (1985) ने टेलीविजन कार्यक्रम देखने वाले छात्र-छात्राओं का परिमाणात्मक ज्ञान उच्च व सही पाया । मूल्य सम्बन्धी बारह क्षेत्रों में से अधिकतर क्षेत्रों में छात्राओं ने टेलीविजन कार्यक्रम के प्रति अधिक मूल्य दर्शाए पर माथुर (1986) ने कक्षा 8 व 10 के बुद्धिमान व उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले छात्र-छात्राओं पर टेलीविजन कार्यक्रमों का प्रभाव नहीं पाया । यद्यपि मध्यम आर्थिक स्तर तथा बुद्धि वाले छात्र-छात्राओं पर टेलिविजन कार्यक्रमों का प्रभाव नहीं देखा गया । राव (1986) ने हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान वृद्धि पर टेलीविजन का समान प्रभाव पाया पर ज्ञान वृद्धि के अतिरिक्त शेष कार्यक्रमों के सन्दर्भ में पाया कि हिन्दी माध्यम के छात्र तो केवल हिन्दी कार्यक्रम ही देखते हैं जबकि अंग्रेजी माध्यम के छात्र हिन्दी और अंग्रेजी दोनों प्रकार के कार्यक्रम देखना चाहते हैं ।

माथुर (1986) ने ज्ञान और अवबोधन उद्देश्यों की सम्प्राप्ति में उच्च सम्भाव्य योग्यता वाले शिक्षर्थियों के वर्ग के लिए अभिक्रमित विधि की तुलना में व्याख्यान विधि अधिक प्रभावशाली पाई जबकि ज्ञानोपयोग के उद्देश्य के सन्दर्भ में दोनों विधियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया। औसत सम्भाव्य योग्यता वाले छात्रों के ज्ञान उद्देश्य प्राप्ति में दोनों प्रकार की विधियाँ सार्थक पाई गईं लेकिन अवबोधन के उद्देश्य की प्राप्ति में अभिक्रमित विधि व्याख्यान विधि से श्रेष्ठ रही। उच्च सामान्य योग्यता वाले छात्र औसत सम्भाव्य योग्यता वाले छात्रों से अभिक्रमित विधि से अध्ययन में श्रेष्ठ रहे।

निर्मला (1987) के अनुसार सभी अध्यापकों ने दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग मात्र शिक्षक-शिक्षार्थी के बीच होने वाली अन्तःक्रिया तक माना। व्यावहारिक, समस्या को सुलझाने वाले प्रश्न पर सभी प्राध्यापकों की सहमति बहुत कम प्राप्त हुई। रोशनलाल गुप्ता (1988) ने ज्ञात किया कि अंग्रेजी में भाषा योग्यता एवं सम्पर्क-क्षमता के विकास में श्रव्य भाषा विधि की तुलना में भाषा प्रयोगशाला प्रदर्शन विधि अधिक प्रभावी रही। भाषा प्रयोगशाला प्रदर्शन विधि में विद्यार्थी भय, शर्म आदि अवरोधकों को छोड़कर तुरन्त सीखने को तत्पर रहता है। यह विधि विद्यार्थी की

श्रवण-क्षमता को अधिक विकसित करने में सहायक सिद्ध हुई है। जयप्रकाश भटनागर (1988) ने शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों में शैक्षिक तकनीक के महत्व एवं प्रभावी उपयोग पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि नवाचारों का प्रयोग समय, प्रेरणा, प्रोत्साहन, रुचि आदि के लिए आवश्यक है। प्रशिक्षण को नवाचार की दृष्टि से प्रभावी बनाने हेतु पाठ्यक्रम में समुदाय के साथ कार्य, शिक्षण, तकनीक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी,, अधिगम संव्यूहन-केप्सूल आदि को सम्मिलित किया जाये। ललिता कुमारी (1988) ने विद्यालय में विभिन्न विषय शिक्षकों द्वारा प्रयोग की जाने वाली दृश्य सामग्री के बारे में कहा है कि विज्ञान विषय शिक्षण हेतु चार्ट, मॉडल, रेडियो, टेपरेकार्डर, कम्प्यूटर, फिल्म पट्टी, स्लाइड प्रोजेक्टर, चलचित्र, आदि दृश्य-श्रव्य सामग्री का अधिक प्रयोग किया गया है। गैर राजकीय विद्यालयों में दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग राजकीय विद्यालयों से अधिक किया जाता है। सामाजिक विषय के शिक्षक शिक्षण हेतु ग्लोब तथा मानचित्र का प्रयोग करते हैं, जबकि भाषा शिक्षण में दूरदर्शन का अधिक प्रयोग किया जाता है।

सम्भावनाएं एवं सुझाव :

कोई भी शोध कार्य आलोचना से परे नहीं होता। ऊपर के विवेचन से निष्कर्षों पर विचार करते समय कई परिसीमाओं का संकेत किया गया है जिन पर पृथक से शोध कार्य की योजना हाथ में ली जा सकती है। शोध के लिये कुछ सुझाव निम्न हैं :

- स्वनिर्मित अभिक्रमित अध्ययन में पाठों एवं सामग्री कर प्रमाणीकरण ज्ञात करना।
- अधिकतर शोध कार्य अंग्रेजी, गणित, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान आदि क्षेत्रों में हुए हैं परन्तु वाणिज्य एवं अन्य विषयों पर शोधकर्ताओं का ध्यान नहीं जा पाया है। इन विषयों में भी विभिन्न कक्षाओं के छात्रों को सम्मिलित करते हुए शोध कार्य किया जा सकता है।
- अभिक्रमित अध्ययन की दोनों विधाएं जैसे रेखीय और शाखीय का प्रयोग करते हुए तुलनात्मक अध्ययन कर प्रभावशीलता की जांच करना।
- किसी एक विधि का सामान्य विद्यार्थी तथा पब्लिक स्कूल के छात्रों या शहरी एवं ग्रामीण छात्रों का न्यादर्श में उपयोग करते हुए तुलनात्मक अध्ययन करना।
- अभिक्रमिक अध्ययन में शिक्षण मशीनों का अध्यापन में उपयोग कर उनकी प्रभावशीलता ज्ञातकरना।
- कई बार प्रयोग में देखा जाता है कि पुनर्बलन का बार-बार प्रयास करने के बाद भी बालक की उपलब्धि नहीं बढ़ती है। ऐसी स्थिति में उपलब्धि न बढ़ने के कारणों पर शोध करना।
- समाज के विभिन्न वर्गों के या लोकप्रिय, तिरष्कृत, एकाकी, इकलौते या अन्य छात्रों की दृष्टि से अभिक्रमित अध्ययन का प्रभाव ज्ञात करना।
- अभिक्रमित अध्ययन के क्षेत्र में शोधार्थियों के लिए उनकी न्यूनताओं के निवारण हेतु कोई प्रशिक्षण कार्यक्रम की उपयोगिता ज्ञात करना।

– अभिक्रमित अध्ययन के सूक्ष्म शिक्षण, कक्षा कक्ष अन्त:प्रक्रिया और वीडियो कैसेट द्वारा दी गई शिक्षा की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

वाचस्पति शोध-सार

बी.के. सभरवाल : द्वितीय भाषा के रूप में अंग्रेजी के प्रथम व द्वितीय स्तर पर सम्प्राप्ति के सन्दर्भ में अभिक्रमित स्वअधिगम बनाम वी.एस.ए.–वी./एस. शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, पीएच. डी. राज. विश्वविद्यालय, 1978

शोध का मुख्य उद्देश्य भाषा अध्यापन में दी ई.एस.एल. के विभिन्न व्यवहारों की उपयोगिता को ज्ञात करना है । साथ ही यह भी देखना है कि हिन्दी भाषा में उच्च या न्यून उपलब्धि अंग्रेजी भाषा की उपलब्धि में सहायक है या बाधक। शोध-अध्ययन के पश्चात् निम्न निष्कर्ष सामने आए हैं :

1. हिन्दी समूह का छात्र अंग्रेजी में आरम्भिक उपलब्धि प्राप्त करता है। 2. दुभाषिया पद्धति एवं अभिक्रमित अध्यापक पद्धति से छात्रों को अच्छी अंग्रेजी भाषा पढ़ाई जा सकती है। 3. हिन्दी एंव अंग्रेजी का आरम्भिक अध्ययन, अंग्रेजी में प्रगाढ़ता लाता है। 4. हिन्दी एंव अंग्रेजी की उपलब्धि सीधी अंग्रेजी की उपलब्धि को प्रभावित करती है। 5. अंग्रेजी भाषा में पूर्व कालिक उपलब्धि व्याकरण, अनुवाद तथा श्रव्य भाषायी विधि के द्वारा अनुवर्ती द्वितीय भाषा अधिगम एक मात्र श्रेष्ठ सूचक है। 6. अध्यापकों द्वारा शिक्षित विद्यार्थी, अभिक्रमित स्वशिक्षण सामग्री से प्राप्त अधिगम की अपेक्षा निरन्तर श्रेष्ठ सम्प्राप्ति प्रदर्शि करते हैं।

नगेन्द्र कुमार माथुर : बी.एस.टी.सी. स्तर पर शिक्षा मनोविज्ञान में अभिक्रमित अनुदेशन (के मूल्यांकन) का प्रयोगात्मक अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1986

शोध का प्रमुख उद्देश्य – शिक्षा मनोविज्ञान के शिक्षण में व्याख्यान विधि एवं अभिक्रमित अनुदेशन विधि की प्रभावशीलता की तुलना करना, शिक्षा मनोविज्ञान की उपलब्धि पर शिक्षार्थी की सम्भाव्य योग्यता के स्तर के प्रभाव को ज्ञात करना, छात्राध्यापकों की सम्भाव्य योग्यता-स्तरों के सन्दर्भ में अभिक्रमित अनुदेशन तथा व्याख्यान विधि की प्रभावशीलता ज्ञात करना तथा अधिगम उद्देश्यों और परीक्षण प्रभावों के सन्दर्भ में व्याख्यान विधि और अभिक्रमित अनुदेशन की प्रभावशीलता ज्ञात करना है। शोध-अध्ययन पश्चात प्रमुख निष्कर्ष निम्न सामने आये हैं :

1. उच्च सम्भाव्य योग्यता वाले शिक्षार्थियों का वर्ग औसत सम्भाव्य योग्यता वाले शिक्षार्थियों के वर्ग

3. अभिक्रमित अनुदेशन द्वारा पढ़ाया जाना शिक्षार्थियों के ज्ञान अवबोधन व ज्ञानोपयोग उद्देश्यों की प्राप्ति को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। 4. ज्ञान और अवबोधन उद्देश्यों की सम्प्राप्ति में उच्च सम्भाव्य योग्यता वाले शिक्षार्थियों के वर्ग के लिये अभिक्रमित अनुदेशन विधि की तुलना में व्याख्यान विधि अधिक प्रभावकारी सिद्ध हुई लेकिन ज्ञानोपयोग उद्देश्य के सन्दर्भ में दोनों विधियों में कोई सार्थक अन्तर प्रभावित नहीं हुआ है। 5. औसत सम्भाव्य वाले वर्ग के छात्रों के ज्ञान उद्देश्य प्राप्ति दोनों प्रकार की विधियाँ समान प्रभावकारी पाई गई लेकिन अवबोधन उद्देश्य की प्राप्ति में अभिक्रमित अनुदेशन विधि व्याख्यान विधि से श्रेष्ठ पाई गई किन्तु ज्ञानोपयोगी उद्देश्य की प्राप्ति की दृष्टि से यह स्थिति विपरीत पाई गई। 6. औसत व उच्च सम्भाव्य वाले वर्ग के निष्पादन पर व्याख्यान विधि, अभिक्रमित अनुदेशन विधि की तुलना में अधिक प्रभावकारी सिद्ध हुई।

शोध-अनुक्रमणिका

अग्रवाल, सुषमा : श्रव्य-दृश्य सामग्री का सामाजिक ज्ञान शिक्षण में प्रभाव (प्रयोगात्मक अध्ययन) एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

अरोड़ा, मनजीत कौर Development of Linear programme in Chemistry for Class XI and to study its effect an achievement of students in relation to intelligence and Test anxiety, M.Ed., Jodh. Uni., 1976

ओझा, मालती : निम्न एवं उच्च उपलब्धि वालों पर अभिक्रमित अध्ययन एवं पारम्परिक अध्यापन विधि के द्वारा अध्यापन सांख्यिकी का तुलनात्मक अध्ययन। एम.एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1980

भाटी, निर्मला : कक्षा 9 के छात्रों के लिए जीव विज्ञान शिक्षण में परम्परागत एवं अभिक्रमित अध्ययन का तुलनात्मक अध्ययन। एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1976

कछारा, सुरेश : गणित शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन तथा परम्परागत शिक्षण विधि का तुलनात्मक अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

कुमारी, ललिता : उच्च माध्यमिक स्तर पर विभिन्न विषयान्तर्गत दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग एवं बाधाएं। एम.एड., वनस्थली विद्यपीठ, 1988

कौर, हरजिंदर : A comparative study of personalized system of instruction with traditional method of teaching of Chemisry to X grade students, M.Ed., Raj. Uni., 1984

गुप्ता, अर्चना भुवनेश्वरचन्द्र : Effect of simulated practice teaching, M. Ed., Raj. Uni., 1981

गुप्ता, प्रेमलता : प्रथम भाषा में विधि सम्प्राप्ति स्तर वाले विद्यार्थियों की संस्कृत व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अध्ययन विधि एवं व्याकरणानुवाद विधि की प्रभाविष्णुता का तुलनात्मक अध्ययन, एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

गुप्ता, रोशनलाल : The efficiency of language laboratory exposure in developing language proficiency and communicative competance of tribal learners of English-An experimental stidy, M.Ed., Udai. Uni., 1988

गोस्वामी, शमा : इतिहास शिक्षण में बहु-माध्यमी शिक्षण विधि एवं परम्परागत शिक्षण विधियों की प्रभावोत्पादकता का तुलनात्मक अध्ययन, एम.एड., उदयपुर विश्वविद्यालय,1988

गौड, सी.बी. : A study of effects of leaners characterstics acheivement through Programmed Instructions and conventional class-room method, M.Ed., Raj. Uni., 1983

नाथावत, बजरंग सिंह : विज्ञान शिक्षण पर दूरदर्शन का प्रभाव– एक तुलनात्मक अध्ययन। एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

पुरोहित, राजेन्द्र कुमार कक्षा नवम् के अर्थशास्त्र शिक्षण में अभिक्रमित अध्ययन एवं परम्परागत अध्ययन पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन, एम.एड., राज विश्वविद्यालय, 1983

प्रेम प्रकाश : A comparative study of the Programmed Instructional method and traditional lecture method in respect of learning-gains in the functional grammar of English. An experimental study on B.Ed. level methodology students, M.Ed., Raj. Uni., 1986

भटनागर,जयप्रकाश : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के परिप्रेक्ष्य में उदयपुर सम्भाग के शिक्षण-प्रशिक्षण विद्यालयों में नवाचारों का अध्ययन, एम.एड., उदयपुर विश्वविद्यालय,1988

भारत सिंह : अधिगम का अर्थ तथा अधिगम सिद्धान्त पर बी.एड. कक्षा हेतु अभिक्रमित पाठ्यक्रम तैयार करना तथा व्याख्यान विधि से अभिक्रमित अनुदेशन की तुलना करना, एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

महात्मा, सुरेन्द्र : वाणिज्य में अन्तिम खातों पर अभिक्रमित पाठों का निर्माण एवं उसकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन (रेखीय व शास्त्रीय प्रविधियों पर) पीएच.डी., राज. विश्वविद्यालय, 1988

मायुर, नरेश कुमार : An experimental study of Evaluating Programmes Instruction in Educational Psychology at B.S.T.C. level, Ph. D., Vanasthali Vidyapeeth, 1986

मोदी, अशोक कुमार : बी.एड. के विद्यार्थियों के लिये साख्यिकी में अभिक्रमित अनुदेशन निर्माण कर इसकी प्रभावशीलता का अध्ययन करना, एम.एड., राज. विश्वविद्यालय,1984

राठोड़,निर्मला, : उदयपुर शहर के शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शैक्षिक प्रौद्योगिकी के सम्प्रत्यय व उपयोग का अध्ययन, एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

रामसिंह : समुच्चय सिद्धान्त पर अभिक्रमित पाठ, एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

राव, अरूण : A comparative study of the television in vesuing by students of Hindi and English medium schools. M. Ed., Raj. Uni., 1986

शर्मा, इन्दु : Pre-parations of Linerar programmed lesson in Biology on cherdate class Hication. M. Ed., Raj. Uni., 1984

शर्मा, एस. के. : A comparative study of two class room teaching of procedures traditional versus personalized system of instruction with special reference to the teaching of physics at with class. M. Ed., Raj. Uni., 1979

शर्मा, नत्थीलाल : बहीखाता शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन तथा परम्परागत शिक्षण विधियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1981

शर्मा, राधा : किशोर विद्यार्थियों के मूल्य, आवश्यकता एवं अभिरूचियों पर दूरदर्शन कार्यक्रम का प्रभाव, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1985

शर्मा,हरिशंकर : A study of effect of contineous literated and no recrtorecement on achivement with through programmed instruction. M. Ed., Raj. uni., 1985

शर्मा, हेमलता : अभिक्रमित अनुदेशन विधि पर अतिरिक्त प्रतिपुष्टि तथा व्याख्यान विधि की उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., वनस्थली विद्यापीठ, 1986

सम्भरवाल, वी. के. : Study of comparative effectiveness of programmed auto learning v/s a v/s other method of teaching English as a second language in relation to L-1 and L-2 achievement. Ph. D., Raj. Uni., 1978

सलीम,गुलजार : कक्षा दशम के लिए जीव-विज्ञान विषय में रेखी अभिक्रमित अनुदेशन निर्मित कर इसकी प्रभावशीलता का एक तुलनात्मक अध्ययन करना। एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

सिंह,छीतर : A comparation study of two class room teaching procedure traditional verses personalized system of institution of the special referance to the teaching of pysics of secondary and B. Ed, Level. M. Ed., Raj. uni., 1980

सिंह, भगवान : कक्षा आठ के लिये सामाजिक शिक्षण में अभिक्रमित अध्ययन एवं पारम्परिक अध्ययन की प्रभावोत्पादकता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

☆ ☆ ☆ ☆

तुलनात्मक शिक्षा

❑ अब्दुल रज़ाक
❑ सी. पी. शर्मा
❑ अशोक कुमार मुद्गल

तुलनात्मक शिक्षा का इतिहास यद्यपि अत्यन्त पुराना है परन्तु इसका आधुनिक स्वरूप सन् 1840 के आसपास से प्रारम्भ माना जाता है । प्रारम्भिक काल में तुलनात्मक शिक्षा का स्वरूप वर्णनात्मक था, जिसमें अधिक से अधिक आंकड़ों का संग्रह करके भिन्न-भिन्न देशों की शिक्षा की तुलना करना ही पर्याप्त माना जाता था । बहुत से यात्री और इतिहासकार जो विभिन्न देशों में गए उन्होंने वहाँ की शिक्षा के तुलनात्मक संस्मरण प्रस्तुत किए हैं । ये सभी संस्मरण यद्यपि वैज्ञानिक खोज के रूप में सामने नहीं आए फिर भी इनमें तुलनात्मक शिक्षा दर्शाई गई । अतः न तो हम इन्हें तुलनात्मक शिक्षा से अलग कर सकते हैं तथा न ही इनकी विधियों की आलोचना कर सकते हैं । यह सामग्री बीसों शताब्दियों में फैली हुई है । अत: कई विश्वविद्यालयों को मिलकर इस पर पीएच. डी. स्तरीय शोध करनी चाहिये । तुलनात्मक शिक्षा पर अनुसंधान (1975-88)

आलोच्य अध्याय (1975-88) तक राजस्थान में तुलनात्मक शिक्षा अनुसन्धान में कुल 75 अनुसन्धान कार्य सम्पन्न हुए हैं । इनमें 7 शोध पीएच. डी. तथा 68 शोध एम. एड. स्तरीय हैं ।

वर्ष 1976 से 1988 तक अनुसन्धान कार्यों में प्रति वर्ष वृद्धि हुई है तथा 1981 से 1986 तक प्रति वर्ष ह्रास हुआ है । सन् 1980 में 9 शोधकार्य सम्पन्न हुए हैं तथा 1966 में केवल एक शोध कार्य सम्पन्न हुआ जो प्रति वर्ष हुए शोध कार्य में ह्रास प्रदर्शित करता है । तुलनात्मक शिक्षा के विविध क्षेत्रों में हुए शोध कार्य निम्नांकित हैं :

1. ऐतिहासिक शोध (अ) भारतीय शिक्षा की विदेशी शिक्षा से तुलना :

तुलनात्मक शिक्षा का महत्व अब सम्पूर्ण शिक्षा जगत में स्वीकार किया जा चुका है। अब तो यह माना जाने लगा है कि भावी अध्यापकों और प्रशासकों को विदेशी शिक्षा का ज्ञान अवश्य होना चाहिये ताकि वे उस ज्ञान के आधार पर अपने देश की शिक्षा व्यस्था को अधिक व्यावहारिक एवं प्रभावशाली बना सकें।

दीक्षित (1976) के अनुसार भारतीय शिक्षा प्रणाली पर पाश्चात्य देशीय शिक्षा नीति का प्रभाव सर्व-विदित है। भारतीय शिक्षा का पाठ्यक्रम यथा प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, विश्वविद्यालयी शिक्षा तथा अनेक शैक्षिक प्रवृत्तियाँ, ब्रिटिश शिक्षा नीति से प्रभावित नहीं है। भारतीय प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में सरकारी लगाव न होना, सम्भ्रानतों की शिक्षा, धार्मिक तटस्थता, स्वेच्छिक संगठनों का विकास, छात्रवृत्ति प्रथा को प्रोत्साहन, पाठ्यक्रम परिवर्तनत, शिक्षा का विकेन्द्रीकरण और 1902 तक गुणात्मक शिक्षा के लिए निजी शिक्षण संगठनों पर पूर्ण नियन्त्रण का होना आदि सम्पूर्ण प्रभाव ब्रिटिश शिक्षा नीति के हैं। दीक्षित (1976) के अनुसार सन् 1854 के बाद भारत में हुए शैक्षिक विकास के अध्ययन के साथ-साथ भारतीय प्राथमिक, माध्यमिक, विश्वविद्यालयी एवं अनुदान प्राप्त शिक्षा व्यवस्था पर सन् 1854 से 1904 तक ब्रिटिश शिक्षा नीति के प्रभाव के फलस्वरूप माध्यमिक शालाओं का अंकुरण, परीक्षा व्यवस्था, शिक्षा और रोजगार का सम्बन्ध, पाठ्यक्रमों की विभिन्नता, पाठ्यक्रम-निर्माण छात्रवृत्ति एवं शिक्षा का सरकारीकरण आदि प्रवृत्तियाँ विकसित हुई हैं। विश्वविद्यालयी शिक्षा व्यवस्थाओं पर निम्न प्रभाव देखे गए। उच्च स्तर पर नई संस्थाओं का विकास, विश्वविद्यालयों की डिग्री को मान्यता, प्रायोगिक विज्ञान का प्रारम्भ, प्रवेश परीक्षा लागू करना, चुनावी चक्र आदि। इसी भाँति अनुदान प्राप्त संस्थाएँ भी ब्रिटिश शिक्षा नीति से प्रभावित रही है। वुड डिस्पेच में नियम निर्धारण, विशेष उद्देश्य पर आधारित अनुदान, स्थानीय दर से अनुदान देना, परीक्षा परिणाम के आधार पर अनुदान भुगतान आदि प्रभाव ब्रिटिश नीति के अनुदान प्राप्त संस्थाओं पर देखे गए।

मेवाड़ में स्वतन्त्रता से पूर्ण स्त्रियों की साक्षरता 6.3 प्रतिशत थी जो स्वतन्त्रता के पश्चात 1981 तक 9.35 प्रतिशत हो गई परन्तु आज तक भी विद्यालय जाने वाली छात्राओं का प्रतिशत 27 के लगभग है। प्राथमिक स्तर पर लड़के व लड़कियों की शिक्षा का अनुपात 1:3 है जबकि उच्च शिक्षा तक पहुँचते-पहुँचते यह 1:4 हो गया। प्रभा चित्तौड़ा (1984) ने अपने शोध "स्वतन्त्रता के पूर्व एवं स्वातन्त्र्योतर कालीन (1866 से 1981 तक) मेवाड़ में स्त्री शिक्षा का विकास में" निष्कर्ष दिया कि 1981 तक शिक्षा का उद्देश्य अक्षर ज्ञान के बजाय व्यक्तित्व का विकास हो गया। अनुसन्धानकर्त्री ने अनुसुचित जाति एवं जनजातियों की छात्राओं को आकर्षित करने पर जोर दिया गया है।

"मेवाड में आधुनिक शिक्षा का विकास" नामक शोध में श्री मेनारिया ने पाया कि स्वतन्त्रता के पश्चात मेवाड़ में प्राथमिक, माध्यमिक व व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों, अध्यापकों में संख्यात्मक एवं गुणात्मक विकास हुआ है। उच्च शिक्षा में आशातीत प्रगति हुई है। "दक्षिणी राजस्थान में जनजाति क्षेत्र के शैक्षिक विकास का ऐतिहासिक अध्ययन" में भानु

प्रभा (1982) ने भी इसी प्रकार का अनुभव किया है । स्वतन्त्रता के पश्चात प्राथमिक, उच्च प्राथमिक विद्यालयों में संख्यात्मक वृद्धि अपूर्व हुई है । इनकी दृष्टि में उदयपुर जिला शिक्षा की दृष्टि से अग्रणी तथा बाँसवाड़ा जिला पिछड़ा हुआ है ।

2. विभिन्न पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन

छात्रों को प्रदत्त ज्ञान का प्रमुख आधार पाठ्यक्रम होता है । पाठ्यक्रम का व्यापक अर्थ व्यक्ति अनुभवों का संगठित रूप है । यह केवल मूलभूत कुशलताओं तथा ज्ञान तक सीमित नहीं होता बल्कि व्यापक पाठ्यक्रम का कोई न कोई दार्शनिक आधार अवश्य होता है । पाठ्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन करने के पीछे, निहित उद्देश्य पाठ्य सामग्री को पृथक करने का रहता है । इस दृष्टि से यहाँ 6 शोध दृष्टव्य हैं ।

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर का दस जमा दो शिक्षा प्रणाली अन्तर्गत भाषा विषय का पाठ्यक्रम (प्रथम दस वर्षीय शिक्षाक्रम का) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रम की अपेक्षा लेखकों एवं कवियों को पाठ्यक्रम में समाविष्ट करने की दृष्टि से समृद्ध व श्रेष्ठ हैं तथा पाठ्यक्रम में संस्मरण, रेखा चित्र एवं रिपोतार्ज के क्षेत्र में भी राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का स्तर ऊँचा है । ऐसा निष्कर्ष स्वर्ण जैन ने एन.सी ई. आर. टी. द्वारा प्रतिपादित प्रथम दस वर्षीय शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली द्वारा क्रियान्वित एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर द्वारा प्रस्तावित भाषाओं के पाठ्यक्रम के (त्रिभाषा सूत्र आधार पर) अध्ययन में (1979) प्राप्त किया । अध्ययन में श्रीमती जैन ने पाया कि राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को चाहिये कि वह भाषा शिक्षण के पाठ्यक्रम में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम की भाँति दो विधाओं को बढ़ाकर बारह करें ।

राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश में प्रचलित माध्यमिक स्तर के संस्कृत (वैकल्पिक) विषय के पाठ्यक्रमों में प्रस्तुतीकरण की शैली की दृष्टि से, विषय-वस्तु के समावेश की दृष्टि से, पाठ्यक्रम तथा परीक्षा के प्रश्न पत्रों की योजना तथा अंक विभाजन की दृष्टि से काफी समानता है, ऐसा अनुभव किया है अंजना चौधरी (1981) ने । इस शोध में दोनों पाठ्यक्रमों में भिन्नता को प्रकट नहीं किया है तथा न ही कोई सुझाव दिया है । कला और वाणिज्य वर्ग के सामान्य विज्ञान के पाठ्यक्रम के कारण विद्यार्थियों में विज्ञान, गणित तथा जीव-विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों से सामान्य विज्ञान की कुछ पाठ्य वस्तुओं की संज्ञानात्मक कमियाँ रह जाती है । यह निष्कर्ष प्रदान किया श्री भगवतराज गहलोत ने अपने शोध "राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित विज्ञान, कला एवं वाणिज्य संकायों के सामान्य विज्ञान पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन" में । इस शोध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर सुझाव प्रस्तुत किया गया है कि तीनों वर्गों (कला, विज्ञान/गणित/, जीव विज्ञान, वाणिज्य) के लिये सामान्य विज्ञान पाठ्यक्रम समान होना चाहिये ताकि किसी भी वर्ग के विद्यार्थियों में, सामान्य विज्ञान से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की संज्ञानात्मक कमी न रह पाए । इन शोधों में बोर्ड विषयों के पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक

अध्ययन ही नहीं किया है अपितु उच्च प्राथमिक स्तर के विषयों से सम्बन्धित दो शोध सम्पन्न हुए हैं । शिक्षा विभाग राजस्थान तथा केन्द्रीय विद्यालयों में कक्षा 8 के सामाजिक ज्ञान विषय के पाठ्‌यक्रम में पाठ्‌य वस्तु का प्रतिशत, ज्ञान के क्षेत्र व अवबोधन के क्षेत्र में समान है जबकि कौशल, पाठ्यपुस्तकों के उपयोजन के क्षेत्र में, शिक्षण उद्देश्यों में, ज्ञान एवं अवबोधन के क्षेत्र में काफी अन्तर है । उक्त निष्कर्ष प्रदान करते हुए मधु मित्तल (1980) ने अनुभव किया कि दोनों पुस्तकों के अभ्यासार्थ प्रश्नों के उपयोजन, ज्ञान अवबोध, प्रश्नों के कौशल क्षेत्र, प्रश्न एवं पाठ्‌य-वस्तु में कुछ सीमा तक अन्तर है । यद्यपि शोधकर्त्री ने उक्त अन्तरों को साख्यिकीय गणना से नाप कर स्पष्ट नहीं किया है तथापि यह आग्रह स्पष्ट है कि राजस्थान सरकार का शिक्षा विभाग अपने पाठ्‌यक्रम को केन्द्रीय विद्यालयों के स्तर का बनाए। इसी भाँति एक अन्य शोध में उषा शर्मा (1987) ने अनुभव किया कि केन्द्रीय विद्यालयों तथा राजस्थान के विद्यालयों में प्रचलित हिन्दी विषय की कक्षा 6, 7, व 8 की पाठ्यपुस्तकों में दोनों क्षेत्रों की कक्षा–6 की पाठ्‌यपुस्तकों में विचार को प्रथम तथा लोक जीवन को द्वितीय स्थान प्राप्त है । कक्षा–7 की दोनों पाठ्‌यपुस्तकों में "लोक जीवन" तथा "विचार" को समान वरीयता प्राप्त है । केन्द्रीय विद्यालय की कक्षा–8 की पुस्तकों में लोक-जीवन को प्रथम तथा राजस्थान की पुस्तक में द्वितीय स्थान दिया गया है । कक्षा 6 की पाठ्‌यपुस्तक में कविता व निबन्ध विधाओं को प्रमुखता प्रदान की गई है, जबकि दोनों क्षेत्रों की कक्षा–7 की पाठ्‌यपुस्तकों में विधा सम्बन्धी सहमति कविता, निबन्ध व कहानी तक ही है । दोनों क्षेत्रों की कक्षा–6 की पाठ्यपुस्तकों में नैतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय वर्ग के मूल्यों को सर्वोपरि स्थान दिया गया है । कक्षा आठ की पाठ्‌यपुस्तकों में भाषा तत्वों के समावेश के प्रश्न पर स्पष्ट सहमति नहीं है ।

एस. टी. सी. का पाठ्‌यक्रम इकाई, उप इकाई तथा उप बिन्दुओं में पूर्णतः विभाजित है जबकि बी. एड. में केवल इकाई एवं उप इकाई तक । शिक्षा अर्थ, उद्देश्य, शिक्षा की नवीन प्रवृत्तियों के बिन्दुओं पर दोनों पाठ्‌यक्रम समान है । अध्यापक शिक्षा की समस्या, अपव्यय, अवरोधन, मनोविज्ञान, विद्यालय व्यवस्था, स्वास्थ्य शिक्षा और निर्देशन के बिन्दु भी दोनों में समान हैं । एस. टी. सी. एवं बी. एड. के पाठ्‌यक्रमों में तुलनात्मक अध्ययन के अन्तर्गत विजय कुमार शर्मा (1980) ने पाया कि एस. टी. सी. उत्तीर्ण बी. एड. प्रशिक्षणार्थीयों की नियमित बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों से अधिक उपलब्धि नहीं है, जबकि व्यावहारिक शिक्षण में एस. टी. सी. उत्तीर्ण प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि का स्तर नियमित की अपेक्षा हमेशा ऊँचा मिलता है ।

3. विद्यालयों के संगठनात्मक पक्ष पर शोध :

जिस विद्यालय का परीक्षा परिणाम श्रेष्ठ रहता है उसके संगठन पक्ष की श्रेष्ठता स्वयंमेव श्रेष्ठ मानी जाती है तथा न्यून परीक्षा परिणाम देने वाले विद्यालयों में अनेक कमियाँ देखी गई। किशनलाल स्वामी (1980) अनुभव करते हैं कि उच्च परीक्षा परिणाम वाले विद्यालयों का

अंग माने । इस शोध के निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि जिस विद्यालय के शिक्षक अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट हैं वे निष्ठा पूर्वक अध्यापन करते हैं तथा परिणाम श्रेष्ठ रखते हैं ।

विद्यालयों के संगठन पक्षों के क्षेत्र में अनुसन्धान के क्रम में आलोच्य लेख में राजकीय व अराजकीय विद्यालयों को आधार मान कर एक शोध में 'राजकीय व अराजकीय विद्यालयों की कार्यप्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन' तथा दूसरे में बीकानेर नगर के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों का तुलनात्मक अध्ययन नामक शोध सम्पन्न किया गया है । सुरेन्द्र प्रकाश महात्मा (1979) ने "राजकीय व अराजकीय विद्यालयों की कार्य प्रणाली के तुलनात्मक अध्ययन" में पाया कि अराजकीय विद्यालयों के प्रधानाध्यापक अपने अध्यापकों की समस्याओं को अपनत्व के साथ सुलझाते हैं । अध्यापकों की प्रधानाध्यापक में काफी आस्था रहती है। प्रधानाध्यापक स्कूल के परीक्षा परिणाम के प्रति काफी सतर्क हैं जबकि राजकीय विद्यालयों के प्रधानाध्यापक अध्यापकों की समस्याओं पर व्यक्तिगत रुचि कम दिखाते हैं । वे ध्यान रखते हैं कि अध्यापक के कालांश लगातार न आएं । वे पढ़ाने के लिए अध्यापकों को पुस्तकें उपलब्ध कराते हैं । अराजकीय विद्यालय के प्रधानाध्यापक व अध्यापकों के बीच निर्णय लेने का ढंग अधिकाधिक व नियमवादी है, जबकि राजकीय विद्यालयों में प्रजातान्त्रिक अधिक व नियमवादी कम है । अराजकीय विद्यालयों के प्रधानाध्यापक अपने अध्यापकों की सह-शैक्षिक प्रवृत्तियों से सम्बन्धित समस्याओं में व्यक्तिगत रुचि कम दिखाते हैं । यद्यपि यहाँ प्रधानाध्यापक प्रशासनिक क्षेत्र में अधिक सफल हैं तथापि स्टाफ के कर्मचारियों, छात्रों को उनमें आस्था अधिक है जबकि राजकीय विद्यालयों के प्रधानाध्यापक विद्यालय के सह-शैक्षिक कार्यक्रमों में काफी रुचि लेते हैं परन्तु वहाँ प्रधानाध्यापक प्रशासनिक दृष्टि से काफी कमजोर हैं । विद्यालयी कर्मचारियों की उनमें आस्था कम तथा तटस्थता ज्यादा है । अध्यापकों का स्कूल के सभी वर्गों के प्रति असहयोग है । बीकानेर नगर के सरकारी व गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों का "तुलनात्मक अध्ययन" में श्रीमती शारदा गहलोत (1981) ने पाया कि सरकारी विद्यालयों में हायर सैकण्डरी योग्यताधारी अध्यापकों की संख्या का प्रतिशत 66.74 तथा गैर सरकारी विद्यालयों में मात्र 44 प्रतिशत हैं जबकि गैर सरकारी विद्यालयों में स्नातक योग्यताधारी सरकारी विद्यालयों से 8 प्रतिशत अधिक है । गैर सरकारी विद्यालयों में से 40 वर्ष का अध्यापन अनुभव रखने वाले शिक्षक भी अधिक हैं । बाह्य खेलों की व्यवस्था "सरकारी विद्यालयों" में श्रेष्ठ है । सरकारी विद्यालयों में छात्र डायरी, शैक्षिक उपकरणों का उपयोग अध्यापन में प्रचलित नहीं है । इस शोध से प्राथमिक स्तर पर गैर सरकारी स्कूलों के श्रेष्ठ स्तर के कारणों पर प्रकाश पड़ता है।

अराजकीय प्राथमिक विद्यालयों का शैक्षिक स्तर उच्च क्यों नहीं होता है, इसकी कल्पना एक अन्य शोध से लगाई जा सकती है । पूर्व प्राथमिक विद्यालयों में वातावरण अच्छा पाया जाता है । बालकों को दण्ड के बजाय प्रेम से समझाया जाता है । स्वास्थ्य-निरीक्षण चिकित्सक द्वारा होता है । ऐसा तथ्य खोजा श्रीमती सतवन्त कौर (1971) ने "पूर्व प्राथमिक विद्यालयों के संगठनात्मक अध्ययन में । इन विद्यालयों में सोने की भी व्यवस्था है । ये सभी

संस्थान प्राइवेट संस्थाओं द्वारा चलाए जा रहे हैं । अधिकांश में माध्यम अंग्रेजी है । ऐसे ही एक अध्ययन "पूर्व प्राथमिक शिक्षण केन्द्रों के अध्ययन" में स्वर्णसूदन (1976) ने निष्कर्ष दिया कि नागरिकों का पूर्व प्राथमिक विद्यालयों की ओर अधिक ध्यान है । इन विद्यालयों में माध्यम अंग्रेजी है, अधिक शुल्क लेने के बाद भी आर्थिक संकट है । बच्चों को वैज्ञानिक ढंग से निर्देशन नहीं मिल पाता । उक्त दोनों अध्ययनों में अराजकीय प्राथमिक एवं पूर्व प्राथमिक विद्यालयों की श्रेष्ठता प्रकट होती है वहीं शशि सिंघवी (1988) के शोध "राजकीय तथा अराजकीय माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक स्वास्थ्य तथा प्रधानाध्यापकों के दायित्व निर्वाह का तुलनात्मक अध्ययन" से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर अराजकीय विद्यालयों के प्रधानाध्यापक, राजकीय विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की अपेक्षा संगठनात्मक स्वास्थ्य मूल्यों के आधार पर दायित्व का निर्वाह के क्षेत्र में श्रेष्ठतर पाए गए ।

शिक्षा प्रसार सेवा विभाग एवं कृषि प्रसार सेवा विभाग के प्रशासन एवं संगठन का अध्ययन में विनोद बाला श्रीमाली (1988) ने दोनों प्रसार विभागों की समानताओं को उजागर किया है । दोनों विभागों में शोध कार्य की कड़ी आलोचना की गई , छोटी पुस्तकों, पत्रिकाओं, अन्य सामग्री की उपयोगिता दोनों ने प्रतिपादित की, दोनों विभाग अपने क्षेत्र की नवीनतम जानकारी सर्व-साधारण तक पहुँचाने की अनिवार्यता पर जोर देते हैं । सफल संचालन में अर्थाभाव, अन्य सघन प्रभाव दोनों विभागों में पाया गया ।

विद्यालय के संगठनात्मक पक्ष को आधार मानकर सम्पन्न उक्त शोध कार्य अनुसन्धान प्रक्रिया तथा विषय की दृष्टि से उच्च श्रेणी के नहीं है तथापि इन शोधों के आधार पर विद्यालयों में दुर्बल प्रशासनिक व्यवस्था, दुर्बल संगठनात्मक तथ्यों सम्बन्धी जो बिन्दु उभर कर आये हैं, उनसे सरकारी विद्यालयों के संगठन में लाभ उठाया जा सकता है ।

4. विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं का विहंगम अध्ययन :

किसी भी शैक्षिक संस्था का समग्र अध्ययन करने से उसके ऐतिहासिक विकास, उसके प्रशासकीय एवं संगठनात्मक रूप, उसकी प्रदत्त सेवाओं का पता चलता है । इन तथ्यों से अन्य संस्थाएँ प्रेरणा ले सकती हैं तथा सम्बन्धित संस्था के कमजोर पक्षों को भी दुरुस्त किया जा सकता है । "राष्ट्रीय पुराभिलेखीय संस्थाओं के विशेष सन्दर्भ में उत्तर भारत की पुराभिलेखीय संस्थाओं का अध्ययन" डा. उषा पवन (1983) मे यहाँ शोध किया है। उन्होंने पाया कि इन संस्थाओं में स्टाफ पर 50% खर्च किया जाता है, तथा रिकार्ड के सर्वेक्षण, पुस्तकों के क्रय एवं उनके परिरक्षण पर बहुत कम खर्च किया जाता है । जबकि इन संस्थाओं का मुख्य काम पुस्तकों का परिरक्षण है । इन संस्थाओं का प्रकाशन कार्य अपर्याप्त पाया गया तथा विशिष्ट विषयों के शोध प्रोजेक्ट बहुत न्यून मात्रा में लिए गए । रिकार्ड कक्षों की स्थिति शोचनीय पाई गई । राजस्थान एवं उत्तरप्रदेश राज्य के अलावा अन्य किसी भी राज्य में इनके जीर्णोद्धार की कोई सुचारू व्यवस्था नहीं पाई गई । प्रकाशन की व्यवस्था भी हर राज्य में भिन्न-भिन्न पाई गई ।

जागृत की जाती है । जयपुर, श्रीगंगानगर और चूरू जिलों के निराश्रित बाल-गृहों की वास्तविक स्थिति के अध्ययन हेतु एक सर्वेक्षण में श्री भूपसिंह राजपूत (88) ने जयपुर, श्रीगंगानगर व चूरू जिले के पन्द्रह निराश्रित बालगृहों का अध्ययन कर प्रवेश सम्बन्धी अनियमितता, भवन अभाव, असन्तोषजनक शैक्षिक व्यवस्था, हाउस मदर का अयोग्य होना, पदाधिकारियों का कपट व्यवहार, वस्त्र, भोजन, चिकित्सा, मनोरंजन आदि क्षेत्रों में भारी खामियों की ओर संकेत किया है ।

इस प्रकार के दो शोध क्रमशः "राजस्थान में महिला विद्यालय उदयपुर का प्रादुर्भाव एवं विकास" ऊषा रानी भटनागर (1984) तथा "उदयपुर के श्रमिकों के लिए उच्च शिक्षा" साले मोहम्मद (1979) द्वारा सम्पन्न हुए हैं, जो यद्यपि शोध के मापदण्डों के आधार पर शोधकार्य नहीं कहे जा सकते हैं । ये संस्थाओं का विस्तृत परिचय है । उनमें उन संस्थाओं के शैक्षिक विकास, प्रमुख नवाचारों एवं प्रवृत्तियों का अध्ययन किया गया है जिन्हें नवोदित संस्थाएं अपने भावी विकास का आधार बना सकती हैं ।

5. सांस्कृतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन :

छात्रों में सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों तथा किशोर छात्र/छात्राओं में सामन्जस्य क्षमता सम्बन्धी कुल 4 शोध सम्पन्न हुए हैं । विद्यार्थियों में आस्थागत मूल्यों का पता लगाया है सरोज बन्सल (1986) ने अपने शोध "उदयपुर दिल्ली और अर्द्ध शहरी क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के सांस्कृतिक मूल्यों का ज्ञान " में । उन्होंने पाया कि हिन्दू संस्कृति के छात्रों में जन्म, पुनर्जन्म, प्रारब्ध एवं पुरुषार्थ के प्रति आस्था देखी गई । अन्य मूलभूत मूल्यों को भारतीय संस्कृति की विरासत माना । धर्मों का अन्तर मूलभूत संस्कृति के मूल्यों को प्रभावित नहीं करता । इसी प्रकार माध्यमिक स्तर पर रसायन शास्त्र के छात्रों में मूल्यों का पता लगाकर इनके गुणों से तुलना कर अशोक बाबू (1979) ने निष्कर्ष प्रकट किया कि कक्षा 11वीं के रसायन शास्त्र के छात्रों व रसायन शास्त्र के अध्यापकों में रसायन शास्त्र के मानवीय, यान्त्रिक व सैद्धान्तिक पक्ष से सार्थक सम्बन्ध हैं । छात्रों की उच्च सामाजिक व आर्थिक स्तर का रसायन शास्त्र के तीनों पक्षों से कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है ।

किशोर छात्राएं, छात्रों की अपेक्षा अधिक सामन्जस्य क्षमता रखती हैं । किशोर छात्र एवं छात्राओं के सौन्दर्य मूल में अन्तर पाया जाता है । माधवी (1983) ने अपने शोध "देहली के किशोर छात्र/छात्राओं की सामन्जस्य क्षमता एवं मूल्यों में सम्बन्ध" में यह अनुभव किया । उक्त शोध से प्राप्त निष्कर्ष में किशोर छात्र व छात्राओं में सैद्धान्तिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक व धार्मिक मूल्य समान पाये गये ।

"माध्यमिक छात्र-छात्राओं के जनतान्त्रिक मूल्य एवं उपलब्धि स्तर" नामक शोध में मालती दशोरा (1987) ने पाया कि सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा गैर सरकारी विद्यालयों तथा छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में अधिक जनतांत्रिक मूल्य पाए गए । माध्यमिक छात्र-छात्राओं में जनतांन्त्रिक मूल्य एवं उपलब्धि में सह-सम्बन्ध अत्यधिक धनात्मक है । ऐसे ही समान तथ्य मिथिलेश भार्गव (1987) के अनुसन्धान "जोधपुर की राजकीय, निजी एवं विशेष सम्प्रदाय द्वारा संचालित

माध्यमिक स्कूलों में उच्च सामाजिक नैतिक एवं धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन में पाए गए । प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार राजकीय विद्यालयों के छात्र, निजी एवं सम्प्रदाय के विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा अधिक आज्ञापालन में विश्वास करते हैं, ईमानदार होते हैं, विश्वबन्धुत्व की भावना रखते है, सहयोगी प्रवृत्ति में आत्मनिर्भर होते हैं तथा परिवर्तन की बात करते हैं । जबकि निजी विद्यालय के छात्र अधिक, आत्मविश्वासी पाए गए । विज्ञान वर्ग के छात्र कला वर्ग की अपेक्षा अधिक विश्वासी, सहनशील, आत्मनिर्भर, परिवर्तनशील गुण वाले पाए गए । इस्लामिक रीतिनीति द्वारा संचालित विद्यालय के छात्र समाज सेवा की भावना में विश्वास करने वाले, बड़ों के आज्ञा पालक पाए गए ।

उच्च माध्यमिक स्तर पर कला एवं विज्ञान संकाय की छात्राओं की रुचियों एवं मूल्यों के अध्ययन में ऊषा शर्मा (1987) ने कला, विज्ञान संकाय की छात्राओं की रुचियों, मूल्यों एवं रुचियों का अध्ययन कर पाया कि कला एवं विज्ञान संकाय की छात्राओं की रुचि क्षेत्रों में कोई भिन्नता नहीं पाई गई है । दोनों ही अपने अध्ययन विषयों का ही अध्ययन पसन्द करती हैं तथा क्षेत्र से सम्बन्धित व्यवसाय का चयन करना चाहती हैं । कला संकाय की छात्राओं की रुचियों एवं मूल्यों में शून्य सह-सम्बन्ध पाया गया है । विज्ञान संकाय की छात्राओं की सामाजिक रुचि व उनके सामाजिक मूल्य तथा स्वास्थ्य मूल्य व स्वास्थ्य रुचि में तो शून्य सह-सम्बन्ध है परन्तु उनकी राजनैतिक रुचि एवं राजनैतिक मूल्य तथा धार्मिक रुचि एवं धार्मिक मूल्य में ऋणात्मक सह-सम्बन्ध पाया जाता है ।

छात्र-छात्राओं को आधार मानकर ही अंजली फाटक (1987) ने अपने अध्ययन "कान्वेन्ट तथा सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों व छात्राओं के मूल्यों, आकांक्षाओं एवं उपलब्धि प्रेरण का तुलनात्मक अध्ययन में निष्कर्ष दिए हैं कि कान्वेन्ट विद्यालय के छात्र राष्ट्रीय राजनैतिक व स्वमूल्यों को सरकारी विद्यालय के छात्रों की बजाय अधिक महत्व देते हैं। कान्वेन्ट विद्यालय के छात्र-छात्राएं अपेक्षाकृत बेहतर हैं । दोनों ही प्रकार के छात्र व छात्राओं के उपलब्धि प्रेरण निम्न स्तरीय रहे हैं । कान्वेन्ट तथा सरकारी विद्यालय की छात्राओं के उपलब्धि प्रेरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है । यही बात छात्रों में भी पायी गई ।

6. पाठ्य विधियों का तुलनात्मक अध्ययन :

छात्रों को दिया जाने वाला ज्ञान उस तक कितनी मात्रा में पहुँच रहा है, यह पाठ्य विधि पर निर्भर करता है । कौन-सी विधि उपयोगी रहती है, इस दृष्टि से के. एम. गोयल (1976) ने खोज विधि एवं व्याख्यान विधि के द्वारा पढ़ाए गए छात्रों के समूहों की सम्प्राप्ति (उपलब्धि) का तुलनात्मक अध्ययन किया तथा भिन्न बुद्धिमत्ता स्तर समूह के छात्रों की उपलब्धि (सम्प्राप्ति) का अध्ययन कर उन्होंने पाया कि खोज विधि एवं व्याख्यान विधि से शिक्षण कराने पर उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं पाया गया । भिन्न-भिन्न बुद्धिमत्ता स्तर के आधार पर भी

(1987) ने किया । उन्होंने कक्षा 9 के छात्रों के दो अलग-अलग समूहों को नागरिक शास्त्र विषय की इकाई 'निर्वाचन'' का शिक्षण व्याख्यान विधि तथा प्रायोजना विधि से कराया तथा उनकी उपलब्धि में दोनों विधियों में .05 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया। कक्षा नवम् के छात्रों की निष्पति ''निर्वाचन'' इकाई हेतु प्रायोजना विधि में व्याख्यान विधि से अधिक होती है। अतः इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि नागरिक शास्त्र विषय में अध्यापन हेतु प्रायोजना विधि, व्याख्यान विधि से अधिक प्रभावशाली है ।

(ब) मौखिक कक्षेत्तर अन्तः क्रिया का तुलनात्मक अध्ययन :

अप्रभावशाली विज्ञान अध्यापक 56.22 प्रतिशत व्याख्यान में व्यतीत करते हैं, जबकि प्रभावशाली विज्ञान अध्यापक 21.61 प्रतिशत व्याख्यान में व्यतीत करते हैं, ऐसा अनुभव किया है ललिता शर्मा (1980) ने अपने शोध सैकण्डरी स्कूल बोर्ड मापदण्ड के अनुसार उन विज्ञान अध्यापकों का मौखिक कक्षेत्तर अन्तःक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन करके । इनका मानना है कि प्रभावशाली विज्ञान अध्यापक वर्णनात्मक और सामान्यीकरण विधि का अधिक उपयोग करते हैं। प्रभावशाली विज्ञान अध्यापक के विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर देने में अधिक समय लेते हैं । इन अध्ययनों से खोज विधि की उपयोगिता सामने आई है । तथा यह तथ्य उभर कर आया है कि व्याख्यान के बजाय छात्रों को क्रियाशील रखना उपयोगी है ।

पूर्व सेवारत अध्यापकों (छात्राध्यापकों) पर प्रतिपुष्टि (फीड बैक) तकनीकी का एफ. आई. ए. एस. एवं आर. सी. ए. एस. आई. ए. द्वारा विज्ञान शिक्षण की अन्तर प्रक्रिया को देखकर तथा फीड बैक पद्धति व परम्परागत विधि का तुलनात्मक अध्ययन कर जया श्री पण्डा (1980) ने निष्कर्ष दिया कि एफ. आई. ए. एस. की अपेक्षा आर. सी. ए. एस. आई. ए. विधि कई क्षेत्रों में अच्छी है ।

7. सृजनात्मक क्षमता से सम्बन्धित तुलनात्मक अध्ययन :

छात्रों को यदि पुस्तकालय ज्ञान ही दिया जए तो वह सृजनात्मक क्षमता अर्जित नहीं कर पाते । सृजनात्मक क्षमता का बुद्धिलब्धि से घनिष्ठ सम्बन्ध है यह निष्कर्ष सहदेव भट्ट ने अपने शोध ''नेपाल व भारत के छात्रों की अध्यापकों के प्रति परसेप्शन'' की तुलना में प्रकट किया है । उन्होंने पाया कि भारतीय अध्यापक अधिक प्रभावशाली और क्रियाशील हैं । वे निर्णय लेने में भी श्रेष्ठ रहे हैं जबकि दूसरी और समस्या समाधान और सृजनात्मक विधि में नेपाल के अध्यापक श्रेष्ठ रहे । अध्यापकों के प्रति परसेप्शन में भारतीय छात्रों के धनात्मक श्रेणियों में अधिक अंक व ऋणात्मक श्रेणियों में कम अंक तथा नेपाली छात्रों के धनात्मक श्रेणियों में कम व ऋणात्मक श्रेणियों में अधिक अंक रहे । निजी एवं केन्द्रीय विद्यालय के सृजनात्मक एवं सृजनात्मक रहित विचारधारा वाले प्राथमिक स्तर के बालकों की उपलब्धि से सम्बन्धित अभिकेन्द्रित एवं उपकेन्द्रित विचारधारा का तुलनात्मक अध्ययन में रामस्वरूप धाकड़ (1988) ने निष्कर्ष प्राप्त किए कि दोनों ही प्रकार के विद्यालयों के असृजनात्मक एवं सृजनात्मक छात्रों की उच्च अभिकेन्द्रित एवं उच्च उपकेन्द्रित विचार धारा के घटकों में कोई भिन्नता नहीं

होती । दोनों विद्यालयों के छात्र बुद्धिमत्ता में भिन्न होते हैं परन्तु लचीलापन, मौलिकता एवं विस्तार की उपकेन्द्रित विचारधारा में भिन्न होते हैं । व्यक्तित्व कारक एवं उपलब्धि में सहसम्बन्ध नहीं होता ।

इसी प्रकार के तथ्य विजय पाल सिंह (1988) के शोध "विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में कक्षा 7 के अध्ययनरत छात्रों की सृजनात्मकता एवं बुद्धिमत्ता की तुलना" में प्रकट होते हैं । प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निजी एवं नवोदय विद्यालय के छात्रों की कुल सृजनात्मकता एवं बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण सम्बन्ध है । जबकि अशाब्दिक सृजनात्मकता एवं बुद्धिमत्ता में सम्बन्ध नहीं है । शाब्दिक सृजनात्मक चिन्तन में निजी विद्यालय के छात्र सरकारी व नवोदय की अपेक्षा अधिक अच्छे हैं । अशाब्दिक सृजनात्मक चिन्तन में नवोदय विद्यालय के छात्र सरकारी व निजी छात्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ हैं । नवोदय के छात्रों में सृजनात्मक योग्यता अधिक है । नवोदय विद्यालय के छात्रों का बौद्धिक स्तर निजी एवं सरकारी विद्यालय के छात्रों की तुलना में उच्च है। पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों के विशेष ग्रुप (समूह) की समस्याएं हल करने के व्यवहार का अध्ययन नामक पीएच. डी. स्तरीय शोध में राशा एन्डाविड (1987) ने व्यावहारिक विचारधारा में छात्राओं से छात्र अधिक कुशल पाये गये । तथा सृजनात्मकता में दोनों समान पाये गये ।

8. अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन :

विज्ञान एवं वाणिज्य के छात्रों के सृजनात्मक चिन्तन में काफी अन्तर है जबकि चिन्ता व शैक्षिक उपलब्धि में नहीं । विज्ञान एवं वाणिज्य के छात्रों की सृजनात्मक चिन्तन, चिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर का अध्ययन कर एल. एन. कासवान (1976) ने निष्कर्ष निकाला कि विज्ञान एवं वाणिज्य के छात्रों के सृजनात्मक चिन्तन व चिन्ता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से कोई सम्बन्ध नहीं है ।

राजस्थान में ग्रामीण छात्र विज्ञान में अधिक रुचि लेते हैं जबकि उत्तरप्रदेश के शहरी क्षेत्र के छात्र विज्ञान में रुचि अधिक रखते हैं । इसी प्रकार राजस्थान में ग्रामीण छात्र और उत्तरप्रदेश के शहरी छात्र विज्ञान ग्रहण करने की क्षमता रखते हैं। यह निष्कर्ष विवेक चतुर्वेदी (1979) के शोध "राजस्थान व उत्तरप्रदेश के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रीय बालकों के विज्ञान के प्रति रुचि व ग्राह्य क्षमता का पता लगाकर परस्पर सम्बन्ध निकाले । इसी प्रकार विज्ञान पढ़ने एवं न पढ़ने वाले छात्रों की सृजनात्मक प्रतिभा सम्बन्धी अध्ययन' में आर सी. शर्मा (1979) अनुभव करते हैं कि सृजनात्मक प्रतिभा बौद्धिक क्षमता, विज्ञान नहीं पढ़ने वालों की अपेक्षा विज्ञान पढ़ने वाले छात्रों में अधिक होती है ।

"विज्ञान के छात्रों की सृजनात्मक एवं परिकल्पना तथा बुद्धिमत्ता एवं परिकल्पना में सम्बन्ध' मालूम करने पर अपने शोध में प्रो. अज़ियुद्दीन सिद्दीकी (1980) ने पाया कि विज्ञान

विज्ञान अध्यापकों की व्यावसायिक आवश्यकताएं एवं शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के बीच सम्बन्ध को तुलनात्मक रूप से विभा गुप्ता ने (1980) जाँचा है । प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर उन्होंने पाया कि विज्ञान अध्यापकों की व्यावसायिक आवश्यकताएं एवं उनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, उनके लिंग भेद (पुरुष या महिला) के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है । जनजाति के छात्रों में दुश्चिन्ता की वृद्धि के साथ इनके बुद्धिलब्धिस्तर में भी वृद्धि होती है, जबकि यह वृद्धि गैर जनजाति के छात्रों में कम होती है। दोनों ही जाति के छात्रों में दुश्चिन्ताएं केवल संवेगात्मक क्षेत्र से सम्बन्धित एवं समान होती हैं। उक्त तथ्य विनीता गुप्ता (1988) के अनुसन्धान में उच्च माध्यमिक स्तर के जनजाति एवं गैर जनजाति छात्रों की दुश्चिन्ता एवं बुद्धिलब्धि का अध्ययन" से प्रकट हुए हैं । जनजाति के छात्रों की बुद्धिलब्धि गैर जनजाति के छात्रों की बुद्धिलब्धि की तुलना में कम होती है । गैर जनजाति छात्रों में दुश्चिन्ताएं, शैक्षिक संवेगात्मक क्षेत्रों से सम्बन्धित होती हैं जबकि जनजाति के छात्रों में दुश्चिन्ताएं पारिवारिक, सामाजिक आर्थिक संवेगात्मक व शारीरिक क्षेत्रों से सम्बन्धित होती हैं ।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रम का अध्ययन करने वाले छात्रों को आधार मानकर महेन्द्र प्रताप सिंह (1988) ने अपने अनुसन्धान "छात्रों के विभिन्न वर्गों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति, अधिगम पर्यावरण, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर में अन्तर" का अध्ययन में पाया कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के पाठ्यक्रम को पढ़ने वाले छात्रों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति अधिक है वहीं केन्द्रीय मा. शि. बोर्ड से सम्बन्धित विद्यालयों में अधिगम पर्यावरण अधिक है । दोनों बोर्डों से सम्बन्धित छात्रों की तुलना में अधिगम पर्यावरण पर छात्राओं की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति है । दोनों बोर्ड से सम्बन्धित छात्रों के सामाजिक, आर्थिक स्तर में अन्तर पाया गया परन्तु छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर में कोई अन्तर नहीं है । वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अधिगम पर्यावरण, एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर से सह सम्बन्ध नगण्य है ।

केन्द्रीय एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में अध्ययनगत आदतों का तुलनात्मक अध्ययन में मरूधर कँवर (1987) ने पाया कि केन्द्रीय विद्यालयों के विज्ञान, वाणिज्य एवं कला वर्ग के विद्यार्थी अपनी अध्ययनरत आदतों में राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों से अपेक्षाकृत अधिक है ।

9. अध्यापकों की व्यावसायिक प्रशासनिक एवं प्रशिक्षण सम्बन्धी समस्याओं पर शोध :

उत्तरप्रदेश और राजस्थान राज्यों के माध्यमिक विद्यालयों के वाणिज्य अध्यापकों की व्यावसायिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन में जसपाल सिंह (1979) ने पाया कि दोनो प्रदेशों के वाणिज्य अध्यापकों में भिन्नता है । राजस्थान का वाणिज्य अध्यापक उत्तरप्रदेश के वाणिज्य अध्यापक की अपेक्षा छात्रों को असामान्य व्यवहार व सब छात्रों के लिए एक सा पाठ्यक्रम होने से अधिक परेशान है । राजस्थान की अपेक्षा उत्तरप्रदेश में कक्षा में छात्रों की

अधिकता, वर्गों की अधिकता, वर्ग भिन्नता, अनुशासनहीनता जैसी समस्याएं अधिक अनुभव की गई। इस शोध के आधार पर तथ्य प्रकट होता है कि अध्यापकों का प्रशिक्षित होना, कक्षा में छात्रों की संख्या सीमित होना अत्यन्त जरूरी है ।

"ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ टीचर एजुकेशन इन द स्टेट ऑफ हरियाणा एण्ड इट्स कम्परिजन विद देट ऑफ सी. आई. ई. देहली एण्ड आर. सी. ई. अजमेर" नामक पीएच डी. स्तरीय शोध में डी. डी. यादव (1980) ने पाया कि हरियाणा में 1952 में सर्वप्रथम शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवस्था हुई । वहां 91.5 प्रतिशत महाविद्यालय प्राइवेट हैं । विकास अनियोजित है। 99.5% महाविद्यालय स्वतन्त्र रूप से कार्य कर रहे हैं । 85.7% महाविद्यालय शहरों में स्थित हैं । एक भी महाविद्यालय पीएच. डी. स्तर की शिक्षा प्रदान नहीं करता । दो महाविद्यालयों में एम. एड. की कक्षाएं चलती हैं । 71.4% महाविद्यालय प्राइमरी व सैकण्डरी शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था साथ-साथ करते हैं । केवल एक महाविद्यालय का संचालन राज्य सरकार करती है। सेवा विस्तार योजना एवं अन्तः सेवा योजना का अभाव पाया गया । सह पाठ्यगामी प्रवृत्तियों की दयनीय स्थिति पाई गई । अहिंसा, सत्य, अनुशासन जैसे मूल्यों पर सभी सहमत थे। परन्तु शिक्षक-शिक्षा के स्पष्ट उद्देश्यों का अभाव पाया गया लेकिन शिक्षक प्रशिक्षक कुछ लक्ष्यों पर एक मत पाए गए । सेन्ट्रल इन्स्टीट्यूट ऑफ एजूकेशन देहली शिक्षण अभ्यास पर तुलनात्मक दृष्टि से अधिक ध्यान देती है ।

देवदत्त यादव (1976) ने "सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम" में सेवारत अध्यापकों के मतों का तुलनात्मक अध्ययन कर पाया कि तीनों राज्यों के अध्यापकों की श्रेणी व स्थिति अनुसार मतभेद है । तीनों राज्यों के अध्यापकों का मत समान है और यह मत है कि सेवारत शिक्षा जरूरी है । यह 10+2 शिक्षा प्रणाली के लिए आवश्यक मानी गई । सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम महाविद्यालयों के बजाय विद्यालयों में होने चाहिए । प्रशिक्षण का कार्यक्रम अध्यापक को स्वयं बनाना चाहिए । केशव प्रसाद बरावल (1978) ने छात्राध्यापकों को (माध्यमिक कक्षा में पढ़ाने वाले) की सृजनात्मकता का उनके शिक्षक व्यवहार से तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि विज्ञान छात्राध्यापकों की सृजनात्मकता बढ़ती है तो वे कक्षा में छात्रों को आर्थिक निर्देश देते हैं। कक्षा में मौन की स्थिति रहती है, प्रशंसा करने की प्रवृत्ति कम होती है, छात्रों के विचारों का कम सम्मान करते हैं व छात्र अनुक्रिया घटती है ।

उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापक-अध्यापिकाओं की समस्याओं के तुलनात्मक अध्ययन में भँवर लाल नागदा (1984) ने पाया कि अधिकतर शिक्षकों ने शिक्षण व्यवसाय स्वेच्छा से चुना है । वे सन्तुष्ट भी हैं परन्तु जो वेतन मिलता है वह कम है । अन्य सुविधाएं भी नगण्य हैं। शहरी सुविधाओं से आकर्षित होकर ही अधिकांश शिक्षक शहरों में रहना चाहते हैं । अधिकांश शिक्षक ट्यूशन के खिलाफ हैं । शिक्षक मानते हैं कि शहरों की अपेक्षा गांवों में शिक्षकों के साथ छात्रों एवं अभिभावकों के सम्बन्ध घनिष्ठ होते हैं । सम्मान अधिक है, आय कम है । अधिकांश शिक्षकों ने आय कम होने, विद्यालयों में साधनों का

अभाव, पदोन्नति समय पर न होने, प्रशासनिक पक्षपात, कार्यालय सम्बन्धी परेशानियां बतलाई । योग्यतानुसार वेतन बढ़ाने की मांग की गई ।

"बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के अध्यापन दक्षता का उनके व्यक्तित्व, बुद्धि एवं शैक्षिक निष्पत्ति में सह सम्बन्ध" नामक अध्ययन में व्यास (1987) ने अध्यापन दक्षता एवं व्यक्तित्व की बहिर्मुखी दिशा के बीच, अध्यापन दक्षता एवं व्यक्तित्व की अन्तर्मुखी दिशा के बीच, सह सम्बन्ध क्रमश: +5885 एवं −3518 प्राप्त कर निष्कर्ष दिया कि अध्यापन दक्षता वाले प्रशिक्षणार्थियों में व्यक्तित्व की बहिर्मुखी दिशा का होना सम्भाव्य है। अच्छी निष्पत्ति वाले प्रशिक्षणार्थी अध्यापन में भी उतने ही दक्ष हों, यह आवश्यक नहीं है।

पी.टी.ई.टी. एवं योग्यता के आधार पर बी.एड. में प्रवेश का तुलनात्मक अध्ययन में विविध तथ्य प्रकट होते हैं तथा पी.टी.ई.टी. के आधार पर प्रवेश सभी प्रकार से श्रेष्ठ पाया गया। अपने अध्ययन में सोनी (1988) ने पाया कि पी.टी.ई.टी. व योग्यता के आधार से बीएड. में प्रवेश प्राप्त छात्र-छात्राओं के माध्यमिक स्तर पर प्राप्त श्रेणी में कोई अन्तर नहीं पाया गया।। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राध्यापक व प्रवक्ताओं ने बी.एड. में प्रवेश के लिये पी.टी.ई.टी. को अधिक श्रेष्ठ माना।

"अनुसुचित जाति व गैर अनुसुचित जाति के स्नातक छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व एवं सामन्जस्य तथा स्वधारणा के तुलनात्मक अध्ययन में सोनी (1987) ने दोनों प्रकार के छात्राध्यापकों में शंकालुपन, कल्पनाशील, अविचलता, आदतें समान रूप से पाई । तथा गैर अनुसुचित जति के छात्राध्यापक प्रसन्नचित्त, विशिष्ट, सामान्य, शान्त, धार्मिक वृत्ति के पाये गये ।

10. शैक्षिक उद्देश्य के सन्दर्भ में शोध कार्य :

"कोठारी आयोग द्वारा निर्दिष्ट शैक्षिक उद्देश्यों तथा उनकी व्यवहृति का अध्ययन" में भनोत (1981) ने बीकानेर के विद्यालयों में प्रचलित शैक्षिक उद्देश्यों का पता लगाया है। प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर स्वतन्त्र अध्ययन उद्देश्य की पूर्ति 49% विद्यालय कर रहे हैं। 54 प्रतिशत स्थितियों में पुस्तकालय व्यवस्था का अभाव है। 90 प्रतिशत विद्यालय समाचार पत्र व पत्रिकाएं पढ़ने की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। निष्कर्ष रूप में व्यावसायिक शिक्षा सीखो कमाओ, विज्ञान क्लब, विज्ञान पत्रिकाएं, विज्ञान मेले, विद्यालय वाटिका, राष्ट्रीय सेवा योजना, धर्म निरपेक्षता, नैतिक मूल्य जैसे उद्देश्यों की पूर्ति शत-प्रतिशत कोई विद्यालय नहीं कर पा रहा है।

शर्मा (1984) के अनुसार नई शिक्षा नीति में सभी तत्वों के समावेश से आदर्श शिक्षा दी जा सकती है।

11. पाठ्य विषय सम्बन्धी अध्ययन :

(अ) हिन्दी भाषा सम्बन्धी शोध : "हाड़ौती सम्भाग (कोटा क्षेत्र) छात्र-छात्राओं की हिन्दी में वर्तनी एवं व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियों का अध्ययन" में अनुजा सक्सेना (1980) ने पाया कि छात्र/छात्रा में 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ', वर्ण में त्रुटियां अधिक हैं। 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ', तथा

ऋ वर्ण सम्बन्धी मात्राओं की त्रुटियां भी दोनों में समान हैं, जबकि अ, आ, वर्ण में कम हैं। व्यंजन सम्बन्धी त्रुटियां श, स, ष, सम्बन्धी अधिक रहती हैं। बुद्धिभेद का त्रुटियों के क्षेत्र में कोई प्रभाव नहीं है।

अहिन्दी भाषी छात्रों की हिन्दी अध्ययन में विभिन्न कठिनाइयों के अध्ययन में अमरीश कुमार जैन (1982) ने पाया कि वर्तनी सम्बन्धी भूलों में तमिल भाषी छात्रों ने इ-ई मात्रा की, अनुस्वार एवं चन्द्र बिन्दु की, एवं स, श, ष वर्णों की अशुद्धियां सर्वाधिक थीं। व्यंजनों में क, ख, ग, च, छ, ज, व की गलतियां देखी गईं। व्याकरण सम्बन्धी भूलों में सर्वाधिक गलतियां वाक्य रचना, संज्ञा व क्रिया सम्बन्धी की गईं। उच्चारण के सन्दर्भ में 'इ-ई' स, श, ष, क, ख, च, छ, ज, आदि वर्णों की ध्वनियों में त्रुटियां पाई गईं। अहिन्दी भाषी छात्र उच्चारण करते समय व्यंजनों का लोप भी कर देते हैं।

(ब) अंग्रेजी भाषा सम्बन्धी अध्ययन : छात्रों की अंग्रेजी में बोधगम्य पठन क्षमता, बुद्धिमता, शैक्षिक संप्राप्ति,. सामाजिक-आर्थिक स्तर में महत्त्वपूर्ण सह सम्बन्ध है। उक्त सह सम्बन्ध बालक-बालिकाओं दोनों वर्ग में पाया गया। शैक्षिक संप्राप्ति व सामाजिक व आर्थिक स्तर, छात्र व छात्राओं की अंग्रेजी बोधगम्य पठन क्षमता में काफी अन्तर पाया गया। ग्रामीण व नगरीय समूह में बुद्धिमता स्तर, शैक्षिक सम्प्राप्ति, सामाजिक-आर्थिक स्तर, अंग्रेजी में बोधगम्य पठन क्षमता, लिंग भिन्नता में महत्त्वपूर्ण अन्तर पाया गया।

अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की उपलब्धि हिन्दी माध्यम के छात्रों की बजाय उच्च है। अंग्रेजी माध्यम के छात्र गलतियां कम करते हैं, और उनकी समझ प्रभावशाली है। "यह निष्कर्ष दिया अनिल कुमार पाण्डे (1981) ने अपने शोध अंग्रेजी माध्यम व हिन्दी माध्यम के छात्रों की अंग्रेजी विषय की उपलब्धि व इससे की जाने वाली त्रुटियों के अध्ययन में।

(स) वाणिज्य विषय सम्बन्धी शोध : पुस्तपालन में नियमित छात्रों की निष्पत्ति पत्राचार पाठ्यक्रम के छात्रों से अच्छी है। वे त्रुटियां कम करते हैं, तथा सिद्धान्तों, नियमों व विधियों को नियमित छात्र अच्छी तरह समझते हैं। यह तथ्य एन.सी. दोतिया (1978) ने नियमित व पत्राचार पाठ्यक्रम वाले छात्रों की बुक कीपिंग (बहीखाता) में निष्पत्ति का अध्ययन से प्रकट किया।

इसी प्रकार गणित विषय में प्राइवेट छात्र, नियमित छात्रों की तुलना में सैकेण्डरी गणित के प्रश्नपत्र के हल में कम त्रुटियां करते हैं। यह तथ्य प्रकट किया केदार सिंह (1976) ने अपने शोध "नियमित व प्राइवेट सैकण्डरी के परीक्षा देने वाले छात्रों द्वारा गणित में की जाने वाली त्रुटियों का तुलनात्मक अध्ययन में।"

12. विद्यालयों की समस्याएं सम्बन्धी अध्ययन :

जोधपुर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता के कारणों का तुलनात्मक अध्ययन में राजबाला शर्मा (1987) ने अनुशासनहीनता के प्रमुख कारणों में शिक्षकों

कर सकेगा । कौनसी विधि किस विषय अध्यापन में सफल रही हैं तथा किस देश में कौन-कौन सी अध्यापन विधियां चल रही हैं और भारतीय सन्दर्भ में कौन सी विधि उचित है, इसका निर्णय तब ही ले सकेगा जब वह सभी प्रकार के ज्ञान से परिपूर्ण होगा ।

15. सम्भावनाएँ एवं सुझाव

इन शोध कार्यो को देखने से स्पष्ट होता है कि पी. एच. डी. स्तरीय शोध कार्यो को छोड़कर एम. एड. स्तरीय शोध कार्य शोध मापदण्ड पर खरे नहीं उतरते । अनुसंधान विधियों, अनुसंधान के प्रकारों की विविधता नगण्य है । उपकरणों के निर्माण एवं सांख्यकी प्रयोग से सभी ने बचने का प्रयास किया है । ऐतिहासिक शोध अधिक लिए गए हैं । अतः सम्बन्धित संस्थानों को चाहिए कि शोधार्थियों को उचित प्रशिक्षण देकर अनुसंधान कार्य सम्पन्न कराएं । उन्हें निःशुल्क निर्देश पुस्तकालय तथा यात्रा सुविधा दी जाएं । अनुसंधान निष्कर्षों को विभाग में लागू किया जाए ।

सर्वेक्षण एवं ऐतिहासिक विधि के अलावा शोधार्थियों को चाहिए कि वे अन्य विधियों का भी प्रयोग करें यथा प्रयोगात्मक विधि, वैयक्तिक अध्ययन, क्रियात्मक अनुसंधान आदि , उपकरणों का निर्माण भी स्तरीकृत हो ताकि सही परिणाम निकाल सकें । अस्तरीकृत उपकरणों में से त्रुटिपूर्ण परिणाम निकल सकते हैं । अतः उपकरणों की प्रामाणिकता पर जोर दिया जाना वांछनीय है ।

अधिकतर शोधार्थियों ने केवल प्रश्नावली, साक्षात्कार, अभिलेख अध्ययन ही किया है, जबकि इसके अतिरिक्त अन्य उपकरणों निरीक्षण, अनुसुचि तथा विश्व के स्तरीय उपकरणों का प्रयोग किया जाना चाहिए । सांख्यकी के प्रयोग से तो सभी ने किनारा किया है । अधिकतर शोधार्थियों मे औसत, प्रतिशत को काम में लिया है जबकि उन्हें मध्यमान, मध्यांक, बहुलक, विचलन, काई स्कवायर, एनेलेसिस ऑफ वेरीयन्स आदि का प्रयोग करना चाहिए । जो शोध किए जाएं तथा जिनका शैक्षिक महत्व हो उनका प्रचार-प्रसार इस प्रकार किया जाए कि वह साधारण नागरिक एवं साधारण विद्यार्थी से लेकर प्रकाण्ड विद्वान के काम में आ सकें । शोधसार, शोध की भाषा में न होकर एक साधारण व्यक्ति की भाषा में हो ताकि वे उसे समझकर स्वयं व समाज को उसका लाभ दे सकें ।

भविष्य में होने वाले शोध-कार्यो में निम्न विषय हो सकते है :

1. सांस्कृतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन । 2. विभिन्न राज्यों के पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन । 3. भारतीय छात्रों में प्रकृति प्रेम, सौन्दर्य प्रेम तथा खेलकूद के प्रति ह्रास होती प्रकृति के सम्बन्ध में अध्ययन । 4. भारत और रूस की व्यावसायिक शिक्षा, भारत और जापान के शिक्षक, भारत और रूस/जापान की खेल नीति आदि का अध्ययन । राजस्थान में माध्यमिक शिक्षा निदेशक एवं कॉलेज शिक्षा निदेशक के शैक्षिक नेतृत्व का अध्ययन । 5. राजस्थान माध्यमिक शिक्षा निदेशक एवं उत्तरप्रदेश माध्यमिक शिक्षा निदेशक के शैक्षिक नेतृत्व का तुलनात्मक अध्ययन । 6. राजस्थान के मूल विद्यार्थियों तथा उत्तरप्रदेश के मूल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन . 7. दोषपूर्ण परीक्षा का विशद अध्ययन । 8. माध्यमिक शिक्षा

बोर्ड, राजस्थान के प्रत्येक विषय पाठ्‌यक्रम का केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा अन्य प्रान्तों के माध्यमिक शिक्षा बोर्डो के पाठ्‌यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन करना । 9. हिन्दी के पाठ्‌यक्रम का आधार अलग-अलग कक्षाओं में कौन-कौन से क्षेत्र हों, प्रत्येक कक्षा के सम्पूर्ण पाठ्‌यक्रम में विचार, लोक जीवन, व्याकरण, अवबोध, काव्य, नैतिकता, राष्ट्रीय व सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का समावेश किस अनुपात में-का अध्ययन । 10. बी. एड्. प्रशिक्षण पाठ्‌यक्रम क्या छात्राध्यापकों में ऐसी भाव भूमि तैयार करने में सक्षम है जो उन्हें देश, समाज व परिवार के अनुकूल बना सके . . . का अध्ययन । 11. आज की आवश्यकता व समय की मांग को देखते हुए शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्‌यक्रम की उपयोगिता का अध्ययन ।

वाचस्पति शोध सार

वीरेन्द्र सिंह : भारतीय और विदेशों के चयित विश्वविद्यालयों के प्रशासन का तुलनात्मक अध्ययन, पीएच. डी., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1978

इस अध्ययन में शोधकर्त्ता ने 11 देशों के 23 विश्वविद्यालयों को न्यादर्श के रूप में लेकर अभिलेख, विश्लेषण व सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है तथा निम्न निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं । 1. सभी विश्वविद्यालयों की स्थापना केन्द्रीय/राज्य विधायिका द्वारा की गई है । 2. विश्वविद्यालय को प्रभावित संशोधित करने वाले 4 तत्व पाए गए : (1) राजनीतिक दबाव (2) अधिकारी वर्ग की इच्छा (3) समय व परिस्थिति की मांग मुख्य है । 3. पदोन्नति का आधार वरिष्ठता, साक्षात्कार एवं राजनैतिक दबाव रहा है । 4. प्रवेश के लिए शैक्षिक अभिलेख, प्रवेश परीक्षा, साक्षात्कार आरक्षण एवं राजनैतिक पृष्ठ भूमि मुख्य रहे हैं । 5. छात्रों का प्रतिनिधित्व सभी में पाया गया।

उपेन्द्रनाथ दीक्षित : भारतीय शिक्षा पर ब्रिटिश शिक्षा नीति का प्रभाव (1984 से 1904), पीएच. डी., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1975

इस अध्ययन में ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया गया । निम्न निष्कर्ष सामने आये । प्राथमिक शिक्षा में सरकारी लगाव न होना एवं धार्मिक तटस्थता । 1902 तक गुणात्मक शिक्षा के लिए निजी शिक्षण संस्थाओं पर पूर्ण नियन्त्रण । माध्यमिक शिक्षा और रोजगार का सम्बन्ध, छात्रवृत्ति एवं शिक्षा का सरकारीकरण, विश्वविद्यालयी शिक्षा डिग्रियों को मान्यता प्राप्त हुई । प्रवेश परीक्षा प्रारम्भ हुई तथा चुनावी प्रक्रिया के कारण विश्वविद्यालयी शिक्षा व्यवस्था प्रभावित रही । 33 डिस्पेच के अन्तर्गत सुविधाएं उपलब्ध कराई गई परन्तु परीक्षा परिणाम के आधार पर अनुदान मिलने के कारण संस्थाओं में प्रतिस्पर्धा की भावना जागृत हुई ।

32 विद्यालयों के 150 छात्र न्यादर्श के रूप में लिए गए। शोधकर्त्री ने सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है तथा सांस्कृतिक मूल्य कथनावली मानवीकृत उपकरण के रूप में प्रयोग में लिए हैं।

निष्कर्ष :

सामान्यतः विद्यार्थियों में श्रम की गरिमा, ईश्वर और उचित माध्यम से धन कमाना भारतीय नारी के सम्मान को अत्यधिक मूल्यवान माना गया है। अन्य मूलभूत मूल्यों को भारतीय संस्कृति की विरासत माना है। हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई संस्कृति के आधारभूत मूल्य धर्मो के अन्दर से प्रभावित नहीं होते। सांस्कृतिक विरासत को देखते हुए विद्यालयों में नैतिक शिक्षा देने हेतु सभी ने जोर दिया।

यादव डी. डी. : हरियाणा एवं सी. आई. ई. देहली तथा आर. सी. ई. ए. अजमेर की शिक्षक प्रशिक्षण विधि का तुलनात्मक अध्ययन, राजस्थान विश्वविद्यालय, 1980

निष्कर्ष :

1. सैन्ट्रल इन्सीट्यूट ऑफ एजूकेशन देहली शिक्षण अभ्यास पर तुलनात्मक दृष्टि से अधिक ध्यान देती है। 2. शिक्षण अभ्यास-विधि (शिक्षण) व्याख्यान आधारित पाई गई। 3. भौतिक सुविधाओं में 81% के पास स्वयं के भवन है। 4. छः महाविद्यालयों के अलावा सभी के पास खेल के मैदान है। 5. अहिंसा, सत्य एवं अनुशासन जैसे मूल्यों पर सभी सहमत थे परन्तु शिक्षा के उद्देश्यों का अभाव था, लेकिन शिक्षक प्रशिक्षक कुछ लक्ष्यों पर एकमत पाए गए। 6. 19% प्रतिशत महाविद्यालयों में आवासीय सुविधा पाई गई। 7. 76.2% में सह शिक्षा पाई गई। 8. हरियाणा में एक भी महाविद्यालय पीएच. डी. स्तर की शिक्षा प्रदान नहीं करता। 9. केवल एक महाविद्यालय का संचालन हरियाणा सरकार करती है। बाकी सब निजी संस्थाएं हैं जिन्हें 25% से 57% तक सरकारी अनुदान मिलता है।

ऊषा पवन : राष्ट्रीय पुराभिलेखीय संस्थाओं के विशेष सन्दर्भ में उत्तर भारती की पुराभिलेखीय संस्थाओं का अध्ययन, पीएच. डी. राजस्थान विश्वविद्यालय, 1983

निष्कर्ष :

1. इन संस्थाओं में स्टाफ पर 50% खर्च होता है। रिकार्ड के सर्वेक्षण, पुस्तकों का क्रय एवं उनके परिरक्षण पर बहुत कम खर्च किया जाना पाया गया। 2. इन संस्थाओं का प्रकाशन कार्य पर्याप्त पाया गया तथा विशिष्ट विषयों के शोध प्रोजेक्ट बहुत न्यून मात्रा में लिए गए। 3. रिकार्ड कक्ष की स्थिति शोचनीय पाई गई। 4. राजस्थान एवं उत्तरप्रदेश राज्य के अलावा अन्य किसी भी राज्य में उनके जीर्णोद्धार की कोई सुचारू व्यवस्था नहीं पाई गई। 5. अभिलेखन की सुविधाएं भी उपरोक्त दो राज्यों में ही पाई गई। 6. प्रशासन की व्यवस्था हर राज्य में भिन्न-भिन्न पाई गई।

वी. पी. अग्रवाल : विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों के एक समूह का विज्ञान विषय में तर्क शक्ति के उपयोग का अध्ययन, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1987

निष्कर्ष :

1. विचारों एवं तर्कशक्ति के क्षेत्र में छात्राओं की अपेक्षा छात्र श्रेष्ठ पाए गए । 2. राजकीय एवं निजी संस्थाओं की अपेक्षा मिशन स्कूल, व्यावहारिक विचारों में श्रेष्ठ पाए गए 3. कक्षा में अध्ययन वातावरण, शान्त वातावरण एवं अनुशासन की दृष्टि से छात्र विद्यालयों की अपेक्षा छात्रा विद्यालय श्रेष्ठ रहे ।

शोध अनुक्रमणिका

अग्रवाल, वी. पी. : A study of reasoning patterns in science among certain groups of adolescent pupils studying in different types of schools.Ph.D., Raj. University, 1987.

अरोड़ा, रेखा : उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की विद्यालयी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., जोधपुरविश्वविद्यालय,1988

उपाध्याय, सरोजनी : राजकीय तथा अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की स्वधारणाओं एवं आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1988

कासवान, एल. एस. : A investigation into the relationship creativity and anxiety with scholastic achievement of science and commerce students.M. Ed., Raj. University, 1976

कँवर, सतवन्त : विभिन्न प्रकार के पूर्व प्राथमिक विद्यालयों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय,1977

कँवर, मरुधर : A comparative study of study habits of Higher Secondary students studying in Central and Government Schools.
M. Ed., 1987, Jodhpur University, 1987

गहलोत, शारदा : बीकानेर नगर के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

गहलोत, श्यामराज : राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित विज्ञान ...

गांधी, प्रेमलता : नागरिक शास्त्र शिक्षा में व्याख्यान विधि एवं प्रायोजना विधि का प्रभावोत्पादकता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1987

गुप्ता, विभा : विज्ञान अध्यापकों की व्यावसायिक आवश्यकताएँ एवं शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के बीच सम्बन्ध का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

गुप्ता, मोहनलाल : कोटा और बीकानेर क्षेत्र के माध्यमिक अध्यापकों की शिक्षण क्षमता का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

गुप्ता, विनीता : उच्च माध्यमिक स्तर के जनजाति एवं गैर जनजाति छात्रों की दुश्चिन्ता एवं बुद्धिलब्धि का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय 1988

गोयल, के. एम. : A comparative study of discovery and lecture method into teaching scicnce. M. Ed., Raj. University, 1979.

चतुर्वेदी, विवेक : राजस्थान व उत्तर प्रदेश के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रीय बालकों के विज्ञान के प्रति रुचि ग्राह्य क्षमता का पता लगाकर परस्पर सम्बन्ध ज्ञात करना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

चितोड़ा, प्रभा : मेवाड़ में स्त्री शिक्षा का विकास (1866 से 1981 तक) स्वतन्त्रतापूर्व स्वतन्त्रोत्तर कालीन शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1984

चौधरी, अंजना : राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश में प्रचलित माध्यमिक स्तर के वैकल्पिक संस्कृत विषय के पाठ्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

चौधरी, द्वारकाधीश : आश्रम विद्यालय में रहने वाले तथा न रहने वाले आदिवासी विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., सुखाड़िया विश्वविद्यालय, 1988

जस्साराम : स्नातक स्तर के अनुसूचित जाति के शहरी व ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों का बुद्धि के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

जागेटिया, नन्दिनी : माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी एवं संस्कृत विषय के विद्यार्थियों की आकांक्षाओं व स्वधारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., सुखाड़िया विश्वविद्यालय, 1987

जैन, अमरीश कुमार : अहिंदी भाषी छात्राओं की हिन्दी के अध्ययन में विभिन्न कठिनाइयों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

जैन, रोशनलाल : शहरी एवं ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों के शैक्षिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, डबोक डीम्ड विश्वविद्यालय, 1987

जैन, श्रीमती स्वर्ण : 10+2 शिक्षा प्रणाली के प्रवर्तन के प्रसंग में प्रथम दस-वर्षीय शिक्षा-क्रम के अन्तर्गत केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रवर्तित और राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रस्तावित पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन, (भाषाओं के सन्दर्भ में) एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

डेविड, रासना एस्थर: A comparative study of problem solving behaviour among certain groups of fifth grade pupils. Ph. D. Raj. University, 1987

दशोरा, मालती : माध्यमिक छात्र-छात्राओं के जनतान्त्रिक मूल्य एवं उपलब्धि स्तर का अध्ययन, एम. एड., सुखाड़िया विश्वविद्यालय, 1987

दीक्षित, उपेंद्रनाथ : ब्रिटिश शिक्षानीति का भारतीय शिक्षा पर प्रभाव (1854 से 1904) तक, पीएच. डी., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1975

धाकड़, रामस्वरूप : निजी एवं केन्द्रीय विद्यालयों के सृजनात्मक एवं सृजनात्मक रहित विचारधारा वाले प्राथमिक स्तर के बालकों की अपकेन्द्रित विचारधारा का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

धोतिया, एन.सी. : नियमित व पत्राचार पाठ्यक्रम वाले छात्रों की पुस्तपालन में निष्पत्ति व त्रुटियों का पता लगाकर तुलनात्मक अध्ययन करना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1978

नाई, पुखराज : माध्यमिक कक्षा स्तर के शहरी और ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

नागदा, भँवरलाल : उदयपुर जिले के ग्रामीण और शहरी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित अध्यापक/अध्यापिकाओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

पवन, उषा : राष्ट्रीय पुराभिलेखीय संस्थाओं के विकास के सन्दर्भ में उत्तर भारत की पुराभिलेखीय संस्थाओं का अध्ययन, पीएच. डी., वनस्थली विद्यापीठ, 1983

पंडा, कुमार जयश्री : पूर्व सेवारत अध्यापकों पर प्रतिपुष्टि तकनीकी का उनके अभिवृत्ति एवं परफॉरमेंस पर अध्ययन का प्रभाव, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1980

पारीक,ओमप्रकाश : सामान्य एवं अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के छात्रों की बुद्धिमत्ता, शैक्षिक उपलब्धियाँ एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर पर अन्तर ज्ञात करना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

पूनिया, रवीन्द्रकुमार : अंग्रेजी भाषा में बोधगम्य पठन में सम्बन्ध ज्ञात करना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

फाटक, अंजली : कान्वेंट तथा सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों व छात्राओं के मूल्यों, आकांक्षाओं एवं उपलब्धि प्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1987

बरावल, केशवप्रसाद : Cretativity correlation of teachers behaviour with special reference to prospective science teachers. M.Ed., Raj. University, 1978

बंसल, सरोज : उदयपुर, दिल्ली और अर्द्धशहरी क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के सांस्कृतिक मूल्यों को ज्ञात करना, पीएच. डी., राज. विश्वविद्यालय, 1986

बाबू, अशोक : A study of value orientation in chemistry curriculum development as a function of science, some characteristic of chemistry students and teachers at secondary level. M. Ed., Raj. University, 1978

भट्ट, सहदेव : Cross control study of pupil perception of their teachers and clossroom interaction of inservice secondary school science teachers of Indian and Nepalise schools. M. Ed., Raj. University, 1979

भटनागर, उषारानी : राजस्थानी महिला विद्यालय का प्रादुर्भाव एवं विकास, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

भनोत, रेखा : कोठारी आयोग द्वारा निर्दिष्ट शैक्षिक उद्देश्य तथा उनकी व्यावहारिकता का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1981

भार्गव, मिथलेश : जोधपुर की राजकीय, निजी एवं विशेष सम्प्रदाय द्वारा संचालित माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शालाओं में विद्यार्थियों के सामाजिक नैतिक एवं धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1987

महात्मा, सुरेन्द्रप्रकाश : राजकीय व अराजकीय विद्यालयों की कार्य-प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

माथुर, सुधा : उच्च तथा निम्न सामाजिक रूप से वंचित छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा तथा विज्ञान में उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., सुखाड़िया विश्वविद्यालय, 1988

माधवी : देहली के किशोर छात्र/छात्राओं की सामन्जस्य क्षमता एवं मूल्यों में सम्बन्ध, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

मित्तल, मधु : केन्द्रीय तथा राजस्थान के विद्यालयों में प्रचलित सामाजिक ज्ञान की पाठ्य पुस्तकों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

मेनारिया, गोविन्दलाल: मेवाड़ में माध्यमिक शिक्षा का विकास, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

मोहम्मद, सालेह : उदयपुर शहर में श्रमिकों के लिए उच्च शिक्षा, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1979

यादव, देवदत्त : A comparative study of the opinions of Secondary and Higher Secondary School teachers about their in-service education programme in the states of Delhi, Hariyana and Rajasthan. M. Ed., Rajasthan University, 1976

यादव, डी. डी. : हरियाणा एवं सीआई. ए. देहली तथा क्षेत्रीय महाविद्यालय, अजमेर की शिक्षक प्रशिक्षक विधि का तुलनात्मक एवं समालोचनात्मक अध्ययन, पीएच. डी. राज. विश्वविद्यालय, 1980

राजपूत, भूपसिंह : जयपुर, श्रीगंगानगर और चूरू जिलों के निराश्रित बालगृहों की वास्तविक स्थिति के अध्ययन हेतु एक सर्वेक्षण, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

राजश्री : अंग्रेजी तथा हिन्दी माध्यम की माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों एवं छात्राओं के व्यक्तित्व एवं आकाक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1987

श्यामा, कुमारी : बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन दक्षता का उनके व्यक्तित्व, बुद्धि एवं शैक्षिक निष्पत्ति से सह-सम्बन्ध, एम.एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

शर्मा, ललिता : सैकण्डरी स्कूल बोर्ड मानदण्ड के अनुसार उन विज्ञान अध्यापकों का मौखिक कक्षेत्तर अन्तःक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन करना जो क्रमशः प्रभावशाली, अप्रभावशाली, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

शर्मा, आर. सी. : विज्ञान पढ़ने एवं विज्ञान न पढ़ने वाले छात्रों की सृजनात्मक प्रतिभा की जानकारी करना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

शर्मा, उषा : केन्द्रीय विद्यालय तथा राजस्थान के विद्यालयों में प्रचलित हिंदी विषय की कक्षा 6, 7, 8 की पाठ्यपुस्तकों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1982

शर्मा, उषा : उच्च माध्यमिक स्तर पर कला एवं विज्ञान संकाय की छात्राओं की रुचियों एवं मूल्यों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

शर्मा, पुष्करदया : राजस्थान राज्य में 10+2+3 शिक्षा क्रियान्विति, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

शर्मा, भानुप्रभा : दक्षिणी राजस्थान में जनजाति क्षेत्र के शैक्षिक विकास का ऐतिहासिक अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1985

शर्मा, राजबाला : जोधपुर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता के कारणों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय,1987

शर्मा, विजयकुमार : एस. टी. सी. एवं बी. एड. स्तर पर अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

सिंह, विजयपाल : विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा सप्तम् के छात्रों की सृजनात्मक चिन्तन योग्यता का अध्ययन, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

सक्सैना, अनुजा : हाड़ौती भाषी छात्र/छात्राओं की हिन्दी में वर्तनी एवं व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

सिंघवी, शशि : राजकीय तथा अराजकीय माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक स्वास्थ्य तथा प्रधानाध्यापकों के दायित्व निर्वाह का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., जोधपुर विश्वविद्यालय, 1988

सिद्दीकी, मोह. अलीमुद्दीन : विज्ञान विषय की छात्राओं की सृजनात्मकता एवं बुद्धिमत्ता एवं परिकल्पनात्मकता के बीच सम्बन्ध को मालूम करना । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

सिंह, केदार : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के कक्षा 10 के गणित विषय में नियमित एवं स्वयंपाठी विद्यार्थियों द्वारा की गई त्रुटियों का तुलनात्मक अध्ययन । एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

सिंह, जयपाल : उत्तर प्रदेश व राजस्थान राज्यों के माध्यमिक राज्यों के वाणिज्य अध्यापकों की व्यावसायिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राजस्थान विश्वविद्यालय, 1976

सिंह, महेन्द्र प्रताप : छात्रों के विभिन्न वर्गों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति के स्तर एवं उनमें अन्तर ज्ञात करना, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1988

सिंह,वीरेन्द्र : भारत और विदेशों के चुने हुए विश्वविद्यालयों के प्रशासन का तुलनात्मक अध्ययन।

स्वामी, किशनलाल : उच्च तथा निम्न परीक्षा परिणाम वाले विद्यार्थियों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1980

सुराणा, रश्मि : माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के वाणिज्य एवं विज्ञान के स्वधारणाओं, अध्ययन आदतों एवं रूचियों का अध्ययन, एम. एड., सुखाड़ियाविश्वविद्यालय,1980

सूदन, स्वर्ण : पूर्व प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

सोनी,शारदा : A comparative study of scheduled caste an non-scheduled caste graduate student teachers in relation to personality, adjustment and self concept. M. Ed. Jodhpur, University, 1987

सोनी,मोहनसिंह : पी. टी. ई. टी.एवं योग्यता आधार पर बी. एड. में प्रवेश का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड., अजमेर विश्वविद्यालय, 1988

श्रीमाली, विनोद : शिक्षा प्रसार सेवा विभाग एवं कृषि प्रसार सेवा विभाग के प्रशासन एवं संगठन का अध्ययन, एम. एड., उदयपुर विश्वविद्यालय, 1988

☆ ☆ ☆ ☆

अनौपचारिक, प्रौढ़ एवं शारीरिक शिक्षा

❑ उपेन्द्रनाथ घई
❑ शंकर लाल शर्मा

राष्ट्रीय स्तर के इस व्यापक कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं के समाधान, कार्य-पद्धति में स्थान एवं परिस्थिति के अनुसार आवश्यक संशोधन/परिवर्तन एवं असंदिग्ध सफलता हेतु नवीन रणनीति व व्यूह रचना के लिए सुदृढ़ आधार बनाने हेतु अनुसंधानकर्ताओं का सहयोग एवं मार्गदर्शन अपेक्षित है । इस अपेक्षा की पूर्ति के लिए कार्यक्रम के विभिन्न आयाम, स्वरूप, संगठन, कार्य-पद्धति आदि के वस्तुपरक अध्ययन एवं विश्लेषण के पश्चात् रचनात्मक एवं सन्तुलित दिशा-निर्देश देना अनुसंधानकर्ताओं का सर्वोच्च दायित्व है ।

समीक्षाधीन अवधि में राजस्थान में सात प्रौढ़ शिक्षा, एम. एड. स्तर के तीन अनौपचारिक शिक्षा, एम. एड. स्तर का एक ओपन स्कूल का, एम. एड. स्तर पर दो शारीरिक शिक्षा के, तथा तीन पीएच. डी. स्तर के कुल 16 शोधकार्य उपलब्ध हैं । प्राय: सभी शोध कार्य सर्वेक्षण एवं प्रकरण अध्ययन की विधा के आधार पर ही सम्पन्न हुए हैं । तकनीक एवं उपकरण की दृष्टि से अधिकांश में प्रश्नोत्तरी, साक्षात्कार एवं अवलोकन प्रपत्रों के माध्यम से दत्त संकलन किया गया है । सांख्यिकी का भी उपयोग साधारण स्तर का है । न्यादर्श में ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही परिवेशों को प्रतिनिधित्व देने का प्रयास किया गया है। परन्तु उनका संख्यात्मक आकार अल्प तथा समस्याएँ अनेकरूपी होने के कारण उनसे प्राप्त निष्कर्षों का सामान्यीकरण सर्वस्वीकृत नहीं माना जा सकता और न ही वे समग्र रूप से किसी प्रवृत्ति निरूपण के प्रतीक ही माने जा सकते हैं । अत: अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में सम्पन्न इन शोध कार्यों का स्वतन्त्र इकाइयों के रूप में विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है ।

जिससे इनके द्वारा अभिलक्षित प्रवृत्ति ज्ञात हो तथा भविष्य के शोधकर्ता दिशा बोध प्राप्त कर सकें।

प्रौढ़ शिक्षा

प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में सम्पादित शोध कार्यों में से एक शोध कार्य प्रौढ़ शिक्षण समिति द्वारा संचालित कार्यक्रमों के मूल्याकंन एवं समीक्षा पर कँवर (1976) एक प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की आवश्यकताओं एवं शिक्षकों की कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्तियों पर (गुप्ता 1979) तथा एक प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की कार्य-प्रणाली का सुधार संलक्ष्यी अध्ययन (शर्मा 1983) है। कँवर (1976) के अनुसार प्रौढों में साक्षरता के प्रति रुचि तथा केन्द्रों के प्रति सन्तोष है परन्तु वे अपनी साक्षरता की निरन्तरता बनाए रखने में असमर्थ हैं और निरन्तर सम्पर्क तथा वाचन सामग्री की अपेक्षा रखते हैं। गुप्ता (1979) के अनुसार इस कार्यक्रम के प्रति पुरुष अध्यापकों की अभिवृत्ति महिला अध्यापिकाओं की तुलना में अधिक सकारात्मक है। शर्मा (1983) के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा के अनुदेशक प्रौढ़ शिक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण प्राप्त तो हैं परन्तु उनकी शैक्षणिक योग्यता न्यून है। दूसरी ओर कार्यक्रम से जुड़े परिवीक्षकगण शैक्षिक योग्यता सम्पन्न तो हैं परन्तु वे सही निर्देशन नहीं दे पा रहे हैं क्योंकि उनकी विशेष रुचि प्रशासनिक कार्यो के अवलोकन एवं सम्पादन में है। कँवर (1976) एवं शर्मा (1983) अपने शोध कार्यों से यह इंगित करते हैं कि इस कार्यक्रम के सुचारु रूप से संचालन में कुछ व्यवधान है। इनके शोध कार्यों के अनुसार प्रशासनिक ढ़ाँचे में पर्याप्त महिला प्रतिनिधित्व का अभाव है। मुहल्ला वाचनालयों का अभाव है। अनुदेशिका की संख्या एक ही होने के कारण व्यावसायिक प्रशिक्षण में सघनता की कमी है। कँवर (1976) एवं शर्मा (1983) में अनुदेशकों में शैक्षणिक योग्यता का अभाव, अनुदेशकों में मानदेय की स्वल्पता तथा समय पर अप्राप्ति के कारण असन्तोष, ग्रामवासियों से सम्पर्क का अभाव तथा ग्रामवासियों की समस्याओं के समाधान में भागीदारी के अभाव, बाधक पाए है। पाटोदिया (1983) ने ग्राम्यांचल समूहाचार एवं प्रौढ़ शिक्षा सम्भागियों की ग्रामीण विकास के प्रति संचेतना के मध्य सम्बन्ध के बारे में पाया कि प्रौढ़ शिक्षा सम्भागी आर्थिक-सामाजिक और राजनैतिक आयामों के प्रति अधिक संचेतन हैं।

प्रौढ़ शिक्षा क्षेत्र के प्रशासनिक पक्ष एवं समस्याओं की दृष्टि से राजपूत (1988) का यह निष्कर्ष है कि अधिकारियों द्वारा परिवीक्षण नहीं के बराबर होना, स्थानीय प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सहयोग का नहीं मिल पाना कार्यक्रम की प्रगति में बाधक हैं। केन्द्रों का अस्थायित्व व पंजीकृत केन्द्रों पर 50% प्रौढ़ों की उपस्थिति कार्यक्रम की कम प्रभावशीलता की ओर संकेत करती है जबकि प्रौढों में से 94 प्रतिशत का पंजियन प्रभावशीलता के सकारात्मक पक्ष को व्यक्त करता है यह कल्ला (1988) ने देखा। सामाजिक परिवर्तन के सन्दर्भ में प्रौढ़ शिक्षा की भूमिका का अध्ययन माथुर (1987) द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों में भाग लेने वाले

क्रमशः एक वर्ष, तीन वर्ष व पाँच वर्ष के अनुभव के प्रत्येक वर्ग से 100 प्रौढ़ तथा कुल 300 प्रौढ़ों, जिनमें महिला एवं पुरूषों की समान संख्या थी, के अध्ययन से उपलब्ध निष्कर्ष वस्तुपरक एवं यथार्थ हैं । पाँच वर्षों के अनुभवी शहरी प्रौढ़ अन्यों की तुलना में राजनैतिक मूल्यों की दृष्टि से काफी आगे रहे हैं और पुरूष वर्ग (शहरी व ग्रामीण) अधिक सबल पाया गया । जहां सामाजिक मूल्यों के प्रति कोई सार्थक परिवर्तन के संकेत नहीं मिले वहाँ सौन्दर्य परक मूल्यों में तीन वर्ष के अनुभव वाली ग्रामीण महिलाओं का प्रदर्शन अच्छा रहा । उसी प्रकार धार्मिक मूल्यों के प्रति तीन व पाँच वर्षों के अनुभव वाले प्रौढ़ों का न्यून मूल्य प्रदर्शन चिन्ताजनक है लेकिन महिलाओं की श्रेष्ठता न केवल धार्मिक क्षेत्र में अपितु आर्थिक क्षेत्र में भी सराहनीय व सकारात्मक पाई गई । धर्म व अन्य विश्वास के प्रति सभी वर्गों के प्रौढ़ों द्वारा अनुकूल अभिवृति का प्रदर्शन दृष्टिगत होने के साथ सामाजिक परिवर्तन के प्रति उच्च स्तरीय सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त किया गया । राजनैतिक चेतना के क्षेत्र में सभी वर्गों के अनुभवी प्रौढ़ों ने सार्थक चेतना व्यक्त की है, परन्तु पर्यावरणीय चेतना के क्षेत्र में पुरुष वर्ग की तुलना में महिलाओं ने कोई सुखद अनुभूति नहीं दी । परन्तु वैज्ञानिक दृष्टिकोण सम्बन्धी क्षेत्र में शहरी व प्रौढ़ महिलाओं ने सकारात्मक अभिव्यक्ति तो की है परन्तु घर व परिवार क्षेत्र के अलावा अन्य सभी क्षेत्रों में पुरूषों के समान ही कम समस्याएँ प्रस्तुत की हैं। समायोजन की दृष्टि से शहरी पुरुषों ने समाज व व्यवस्था में अनुकूल सार्थकता का अभाव पाया जबकि अधिक अनुभवी शहरी व ग्रामीण पुरुष व महिला प्रौढ़ों ने घर, स्वास्थ्य, सामाजिक व संवेगात्मक समायोजन में सार्थक परिणाम प्रस्तुत किए हैं ।

अनौपचारिक शिक्षा

अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में सम्पादित तीनों शोध-कार्य अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की समीक्षा एवं मूल्यांकन से सम्बन्धित हैं । श्रीमाली (1988) के अनुसार केन्द्र पर शिक्षण प्राप्त बाल-बालिकाओं का चेतना स्तर व्यावसायिक, सामाजिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी क्षेत्रों में सामान्य पाया गया । वे कार्यक्रम आयोजना के अनुरूप नहीं चल पा रहे हैं । श्रीमाली (1984) एवं पाण्डेय(1987) के शोध-कार्य इंगित करते हैं कि इनके सुसंचालन में केन्द्रों पर कम शैक्षणिक योग्यता के अनुदेशकों की अकुशलता भौतिक साधन एवं शिक्षण सामग्री का अभाव तथा अनुदेशकों को आवर्तक व्यय की राशि की समय पर अनुपलब्धि, आवर्तक व्यय राशि की अत्यल्पता तथा अनुदेशकों की सेवाओं का अस्थायी होना अच्छी कार्य व्यवस्था में बाधक हैं।

ओपन स्कूल

गोविन्द सिंह (1984) ने ओपन स्कूल के संगठन एवं कार्य-प्रणाली का अध्ययन सर्वेक्षण विधि द्वारा किया । इनके शोध-कार्य के अनुरूप स्कूल का पाठ्यक्रम जीवनोपयोगी एवं व्यावहारिक तो हैं परन्तु पाठ्यक्रम का स्तर छात्रों के स्तर से उच्चस्तर है जिनमें गणित एवं

विज्ञान विषय कठिनतम हैं। विद्यालयों में प्रवेश की प्रक्रिया सरल, मुक्त एवं नमनीय है। विद्यालय में स्टाफ की न्यूनता के कारण कार्यभार अधिक है और समन्वय की कमी होने के कारण निर्देशात्मक प्रक्रिया का लाभ समस्त छात्र-छात्राओं को सुलभ नहीं है। मूल्यांकन योजना भी पूर्णतः मुक्त एवं अत्यधिक नमनीय है। परन्तु प्रश्न-पत्र कठिन तथा परीक्षा केन्द्रों की संख्या अत्यल्प है।

शारीरिक शिक्षा

समीक्षान्तर्गत अवधि में शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में एम. एड., स्तर का सर्वेक्षण विधि से किए गए दो शोध-कार्य तथा पीएच. डी. स्तर के तीन शोध-कार्य हैं। शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों व सम्बन्धित व्यवस्थाओं सम्बन्धी निष्कर्षों के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में खेल के मैदानों की पर्याप्त सुविधा है, परन्तु शहरी क्षेत्रों में इसका अभाव है। विद्यालयों में स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्था, अच्छे स्तर के सामान व मैदान इत्यादि के साथ अधिसंख्य माता-पिता द्वारा प्रोत्साहन का अभाव, शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों की क्रियान्विति में बाधक रहे हैं। लाम्बा (1977), आचार्य (1975) ने शारीरिक शिक्षा के उद्देश्यों एवं पाठ्यक्रम के प्रति विभिन्न घटकों की अभिवृत्ति के सन्दर्भ में कहा है कि शिक्षा प्रशासकों में शारीरिक शिक्षा के उद्देश्यों में मत वैभिन्य सर्वाधिक है तथा अभिभावकों में तुलनात्मक द्रष्टि से न्यूनतम है। शोध से ज्ञात हुआ कि शारीरिक शिक्षा छात्रों में सहयोग, ईमानदारी एवं मित्रता जैसी आदतों का तथा आत्मविश्वास, निडरता, साहस एवं नेतृत्व जैसे गुणों का विकास हुआ है।

पाल (1984) ने अपने अध्ययन में मध्यम दूरी की दौड़ पर एरोबिक तथा अनऐरोबिक अभ्यासों के विभिन्न अनुपातों में प्रशिक्षण के प्रभाव को ज्ञात करने का प्रयास किया है। इसके अनुसार 40 प्रतिशत ऐरोबिक तथा 60 प्रतिशत अनएरोबिक अभ्यासों का सम्मिलित प्रशिक्षण 800 मीटर की दौड़ की उपलब्धि में सकारात्मक योग दे सकता है जबकि 50 प्रतिशत एरोबिक तथा 50 प्रतिशत अनऐरोबिक अभ्यासों का सम्मिलित प्रशिक्षण 1500 मीटर की दौड़ की उपलब्धियों का स्तर ऊँचा कर सकता है। मुकर्जी (1984) ने ओलम्पिक खेलों की राजनीति का अध्ययन भारत के विशेष सन्दर्भ में किया है। मुकर्जी के अनुसार शक्तिशाली देशों के द्वारा ओलम्पिक खेलों को राजनीतिक मंच के रूप में बर्लिन ओलम्पिक (1926) से ही प्रयुक्त किया जा रहा है। और इसमें निरन्तर वृद्धि होते जाने के कारण आधुनिक ओलम्पिक खेलों की मूल भावना पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। परन्तु भारत इस खेल राजनीतिक के मंच पर अपनी तटस्थता की छवि बनाए रखने में सक्षम रहा है। सिंह (1988) ने भारतीय महिलाओं के खेल-कूद में भाग लेने से सम्बन्धित कारकों पर अध्ययन कर इस विचार की सम्पुष्टि की है कि खेल-कूद व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक हैं। खेल-कूद में भाग लेने की दृष्टि से भारत में अभी तक सामाजिक स्वीकृति नहीं है यद्यपि शारीरिक शिक्षक व सम्भागी महिलाओं के माता-पिता इसे नारीत्व में कमी का कारण नहीं मानते। साथ ही यह भी सत्य है कि खेल-कूद में

भाग लेने से अध्ययन में बाधा पड़ती है । परन्तु शिक्षण संस्थाओं में विशेष मान्यता प्राप्त होती है तथा परिश्रम करने एवं समायोजन की क्षमता का विकास होता है ।

अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में परिवीक्षकों द्वारा अनुदेशकों को अपर्याप्त मार्ग-दर्शन एवं मानदेय की अपर्याप्त प्रमुख समस्याएँ हैं । आदिवासी क्षेत्रों में केन्द्रों की कम संख्या चिंताजनक है । बालिकाएँ केन्द्र के रात के समय की अपेक्षा दोपहर के या सायं के समय को अधिक पसन्द करती हैं । ओपन स्कूल में स्टाफ की कमी से कार्य भार अधिक है । प्रवेश एवं मूल्याकंन पूर्णतः मुक्त एवं नमनीय है, परन्तु संगठन में तालमेल का अभाव, पाठ्यसामग्री एवं निर्देशन का समय पर प्राप्त न होना, परीक्षा केन्द्रों की संख्या का अत्यल्प होना आदि कुछ कठिनाइयाँ हैं, जिनका शीघ्र समाधान खोजना आवश्यक है ।

इस अवधि में किए गए शारीरिक शिक्षा के पाँच शोध-कार्यों में से एक अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि ओलम्पिक खेल शक्तिशाली देशों द्वारा राजनैतिक मंच के रूप में पिछले कई वर्षो से काम में लिये जा रहे हैं । और उनमें गुटबन्दी आ चुकी है । फिर भी भारत अपनी तटस्थता के मार्ग पर अडिग है । एक अन्य शोध-कार्य के अनुसार एरोबिक तथा अनएरोबिक अभ्यासों के मिश्रित प्रशिक्षण का मध्यम दूरी के दौड़ परिणामों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है ।

स्पष्टतः अनुसंधान की दृष्टि से इन क्षेत्रों में अभी बहुत कुछ किए जाने की व्यापक सम्भावना है ।

वाचस्पति शोधसार

जयन्त मुकर्जी : ओलम्पिक खेलों की राजनीति : भारत के विशिष्ट संदर्भ में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का 1896 से 1980 तक के आधुनिक ओलम्पिक खेलों पर प्रभाव का अध्ययन, पीएच. डी., राजस्थानविश्वविद्यालय,1984

उद्देश्य :

1. प्राचीन ओलम्पिक खेलों के ऐतिहासिक सर्वेक्षण द्वारा खेलों में राजनीति की परम्परा को खोजना । 2. आधुनिक ओलम्पिक खेलों के चार कालावधियों में खेल राजनीति के अस्तित्व को ज्ञात करना । 3. उपर्युक्त चार समयावधियों में सामाजिक राजनैतिक कारकों का सर्वेक्षण करना। 4. ओलम्पिक आन्दोलन का इसकी समग्रता में विश्लेषणात्मक अध्ययन कर उन कारकों को ज्ञात करना जिनके कारण खेल जगत में राजनीति का प्रवेश हुआ । 5. ओलम्पिक आन्दोलन पर हानिकारक राजनीतिक प्रभावों को महत्वहीन बनाने वाले उपाय सुझाना ।

मुख्य निष्कर्ष

1. आधुनिक ओलम्पिक खेलों का उपयोग निरन्तर राजनीतिक प्लेटफार्म (मंच) के रूप में किया जाता रहा है जो सदा बढ़ता ही रहा है । जिसका प्रारम्भ 1936 में हुआ, 1940 व 1944 के खेल नहीं हो पाये । 1948 के लंदन ओलम्पिक तक यह परम्परा चलती रही और 1984 लॉसंएंजिल्स के खेलों में यह चरम सीमा पर पहुँच गई । 2. नस्लवाद एवं राष्ट्रवाद ने आधुनिक ओलम्पिक खेलों के आदर्शों एवं आचार संहिता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है । 3. 1936 में राजनीति के प्रवेश के पश्चात अब पूर्णतया टूट की स्थिति पैदा हो गई है । 4. असंदिग्ध रूप से यह स्थापित हुआ है कि ओलम्पिक खेल कुछ देशों, विशेषतः शक्तिशाली देशों द्वारा अन्य देशों पर अपना राजनीतिक वर्चस्व प्रदर्शित करने का प्रभावशाली माध्यम के रूप में प्रयुक्त किये गये हैं । 5. भारत ने बिना किसी राजनीतिक पृष्ठभूमि को महत्व दिये, ओलम्पिक खेलों में निरन्तर भाग लिया है ।

मिथलेश कुमारी सिंह : भारतीय महिलाओं के खेल-कूद में सह-भागित्व के लिए बाधक तत्व, पीएच. डी., वनस्थली विद्यापीठ, 1987

उद्देश्य :

1. भारतीय महिलाओं के खेल-कूद में सम्भागित्व से सम्बन्धित सामाजिक कारकों का अध्ययन करने के साथ साथ खिलाड़ियों के व्यक्तित्व (संवेगात्मक व शारीरिक) से सम्बन्धित सहायक या बाधक विशिष्ट कारकों को ज्ञात करना । 2. खिलाड़ी महिलाओं के अभिभावकों की अभिवृतियों के अध्ययन करना 3. अपने पारिवारिक व व्यावसायिक जीवन में महिलाओं के खेलकूद में भाग लेने के समायोजन का अध्ययन करना ।

मुख्य निष्कर्ष

1. दोनों ही समूह खेल-कूद में भाग लेने के इस विचार से सहमत हैं कि इससे उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास सम्भव है । 2. असम्भागी महिलाओं के अनुसार अभी तक महिलाओं को खेल-कूद में भाग लेने की दृष्टि से समाज की स्वीकृति नहीं मिली है । 3. दोनों समूहों की अभिवृत्ति में खेल-कूद में भाग लेते समय ध्यान रखने सम्बन्धी अभिवृत्ति पर सार्थक अन्तर पाया गया । 4. शादी-विवाह की समस्या को तय करने के सम्बन्ध में दोनों वर्गों की महिलाओं में कुछ अंतर पाया गया । 5. दोनों वर्गों की महिलाओं ने यह अनुभव किया कि खेल-कूद में भाग लेने से उनके अध्ययन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है परन्तु शिक्षण संस्था में उन्हें विशेष मान्यता मिल जाती है तथा समायोजन की दक्षता भी उत्पन्न हो जाती है । 6. तीनों ही समूह खेलकूद में भाग लेने को अध्ययन में बाधा समझते हैं । 7. शारीरिक शिक्षक तथा सम्भागी महिलाओं के माता-पिता खेल में भाग लेने को नारीत्व की

कमी नहीं मानते । 8. तीनों ही समूह यह मानते हैं कि खिलाड़ी महिलायें परिश्रमी तथा शिक्षण संस्थाओं में अपेक्षाकृत अधिक मान्यता प्राप्त कर लेती हैं ।

बृजेन्द्र मोहन माथुर : राजस्थान में प्रौढ़ शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन, पीएच. डी. (शिक्षा) वनस्थली विद्यापीठ, 1987

उद्देश्य :

1. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के सम्भागियों में सही मूल्यों, आधुनिकता के विभिन्न कसौटियों के प्रति सरकारी अभिवृतियों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं विभिन्न प्रकार की चेतनाओं के विकास की तथ्यात्मक स्थिति ज्ञात कराना । 2. शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत समस्याओं को कम करने तथा व्यक्तिगत समायोजन में सहायता करने में कार्यक्रम की सफलता/सार्थकता की स्थिति ज्ञात करना । 3. सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में बाधक तत्वों को ज्ञात करने के साथ प्रकृत्य को धनात्मक गति देने वाले कारकों को जानना । 4. शिक्षार्थियों की दक्षता का उन्नयन करने वाले माध्यम के सम्बन्ध में सुझाव देना ।

मुख्य निष्कर्ष

1. पाँच वर्षों तक कार्य करने वाले शहरी प्रौढ़ों ने अन्यों की तुलना में अधिक राजनैतिक मूल्य प्रदर्शित किये हैं । महिला प्रौढ़ों के तीनों वर्गों में समान रूप से राजनीतिक मूल्यों का प्रदर्शन नहीं हुआ । लिंगभेद की दृष्टि से शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में पुरूष वर्ग राजनीतिक मूल्य प्रदर्शन की दृष्टि से अधिक सबल पाया गया। 2. सामाजिक मूल्यों के प्रति कोई सार्थक परिवर्तन का संकेत नहीं मिला, वहां सौन्दर्यीकरण मूल्यों में तीन वर्ष के अनुभव वाली ग्रामीण महिलाओं ने अच्छा प्रदर्शन किया परन्तु धार्मिक मूल्यों के प्रति तीन व पांच वर्षों के अनुभवी प्रौढ़ों का न्यून धार्मिक मूल्य प्रदर्शन चिन्ताजनक है। महिलाओं ने पुरुषों पर धार्मिक मूल्यों के प्रदर्शन में सब प्रकार से श्रेष्ठता प्रदर्शित की । आर्थिक मूल्यों के क्षेत्र में अधिक अनुभवी पुरुषों एवं महिलाओं ने कम अनुभवी शिक्षार्थियों से अच्छा प्रदर्शन किया। (ब) अभिवृत्तियों से सम्बन्धित निष्कर्ष : 1. महिलाओं की अभिवृत्ति में पांच वर्ष का अनुभव होने पर भी सामाजिक परिवर्तन के प्रति कोई परिवर्तन अभिव्यक्त नहीं हुआ। परिवार नियोजन कार्यक्रम के प्रति पांच वर्ष के अनुभव वाले प्रौढ़ों ने कोई सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं जताया। धर्म व अन्ध विश्वासों के प्रति भी सभी वर्गों के प्रौढ़ों द्वारा अनुकूल अभिवृत्ति प्रदर्शित की गई। (स) सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित निष्कर्ष : शहरी व ग्रामीण प्रौढ़ों में (पुरुष व महिलाओं) ने सामाजिक परिवर्तन के प्रति उच्च स्तरीय सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त किया। (द) राजनीतिक चेतना के क्षेत्र में सभी वर्गों के अनुभवी प्रौढ़ों ने सार्थक राजनीतिक चेतना व्यक्त की। (य) पर्यावरणीय चेतना : पुरुष वर्ग की तुलना में महिलाओं ने इस क्षेत्र में कोई सुखद अनुभूति नहीं दी। (र) वैज्ञानिक दृष्टिकोण : महिला प्रौढ़ों ने भी सकारात्मक अभिव्यक्ति की है। (ल) समायोजन से सम्बन्धित : तीन व

पांच वर्ष के अनुभव वाले शहरी व ग्रामीण प्रौढ़ पुरुष–महिलाओं ने घर, स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक, समायोजन में सार्थक परिणाम प्रस्तुत किये हैं किन्तु शहरी पुरुषों ने सामाजिक समायोजन तथा व्यावसायिक समायोजन में अनुकूल सार्थक परिणाम प्रस्तुत नहीं किये हैं। (व) व्यक्तिगत समस्याओं से सम्बन्धित : शहरी व ग्रामीण प्रौढ़ महिलाओं ने घर व परिवार क्षेत्र के अलावा अन्य सभी क्षेत्रों में पुरूषों के समान ही कम समस्याऐं प्रस्तुत की हैं।

रमेश पाल : मध्यम दूरी दौड़ में आक्सीजन सहित (एरोबिक) एवं ऑक्सीजन रहित (अनएरोबिक) प्रशिक्षण के विभिन्न समानुपातों के सम्मिश्रणों पर पड़ने वाले तुलनात्मक प्रभाव, पीएच. डी., (शिक्षा) राजस्थानविश्वविद्यालय,1984

उद्देश्य :

1. मध्यम दूरी दौड़ में ऑक्सीजन सहित एवं ऑक्सीजन रहित प्रशिक्षण के विभिन्न समानुपातों के सम्मिश्रणों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना । 2. 800 मीटर एवं 1500 मीटर दौड़ में भाग लेने वाले खिलाड़ियों के लिये ऑक्सीजन रहित प्रशिक्षण के माध्यमों का सर्वाधिक उपयुक्त अनुपात ज्ञात करना ।

मुख्य निष्कर्ष

1. ऑक्सीजन सहित एवं ऑक्सीजन रहित प्रशिक्षण में प्रयुक्त विभिन्न समानुपातों के 70-30, 60-60, 50-50 एवं 40-60 प्रतिशत के अनुपात 800 मीटर एवं 1500 मीटर दौड़ में निष्पादन सुधार की दृष्टि से प्रभाव डालने वाले सिद्ध हुए । 2. 800 मीटर दौड़ के ऑक्सीजन सहित प्रशिक्षण में 40 प्रतिशत एवं ऑक्सीजन रहित प्रशिक्षण में 60 प्रतिशत सम्मिश्रण सर्वाधिक प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं । 3. 1500 मीटर दौड़ के ऑक्सीजन सहित प्रशिक्षण में 50 प्रतिशत एवं ऑक्सीजन रहित प्रशिक्षण में 50 प्रतिशत सम्मिश्रण सर्वाधिक प्रभावशाली प्रकट हुए हैं। 4. नियन्त्रित समूह के मामले में सुधार का अभाव निष्क्रियता का प्रतिबिम्ब समझा जा सकता है ।

शोध-अनुक्रमणिका

आचार्य, हीरालाल : छात्रों, अभिभावकों, शारीरिक शिक्षा, शिक्षकों एवं शिक्षा प्रशासकों की शारीरिक शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1975

कल्ला, आनंदप्रकाश : जोधपुर शहर में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की प्रभावशीलता का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1988

कँवर, बाबूलाल : बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति द्वारा संचालित कार्यक्रमों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1976

गुप्ता, उमेशचन्द्र : प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की आवश्यकताएँ एवं शिक्षकों की कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्तियाँ, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1979

गोविन्द, सिंह : ओपन स्कूल का संगठन एवं कार्य प्रणाली, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

पाण्डोर, शारदा : अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम का संगठन एवं अनुदेशकों की प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1987

पाटोदिया, मामराज : ग्राम्याचंल में समूहाचार एवं ग्रामीण विकास के प्रति प्रौढ़ शिक्षा सम्भागियों की संचेतना - एक गन्वेषणात्मक शोध, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

माथुर, बृजेन्द्रमोहन : Adult Education and Social Change in Rajasthan, Ph. D., Raj. University,1987

मुकर्जी, जयन्त : The Politics of Olympic Games, A study of the import of the International Politics on modern olympics Games from 1896 to 1960 with special reference to India. Ph. D., Raj. University, 1984

रमेश, पाल : Comparation effects of combinations of different Proportions of Aerobic and Anarobic Training, Ph. D., Raj. University, 1984

राजपूत, सुगनसिंह : उदयपुर में प्रौढ शिक्षा का प्रशासनिक संगठन एवं समस्याओं का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1988

लांबा, राजेन्द्रसिंह : भिवानी जिले के ग्रामीण व शहरी माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक कार्यक्रमों व सम्बन्धित व्यवस्थाओं का सर्वेक्षण, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1977

शर्मा, सुधा : बीकानेर परिक्षेत्र में स्थित प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की कार्यप्रणाली का एक सुधार संलक्ष्यी अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1983

श्रीमाली, रमेशचन्द्र : जनजाति क्षेत्र में संचालित अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के फलस्वरूप उत्पन्न सामाजिक चेतना का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1988

श्रीमाली, हीरालाल : भीण्डर पंचायत समिति (उदयपुर) के अनौपचारिक शिक्षण केन्द्रों का अध्ययन, एम. एड., राज. विश्वविद्यालय, 1984

सिंह, मिथलेश कुमारी: Constraints, Affecting Indian Women's ParticipationsIn Games and Sports, Ph. D., Banasthli Vidyapith, 1987

☆ ☆ ☆ ☆

परिचय

सतीश कुमार बचलस

जन्म 1934, अजमेर एम. ए. (भूगोल), एम. एड. । बी. एड. व एम. एड. की कक्षाएं पढ़ाने का लम्बा अनुभव , विभिन्न शैक्षिक पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, पुस्तक समीक्षा-का कार्य, 1978 में राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त । सम्प्रति–विशेष अधिकारी, शिक्षा, राजस्थान सरकार, जयपुर ।

पुरुषोत्तम लाल तिवारी

जन्म अगस्त 1928, गांव इटालीखेड़ा (उदयपुर), एम. ए. (हिन्दी) तथा एम. एड. । प्राथमिक कक्षाओं से लेकर एम. एड. स्तर का अध्यापन, अध्ययन और अनुसंधान कार्यों का लम्बा निरन्तर अनुभव । शिक्षा विभाग में सभी तरह के प्रशासन, प्रकाशन, परीक्षा, शिक्षण, प्रशिक्षण, योजना, अनुसंधान, प्रयोग, प्रायोजना कार्यों से वर्षों तक संलग्न । हिन्दी पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें, परीक्षा-प्रशिक्षण, सेवारत अभिनव के कामों में मौलिक प्रयासों से भी संलग्न । विश्वविद्यालय स्तर पर हिन्दी साहित्य, अनुसंधान तथा राजस्थानी साहित्य से भी सम्पर्क तथा अनुसंधान सहयोग । ढेरों शैक्षिक लेख, पुस्तकें आदि प्रकाशित । शिक्षा विभाग से राज्य पुरस्कार प्राप्त । सेवा निवृत्ति के बाद भी शिक्षा की सेवा तथा अनुसंधान कार्यों में संलग्न । सम्प्रति–निवास 32, पिछोली, उदयपुर (राजस्थान)।

शक्तिपूर्णा गुप्ता

जन्म 1948, सीकर, एम. ए., एम. एड., पीएच. डी. (हिन्दी), एल. एल. बी. । लगभग 13 वर्ष का अध्यापन एवं प्रशासन सम्बन्धी अनुभव । नीपा द्वारा आयोजित शिक्षा सेमीनारों में सम्भागित्व, वर्तमान में कतिपय शोध प्रायोजनाओं में संलग्न । सम्प्रति–अनुसंधान अधिकारी, शोध एवं निरीक्षण प्रकोष्ठ, शिक्षा निदेशालय, बीकानेर ।

रामनारायण आटोलिया

जन्म 1938, वाटिका (जयपुर), एम. एस. सी., एम. एड., पीएच. डी. (गणित) । राज्य एवं राष्ट्रीय स्तरीय शिक्षा सेमीनार एवं कार्य गोष्ठियों में सम्भागित्व । सन् 1975 में फिजोलोजिकल फ्लूड डाईनेमिक्स पर कॉलेज स्तर की अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में सम्भागित्व। शैक्षिक कार्य में सन्दर्भ्य व्यक्ति के रूप में कार्य, गणित की विभिन्न पुस्तकों में सह-लेखक, गणित विषय के उच्च स्तर के आठ शोध पत्र, राज्य स्तर पर शैक्षिक योजना निर्माण कार्यो में सहयोग । सम्प्रति–अनुसंधान अधिकारी, कार्यालय उप प्रायोजना अधिकारी, शिक्षा विभाग, जयपुर ।

ज्ञान प्रकाश गुप्ता

जन्म 1938, चूरू, एम. एस. सी., एम. एड., पीएच. डी. (शिक्षा), राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त । सम्प्रति–प्रधानाध्यापक, राजकीय गोयनका सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय, चूरू ।

श्रीराम मल्होत्रा

जन्म 1933, पश्चिमी पंजाब, एम. ए., एम. एड., पीएच. डी. । विभिन्न शैक्षिक पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित। शोध-कार्य संलग्न, राज्य-स्तरीय पत्र-वाचन प्रतियोगिताओं में अनेक पुरस्कार। सम्प्रति-सहायक प्रधानाध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, खैरथल (अलवर)।

शिवशंकर व्यास

जन्म 1939, बीकानेर, एम. ए. (अंग्रेजी), एम. ए. (संस्कृत), एम. एड. । विभिन्न शैक्षिक पत्र-पत्रिकाओं में अनेक लेख प्रकाशित, बी.एड. व एम.एड. कक्षाएँ पढ़ाने का अनुभव। "राजस्थान में शिक्षानुसंधान–सम्प्राप्तियाँ एवं सम्भावनाएँ" सम्बन्धी पुस्तिका के प्रथम भाग में लेखन कार्य, शोध-कार्य में संलग्न । सम्प्रति–सहायक निदेशक (जनजाति), शिक्षा निदेशालय, बीकानेर ।

सत्यनारायण मेठी

जन्म 1941, सैंथल (जयपुर), एम. ए. (अर्थशास्त्र), एम. एड., पीएच. डी. (शिक्षा) । विभिन्न प्रकार की कार्य-गोष्ठियों में शैक्षिक वार्ता में भाग लिया, लगभग 10 शोध प्रायोजनाओं पर

शोध-कार्य सम्पन्न । विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में पाँच लेख प्रकाशित । विभिन्न शिविरों में मुख्य मार्गदर्शन का कार्य । 1981 में राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त । सम्प्रति–प्रायोजना अधिकारी, राज्य शिक्षाकर्मी बोर्ड, सीकर हाउस, जयपुर ।

सन्त कुमार शर्मा

जन्म 1946, दांतिल (कोटपूतली), एम. ए., पीएच. डी. । विभिन्न शिविरों में सन्दर्भ्य व्यक्ति का कार्य, एस. आई. ई. आर. टी. में कक्षा 5वीं की हिन्दी पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन, रेडियो एवं टी. वी. आलेखन गोष्ठी में सम्भागित्व, राज्य-स्तरीय लेखों का प्रकाशन व शैक्षिक वार्ताओं में सम्भागित्व । सम्प्रति–व्याख्याता (हिन्दी), राज. सरदार उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोटपूतली

ललिता गोयल

जन्म 1951, उदयपुर, एम. एससी., एम. ए. (अंग्रेजी), एम. एड. । विभिन्न प्रायोजनाओं पर कार्य, शैक्षिक वार्ताओं में सम्भागित्व, श्रव्य-दृश्य सामग्री का निर्माण, विभिन्न शिविरों में सन्दर्भ्य व्यक्ति का कार्य । श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम पर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रशस्ति-पत्र, राज्य-स्तरीय पत्र-वाचन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त । सम्प्रति–प्रधानाध्यापिक राजकीय माध्यमिक विद्यालय, अराई (अजमेर) ।

रामपाल शर्मा

जन्म 1950, मेरठ, एम. एससी., एम. एड. । 18 वर्ष का शिक्षण, शिक्षा प्रशासन तथा दो वर्ष का बी. एड., एम. एड. कक्षाओं का अध्यापन तथा शोध निर्देशन का अनुभव, जिला एवं राज्य-स्तर पर विज्ञान मेले में पुरस्कृत । सम्प्रति–प्राख्याता, राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान, बीकानेर ।

विद्योत्तमा वर्मा

जन्म 1933, नागौर, एम. ए., एम. एड. । विविध पत्रिकाओं में लेख समीक्षाएँ, प्रतिवेदन प्रकाशित, शिक्षक दिवस प्रकाशन में कविता प्रकाशित, आकाशवाणी पर वार्ताएँ, परिचर्चाएँ प्रसारित । राज्य-स्तरीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त । सम्प्रति–प्राख्याता, राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान, बीकानेर ।

हरिश्चन्द्र शर्मा

जन्म 1936, अजमेर, एम. ए. (समाजशास्त्र एवं अंग्रेजी), एम. एड. (स्वर्ण पदक प्राप्त) । कक्षा 8 से 11 तक अंग्रेजी भाषा पढ़ाने का 26 वर्षों का अनुभव, अंग्रेजी अध्यापन में क्रिया अनुसन्धान, प्लानिंग और मैनेजमेंट के क्षेत्र में 7 वर्षों का अनुभव, पुस्तक लेखन

एवं लेख लेखन, 1987 में राज्य-स्तरीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त । सम्प्रति–वरिष्ठ व्याख्याता, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर।

शेरसिंह बीदावत

जन्म 1935, जासासर (चूरू), एम. ए., एम. एड., पीएच. डी. (शिक्षा) । हिन्दी, राजस्थानी काव्य संग्रह "निबन्ध" 1974 में प्रकाशित, 15 शोधपूर्ण व साहित्यिक निबन्ध । विभागीय एवं पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन एवं प्रणयन, हिन्दी काव्य संग्रह "खुले-पंख" 1986 में रचनाएँ प्रकाशित, शैक्षिक कार्यों में सन्दर्भ्य व्यक्ति के रूप में कार्य, जिला-स्तर पर सम्भागित्व । सम्प्रति–उप जिला शिक्षा अधिकारी, चूरू ।

कृष्ण मुरारी गोयल

जन्म 1948, अजमेर, एम. एससी., एम. एड., पीएच. डी. (शिक्षा) । पत्र-वाचन, लेख व शोध-पत्र प्रकाशित, विभिन्न शिविरों में सन्दर्भ्य व्यक्ति, विभिन्न पुस्तक लेखन में लेखक मण्डल के सदस्य, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की विज्ञान पाठ्यक्रम समिति के सदस्य, शिक्षक-प्रशिक्षण विद्यालयों के लिये जनसंख्या शिक्षा पाठ्यक्रम निर्माण में कार्य । सम्प्रति–उप जिला शिक्षा अधिकारी, केकड़ी (अजमेर) ।

सतीश कुमार

जन्म 1952, अजमेर, एम. ए. (अंग्रेजी), एम. एड., पीएच. डी. (शिक्षा) । राज्य-स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में पुस्तक समीक्षा व लेख प्रकाशित, नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत अध्यापकों के प्रशिक्षण शिविर में सन्दर्भ्य व्यक्ति का कार्य । पत्र-वाचन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त, विद्यालय के बहुमुखी विकास कार्य पर 1985 में जिला-स्तरीय पुरस्कार, आन्तरिक मूल्यांकन योजना में राज्य-स्तर पर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रशंसा-पत्र प्रदान। सम्प्रति–प्रधानाध्यापक, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, जिलीयाँ (नागौर) ।

दिनेश चन्द्र शर्मा

जन्म 1937, अलवर, एम. ए. (अंग्रेजी), एम. ए. (इतिहास), एम. एड., साहित्यरत्न, सिल्स प्रशिक्षण प्राप्त, शैक्षिक प्रायोजनाओं पर कार्य, विभिन्न शैक्षिक पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, सन्दर्भ्य व्यक्ति के रूप में कार्य, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित पत्र-वाचन प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त, जिला-स्तरीय श्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार । सम्प्रति–प्रधानाध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बीबीरानी (अलवर) ।

मोहम्मद सलीम खान

जन्म 1947, भीलवाड़ा, एम. एससी., एम. एड. । लेखन कार्य, रेडियो वार्ता एवं रूपक प्रसारित, शोध-कार्य में संलग्न । राज्य-स्तरीय पत्र-वाचन प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त । सम्प्रति–प्रधानाध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नाहरी का रास्ता, जयपुर ।

महेन्द्र कुमार गोयल

जन्म 1935, भरतपुर, एम. एससी. (गणित), एम. एड., पीएच. डी. (शिक्षा) । अनेक शोध प्रायोजनाओं पर कार्य, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की पत्र-वाचन प्रतियोगिता में 6 बार पुरस्कृत, 1984 में राज्य-स्तरीय शिक्षक सम्मान प्राप्त, 1965 में राज्य-स्तरीय व्यावसायिक एवं निर्देशन सम्मान प्राप्त । सम्प्रति–प्रावैधिक अधिकारी (शिक्षा), पर्यावरण विभाग, राजस्थान, जयपुर ।

पन्नालाल वर्मा

जन्म 1934, अजमेर, एम. ए. (अंग्रेजी व संस्कृत), एम. एड., पीएच. डी. । अध्यापन का विविध स्तरों पर लम्बा अनुभव, विभिन्न राष्ट्र-स्तरीय व राज्य-स्तरीय संगोष्ठियों में पत्र-वाचन, ''राजस्थान में शिक्षानुसंधान–सम्प्राप्तियाँ एवं सम्भावनाएँ'' के सम्पादक, शैक्षिक एवं पाठ्यक्रम से सम्बद्ध पुस्तकों के लेखक, राष्ट्रीय व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में की पर्सन तथा अनेक शैक्षिक कार्य-गोष्ठियों व प्रधानाध्यापक व शैक्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सन्दर्भ्य व्यक्ति, राज्य-स्तर योजना निर्माण कार्यक्रमों के लिए गठित कार्यकारी दलों में कार्य किया । 1979 में राज्य-स्तरीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त । 1972 में राष्ट्रीय सेमीनार रीडिंग्स पुरस्कार प्राप्त। सम्प्रति–सहायक निदेशक (अकादमिक), माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर ।

सूरज नारायण कौशिक

जन्म 1931, सावर (अजमेर), एम. ए., एम. एड. । शिक्षक प्रशिक्षण कार्य का अनुभव, शोध-कार्य में संलग्न । सम्प्रति–प्रोफेसर, राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, अजमेर ।

शिवचरण मंत्री

जन्म 1933, श्रीनगर (अजमेर), एम. ए. (अर्थशास्त्र व समाजशास्त्र), बी. टी. । गृह मन्त्रालय, केन्द्रीय सरकार द्वारा पुस्तक ''पुलिस विधि विज्ञान'' पर पं. गोविन्द बल्लभ पंत पुरस्कार प्राप्त । सम्प्रति–प्रधानाचार्य, राजकीय दरबार सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय, सांभर (जयपुर) ।

एम. एम. शर्मा

जन्म 1938, जोधपुर, एम. एससी., पीएच. डी. । शोध-कार्य पर राष्ट्र-स्तरीय पुरस्कार प्राप्त। राज्य-स्तरीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त, अनेक लेख एवं शोध-पत्र प्रकाशित ।

अब्दुल रज़ाक खाँ

जन्म 1940, दौसा (जयपुर), एम. ए. (अंग्रेजी), एम. ए. (इतिहास), एम. एड., पीएच. डी.। उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम, विभिन्न शैक्षिक पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित, 1979 में राज्य-स्तरीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त । सम्प्रति–प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, दौसा (जयपुर) ।

सी. पी. शर्मा

जन्म 1947, जयपुर, एम. ए., एम. एड. । शैक्षिक समस्याओं पर रचनात्मक अनुसंधान कार्य । सम्प्रति–उप जिला शिक्षा अधिकारी, बांदीकुई (जयपुर) ।

अशोक कुमार मुद्गल

जन्म 1955, गीजगढ़ (जयपुर), एम. ए. (हिन्दी), एम. एड., पत्रकारिता में पी. जी. डिप्लोमा। पुस्तक समीक्षा कार्य, शोध-कार्य में संलग्न, समाचार-पत्र में शैक्षिक लेख प्रकाशित । सम्प्रति–व्याख्याता, श्री रामकरण जोशी, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, दौसा (जयपुर) ।

शंकरलाल शर्मा

जन्म 1933, सरदारशहर (चूरू), एम. ए. (अंग्रेजी), एम. एड., साहित्यरत्न (हिन्दी साहित्य)। शोध प्रायोजनाओं पर कार्य, शैक्षिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन कार्य, उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम, "राजस्थान में शिक्षानुसन्धान–सम्प्राप्तियाँ एवं सम्भावनाएँ" सम्बन्धी पुस्तिका के प्रथम भाग में लेखन कार्य । सम्प्रति–प्रधानाध्यापक, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, भीमसर (चूरू) ।

जमनालाल बायती

जन्म 1938, पारसोली (चित्तौड़गढ़) एम. ए. (चार विषय), एम. कॉम., एम. एड., पीएच. डी. शिक्षा 1983, डी. लिट् (यू. एस. ए.), पत्रकारिता में पोस्ट ग्रेज्यूएट डिप्लोमा, एन. सी. ई. आर. टी. से शिक्षा प्रशासन में उच्च डिप्लोमा । विभिन्न अभिकरणों द्वारा आयोजित पत्र-वाचन प्रतियोगिताओं में कई बार शीर्ष स्थान प्राप्त । देश-विदेश की विभिन्न शैक्षिक पत्रिकाओं के 60 से अधिक शैक्षिक लेखों एवं 14 शैक्षिक पुस्तकों के लेखक । बी. एड. एवं एम. एड. कक्षाओं के अध्यापन का दीर्घकालीन अनुभव । पीएच. डी. के छात्रों के मार्ग निर्देशक । सम्प्रति–प्रवाचक (शिक्षा शास्त्र), राज. उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान, बीकानेर ।

✡ ✡ ✡

Sub. National Systems Unit,
National Institute of Educational
Planning and Amiristration
17-B, Sri Aurbindo Marg, New Delhi-110016
DOC. No. D-5076
Date 15/11/90

NIEPA DC
D05076